सेवा॰ १

क्रियं॥ कौमारीं स्मितं वंदे तप्तचामीकर
प्रभां॥ ३॥ मुग्धां स्निग्धां विदग्धां चा सं
दिग्धां चतुर क्रियाः॥ वंदे रूपगुण क्रिय
भासा देवर्षि प्रमुखाकृती॥ ४॥ सि
ञ्जन्नूपुर पादपद्मयुगलां हंसीगति
विभ्रमां॥ चंचत्खंजन मंजुलोचनयु
गां पीनोन्नसत्कंधरां॥ शुम्भत्कांचन
कंकणद्युति मिलत्पाणौ चलच्चामरं
ऊर्वीणां वरभूमिभानुनंदिनि तट श्री
रंगदेवीं भजे॥ ५॥ नमोऽनन्ततन्वा चीरधी
रणपरां नीलकञ्जाद्योतितां॥ नीलेंदी
वरदीर्घसुंदरदृशां नीलं निरीक्षद्धनं
॥ हृद्दारण्यनिकुंजवासमुदितं राजी
वनेत्रे हरिं॥ ध्यायंती धरणि स्थिरेण
मनसा श्रीनम्रवासां भजे॥ ६॥ वचने १

मृतसागरां यितीं॥ गमने मत्तसुरद्वि
पायितीं॥ हसने मल्लमौक्तिकायितीं
॥ सततं श्री ललितां भजे॥ ७॥ उ
त्तमांग परिरक्षण स्थिरा सुतरोत्तरर
सप्रदायिनी॥ स्वामिनी प्रणयपूर
निर्भरा मुक्तमोच त्रिरसाभिवादये॥
८॥ निजदासविलासदायिनीं। निज
नाथैकगुणौघगायिनीं॥ वयसा नव्य
नैं ऽडहायिनीं। सुविलासां त्रिरसानतो
स्म्यहं॥ ९॥ रससागरपारधारिणीं॥ रस
रूपामृतचंद्रतोरणीं॥ सरसस्मितह
स्यवादिनीं॥ सरसां रासकरीं भजाम
हे॥ १०॥ मधुरां मधुरप्रभाषिणीं। हरि
राधारतिरंगसाक्षिणीं॥ रत्नकोटि
विकासमुस्मितां। प्रणमामि प्रणता
त्मनिस्थितां॥ ११॥ भवतापहरां नयाप

सेवा०
२

हां।नवपाथोधिनीरीदयापरां॥दत्ति
नांबुजनेत्रशालिनीं॥प्रतिनवांमनसा
स्मरेमुदा॥२॥निजवर्गमध्यत्रनाव
लीढं।कमनीयांगुलिपल्लवप्रसूतं।
स्वजनानामलमानसप्रसूतं।प्रियप।
द्मापदपंकजंस्मरामि॥३॥रूपामां
रूपामवयोन्वितांपरिलसन्नीलांब
रंबिभ्रतीं॥आकर्णायतनेत्रपंकज
नैरालस्यमातन्वतीं॥लीलालोल
मनंगरंगमधुरंआपारनारावहांमा
धाकृष्णमुखारविंदमतुलंसंचिंतयंती
भजे॥४॥वीणावादनतारतानमधुर
त्वाविकरित्रींमुदा।श्रीवृंदावनचंद्र
कृत्लविलसत्पादांबुजध्यायिनीं॥रा
धांहारविलासचारकुसलांकंदेकमा
मामुखीं।मिथ्याशक्तिरतांहरेःप्रियत

२

रांश्रीसारदांसंभजे॥५॥करेणोत्तरीयं
हसंतींदधानां॥द्वितीयेनफुल्लारविं
दंवहंतीं॥लसत्पीनवक्षोजसत्कुंभ
हारां।सदासंस्मरेहंकृपालांमुदारां॥
॥६॥रणच्चारुपादांबुजन्यासनिर्जि।
तजेंद्रानुरोमौक्तिकस्फारहारां॥सु
धामाधुरीहारिमंदस्मितास्यां।भजेदेव
देवीसुरत्राणदास्यां॥७॥स्फुरत्तुं
दरोदारमंदारहार।स्तनद्वंद्वनाराव
सीदत्सुमध्यां॥लसद्धस्तविन्यस्तनी।
लूलपत्रां।भजेसुंदरांसुंदराकारवक्त्रां
॥८॥पादारविंदेशिथिलंदधाना।पद्म
लयापद्मपरागरंजिता॥पद्माननापं
अंकचाभिरामा।नमामितस्याःपदपं
कजंसदा॥९॥अनाभुवंस्तनसुखचं
द्रमंस्फुरंतां।विध्वंगतेःरवत्रपयान्वि

सेवा॰
३

राजः॥ जलेपतन्त्या ममुखांबुजश्री॥ स्ता
मिंदिरांचेतसिभावयामि॥[illegible]॥ कामां
गनाकोटिमनोज्ञरूपां॥ मुखप्रभानि
र्जितरात्रिरूपां॥ स्वीयप्रियास्नेहनि
धानरूपां। रामांस्मरेहंसमनोज्ञरूपां
॥[illegible]॥ प्राहट्टप्रफुल्लनवचारुकदंब
पुष्प। हारामुखद्युतिविनिर्जितचंद्रता
रा॥ कांतांगसंगजनितांकनिदर्शनाय।
य। वामाकरोदनिलसन्मुकरंस्वस
ख्याः॥[illegible]॥ हंसामहमस्मिवंदे। युगल
पदांभोजभावनामुदितां॥ हंसस्मरसाय
नहंसां। साक्षादिवसिंधुजां [illegible]॥
श्रायमुनातीरनिकुंजे। मधुकरपुंजे
विनिद्रतरुहंदे॥ पश्यामहमस्मिवंदे॥
रटंतीहंसेतिहंसेति॥[illegible]॥ अद्भुता
युतेंदुरूपां। सकलसखीमालिकान्

३

पां। वंदेहंसकृतिरूपां। कोटिस्मरकांति
सारूपां॥[illegible]। मदनमोहनमोहनसुं
दरा। स्मितविलासकलासुकौतूहला॥
॥ प्रमुदितेनहृदात्वनिवादये। मन॥
सिजागवती … नगवत्प्रियां॥
[illegible]। वसंतकालोदयपुष्पितानि। द्वि
रेफरागायितपंकजानि॥ प्रियप्रिया
चारुपदांबुजेषु। प्रीसार्पयंतीप्रण
मामिमाधवीं॥[illegible]॥ यहोनान्तरजलधौ
विधिमुखविबुधालयंययुःसुचिरं॥
असितायाश्चतदास्यं। शारदविधुमंड
लाकृतिंध्याये॥[illegible]॥ शृंगाररसारंविवि
धंविधाय। प्रातःस्थितायानिजदेवता
याः॥ मुखारविंदैकनिरीक्षणाय। गु
णाकरीदर्पणमाचकार॥[illegible]॥ द्विज
राजकलाविराजमानां मुखशोभा॥

सेवा॰ ४

जितकुड्मलकंजलक्ष्मीं॥ मृगराजक
टिमृगायितालग्नां॥ महमीडे सततंसु
वल्लेनाख्यां॥१७॥ शारदीयविधुबिंब
मुखाब्जां॥ कंदर्पकरिरदनप्रियमेकां
॥तुंगपीनकुचभारविनम्रां॥ मानतो
स्मितरात्रिगौरतरांगां॥१८॥ मयूरपिच्छ
द्युतिहारिचामरां॥ तनोतिरस्कारिनि
जप्रियायाः॥ संगुंफयंतीं विलसत्क
राभ्यां॥ धम्मिल्लभारं प्रणमामिकेशीं
॥१९॥ जगत्पवित्रं कुरुतेहियस्याःदृ
गंतपातोवितनोतिसौख्यं॥ श्रीस्वामि
नीस्नेहनिधानरूपां॥ श्रीरूपमित्रं
तनजेपवित्रां॥२०॥ काश्मीरपंकांकि
तहस्तसरोजां॥ संभावितश्रीपतिपा
दसरोजां॥ विस्मितरक्तोत्पललोचना
नां॥ मुदास्मरेचेतसिकुंकुमाभां॥२१॥

४

समस्तनानाविधदेवतागणैर्विरंचि
गंगाधरसारदादिभिः॥ मृग्यानिवं
घ्यारुणपादपद्मां॥ श्रीश्रीहितांसंत
तमाननोस्मि॥२४॥ विलोहितप्रां
तविसाललोचनां॥ मुखप्रभापूर्ण
निशाकरोपमां॥ सच्चामरसल्लंकृत
हस्तपंकजां॥ श्रीरंगदेवीमनसा
स्मरामितां॥२५॥ दोहा॥ जैजै श्रीहि
तुसहचरी नरी प्रेमस्वरूपरंगा॥ प्यारी
प्रीतमकैंसदारहतिजुअनुदिनु
संग॥१॥ अष्टकालवरननकरौंति
नकीकृपामनाय॥ मनलवांणीसे
वासुसुखअनुक्रमतैंदरसाय॥२॥
॥ सखीनांमरत्नावलीस्तोत्रपाठत
हैंकीजे॥ गुनिगुरुसखिनकृपाजु
लहिसुगालसेवचितदीजे॥३॥

सेवा० प्रातकाल सी ऊठि कैं धारि सखी कौ
५ भाव ॥ जाय मिलै निज रूप सौं या कौ
यहै उपाव ॥४॥ मोहन मंदिर चौक
मैं मिलि सब सखी समाज ॥ वीन ब
मध्कर जावहिं गावहीं मध्कर सुर साज ॥५
॥६॥ अनुराग निकुंज रवाम ध्या॥
भास ॥ दोहा ॥ जय मृग नैनी राधि
के रंग रंगीली बाल ॥ गोरी कंचन
बेलि ज्यौं लपटी स्यांम तमाल ॥१
दामिनि लाल चकोरी ॥ जयति जयति
जामिनी रंगीली राधिके ॥ बिलसन
बिहारिन की गुन अगाधिके ॥२
का ॥ लपटि रही लाल जू कैं ललि
त अंग मोहनी ॥ तरु तमाल क
नक बेलि छबि बिमोहनी ॥१॥ का
मिनी ऊ रंग नैनी कोकिल कल ५

बैंनी ॥ कला कोटि कौ विदेस लौंनी
सुखदैंनी ॥२॥ सहज ही सुहाग भ
री गरबीली गोरी ॥ जीवनि धन हि
त की श्री हरिप्रिया किसोरी ॥३॥
॥ दोहा ॥ रसिक बिहारी लाल की
जीवनि प्रान अधार ॥ रसिक रसी
ली रस भरी अलबेली सुकुंवारि ॥
पद ॥ लाल चंपक ॥ रसिक रसीली
राधा रस ही सौं भरी हैं ॥ रसिक बिहा
री जू की जीवनि की जरी हैं ॥ टेक ॥
अलबेली न मैं ऐसी अधिक ता है
कोई ॥ पीवत पीवत लाल टपति
न होई ॥१॥ सनी हैं सुहाग अनुराग प्रे
म रंग मगी हैं ॥ प्रीतम पियारे संग स
बनि सजगी हैं ॥२॥ कौन कौन अंग
की अनूपता जु कहियें ॥ श्री हरिप्रि

स्यादासी हो इस दासंग रहियें ॥१७॥
दोहा ॥ सब निस बाती खेल मैं तउ
र अधिक उमंग ॥ औसे नवल कि
सोर वर हियरैं तसौ अनंग ॥१८॥ प
द ॥ लाल चर्चरी ॥ खेलैं नवल लाल खेल
नवल बाल संग ॥ बनी सब निसा
नो उअधिक उर उमंग ॥टेक॥
पल पल नैन बैठें चौंप सहज सुरत
रंग ॥ उपजत अति चाव हाव भा
व न्रत उकटि अनंग ॥१॥ नव किसोर सां
वरौ किसोरी गोरी अंग ॥ श्री हरिप्रि
या हियें बसौ अचल अनंग ॥२॥१९॥
दोहा ॥ बोलत सी आनाह यौं मध
र मधुर मृदु बाल ॥ सुख आसन राजै
ललित रलित रंग संग लाल ॥२०॥ प
द ॥ लाल चर्चरी ॥ लाल संग रंग रलि

त ललित बाल ललकैं ॥ सुरत रंग के
तरंग अंग अंग फलकैं ॥टेक॥ ससि
मुखी ससि कांति आहनाह मधुर ब
लकैं ॥ गोरे गंड दसन खंड कामनि
कलकलकैं ॥१॥ बैठे हैं सुखासन
पिय बाजैं छवि छलकैं ॥ उर बिसा
ल अति रसाल मोती माल रलकैं ॥
२॥ अरुन बरन चरन बर बिबंसन
दर दलकैं ॥ श्री हरिप्रिया देखत
जहां लागत नहिं पलकैं ॥३॥२१॥
अनुराग निदिव्य गंधाम धामास ॥
दोहा ॥ प्रिया वदन सुख मा सदन ॥
रस्यौ प्रेम परि पूरि ॥ नाम धिप्रीत
मप्रान की सरबस जीवनि मूरि ॥२
२॥ पद ॥ तिताल ॥ प्रिया मुख सुषमा कौ
आगार ॥ जाम खिलाइ लडै कौसर व

सेवा॰
७

सअंगअनंगउदगार ॥ टेक ॥ जीव
निप्रांनप्रांनजीवनिकी अधरसुधासु
खसार ॥ पीवतपरमत्रषातुरपलप
लबाढतप्रेमअपार ॥ १ ॥ रंगरंगीले र
दनवदनमैं सोहतसुषदसुढार ॥
हसतजबैंकछुलसतललितसु
नताईमनहरमार ॥ २ ॥ गोरेगंडअ
रुनतातिनविचिअद्भुतअमल उ
दार ॥ मनुसंपुटमधिलेअनुरागहि
जरिराख्यौकरतार ॥ ३ ॥ स्यांमलविंद
चिबुकअतिनूतनमनोसावेस खि
र्यौ वरनीजातनवरुनीजौं हैं सो हैं आ
डललार ॥ सीसफूलश्रीअंगचंद्रिका
चिकुरचतुरचितहार ॥ ४ ॥ गुहीस्यांम
मखतूलिपीठिपरबैंनीविरहविदार ॥
बडेनैंनसअंजनखंजनगंजनगरबपहार ॥ ५ ॥ ५

निजकररचीनवलनवनायकसुंदर
वरसुकुँवार ॥ ६ ॥ कुरवदरनीहियहर
नीसोंमासकलसुखनिधिसतार ॥ नि
रखिहरखिश्रीहरिप्रियासहचरिब
लिबलिवारंवार ॥ ७ ॥ १५ ॥ दोहा ॥ अम
वनकनतनवनिरहेगहेलाडगंभी
र ॥ विहरतसेजविहारविवसुरतसम
रसनधीर ॥ पद ॥ तिताला ॥ कुँवरदोउ
सुरतसमररनधीरं ॥ मध्यसेजविहार
विहरतरहीसुधिनसरीर ॥ टेक ॥ स्वे
दवेनकनगनमगनमनधनीधन ॥
विनचीर ॥ उमैंगअंगअंगअनंगरं
गसौंरहेरंगिवरवीर ॥ १ ॥ वदनविधु
वरविसदसुंदरश्रवतअमृतसीर ॥
तृषतपीवततृपतिहोतनक्योंकुअ
मितअधीर ॥ २ ॥ महालालचिलाहितै

छबि निरखे गहर गंभीर ॥ हित श्री हरिप्रि
या हरखत निरखि निपट हिं नीर ॥ ३
६ ॥ अनुराग निरखि कला मध्या ला स॥
दोहा ॥ मन चीते कारज भये रंग जीति उ
ग लाल ॥ उर फिरहे अंग अंग यों कंचु
न बेलि तमाल ॥ पद ॥ ताल चपक ॥ रं
ग रंगीले छैल छबीले राजत दोऊ रसि
क रसीले ॥ टेक ॥ रति रन जीति जोर उ
मगा जैं किये सकल मन वंछित काज
॥ ५ ॥ सजे सग बगे सहज सिंगार रस र
ग मगे जगमगे अपार ॥ २ ॥ मनु उरझी
तरु कंचन बेली ॥ यों सोहै श्री हरि प्रि
या सहेली ॥ ३ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ लाल नांव
ते जीय के लसौ बसौ हियधांम ॥ स्यां
मां सहज सनेहिनी ॥ सहज सनेही स्यां
म ॥ १ ॥ पद ॥ ताल चपक ॥ सहज सनेही

स्यांमां स्यांम ॥ मोहै कोटि कोटि रति कां
म ॥ टेक ॥ अंग अंग आभा अभिरांम ॥
लाडलडी ले जागे जांम ॥ २ ॥ लाल नांव
नौ श्री राधा नांम ॥ विलसौ श्री हरिप्रि
या हियै धांम ॥ ३ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्यारी जी
वैनि प्यारे की ॥ प्यारौ प्यारी प्रांन ॥ रंग म
हल मैं विलसहीं ॥ दोऊ एक समांन ॥
१ ॥ पद ॥ ताल चपक ॥ प्यारी जू प्यारे
की जीवनि प्यारौ प्यारी प्रांन अधार ॥
प्यारी प्यारे कैं उरमाला प्यारी कैं उर प्यारो
हार ॥ टेक ॥ प्यारी प्यारे रंग महल मैं
रंग भरे दोऊ करत विहार ॥ रंग भरी
निरखत हरखत हियैं श्री हरिप्रिया
सकल सुख सार ॥ ३ ॥ ९ ॥ अनुराग निवि
स्या जा मध्या नीसा ॥ दोहा ॥ कुंज भवन
मैं करत दोऊ ॥ सुरत रंग रति केलि ॥

सेवा॰
९

उरझि रहे सुरझत नहीं। तन तन म
न मन मेलि॥१॥ पद॥ ताल तिताल॥
नित नव कुंजन बन मैं केलि। कर
त हैं दंपति सुख संपति अति रसिक
रसिकिनी रति रस रेलि॥ टेक॥ उर
झि रहे सुरझत नहीं क्यों हूं दोउ जन
तन तन मन मन मेलि॥ दंपति नेह हो
त तृषातुर चितवत हितु जहां श्री ह
रिप्रिया सहेलि॥२॥१॥ दोहा॥ सुरत
रंग के रंग मैं। रहे रंगि अंग अंग॥ अ
द्भुत आज विराजहीं। प्यारी प्रीतम सं
ग॥१॥ पद॥ तिताल॥ रंगे दोउ सुरत
रंग कै रंग॥ रंग रंगीले आज विराजत
प्यारी प्रीतम संग॥ टेक॥ सोहत भूष
न बसन रंगमय सिथल भये सब अंग
॥ हितु सखि श्रीहरिप्रिया बिलोकत

४

उर मैं अधिक उमंग॥२॥२॥ दोहा॥
अंग अंग बस कै रहे। दंपति स्याम सु
जान॥ दंपति पीवत प्यार सौं। अधर
सुधारस पान॥१॥ पद॥ चंपक ताल
॥ प्रीतम प्यार सौं पीवत अधर सुधार
स॥ अलबेली के मुख अंबुज सौं ल
गे चषन चष स॥ टेक॥ जोइ रहे प्यार
सु के रंग हिं होइ रहे अंग अंग वस
॥ अति उदार श्रीहरिप्रिया स्वामि
नि प्रगट करत जस॥२॥३॥ दोहा॥
आरसवंत जियें जो उं बलि। लगी सुर
झी हो न॥ त्यौं त्यौं पौटत तान निपट
बौ निपरी यह कौन॥१॥ पद॥ तिता
ल॥ परी बलि कौन अनोखी बानि॥
ज्यौं ज्यौं जोरहीं तन हैं त्यौं त्यौं पौटत हौ प
टतांनि॥ टेक॥ आरसवंत जउ अरु

सेवा १०

नई उदई गई निसा रति मांनि ॥ श्री
हरिप्रिया श्रीनंदनजीवनि सकल
सुखनिकी खानि ॥ ॥ १३ ॥ दोहा ॥ सु
निसहचरि के वचन प्रिय ॥ उठी सुर
त सुख लूटि ॥ सैंन रिसेज तैं सुनट
ज्यौं ॥ विजयी होय वधूटि ॥ १ ॥ पद ॥
तिताला ॥ ललन संग सोय उठी सु
ख लूटि ॥ सुरत समर मैं सुनट ला
ड लडि सरवसली नौं घूटि ॥ टेक ॥
सिथिल कंचुकी उनय कुचनप
र रहि कच आवलि छूटि ॥ श्रीहरि
प्रिया स्वांमिनी स्यांमहिं सुवस कि
ये जुध जूटि ॥ २ ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सवनि
स लूटी सुरत सुख । श्रीनंप्रिया हरि
संग ॥ जागसुहाग सची रची ॥ रसिक
रवन कैं रंग ॥ १ ॥ पद ॥ तिताल ॥ रावि १०

रसिकरवन कैं रंग ॥ श्रीराधा रवनी
रसरूपा अमित अनूपा अंग ॥ टे
क ॥ जागसुहाग भरी निसि मांमि
नि उर अउरागअनंग ॥ सारी रैंन सुरत
सुख लूटी श्रीनंप्रिया हरि संग ॥ ३ ॥
॥ १५ ॥ श्रीनवरंग विहारिणी स्तोत्र
म ॥ दोहा ॥ जै नवरंग विहारिनी ॥
नव वासा सुखकारि ॥ जै श्रीहरि
प्रिया स्वांमिनी ॥ श्रीराधा सुकुंवा
रि ॥ स्तोत्रं ॥ तिताला ॥ जै जै श्रीनव
रंगविहारनि ॥ जै जै नववासा सुख
कारनि ॥ १ ॥ जै जै श्रीनवकेलिप
रायनि ॥ जै जै विश्वानंद विधायनि
॥ २ ॥ जै जै श्रीवृंदावनरांनी ॥ जै जै
परमुत्तम सुखदांनी ॥ ३ ॥ जै जै श्री
मुख अद्भुत सोभा ॥ जै जै निज वि

त्रासरसगोनी॥४॥जैजैश्रीप्रीतम
कीप्यारी॥जैजैसरसस्वरूपउज्यारी
॥५॥जैजैश्रीराधागुंनगोरी॥जैजैम
फरामधुरसवोरी॥६॥जैजैश्रीअ
तिअमितअनूपा॥जैजैसहजसु
जेद्रस्वरूपा॥७॥जैजैश्रीमोहनमन
हारी॥जैजैपग्राग्रांनअधारी॥८॥जै
जैश्रीअहलादनिदेवी॥जैजैस्यामां
सबसुखसेवी॥९॥जैजैश्रीप्रियब
जैनगुधा॥जैजैसारदसबसुखसा
धा॥१०॥जैजैश्रीनवनित्यनवीनां॥
जैजैपरमकृपालप्रवीनां॥११॥जैजै
श्रीसबसुखकीधांमां॥जैजैदेवदेवि
कानांमां॥१२॥जैजैश्रीलावनितादे
सा॥जैजैसुंदरिसरससुबेसा॥१३॥
जैजैश्रीकलकोकिलबैंनी॥जैजै

पग्रास्पासुखदैंनी॥१४॥जैजैश्रीगुं
नरूपगंभीरा॥जैजैऐंदिराहरहीरा
॥१५॥जैजैश्रीछविकोटिछवीली॥
जैजैरामाहियेबसीली॥१६॥जैजैश्री
आनंदअभिरामा॥जैजैबामासबसु
खधामा॥१७॥जैजैश्रीमोहनमनह
रनी॥जैजैरूस्यप्रियासुखकरनी॥
१८॥जैजैश्रीरंगरूपरसाली॥जैजैप
भ्रीनाप्रतिपाली॥१९॥जैजैश्रीरस
वरषाकरनी॥जैजैकृतिरूपाकृति
वरनी॥२०॥जैजैश्रीपरिहरनकांम
॥जैजैनागवतीनविधांमा॥२१॥जै
जैश्रीससिकोटिप्रकासी॥जैजैमाध
बिहियेंनिवासी॥२२॥जैजैश्रीहंदा
बनबसिता॥जैजैअसितसितारस
रसिता॥२३॥जैजैश्रीजसजगतवि

सेवा॰ १२

दाता॥जैजैगुनआकरिसुखदाता॥
२३॥जैजैश्रीमहाप्रेमप्रसिद्धा॥जैजैवि
सदवल्लभनारि रिद्धा॥२४॥जैजैश्रीगुंन
गनआगारा॥जैजैगौरांगीआधारा॥
२५॥जैजैश्रीकंचनदिविअंगा॥जै
जैकुंवरिसुकेलिसुरंगा॥२६॥जैजै
श्रीछविविचित्रविचित्रा॥जैजैपावन
करनपवित्रा॥२७॥जैजैश्रीअलत्र
लकलड़ैती॥जैजैकुंकुमकलाव
डैती॥२८॥जैजैश्रीनवनित्यनवेली
॥जैजैसुखदाहित्तसहेली॥२९॥जै
जैश्रीराधानिजनामनि॥जैजैश्रीह
रिप्रियाजैस्वामनि॥३०॥३१॥श्रीकि
सोरीकिसोरास्यांनमः॥दोहा॥नित्य
किसोरिकिसोर दो ३॥ नित्यकों म
नीकंत॥ नितिविलासविलसत दो १२

ऊ॥नितनवनौवअनंत॥३२॥स्तोत्र॥
लिताल॥जैश्रीराधानित्यकिसोरीरसि
कविहारीनित्यकिसोर॥जैश्रीराधा
पियचितचोरी॥प्रीतमप्रांनप्रियाचि
तचोर॥१॥जैश्रीराधाराजतगोरी॥गुं
नमंदिरवरसुंदरस्यांम॥जैश्रीराधा
रसिकनिजोरी॥रसिकरसीलोसबसु
खधांम॥२॥जैश्रीराधारूपअगाधा॥
मनमोहनसोजानहिंपार॥जैश्रीराधा
हरनाबाधा॥बाधाहरहरिप्रांनअधा
र॥३॥जैश्रीराधाअतिसुकुंवारी॥अ
तिअद्भुतप्यारोसुकुंवार॥जैश्रीराधा
पियकीप्यारी॥प्यारोकौपियपरमउ
दार॥४॥जैश्रीराधारूपमवल्लिनी॥रा
धावल्लभरूपरूपाल॥जैश्रीराधा
कृपासुल्लिनी॥दयानिधेहरिदीनदया

सेवा
१३

॥४॥जैश्रीराधानैंनविसाली॥कुमलक
मलदलनैंनविसाल॥जैश्रीराधारू
परसाली।रंगरंगीलौरूपरसाल॥६
॥जैश्रीराधापरमप्रवीनां॥चितसुख
चातुरपरमप्रवीन॥जैश्रीराधानित्य
नवीनां॥नीरजनैंनसुनित्यनवीन॥
७॥जैश्रीराधारतिरसरंगी॥कुसमको
टिकंदर्पसुरंग॥जैश्रीराधामणिके
नकंगी॥मर्कतमणिमोहनमृदुअंग॥
८॥जैश्रीराधारवनीकवनी॥रहसिर
मनरसजोरिविचित्र॥जैश्रीराधादुख
दवदवनी॥दुखदवदवनप्रवीनपवि
त्र॥९॥जैश्रीराधावारिजबदनी॥बा
रिजवदनवृंदावनचंद॥जैश्रीराधा
सबसुखसदनी।सबसुखसदनसदा
नँदनंद॥१०॥जैश्रीराधालावनिल। १२

[illegible]
भानुदुलारीब्रजपतिनंदनगोकुलपाल॥१२॥ ३०६

लिता॥लावनिललितलडीलौलाल॥
जैश्रीराधासबसुखसलिता।सबसुख
सलिलसदासबकाल॥११॥जैश्रीराधा
सहजसरूपा॥सकलसिरोमनिसह
जसरूप॥जैश्रीराधाअमितअनूपा
॥अद्भुतआनाअमितअनूप॥१२॥
जैश्रीराधाकंताकांमनि॥कंतकामि
नीराधाकंत॥जैश्रीराधाहरिप्रिया
स्वामिनि।विलसतनवनवनावअ
नंत॥१३॥दोहा॥अलवेलेअंगग
नखरे॥अंसअंसभुजधारि॥लैदर
पनदिखरावहीं॥कैसमुहींसहचा
रि॥१॥पद॥तिताला॥अतिअलबे
लेअंगनछाटे॥भुजापरसपरअंस
निदीनैंसुरतरंगमैंनानैंगाढे॥टेकै
॥पलटैंपटआभूषनअंगनिउरन

सेवा०
१४

खरेखा अद्भुत सो हैं॥ पीक कपोल अ
धर वर अंजन हार वार उर झे मन मोहैं
॥१॥ आलस वलित अरुन दृग अंवु
ज छ्वैल छ्वी ले रस मैं पागैं॥ ले दरपन
श्री हरिप्रिया सहचरि ठाढी जुगल।
कुंवर वर आगैं॥२॥ ॥ दोहा॥ रति
रस चिह्न सवार हीं। सहचरि निज प
ट छोर॥ ज्यौं ज्यौं स कुचित जात हैं।
नागर नवल किसोर॥१॥ ॥ पद॥ तिता
ला॥ निस के रति रस चिह्न सँवारत।
ज्यौं ज्यौं स कुचत नवल किसोर॥ रं
गदेवी अति रंगरंगीली। लै पौं छति
निज पट कैं छोर॥ टेक॥ याही रस
मैं मगन निरंतर नहिं जानत कित र
जनी भोर। सोभा निरखि हित श्री ह
रिप्रिया दंपति पर डारैं तिनु तोर॥ १४

॥ ॥५॥ दोहा॥ सुख सो धन सुख वस
न करि। मंगल भोग अरोग्य॥ आर
ति हित बैठे दो कुं। श्री हरिप्रिया सं
जोग्य॥ पद॥ तिताला॥ सुख सो धन सु
ख कुंज सदन मैं करत विहारी विह
रनि दो कुं॥ अलवेली अनिमिष अँ
खियनि सौं सुंदर वदन निहारनि दो
कुं॥ टेक॥ करि सुख वसन असन मं
गल आरोग्य अचय जल झारनि दो कुं
॥ श्री हरिप्रिया वैठाय सिंघासन सजि
आरति सहचारनि दो कुं॥१॥ ॥ दो
हा॥ मंगल आरति वार हीं। मंगल रं
ग रंगीलि॥ मंगलमय सुख छवि नि
रखि। मंगल दृग उनमीलि॥१॥ पद
॥ तिताला॥ मंगल कुंज मैं मंगल आर
ति। मंगल रंग रंगीली वारति॥ टेक॥

सेवा: १६

डलडीलेलाल॥२॥पद॥इकताल॥ला
लदोऊलाडलडीलेहो।कहतपरस
परनैंन॥सुनिसुनिसुनिरीफिरी
फि।नैंननिसौंलावतनैंन॥टेक॥अ
तिअनुरागसुहागनागरसनीनैंनाग
रनेह॥केटिकेटिरतिअनंगअंगमैं
झलकतरंगअछेह॥२॥मनमोहन।
मनमोहनीसहजहिंस्यामलगोर॥श्री
हरिप्रियारसिकजननकौधनजोरीजु
गलकिसोर॥३॥४॥दोहा॥न्हाईं
कुंजसनांनमैं।निजसहचरिसमुझा
य॥पहरायेपटपौंछिअंग।यथारीति
अकुवाय॥१॥पद॥तिताल॥निजस
हचरिसमझायेदोऊ।न्हान कुंजमैं
आयेदोऊ॥टेक॥मणिचौकीपध
रायेदोऊ॥ अबटनौ उबटायेदोऊ

२६

॥१॥सरससुगंधलगायेदोऊ।सौरन
नीरन्हवायेदोऊ॥२॥मृदुलअंगअं
गुछायेदोऊ॥पाटंवरपहरायेदोऊ
॥३॥करनसिंगारसुहायेदोऊ।श्री
हरिप्रियाहुलसायेदोऊ॥४॥२५
॥दोहा॥अंसभुजादीनैंदोऊ।भीनैं
रंगअपार॥करनसिंगारसुहांवते
।आयेकुंजसिंगार॥१॥पद॥तिता
ला।करनसिंगारसिंगारकुंजमैं।आ
येअलबेलेदोउप्यारे॥चटकनरी।
चटकतिचरननिमैं।पावरियांसोहै
नैंनअन्यारे॥टेक॥विधुरेवारअंस
भुजदीनैं।सुरतरंगमैंभीनैंन्यारे॥१॥
श्रीहरिप्रियापधरायसिंघासन।
वरनवरनअभिनरनसंवारे॥२॥२६
॥दोहा॥देखिदेखिवसखिकहति

सेवा॰ १७

यौं। कैसे बनें उदार ॥ जीव निहितु जन
न जिय निकी। नख सिख सजि सिंगा
र ॥१॥ पद ॥ तिताला ॥ नख सिख स
जि सिंगार विराजें। लै दरपन दिख
रावति सुंदरि कैसे आज उदार बि
राजे ॥ टेक ॥ देखि देखि सो ना अं
ग अंग की उमगे उर नि अपार बि
राजे ॥ श्री हरिप्रिया हितू जन जि
य को जीवनि प्रान अधार बिराजें ॥
॥२॥ दोहा ॥ प्रेम पुलक अंग अं
ग मैं। देत हेत जुत कौर ॥ भोग सिंगा
र आरोगहीं। सुकुमार नें सिरमोर ॥
॥ पद ॥ तिताला ॥ बैठे दोऊ सुकु
मार सिरोमनि। आरोगत हैं भोग
सिंगार ॥ बामी कर चौकी पर सुंद
रि। अंनि धस्यौ सहचरि नें थार

७

॥ टेक ॥ आदर सहित देत कर कौर नि
कमल वदन करि करि मनुहार ॥३॥
श्री हरिप्रिया प्रसंसि परसपर। प्रेम
पुलक अंग अंग अपार ॥४॥ २५ ॥
दोहा ॥ अचवन अचवावति वियें
॥ हितू हिये हुलसाय ॥ रोरी तिल
क बनां वहां। बीरी भोग लगाय ॥ पद
॥ तिताला ॥ लै झारी अचवन अचवा
वति ॥ हितू सहेली हित की चित
की। समुझि समुझि हियरैं हुलसा
वति ॥ टेक ॥ दै मुख वास बिसाखा
बीरी। लै लै ललिता भोग लगावति
॥ श्री हरिप्रिया तिलक मस्तक कर
चि। नीराजन की सौंज सजावति ॥
॥२६॥ दोहा ॥ सजि लाई आरति स
खी। अग्र बर्त्ति कर दीय ॥ अनुतराति

सेवा·
१८

उतारहीं॥ निरखि निरखि छवि वा
या॥ १७॥ पद॥ तिताला॥ मूरति मान सिं
गार सहचरी। सजि ल्याई आरति सिं
गार की॥ आनि दई कर अग्रवति॰
कैं। कहा कहौं सो ना कनक थार॰
की॥ टेक॥ अनुतरी लिउतारति बा
रति। निरखि सुख बिबि बिवरू उदा
र की॥ श्रीहरिप्रिया पुलक अंग अं
ग मैं। बाढी उर उमग निबिहार की
॥१८॥ अनुराग नि आनंदा मभा
नास॥ दोहा॥ यह सुख दे सब सा॰
खिन कौं। सहज सुरत रस लीन॥ कुं
जनि कुंज बिहार हीं। निज इच्छा आ
धीन॥ पद॥ ताल चपक॥ चले न
ला तैं उरन उमंग हियां॥ तिरछी चित
वन निरखत छवि हियां॥ आसपा

१८

× बिहरत कुंज निकुंजनि महियां॥ टेक॥ चालमरा
लरिये गरब हियां॥ उ०२

स सो हैं सब संहियां॥ जुगलचंद मुख
रुख चख चैं हियां॥ को उकर चौं
र मोरछल गैं हियां॥ अप अपनी सब
सौंज सजैं हियां॥ वर बिहार वेस॰
म बिहरैं हियां॥ श्रीहरिप्रिया प्रमो
द प्रदैं हियां॥ ॥ दोहा॥ रंग द
रस दादि कन मन। सहज कैरत स
चार। कुंज बिहारी लाल यों। बिह
रत कुंज बिहार॥ पद॥ इकताल॥
कुंज बिहारी कुंज बिहारनि। कुंज बि
हार बिहारैं री॥ रंग दरस दरहसि व
सुदादि का स्मत सुरुचि अनुसारैं री
॥टेक॥ अमृत कुंज कौ अमृत लैलै
पीपी आंन प्रतिपारैं री॥ फलंकल
चलदलंथल विथलनि मैं। श्रीहरि॰
प्रिया संचारैं री॥ ॥ दोहा॥ विधि

सेवा
१९

पूर्वक आदर सु रुचि। आरोगन रस पुं
ज॥ हितरूप सखिन के हेत करि। आये
भोजन कुंज॥ १॥ पद॥ इकताला॥ भो
जन कुंज मैं आये दोऊ। भोजन करन
सुहायेरी॥ हितरूप सहेली हित चित अ
नुसरि। करि आदर पधरायेरी॥ टेक
॥ विधि पूर्वक वैठे आसन पर। अंग
अंग सचु पायेरी॥ श्री हरि प्रिया आ
रोगत रुचि सौं विविधि भोग मन भाये
री॥ २॥ दोहा॥ सामा सजि सब सह
चरी। परसति परम रसाल॥ निज निज
रुचि भोजन करत दोऊ लाडिलील
ल॥ पद॥ ताल चंपक॥ भोजन कर
त लाडिली लाल। रतन जटित कंचन
चौकी पर। आनंद भरे सौं सहचरि निर
षि लाल॥ टेक॥ छप्पन भोग छतीसौं प १४

टरस। लेत स्वाद न छकि भोऽपरसाल॥
जैंवत नाहि सराहि सरस अति। परस
त रंग रंगीली बाल॥ १॥ जे जे विंजन क
र पलव नितैं। छुवति छबीली छैई छ
बिजाल॥ तेते विंजन नाहि जोर तैं। ले
त छबीलौ हौत निहाल॥ २॥ इहि बि
धि राजभोग आरोगत। सुख संजोग
त नैंन विसाल॥ श्री हरि प्रिया परस
पर दोऊ॥ परम प्रवीन प्रेम प्रतिपा
ल॥ ३॥ दोहा॥ अचवन करि श्री
हरिप्रिया। वीरी मुख मैं लीनि॥ हित
प्रमोद भरि मोद सौं। तिहि सिमैं आर
ति कीनि॥ १॥ पद॥ ताल चंपक॥ अ
चवन करि आरोगे वीरी। हितप्रमो
दिका आरति कीरी॥ टेक॥ निरखि
निरखि छबि नैंन निनीरी। नई सखिय
न की अँखियां सीरी॥ १॥ मुदित मह

सेवा २१ मनमोद मलीरी॥जैजै उचरतिधरलन
धीरी॥२॥श्रीहरिप्रियाजोरीनवलीरी
॥अलवेलीअरुलाडलडीरी॥३॥५॥
॥दोहा॥पीवतपांनी वारिकैं।जुगल
चंद्र छविदेखि॥अलकलडेसुकंवा
रजय।कहिकहिवचनविसेखि॥१॥
॥पद॥तिताल॥जयजयअलकल
डेसुकंवार।जयजयनित्यकिसोरी
जोरी।जीवनिप्रांनअधार॥टेक॥ज
यजयमोहनकीउरमाला।जयराधा
उरहार।जयजयश्रीहरिप्रियाजुग
लपर।पीवतपांनीवार॥६॥दो
हा॥चलेअंसभुजदीनिदोउ।करीहं
सगतिहीनि॥सुखआसनरंगभींनी।
निवनि।वैठेपरमप्रवीनि॥१॥पद॥
तालरूपक॥चलेदोऊअंसनिभुजदी
नैं॥चालमरालकरीगतिहीनैं।टेक २१

अमितजंनिप्रीतमरसलीनैं॥सुक
टछांहप्यारीपरकीनैं॥१॥वैठेसुख
आसनरंगभीनैं॥श्रीहरिप्रियादोउ
परमप्रवीनैं॥२॥७॥अनुरागनिसु
रंगां गामध्याजास॥श्रीराधारसिकि
नैनम॥दोहा॥मध्यकालदिनजां
निकैं।उनमादनिउनमादि॥सव
सनमुखकैरुखगहै।कहैजैनमो
आदि॥१॥स्तोत्र॥तालरूपक॥जै
नमोराधारसिकिनी।जैनमोमदुम
धमुसिकिनी॥जैनमोप्रीतमवल्ल
भा।जैनमोप्रणितनसुल्लभा॥
जैनमोपियमनरंजनी।जैनमोविर
हविभंजनी॥२॥जैनमोप्रेमपयो
धिनी।जैनमोरतिरसवोधिनी॥४॥
जैनमोसवसुखसागरी॥जैनमोस

सेवा॰
२१

वगुंनआगरी॥[illegible]॥जैनमोअद्भुतआं
ननी॥जैनमोमनहरमाननी॥[illegible]॥जै
नमोचंद्रनाहरा।जैनमोप्रेमापर
परा॥[illegible]॥जैनमोकोकिलकलरवा।
जैनमोनवनंजननिनवा॥[illegible]॥जैनमो
वारीचवंदिता।जैनमोगुंननिधिगवं
ता॥[illegible]॥जैनमोअधरप्रवालिनी।जै
नमोरदनसुढालनी॥[illegible]॥जैनमोना
साचुटकनी।जैनमोपियमनअट
कनी॥[illegible]॥जैनमोनकवेसरिधरा॥
जैनमोआतममनहरा॥[illegible]॥जैनमो
नैनविसालनी।जैनमोरूपरसालनी॥
[illegible]॥जैनमोअंजनअंजिता।जैनमो
खंजनगंजिता॥[illegible]॥जैनमोईछनअ
नुवा॥[illegible]॥जैनमोजौहंसोहनी।जैन
मोपियमनमोहनी॥[illegible]॥जैनमोश्र
वजैनमोचितवनिचातुरा॥ ७२

तिताटंकनी।जैनमोअलकनिवंकनी।
॥[illegible]॥जैनमोआडललाटिका॥जैनमो
टिप्पसुहाटिका॥[illegible]॥जैनमोसीससु
फूलनी॥जैनमोनीलदुकूलनी॥[illegible]॥
जैनमोसुनसीमंतनी॥जैनमोरसवर
संतनी॥[illegible]॥जैनमोसुखसरसंतनी॥
जैनमोसुन्दरसंतनी॥[illegible]॥जैनमोगं
डउदारनी॥जैनमोचिबुकसुचारनी
॥[illegible]॥जैनमोकंठअहचना॥जैनमो
जगमगभूषना॥[illegible]॥जैनमोकंचुकि
कसवनी॥जैनमोनवरंगरसवनी॥
[illegible]॥जैनमोउरजसुढारनी॥जैनमोमु
क्तामालहारनी॥[illegible]॥जैनमोमुक्तादा
मनी॥जैनमोअतिअभिरामनी॥[illegible]
॥जैनमोउदरसुवेसनी॥जैनमोनानि
सुदेसनी॥[illegible]॥जैनमोसुंदरिग्रीवनी॥
जैनमोसोनासीवनी॥[illegible]॥जैनमोवा

२१

सेवा
२२

ऊ विचित्रनी॥ जैनमो परमपवित्र-
नी॥२१॥ जैनमो चूरी चित्रनी॥ जैन
मो मोहनमित्रनी॥२२॥ जैनमो कंक
नकंचनना॥ जैनमो महारससंचना॥
२३॥ जैनमो पौंहौं विभ्रमाउका॥ जै
नमो अंगनितलाउका॥२४॥ जैनमो
हरिकरपांननी॥ जैनमो रत्नबिधांन
नी॥२५॥ जैनमो मणिमुद्रावली॥ जै
नमो नगहीरावली॥२६॥ जैनमो नख
चंद्रावली॥ जैनमो परमभ्रमावली॥
२७॥ जैनमो करतलकलितनी॥ जैन
मो रंगसुललितनी॥२८॥ जैनमो कृ
सकटिराजनी॥ जैनमो किंकनिबा
जनी॥२९॥ जैनमो पृथुलनितंबनी॥
जैनमो मनअवलंबनी॥३०॥ जैनमो
जंघसुकेलनी॥ जैनमो प्रीतमकेल
नी॥३१॥ जैनमो जानुसुहेतकी॥ जैन २२

मो पिंडुरी कंतकी॥३२॥ जैनमो जेहरि
हेमकी॥ जैनमो मूरतिप्रेमकी॥३३॥
जैनमो गुलफसुसाजिता॥ जैनमो नूपु
रब्राजिता॥३४॥ जैनमो एडी अंकुता॥
जैनमो रंगसुसंजुता॥३५॥ जैनमो पद
पदपांनना॥ जैनमो सबसुखदांनना
॥३६॥ जैनमो अंगुरीचारुना॥ जैनमो
सुखदसुठारुना॥३७॥ जैनमो हंसक
अनवटा॥ जैनमो सोहनसुनघटा॥
३८॥ जैनमो नखमणिबिसदनी॥ जैन
मो पदतलरसदनी॥३९॥ जैनमो कंता
कांमिनी॥ जैनमो नवघनदांमिनी॥
४०॥ जैनमो छबिचंपकतनी॥ जैनमो
सहजहिसुखसनी॥४१॥ जैनमो गोरां
गीप्रिया॥ जैनमो स्यांमा सुनप्रिया॥४२
॥ जैनमो रासविलासनी॥ जैनमो रह
सिकुलासनी॥४३॥ जैनमो प्रेमप्रकी

×जैनमोकीरतिलाडिली॥ जैनमोजसुदाचाडिली॥४२॥उ

सेवा सनी ॥[illegible]॥ जै
२३ न मो नेह निवासनी ॥[illegible]॥ जै
न मो रंग विहारनी ॥ जैन मो पियहिय
हारनी ॥[illegible]॥ जैन मो पिय उरधारनी
॥ जैन मो रस विसतारनी ॥[illegible]॥ जैन
मो अरविंदानंदनी ॥ जैन मो बस्नेन
वंदनी ॥[illegible]॥ जैन मो पियमनफंदनी
॥ जैन मो परमानंदनी ॥[illegible]॥ जैन मो
जीवनिजीयकी ॥ जैन मो प्रेमापीय
की ॥[illegible]॥ जैन मो प्रेमप्रदायका ॥ जै
न मो नागरिनायका ॥[illegible]॥ जैन मो र
तिरमनीयका ॥ जैन मो अतिकमनी
यका ॥[illegible]॥ जैन मो प्रगलभनक्किदा
॥ जैन मो तुरियविरक्तिदा ॥[illegible]॥ जैन
मो निगमागमसदा ॥ जैन मो रसिकानं
ददा ॥[illegible]॥ जैन मो राधानामिनी ॥ जैन
मो हरिप्रियास्वामिनी ॥[illegible]॥ श्री
कृष्णराधास्वांनम ॥ दोहा ॥ श्रीहरिप्रि

यास्वामनि प्राणमि। पुनि प्राण मन प्रि
या श्रांन ॥ कमलनैन श्री कृष्ण कहि
वरनत विविधि विधांन ॥[illegible]॥ स्तोत्र ॥
[illegible]॥ जैश्री कृष्ण कमलदललोच
न ॥ दुखमोचन मृगलोचन निराधा ॥[illegible]॥
जैश्री कृष्ण स्यामघन सुंदर ॥ दामिनि छ
टा लनगोरी राधा ॥[illegible]॥ जैश्री कृष्ण रसी
लो नागर ॥ रसिक रसीली नागरि राधा
॥[illegible]॥ जैश्री कृष्ण छबीलो छैल ॥ नव
ल छबीली छैल निराधा ॥[illegible]॥ जैश्री कृ
ष्ण मनोहर मूरति ॥ परम मनोहर मूर
ति राधा ॥[illegible]॥ जैश्री कृष्ण सदा सुखसा
गर ॥ सहज सदा सुख सिंधु निराधा ॥
[illegible]॥ जैश्री कृष्ण राधिका वल्लभ ॥ कृष्ण
वल्लभा रसिक निराधा ॥[illegible]॥ जैश्री कृष्ण
प्रियामनमोहन ॥ प्रांन प्रिया मनमोह

सेवा २५ निराधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न चारु चंद्रान
न ॥ सुधा सदन ससि बदनी राधा ॥ ॥
जैश्री कृस्न पदम परस्परन ॥ पूरन पर
म पदमनी राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न तम
ल तरुन छबि ॥ कनक लता छबि छ
जति राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न मीन मन
मीन कुं ॥ निरमल जल जनु जीवनि रा
धा ॥ ॥ जैश्री कृस्न नित्य नवरंगी ॥
नवरंग निरंगनी नी राधा ॥ ॥ जैश्री
कृस्न सुकोमल सीवां ॥ अति सुकेवा
री सींवां राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न अमि
त गुण आगरे ॥ अति अद्भुत गुण अ
गरि राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न विसाल वि
लोकर ॥ रूपरसा लछ्जा कर राधा ॥
॥ जैश्री कृस्न सुलग सुलसुंदर ॥ सरस
सुलग सुलसुंदरि राधा ॥ ॥ जैश्री कृ ॥ २५

स विलास विसारद ॥ विसद विलास
विचछनि राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न दि
अद्भुति कं रूप ॥ कोटि दिस्मरति राजति
राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न किसोर नित्य न
व ॥ नित्य नवीन किसोरी राधा ॥ ॥ जै
श्री कृस्न नील मणि आभा ॥ कंचन
मणि आभा अति राधा ॥ ॥ जैश्री कृ
स्न लाडिलो प्रीतम ॥ प्यारी प्रिया ला
डिली राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न सिरोम
नि सर्वस ॥ सर्व सिरोमनि सुंदरि राधा
॥ ॥ जैश्री कृस्न अखिल परमा पर
॥ परमा परजो नेसा राधा ॥ ॥ जैश्री
कृस्न कलपतरु तरवर ॥ तरु तनम क
लपतरो वरि राधा ॥ ॥ जैश्री कृस्न ह
रे हरि स्वामी ॥ श्री हरिप्रिया स्वामनि
श्री राधा ॥ ॥ दोहा ॥ मन मोह

x जैश्री कृस्न घोषपति नंदन श्री वृषभानु दुलारी राधा ॥

सेवा॰ २५ न मोहन महल॥ पौढे जाय प्रयंक॥
प्यारी सहचरि सब रही॥ न्यारी करन
निसंक॥ ॥पद॥ ॥बिलावल॥ मोहन
मोहनी मन रंजन॥ जुगा परसपर अं
स निदरी नैं॥ चलत हंस गति गंजन॥
टेक॥ मोहन मंदिर महा मनोहर॥
कतिश्र बैस सुख संजन॥ प्यारी सखी
रही न्यारी जहां श्री हरिप्रिया नय
नंजन॥ ॥२॥ दोहा॥ सुख सरसल
बरसत रसै॥ रुचित रंग नहिं पार॥ श्री
हरिप्रिया दोऊ बिलसहीं॥ सुमन से
ज सा धार॥ ॥पद॥ ॥बिलावल॥ बिहर
त सुमन सेज पर दोऊ॥ अलबेले अ
नंद की मूरति और लहां नहिं कोऊ॥
टेक॥ प्यारी के बदनार बिंद की ले
त बलैया लाल॥ पुनि पुनि परम प्रसं- २५

सत प्रीतम प्रिया प्रेम प्रतिपाल॥ ॥३॥
भरि अंक बारि कुँवर बर करत बिहा कुंवारि
र बिनोद॥ मदन के लि समस मगन
नये मन न समात मोद॥ ॥४॥ नैनि नै
ति बचनामृत सुनि सुनि पिय हिय ब
ढत मनोज॥ सौंसौं प्रति रनधीर मि
लावत अंस नि अरु न सरोज॥ ॥५॥ नू
पुर मुखर किंकिनी को अति होत सु
न कुंवरा बोल॥ प्रीतम अनंग न के अं
गन मैं उपजत अगनित भाव॥ ॥६॥ सु
ख सरसावत रस बरसावत रुचि तरंग
न हिं पार॥ श्री हरिप्रिया निजदासी नि
रखति लता ओट निरवार॥ ॥७॥ ॥
दोहा॥ कहत परसपर सहचरी॥ उर मैं
नरी उछाह॥ निरखि निरखि या सुख
समै॥ लेक नैनन कौ लाहु॥ ॥ पद॥

सेवा २८ कनाल॥ नैंन नकौ लाहौ लीजियें॥
गोरी स्यांम सलौंनी जोरी सुरस माधुरी
पिजियें॥ टेक॥ छिन छिन प्रति प्र
मुदित चित चाय हिं निज नाव हिमैं
नीजियें॥ श्रीहरिप्रिया निरखि तन
मन धन लैन वछावरि कीजियें॥ ४॥
दोहा॥ कौ कक लीकूल मैं कु
सल॥ केलि किसोर कमनीय॥ मन
मोहत हैं मोहनी॥ मूरति अति रम
नीय॥ पद॥ इकताला॥ मन मो
हन मूरति मोहनी॥ सब सुख सींव
सुरूप सिरोमनि सांवरि सूरति सों
हनी॥ टेक॥ कौ कक लीकूल केलि
कमनीय किसोर कमल द्दग जोहनी
॥ श्रीहरिप्रिया प्रांन जीवनि धन लां
वनि ता ललचौ हनी॥ ५॥ दोहा २८

रूपम वल्लभा लाडिली॥ राधावल्लभ नु ला
ल॥ बसऊ निरंतर हीय मैं॥ आनंद रूप
रसाल॥ पद॥ इकताला॥ जीवनि धन
राधावल्लभ लाल॥ रूपम वल्लभा रसि
कनि राधा वारिज वदनी बाल॥ टेक॥
जुगल किसोर किसोरी जोरी गोरी स्यां
मन माल॥ बसऊ निरंतर हियें श्रीह
रिप्रिया आनंद रूप रसाल॥ ६॥
दोहा॥ अंग अंग आभा हरन मन ना स
ब सुख सींव सुरूप॥ अति अलबेली
निपट ही॥ रंग रसभरी अनूप॥ पद
॥ इकताला॥ रंग रसभरी निपट अ
लबेली॥ लाडलड़े कैं लाडलड़ेली॥
टेक॥ अंग अंग आभा मन हरनी
॥ आलिंगन चूंबन आचरनी॥ ॥
नवल नागरी नीरज नैंनी॥ कौ कक

सेवा २७

ला क्रोविद पिकवैंनी ॥[illegible]॥ सव सुख
सींव सुरूप अगाधा ॥ श्री हरिप्रिया
स्वामिनि श्री राधा ॥[illegible]॥ दोहा ॥
चक्र वर्त्तिनी जो रियहा जीवनि श्री
न धनीय ॥ श्री राधा चूडामनी रसि
क मुकट मनि पीय ॥[illegible] पद ॥ ताल
[illegible] ॥ रसिक मनि मुकट श्री राधे
चूडामनी ॥ करत है केलि दोउ ऐक
ऐ जुन मेलि कैं ॥ जो रि चक्रवर्त्तिनी क
न कमर कतननी ॥ टेक ॥ मधुर मृ
दु हसनि मैं जोति जगमगट सनाल
सनि अउ राग वसस रस रस बरस
नी ॥ परम परवीन रहे लीन रसि रंग
मैं ॥ हित श्री हरिप्रिया आनंद जीवनि
धनी ॥[illegible] दोहा ॥ यह सुख मुख
कहत न वनैं ॥ जो सुख सजवति से २७

ज ॥ पान अदन रसवदन कौ ॥ देत ले
त हिय हेज ॥[illegible] पद ॥ तिताल ॥ यहि
सुख मुख कहत न वनि आवैं ॥ नैंन नहीं
के द्वारन लै लै हीयनि मांहि वसावैं ॥
टेक ॥ अदन पान अरविंद वदन रस
मदन सदन सरसावैं ॥ कमल कमल
अति पालन कैं कैं अति आनंद वढावै
॥[illegible] रमन रहसि रस मन मन मांनें वि
तन वारि वरसावैं ॥ तह चौंप चिनवढ
त चौगुनी खेलत हनअ घांवैं ॥ २ ॥ घरी
चारि दिन रह्यौ जांनि कैं सहचरि आं
निज गांवैं ॥ श्री हरिप्रिया सुखद सम्भा
नैं सुमना सन पधरांवैं ॥[illegible]॥ अ
नुराग निगोर सुखी मध्या नास ॥ दोहा ॥
जै जै आनंद कंदनी ॥ श्री हरिप्रिया कि
सोरि ॥ जै जै राधा रसिकिनी ॥ रसिक बि

सेवा॰ २८

हारी जोरि ॥ ॥ पद ॥ चलत तिताल ॥
जै जै राधा रसिकिनी । रसिक बिहारी
जोरी बनी ॥ टेक ॥ जै जै स्यांमां लाडिली
। मनमोहन मन चाडिली ॥ १ ॥ जै जै रू
प उजागरी । नित्य नवी नांना गरी ॥ २ ॥
जै जै आनंद कंदनी ॥ जन जीवनि जग
वंदनी ॥ ३ ॥ जै जै सब सुख धांमिनी ॥
श्री हरि प्रिया जै स्वांमिनी ॥ ४ ॥ ४० ॥
दोहा ॥ उत्थापन के भोग की । विधि बन
रचना वांनि ॥ अरु गावति श्री हरि ।
प्रियें ॥ निरखि हरखि हियें आंनि ॥ ॥
पद ॥ तिताल ॥ तरमेवा अरु बिबिधि ।
मिठाई ॥ अरघटे इस्वाद रस सुख सुंद
रि । सुंदर स्वरन थार भरि लाई ॥ टेक ॥
सब सब रितु की सब सांमग्री । सुख म
य सरस सखी सरसाई ॥ आरोगत दो २८

ऊ अलबेले । कहिन परत हित की हि
त बाई ॥ १ ॥ अरस परस गरसा मुख दे
त । दिबावत दंपति रुचि उपजाई ॥ अ
ति रोचक अंम्रत अम्रत । बावत । बिचि बि
चि बकु बिधि बिहसि बढाई ॥ २ ॥ मुदि
त महा मन मंजरि सुंदरि । सहचरि स
खी सहेलि सुहाई ॥ श्री हरि प्रिया की
निरखि निरखि छबि । हरखि हरखि
हिय रैं कुलसाई ॥ ३ ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ अब
बन अबिमुख बास लै । दै गर बांह बि
सालि ॥ फूल सखी की फूल मैं । चले
फूलि दोऊ लाल ॥ ॥ पद ॥ तिताल
॥ फूलि चले दोउ लाल बिहारी ॥ फू
ल सखी की फूलि निहारी ॥ टेक ॥ फू
ली संग सो हैं सहचारी । अप अपनी
सब सौंज सै बारी ॥ १ ॥ कोउ कर दुरव
ति चौंर सुढारी । कोऊ मोर छल लियैं

सेवा। कोऊ विजनारी॥७॥ कोउ कर लिये
२९ डेवा कोउ झारी॥ कोऊ लिये मुकर मु-
कर मन हारी॥८॥ देखत देखन बन फु-
ल वारी॥ सुख आसन वैठे सुखकारी॥
९॥ श्री हरिप्रिया जोरी जीय जियारी॥ श्रो-
न श्रीतमां पीय पियारी॥१०॥ पद॥ सो-
रठा॥ अंग अंग रस रंग मैं रली अलीअ-
लवेलि॥ आरति जो निति हैंनि की आ-
रति करति सहेलि॥१॥ पद॥ चलन ति-
ताला॥ संध्या आरति करति सहेली॥
स्यांमां स्यांम गुंन गरवगहेली॥ टेक॥
निरखि निरखि छवि नैंनन वेली॥ अं-
ग अंग रंग रली अलवेली॥ सोहत उ-
र चौसर चंवेली॥ रसरंजन राजत रति
रेली॥२॥ तरु सिंगार प्रेम की वेली॥
श्री हरिप्रिया हरत मन हेली॥३॥४॥
श्री राधा पराभक्ति प्रदायिन्यै नमोनमः॥ २९

॥दोहा॥ पराभक्ति रति वर्द्धिनी। स्यांमां
सब सुख दैंनि॥ रसिक मुकट मनि रा-
धिके। जय नव नीरज नैंनि॥१॥ स्तोत्र
॥ताल चंपक॥ जयति जयराधा रसि-
कमनि मुकट मन हरनी प्रिये॥ परा-
भक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुण-
निधि प्रिये॥१॥ जयति गोरा नव कि-
सोरी सकल सुख सीमां प्रिये॥ परा-
भक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणा-
निधि प्रिये॥२॥ जयति रति रस वर्द्धि-
नी अति अद्भुता सदया हिये॥ पराभ-
क्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानि-
धि प्रिये॥३॥ जयति आनंद कंदनी ज-
ग वंदनी वर वदनिये॥ पराभक्ति प्रदा-
यिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये॥
४॥ जयति स्यांमां अमित नांमां वेद वि-
धि निर्वाचिये॥ पराभक्ति प्रदायिनी क

सेवा॰
३०

रिकृपाकरुणानिधिप्रिये ॥५॥ज
यतिरासविलासनीकलकलाकोटि
त्रकासिये ॥ पराभक्तिप्रदायिनीकरि
कृपाकरुणानिधिप्रिये ॥६॥ जय
तिविविधविहारकवनीरसिकरव
नीसुभद्रिये ॥ पराभक्तिप्रदायिनी
करिकृपाकरुणानिधिप्रिये ॥७
॥ जयतिचंचलचारुलोचनिदिवि
दुकूलाभरनिये ॥ पराभक्तिप्रदायि
नीकरिकृपाकरुणानिधिप्रिये ॥
८॥ जयतिप्रेमाप्रेमसीमाकोकिला
कलवैंनिये ॥ पराभक्तिप्रदायिनीक
रिकृपाकरुणानिधिप्रिये ॥९॥ ज
यतिकंचनदिव्यअंगीनवलनीरज
नैंनिये ॥ पराभक्तिप्रदायिनीकरि
कृपाकरुणानिधिप्रिये ॥१०॥ ज
यतिवृंदावनवनिताआनंदकलना

॥ जयतिरावलिपतिकुमारीनंदवालवधूटिये ॥ पराभक्ति
प्रदायिनीकरिकृपाकरुणानिधिप्रिये ॥१२॥ ऊं२

नरुनिये ॥ पराभक्तिप्रदायिनीकरि
कृपाकरुणानिधिप्रिये ॥१३॥ जय
तिनागरिगुंनउजागरिज्ञानध्यनमनेहर
निये ॥ पराभक्तिप्रदायिनीकरिकृपा
करुणानिधिप्रिये ॥१४॥ जयतिनौ
तमनित्यलीलानित्यधांमनिवासिये
॥ पराभक्तिप्रदायिनीकरिकृपाक
रुणानिधिप्रिये ॥१५॥ जयतिगुणम
धुर्यरूपासिद्धिरूपासक्तिये ॥ पराभ
क्तिप्रदायिनीकरिकृपाकरुणानि
धिप्रिये ॥१६॥ जयतिशुद्धस्वभावसी
लास्यांमलासुऊँवारिये ॥ पराभक्ति
प्रदायिनीकरिकृपाकरुणानिधि
प्रिये ॥१७॥ जयतिजसजगप्रचुरपरि
करश्रीहरिप्रियाजीवनिजिये ॥ परा
भक्तिप्रदायिनीकरिकृपाकरुणानि

०१

सेवा ३१ प्रियप्रिये ॥३॥४॥ श्रीराधाकृस्नाभ्यां
नमो नमः ॥ दोहा ॥ नवनवरंगि त्रिभंगिज
य स्यांमसुअंगी स्यांम ॥ जैराधे जैहरि
प्रिये श्रीराधे सुखधांम ॥ ॥ स्लोक ॥ ता
लरूपक ॥ जैराधे जैराधे राधे जैराधे
जैश्रीराधे ॥ जैकृस्न जैकृस्न कृस्न जै
कृस्न जैश्रीकृस्न ॥१॥ स्यांमां गोरी नि
त्य किसोरी प्रीतम जोरी श्रीराधे ॥ रसि
क रसीलौ छैल छबीलौ गुंन गरबीलौ
श्रीकृस्न ॥२॥ रास बिहार नि रस बिस्ता
रनि पिय उर धारनि श्रीराधे ॥ नवनव
रंगी नवल त्रिभंगी स्यांमसुअंगी श्री
कृस्न ॥३॥ प्रांन पियारी रूप उज्यारी
अतिसुकुंवारी श्रीराधे ॥ मैंन मनोह
र महा मोदकर सुंदर वरतर श्रीकृस्न
॥४॥ सोभा सैंनी मोभा मैंनी कोकिल ३१

कीरति वारी भानु दुलारी मोहन प्यारी श्रीराधे ॥ जसुदानं
दन ब्रजकुलचंदन सब मन फंदन श्रीकृस्न ॥८॥ ३०८

बैंनी श्रीराधे ॥ कीरतिवंता कांमनि कं
ता श्रीभगवंता श्रीकृस्न ॥५॥ चंदाव
दनी कुंदारदनी सोभासदनी श्रीराधे
॥ परम उदारा सोभा अपारा अतिसु
कुंवारा श्रीकृस्न ॥६॥ हंसागवनी रा
जतिरवनी क्रीडाकवनी श्रीराधे ॥ रू
प रसाला नैंन बिसाला परम कृपाला
श्रीकृस्न ॥७॥ कंचनवेली रतिरसरे
ली अति अलबेली श्रीराधे ॥ सबसु
खसागर सब गुंन आगर रूप उजाग
र श्रीकृस्न ॥९॥ रवनी रम्या तरतम्या तर
गुण आगम्या श्रीराधे ॥ धांमनिवासी
प्रभाप्रकासी सहज सुहासी श्रीकृस्न
॥१०॥ सक्ति हलादनि अतिप्रियवाद
नि उर उन्मादनि श्रीराधे ॥ अंग अंग
टौंनां सरस सलौंनां सुभग सुठौंनां श्री
कृस्न ॥११॥ राधा नांमनि गुंन अभिरां

सेवा- ३२ मनिहरिप्रियास्वांमिनिश्रीराधे॥हरे
हरेहरिहरेहरेहरिहरेहरेहरिश्रीक
ला॥३१॥पद॥अनुरागनिकेलिकौमु
दीमध्यामास॥दोहा॥संध्यावंदनस
मैंकौइहिंविधिसुखहिसजाय॥
मधुरगांनमिलिगांवहीमृदुवाजं
त्रवजाय॥१॥पद॥चलनतिताल॥
मधुरामधुरमृदंगवजांवैं॥अनुरा
गनिरागनिगुनगांवैं॥टेक॥सप्तसु
रनिकेसजनिसुनांवैं॥तोरैंतांनमांन
उपजांवैं॥१॥संगीतनकीरीतिरचां
वैं॥सुरवनोंगतिग्रामजगांवैं॥२॥
नृत्यकसरवीनृत्यदिखरांवैं॥लाग
डाटकेथाटथटांवैं॥३॥उरपतिर
पकुरमईऊरमांवैं॥नईनईनिपुन
ईनिरमांवैं॥४॥कुसलकलानृत
हस्तकनांवैं॥नृउटिविलासनि ३२

विहसिवदांवैं॥५॥इहिंविधिउरश्री
तिलाप्रपुरांवैं॥सवमिलिश्रीहरि
प्रियेंडुलरांवैं॥६॥५४॥दोहा॥नि
रखिहरखिश्रीहरिप्रिया।अंगसं
गनीसहेलि॥लाललाडिलीकर
नमिलि।रहसिकुंजमेंकेलि॥१॥
पद॥तिताल॥लाललाडिलीकेलि
निकुंजे॥कमलकमलक्रीडाक
लकौसुलो॥रहसिविहसिरसकेलि
निकुंजे॥टेक॥परससरसमरसतउ
रजनिकर॥करसतेकरजनिकेलि
निकुंजे॥अंगसंगनिसहचरिश्रीह
रिप्रिया॥हरखिनिरखिसुखकेलिनि
कुंजे॥१॥५५॥दोहा॥ऐंनमैंनसुख
सैंनदोउप्रीतिमृदुलविहार॥कर
तरहैनिसदिनविपन।छिनछिन
हूंवलिहार॥१॥पद॥तिताल॥या

बोनिकु पर हूं बलिहारी ॥ बिपन बि
हार करत रहौ निसदिन ॥ छिन छि
न प्रति पर हूं बलिहारी ॥ टेक ॥ औन
मैंन सुख सैंन सखिन को चैंन दैंन प
र हूं बलिहारी ॥ श्रीहरिप्रिया मनोज
मनोहर मृदु मूरति पर हूं बलिहारी
॥ ३१ ॥ पद ॥ दोहा ॥ या सोभा सम करन
कौ रति कंदर्प करोरि ॥ हरन हिल्ल
जन [illegible] हियन कौ बनी भांवती
जोरि ॥ पद ॥ ताल चंपक ॥ बनी भां
वती जोरी ॥ नवल किसोर किसोरी ॥
सांवरी सलौनी गोरी ॥ सोभा सिंधु मैं
झकोरी ॥ निरखत छबि हेरी ॥ पलन
लगैं पलकोरी ॥ टेक ॥ रंग रस बोरी ॥
नैनौं ढोरी ॥ सांचै एक हो मैं करै बि
न बिन चोरी ॥ छबि बिन हियोरी ॥ हरत
हिल श्रीहरिप्रिया मोहियोरी ॥ ३२ ॥

सौ दुति पर वारौं ॥ रति कंदर्प करोरी
॥ ३२ ॥ पद ॥ दोहा ॥ सिंघासन श्रीहरि
प्रिया सोहत सुढर ढरे ॥ रसिक बिह
री बिहारिनी दोऊ गुन रूप भरे ॥ १
॥ पद ॥ ताल चंपक ॥ बने दोउ रसिक
बिहारी बिहारनि रूप भरे गुन भरे ॥
अंग अंग सोहैं गहनौं नैं औन रतन
नजरे ॥ टेक ॥ पहरैं बसन सुबरनी छ
बि मन हरनी ढरनि ढरे ॥ श्रीहरिप्रि
या बैठे सिंघासन निरखत नैंन ठरे ॥ ३
३ ॥ दोहा ॥ नखसिख सुंदर बरन ब
र । अंग अंग भूषन नैं ॥ जोरी स्यामा स्यां
म की बनी मैंन मन हरनैं ॥ पद ॥ रा
ग कल्यांन ॥ ताल जानना ॥ स्यांम स्यांमा बनी
जोरी मन हरनेरी ॥ कोटि कंदर्प रति
दिपत दंपति दरस ॥ सरस अंग अंग अं

सेवा॰ ३४ ग॥अंगवर वरनरी॥ ॥मुकर मं॰
जुल छवि ऊर चंद्रिकानीलपट।सी
स सोभा सुमन मिलि मुकुतन लरनरी
॥ तिलक लिलाट ताटंक कुंडल
श्रवन।गंडमंडल फूलके अलके॰
सोढरनरी॥ ॥नैं हसो हनि चपल
नैंन अंजन सुरति रंग रंजन सुकंज
गंजरवंजरनरी॥ नासिका अग्रमु॰
क्ता हलनि फुलमलनि।देखि दुति
दलमलति अमित दुतिधरनरी॥
॥ वदन सुखसदन मधि रदन सुस
रगमगे।रदछदन अरुनई हलैं अ
ति अरनरी॥ मंदसस्मित मधुकर वैत
रसन रसरते।अति अलके तकिये
दियें सुनगरनरी॥ ॥कनक केयू
रचूरी कटक कंकनै।पौंहौंचिकर ३४

पत्रपुटरी सुकरतर नरी॥ नखनिम
नि जोतिल खिहौं तिलोयन लल॰
के।पलक चोहतन छवि छलक
तें टरनरी॥ ॥कसिव कंचुककं
सी अतलसी कंचुकी।वसी उरजर
वसी अकनिकी सरनरी॥ पदिक
चौकी सरी चौसरी लरी मिलि।ल
सत सुंदरतन्ह दरजु दुरख दरनरी॥
॥ कटिनि कटि जटित लकटिप
टी पुरट सुघटी।पृथु नितंब नि अ
टी निजपटावरनरी।जेहरी पौनप
दपर सिपायल परत।अंदुसरल
अैसे अंदेस अंचरनरी॥ ॥पर
मरमनीय महार जितनूपुररतु
न।खचित हंस कनवटन खुनिरं
गररनरी॥पदतली ललित कोम

सेवा॰
३५

लकमलदलनसम॥ निरखि छिन
मधुपगति होति बिसमरनरी॥
आउदित आनंदमय इंदु करस
सदा। रसिक सिरमोर पट तर जुव
रपरनरी॥ अमित अद्भुत छवि पुं
ज श्री हरिप्रिया सकल सोभा ख
चित सम नैन कौ ऊ करनरी॥ ६॥
पद॥ अनुराग निकुंज बोलि मधु
मास॥ दोहा॥ इहि प्रकार बीती
जुदै घरि चारि रजनी॥ अरुन सद
न आये दोऊ संग लिये सजनी
॥ चौपाई॥ कमल॥ संग लिये स
जनी पीय पियारी॥ इहिं विधि घ
री चारि रजनी सुख बिलसि चले
दोउ करन बियारी॥ टेक॥ अदन
सदन आये मन भाये पधराये के ३५

रि सौं उतियारी॥ श्री हरिप्रिया प्रवीन
परस पर दोउ दोउन को जीय जियारी
॥ ७॥ दोहा॥ गरस परस पर देत मु
ख। सरस पुलक अंग अंग॥ जिय
प्यारी प्यारी करत। पिय प्यारी कैं सं
ग॥ ७॥ पद॥ इकतीला॥ करत बिया
री पिय प्यारी संग॥ अरस परस गर
सा मुख देत। दिवावत अति उपजा
वत रति रंग॥ टेक॥ मधुर हृदय सं
मिलत मिष्ठान्न रिक्न कनक कटोरैं
पीवत सो मंग॥ श्री हरिप्रिया आ
रोगत रुचि सौं। बिबिधि पांन पक
वांन पुलक अंग॥ ८॥ दोहा॥
अंबुज बदनी सहचरी बिधि आच
वन अचवांहि॥ बीरी रचि रचि देत
कर। जुगल चंद मुख चांहि॥ ९॥ पद॥

सेवा ७
३६

इकताल॥ अँबु अचवावति अंबु
जवदनी॥ कर लियें झारी कनक
कटौरनि॥ बरनि रिप्पावति अंबुज
वदनी॥ टेक॥ रचिर चिबीरी देत दो
उनु कर॥ उर उमगावति अंबुजव
दनी॥ श्रीहरिप्रिया चखि चाहि चे
कित रहि॥ कहि नहिं आवति अं
बुजवदनी॥ ॥दोहा॥ निजइ
छा अनुसारनी॥ निज सहचरि मृग
नैंनि॥ सारति वारति आरती स
म झि सैंन कीसैंनि॥ ॥पद॥ इक
ताल॥ आरति वारति अलि मृग नैंनी
॥ निज सहचरि इछा अनुसारनि॥ सम
झि सैंन कीसैंना बैंनी॥ टेक॥ जगम
ग जोति जगत दीपावलि॥ कनक था
रमधि सचित सुचैंनी॥ श्रीहरिप्रियाहि ३६

त बाय हियनि मैं लै वलाय सनमुख॥
सुख दैंनी॥ ॥दोहा॥ सयन अय
न सुखसखी जहां सचीसु पेसल सेज
॥ तापर पौढे एक पट ओढ़ि रंगीले हे
त॥ ॥पद॥ चौताल॥ सुंदर सुहाई
सुखदाई सुखसेज पर हे जन रे पौ
ढे पलकैं लगि गई॥ भुज सिरहांनैं
दियें हियसौं लगाय हियें पलकैं ल
गि गई॥ टेक॥ बिपुल पुलक लस
अंग आलस बस॥ अरसनि परसप
लकैं लगि गई॥ श्रीहरिप्रियाजूकी जो
री नवल किसोरी ओढैं पियरी पिछौ
री पलकैं लगि गई॥ ॥दोहा॥ हि
त सहचरी हितनरी॥ चौंपि चरन चित
चाय॥ हरैं हरैं हटि पट दियें झट दे बा
हरि आय॥ ॥पद॥ इकताल॥ हित
सखी हितकी हितवाई॥ पायपलोटि

सेवा ३७

हरैं हरैं हटिकैं पट दै ऊट दै बाहरि।
आई॥ टेक॥ रंध्रनि मग लग रूपमा
धुरी अवलोकति सहचरि समुदाई
॥ श्री हरिप्रिया की सहज सुरति रति
गोन करति मधुरैं मन नाई॥ २॥ इथा॥ अ
नुरागनि अभ वेलि केलि मध्या नास
॥ दोहा॥ अछन अछन उछर ऊरी
ज्यौं एप रैन जागि॥ श्री हरिप्रिया सु
ख सेज परि। सोए सुख श्रम पागि॥ १॥
॥ पद॥ चौताल॥ सुख सेज अभिनत दो
ऊ स्यांमा स्यांम। रति रंग न रैंग रैं रहे
लागि॥ अंग अंग उरझे अंग अंग नि
मैं। परम प्रेम रस मधु पागि॥ टेक॥
सिथल बसन रसना रतनावलि। सजत
सुख सुख राग रागि॥ श्री हरिप्रिया के
लछन बरनन करैं। अछन अछन
मति पुरैं जागि॥ ३॥ इहा दोहा॥ देषत २७

ही इग मथकित कै रहत गहत न हिंचे
त॥ श्री हरिप्रिया के अंक मैं॥ अति
निसंक छवि देत॥ ॥ पद॥ ताल चंप
क॥ आज छवि फबी है री मदन मोह
न की॥ मंद मंद मुसकनि मोहनि तन
अधखुलि पलकौं हन की॥ टेक॥ दे
खत ही इग रहत थकित कै सोभा क
टीली मोहन की॥ श्री हरिप्रिया अंक
मधि अंकित। अति निसंक सौं हन की
॥ ४॥ इहां अनुराग नि बिचित्र सो नास
ध्या नास॥ दोहा॥ अदसर बरी मैं रही
। घरी छसात के आयु॥ लवइ छो अ
नुसारि नी। सहचरि दियें जगाय॥ १॥
पद॥ ताल चंपक॥ दियें जगाय जुग
ल दरजन ही। अदसर बरी मांहि छसा
त का रही जांनि निज सहचरि तब ही॥
टेक॥ इहि प्रकार इछा अनुसार नि

सेवा० ३८

।उरअनिलारवनिपुरएसवही॥श्रीह
रिप्रियाकेदरसपरसबितु।निमख
नएककरहतिहैंकवही॥ ॥दोहा
॥सोनाहदसोहनसरस।रदछदचित्र
अमंद॥लैलमुक्तावारहीं।लखिज
गमगमुखचंद॥ ॥पद॥ ॥कमाल॥
जगमगैचंद्रबदनकीजोति॥अति
सुंदरसोनाकीसीबोलखिचखिचौं
धीहोति॥टेक॥श्रीतमकेमुखअंबु
जरसकेरि।चित्रतअमितउदोति॥
लखिसुखश्रीहरिप्रियाहितसखि।
वारतिहैंलरमोति॥ ॥दोहा॥
निकसेविकसेवदनविबिविपुलपु
लकअनजोरि॥नईप्रमुदितप्रमुदा
वलीलहिचंदहिंज्यौंचकोरि॥ ॥प
दा॥तालचंपक॥निकसिचलेदोउ
वहियांजोरी॥प्रमुदितसंगलगीप्रमु ३८

दावलि॥लहिचंदहिंज्यौंदपतिचकौ
री॥टेक॥विकसतवदनमदनसुख
मोहनमनमोहनछविफविननथोरी
॥श्रीहरिप्रियासिंगारसिंघासन।बैठेअ
निकिसोरी॥ ॥दोहा॥आंनप्रिय किसोर
नकेनियनिकी।जोनिमोदमनमानि
॥अलीचलीविमलीजहांरासथली
रसदानि॥ ॥पद॥तालचंपक॥रस
दैनीरसथलीसुहाई।आंनप्रियनके
नोनिजियनिकी।अलीचलीविमल
तहंआई॥टेक॥मोहनमदनमनोज
चंद्रकीचटकिचंद्रिकारहिछिति
छाई॥श्रीहरिप्रियामंडलप्रवेसक
रिअतिसुदेसरसरहसिरचाई॥ ॥
॥अनुरागनिकंदर्पकामामधमाला
ल॥दोहा॥विविधभांतिगुनभेदगति
रीझिनोजिअंगअंग॥नचतनवल

सेवा० ३९ नागर दोऊ रहसि रास रस रंग ॥ [illegible]
पद ॥ [illegible] ॥ नचत नवल ना
गर रहसि रास रंग ॥ सुभग बन पुलिन
थल कलपतरु तल विमल ॥ मंजु मंड
ल कमल दल अंग ॥ टेक ॥ रुनुनु नू
पुर रमकि झमकि हंसक रुनुनु ॥ ऊं
नुनु किंकिनि कलित कटि सुघंग
॥ चरन की धरन उचरन सब्द करन नाह
रन मन नेन करन उर उमंग ॥ [illegible]
ऊटि मट कै लटै लट कि अटकै ऊऊ
वि ऊट किन सा पुटै वट कि वंग ॥
५ग अलग लदौ टै अपटै झप टऊ टरप
ट ॥ सुघट संगीत रटरचु गर्थ गे ॥
खिर राथि रै टवट ति पउर पै उरनि
पुरनि सिरदुरनि अति गति सुढंग ॥
चखिनि चलवनि चपल बिछुवाली
चल तु चंचरी ने दूव नि बिनं गो ॥ ३९

री झिर स्मनाजि तिरि ऊवार दोउ रसिक व
र ॥ परस पर पीसु धाधर सनंग ॥ मत्त अ
नुराग अंग अनंग रमत रंग ॥ श्री हरिप्रि
या नित्य संग ॥ [illegible] ॥ अनुराग निर्व
[illegible] ॥ दोहा ॥ इहि विधि
रास रहस्य रमि श्री हरिप्रिया सहेत ॥
बिबिधि नौतिरस रीति सौं ॥ मोहन सदन
सुख लेत ॥ [illegible] ॥ दोऊ ॥
मोहन सदन सुख लेत ॥ बिबिधि नौति
की रीतिनां तिसौं ॥ लाड लाडिस खेत
॥ टेक ॥ पहरैं वसन सहानै अनेरन
॥ गौरी मोर छबि देत ॥ अंग अंग मोहन
मन मोहन ॥ श्री हरिप्रिया सहेत ॥ [illegible]
[illegible] ॥ आहि बिराजे सेज पर श्री ह
रिप्रिया लै संग ॥ फूल सि फूलसि हि
ये बिलसहं ॥ बाढ्यो अति रति रंग ॥ ११ ॥

सेवा॥ पद॥ तिताल॥ वाद्यौ अति रति रंग से
५९ जपर॥ हलहडुलह नि अलकलडी
ले॥ अलवेले अंग अंग॥ दोहा॥ नित्य
नवीन किसोर लाल दोउ॥ नित्य नवी
न अनंग॥ विलसत विविधि विलास
हास रस॥ श्री हरिप्रिया के संग॥ ६०॥
दोहा॥ अन हौनैं सुख लै चले॥ गौनैं
४ दो कै उ लाल॥ सिंघासन पर आय कैं॥ वै
ठि दियें जुतु माल॥ पद॥ तिताल॥ वै
ठत नये दोउ लाल सिंघासन॥ अन
हौनैं गौनैं के सुख लै। दै अंस नितु जम
ल॥ टेक॥ चहुँ दिसि ठाढी अति रति
वाढी। सुखद सहचरी जाल॥ श्री हरि
प्रिया की रूपमाधुरी। निरखत नैंन।
निहाल॥ ६१॥ श्री राधा रंग विहार
णी स्तोत्र॥ दोहा॥ रंग रंगीली सह ६१

चरी॥ रंग रंगीली आदि॥ श्री राधा रंग।
विहार कौं॥ वरनत हैं उन मादि॥ ६२॥
स्तोत्र॥ चलन तिताल॥ श्री राधा रंग वि
हारनि॥ श्री राधा प्रिय उर धारनि॥ श्री
राधा सुख विसतारनि। श्री राधा रति सु
खसारनि॥ १॥ श्री राधा अति सुकुँवारी
॥ श्री राधा स्यामा प्यारी॥ श्री राधा रूप
उज्यारी। श्री राधा जोवन वारी॥ २॥ श्री
राधा नेह नवीनां॥ श्री राधा प्रेम प्रवी।
नां॥ श्री राधा रति रस नीनां॥ श्री राधा
हित आधीनां॥ ३॥ श्री राधा गुन गर
वीली॥ श्री राधा छैल छवीली॥ श्री
राधा सोनासीली॥ श्री राधा रसिक र
सीली॥ ४॥ श्री राधा स्याम सहेली॥ श्री
राधा कंचन वेली॥ श्री राधा गरवग
हेली॥ श्री राधा अति अलवेली॥ ५॥
श्री राधा नित्य किसोरी॥ श्री राधा गुन

सेवा ५ निधि गोरी॥श्रीराधा मन मृग डोरी॥
श्रीराधा प्रीतम मन जोरी॥ ॥श्रीराधा सब
सुखसागरि॥श्रीराधा सब गुन आगरि॥
श्रीराधा रूप उजागरि॥श्रीराधा नव निति
नागरि॥ ॥श्रीराधा दिव्य सुदामनि॥
श्रीराधा नम सुनामनि॥श्रीराधा कं
ता कामनि॥श्रीराधा नाकं निरामनि॥
॥श्रीराधा सोनासैनी॥श्रीराधा मो
ना मैनी॥श्रीराधा पंकज नैनी॥श्रीरा
धा कोकिल बैनी॥ ॥श्रीराधा मृदु
म धर हसिता॥श्रीराधा द्विज दुति ल
सिता॥श्रीराधा पिय हिय बसिता॥
श्रीराधा रति रस रसिता॥ ॥श्रीराधा
रूप सुबसना॥श्रीराधा कृपा सुलसना
॥श्रीराधा दं नवकुलसना॥श्रीराधा प्रेम
मलसना॥ ॥श्रीराधा कोमल अंगा
॥श्रीराधा मैं न तरंगा॥श्रीराधा उरसि ५

श्रीराधा कीरति वारी॥श्रीराधा भानु दुलारी॥श्रीराधा ज
सुदा प्यारी॥श्रीराधा नंद जियारी॥२८॥ उं०१९

उमंगा॥श्रीराधा केलि अनंगा॥ ॥
श्रीराधा कुंज निवासनि॥श्रीराधा रा
स विलासनि॥श्रीराधा प्रेम प्रकास
नि॥श्रीराधा प्रनाम प्रवासनि॥ ॥श्रीरा
धा वारिज वदनी॥श्रीराधा सुखमास
दनी॥श्रीराधा विसद विरदनी॥श्री
राधा मोह निमदनी॥ ॥श्रीराधा हं
सागवनी॥श्रीराधा राजनि रवनी॥श्री
राधा क्रीडा कवनी॥श्रीराधा दुःख हि
दवनी॥ ॥श्रीराधा जीवनि जी की
॥श्रीराधा प्यारी पी की॥श्रीराधा हितु सु
ही की॥श्रीराधा रहसि रसी की॥ ॥
श्रीराधा लावनि ललिता॥श्रीराधा अम
त सलिता॥श्रीराधा कोमल कलिता॥
श्रीराधा करुणा वलिता॥ ॥श्रीराधा
चंपक वरनी॥श्रीराधा चारु अभरनी॥
श्रीराधा पिय चित हरनी॥श्रीराधा त्रे

सेवा
४२

मदितरनी ॥[illegible]॥ श्रीराधाकुंचितकेसा ॥
श्रीराधासहजसुवेसा ॥ श्रीराधामहासु
देसा ॥ श्रीराधाप्रियअंगनेसा ॥[illegible]॥ श्रीरा
धावामानामा ॥ श्रीराधास्यामारामा ॥
श्रीराधानित्यसुनामा ॥ श्रीराधानित्यसु
धामा ॥[illegible]॥ श्रीराधामोहनमित्रा ॥ श्री
राधापरमपवित्रा ॥ श्रीराधाचातुरचि
त्रा ॥ श्रीराधाचारुचरित्रा ॥[illegible]॥ श्रीराधा
परानुरक्तिदा ॥ श्रीराधासुजसक्तिदा ॥
श्रीराधासानुरक्तिदा ॥ श्रीराधागुणवि
रक्तिदा ॥[illegible]॥ श्रीराधारंगरंगीली ॥ श्री
राधाहियैवसीली ॥ श्रीराधावारवडी
ली ॥[illegible]॥ श्रीराधामोहनिमूरति ॥ श्री
राधासोहनिसूरति ॥ श्रीराधापरमामू
रति ॥ श्रीराधानितिअविचूरनि ॥[illegible]
॥ श्रीराधासुंदरिसोना ॥ श्रीराधामाध
रिमोना ॥ श्रीराधाआनंदगोना ॥ श्रीरा ४२

श्रीराधालाडलडीली ॥ ३०५

लोचन

धालोना ॥[illegible]॥ श्रीराधारूपमंजरी ॥ श्रीरा
धारंगमंजरी ॥ श्रीराधानवलमंजरी ॥ श्री धा
राधानेहमंजरी ॥[illegible]॥ श्रीराधासवसु
खसाधा ॥ श्रीराधागुंननिअगाधा ॥ श्री
राधाहरिप्रियाराधा ॥[illegible]॥ श्रीरा
धा[illegible]का[illegible]नम ॥[illegible]॥ कृस्न
रूपश्रीराधिका ॥ राधेरूपश्रीस्याम ॥
दरसनकौएरीयहै ॥ हेएकहिसुखधां
म ॥[illegible]॥ ललिता ॥ राधेकृस्नरा
धेकृस्नकृस्नकृस्नराधेराधे ॥ राधेस्यां
मराधेस्यांमस्यांमस्यांमराधेराधे ॥
राधेकृस्नराधेकृस्नवघनगोरीराधे ॥
राधेस्यांमराधेस्यांमसुंदरगोरीराधे ॥
॥ राधेकृस्नराधेकृस्नकुलरूपाराधे
॥ राधेस्यांमराधेस्यांमसहजसरूपारा
धे ॥ राधेकृस्नराधेकृस्नमोहनिमूर
तिराधे ॥ राधेस्यांमराधेस्यांमसोहनि

४॥७॥ राधे कृस्न राधे कृस्न अतिकमनीया राधे॥ राधे स्या

म राधे ३०८

सेवा स्त्रति राधे॥४४॥ राधे कृस्न राधे कृस्न नु
वरंग नीना राधे॥ राधे स्याम राधे स्याम
परम प्रवीना राधे॥४५॥ राधे कृस्न राधे
कृस्न कोमल अंगा राधे॥ राधे स्याम
राधे स्याम सहज अनंगा राधे॥४६॥
राधे कृस्न राधे कृस्न अति सुकुंवा रा
धे॥ राधे स्याम राधे स्याम सुखद उदा
रा राधे स्याम रति रमनीया राधे॥४७॥ रा
राधे कृस्न धे कृस्न परमा पुंजे राधे॥ राधे स्याम
राधे स्याम रहसि निकुंजे राधे॥४८॥
राधे कृस्न राधे कृस्न सब सुख स्यारा॥
राधे॥ राधे स्याम राधे स्याम परम उदा
रा राधे॥४९॥ राधे कृस्न राधे कृस्न पिय
प्रांनेस्वरा राधे॥ राधे स्याम राधे स्याम दि
न सुवेसा राधे॥५०॥ राधे कृस्न राधे कृ
स्न मनहर चित्रा राधे॥ राधे स्याम राधे
स्याम विसद विचित्रा राधे॥५१॥ राधे ४३

४ राधे कृस्न राधे कृस्न ब्रजकुलचंदन राधे॥ राधे स्याम
राधे स्याम ब्रजपति नंदन राधे॥५२॥ ३०१

कृस्न राधे कृस्न मंगलनामा राधे॥ राधे
स्याम राधे स्याम दिव्य गुणधामा राधे॥
५३॥ राधे कृस्न राधे कृस्न नीरज नैंना रा
धे॥ राधे स्याम राधे स्याम आनंद अैंना॥
राधे॥५४॥ राधे कृस्न राधे कृस्न नित्य
विहारा राधे॥ राधे स्याम राधे स्याम प्रे
म अधारा राधे॥५५॥ राधे कृस्न राधे
कृस्न रूप उज्यारी राधे॥ राधे स्याम
राधे स्याम हरिप्रिया प्यारी राधे॥५६
॥५६॥ दोहा॥ श्रवन सुनैं स्तव सुचित
श्री राधे स्याम सुजान॥ मध्य निसा म
न प्रांनि कै दियो सब कौ सन मान॥
॥ पद॥ त्रिताल॥ दियो सब कौ सन
मांन रसिकवर॥ श्रवन निसुनि निज
सुजस सुचित श्री राधे स्याम सुजांन॥
टेक॥ चले मनोहर मोहन मंदिर संग
सखी सुखदांन॥ श्री हरिप्रिया पो टा

सेवा ४४ यसेजपर। करनलगी गुंनगान॥४॥७८
॥अनुराग निकुंजसुंदरी मध्यानास॥
दोहा॥ सुखसौं सेजविराजियें॥ दियें
भुजा अंकमाल॥ स्यांमा जू के लाडिले
। लाडलडी लेलाल॥१॥ पद॥ इकता
ल॥ स्यांमा जू के लाडिले हो लाडलडी
लेलाल॥

लाडलडी के लाडलडी ले॥ सो
हैं नैंन विसाल एजू॥ टेक॥ सुखसौं से
जविराजियें हो॥ दियें भुजा अंकमा
ल॥ मोहन मदन वदन की सोभा नि
रखत हौं हिं निहाल एजू॥१॥ हौं वलि
वलिया रूप पैं हो॥ परम अनूप रसा
ल॥ श्री हरिप्रिया सुखसंपति दंपति
सदा वसौ मम भाल एजू॥२॥७९॥
दोहा॥ कहत बिहारी लाल वलि॥ सु
निये बिहारनि बैंन॥ अर्द्धनिसा आ ४४

२॥ पद॥ इकताल॥ मनमोहन मन मोहनी
जू जीनैं रंग अपार॥ ३०॥८०
ई यहै॥ अवकौं जैं सुखसैंन॥१॥ पद
॥ तिताल॥ बिहारनि कीजियैं सुखसै
न॥ अमित वदन सौं हैं मनमोहैं जप
कौं हैं नीरज नैंन॥ टेक॥ अलवेली
आनंद की॥ हो आई अधरैंन॥ श्रीह
रिप्रिया स्वामिनी हित्॥ सहेलिन कौं
सुखदैंन॥२॥८१॥ दोहा॥ तनमन मि
लि बिहरत दोऊ॥ अति उदार सुकुं
वार॥ मनमोहन मनमोहनी जीनैं रंग
अपार॥ मोहन मंदिर मध्य करैं दोऊ
सुखसौं सुरत बिहार एजू॥ टेक॥ गु
ण निधि गोरी सेजपर जू॥ सो पेसु ऊंवा
र॥ मन ऊं दवी के अंचल चंचली॥ घ
नस्यांमल कैं नार॥१॥ रसिक रसी
लीरा खेजू लै॥ उरजनि कैं आधार॥
अधर सुधा रस प्यावति पिय कौं प्या
री परम उदार॥२॥ तनमन मिलि ए

सेवा०
४५

कलजपेजुविचित्रसमावलहारु॥नि
जदासीजहाँनिकटनिहारतिश्रीह
रिप्रियासुखसार॥१॥१०॥दोहा॥अ
लकलडैतीलाडिलीअलकलडौसु
कुंवार॥अलकलडौमोहनमहल
॥अलकलडौईविहार॥१॥पद॥ख्या
लतिताला॥विहरनिअलकल
डैतीहो॥अलकलडौसुकुंवार॥अ
लकलडैमोहनमंदिरमैं॥अलक॥
लडौईविहार॥टेक॥अलकलडी
अरुझांनिदोउनकी॥अलकलडौ
ईप्यार॥अलकलडीश्रीहरिप्रिया॥
निहारत॥अलकलडौसुखसार॥
॥११॥दोहा॥श्रीहरिप्रियाप्रिया
जुहरि॥हिलिमिलिहियैंसनीर॥
रहैसदासुखनिधिसनैं॥सुरतसम
रनधीर॥१॥पद॥तिताला॥सुरत ४५

रनधीर॥गुंजमंदिरसुंदरवरसोऊवि
हरतकुंजकुटीर॥टेक॥सुखसागर
नागरनवनित्यउजागरअमृतसीर
॥श्रीहरिप्रियाप्रियाहरिहियमैंहि
लिमिलिरहैसनीर॥१॥१३॥दोहा॥
सुखफूलीआनंदलता॥सरसमह॥
महीप्रेम॥रसिकसहेलिनकैसदा
॥रसबरषहिंनितनेम॥१॥सोहिलौ
॥तिताल॥रसिकसहेलिनकैरस
बरषैं॥आनंदलताहियेंमधिहरा
षैं॥टेक॥सखीसहचरीफूलीतनमैं
सरससुंदरीमहमहीमनमैं॥१॥प्रेममं
जरीपरमसुहाई॥मनमोहनीमहा
मनभाई॥२॥कनकलतारतिवनी
जोवनी॥विमलकालिंदीकुंजसुंदर
सनी॥३॥आएकएकनैंअतिअलबे

सेवा० लीलाडलरी गुंन गरवग हेली ॥४॥
४६ एक बरन तन वैस किसोरी ॥ एक स
परस मांहिं ऊकोरी ॥५॥ ऊमकि ऊ
मकि टहलैं अनुसरहीं ॥ जो जो श्री ह
रिप्रिया आज्ञा करहीं ॥६॥ श्री रंग दे
वी के तुथमहियां ॥ कलकैं छीन ब
दासा पहियां ॥७॥ मंगल आरति
मैं न प्रजंता ॥ जुगल चंद्र की कां
ति अनंता ॥८॥ सूचित सुचि तैंन
रंग बदावैं ॥ रंग रंगीली के मन भां
वैं ॥९॥ रंगरली के रंग रचावैं ॥ मं
गल विमली खेल मचावैं ॥१०॥ चर
न चरन परपर नि एकगति ॥ कर प
र करतार निकीज तिअति ॥११॥ म
गन नई तनु सुधि न सँभारैं ॥ आनं
द सिंधु बढ्यौ है अपारैं ॥१२॥ यह

सुख सुख कौ तुक कहत न आवैं ॥ बिन
श्री हित कृपा को पावैं ॥१३॥ श्री हरि
प्रिया सकल सुख सार ॥ लोल लाडि
ली नित्य विहार ॥१४॥३५॥२५॥ दो
हा ॥ रसिक रंगरेली सबै रसिक सहे
ली गाय ॥ आवैं निज निज कुंज मैं ।
लालैं लाड लडाय ॥१॥ इहिं बिधि से ।
वा सुखसमै मंगल सैंन प्रजंत ॥ ध्यां
वै सो पावै सदा परम तंत्र कौ तंत ॥
२॥४१॥ कुंडलिया ॥ हीन अध्याना
सीक हरि धर्म बहिर्मुख होइ ॥ जि
न सौं यह जस महा रस कहौ सुनौं जि
नि कोइ ॥ कहौ सुनौं जिनि कोइ ॥ बि
नां इक अनन्य उपासिक ॥ ताहू मैं
महनावं सखी हे दावन वासिक ॥
श्री हरिप्रिया पद पद्म कौ मन मधु
कर जिहिं कीन ॥ सोई सबनैं श्रेष्ठ है

सेवा॰
४७

औरस वैजग हीन ॥४॥४८॥ दोहा ॥ घ
ट अरु तीस श्लोक सुनि। अरु सुनि दो
हा पंच॥ चौरासी आनाम जुत। पद द्वै
दोहा संच॥४९॥४९॥ एक कुंडलिया
एस दै। अठाईस मत एक॥ अव अ
नुराग नि अति जु पद। कहत सु वरनि
विवेक॥५०॥ ॥ कवित छप्पै॥
च्यार सु न रवा मांहि। दोयदि वि गंधा
मैं कहि॥ रअकला मैं तीन। विश्व अ
नादाद सच हि॥ नव विलास आव
ली॥ सत आनेंदा मैं सुनि॥ दस सुरंग
अंगा जु भोर सुरत्या मैं घट सुनि॥ घट
ऊ केलि कौमुदी मैं। कर्न कांति घट
जांनियें। है अलवेली केलि मैं। रहे
जु सो उन मांनिये॥ ५१॥ ५२॥ विचित्र
सोभा मैं च्यार। एक कंदप कांम मैं॥
खंजना ची घट कहे। घट ऊ सुंदरि सु

४७

था मैं॥ चौरासी पद इहिं प्रकार। सेवा
सुख लहिये॥ पंद्रह अनुराग नी मांहिं
। संपूरन सहिये। अष्टकाल सेवा जु सु
ख। अहल महल की बात ॥ कछू अले
खिता हि न रहे। साधु हिं सो सा ख्यात॥५र
[illegible] ॥ इति श्री पद विलास
निकुंज रहस्य श्री महाद्भिम मलाजे
स्वरश्वर परमहंस वंसा चार्य श्री म
हरिव्यास देवज्जू कृता श्री महावाणी
अष्टकाल सेवा सुख संपूर्णं॥ ॥
॥ श्री हरि प्रिया स्वामिन्ये नमो नमः॥
अथ महावाणी श्री उत्साह सुख लि
ख्यते॥ श्लोक॥ देवेंद्र मौलि मंदार म
करंद कणारुणा॥ विघ्नं हरंतु श्री रा
धा कृष्ण पदौ ज्वरेण वः॥१॥ दोहा॥ जै
जै श्री हित सहचरी। श्री प्रेम रस रंग

उत्साह सुम

उत्साह

सेवा

४८

॥प्यारी प्रीतम कैं सदा॥ रहत जु अ
नुदिन संग॥४॥ तिन की कृपा म
नाय कैं तिः नैमित कहौं वनाय॥
महा वाणी उत्साह सुख। दंपति कौं
सुख दाय॥२॥ अथ वसंत॥ महा
सुदि पंचमी॥ ऋतु राग निवेजय
नीमध्याभास॥ दोहा॥ सुरत रंग का
ना दि लै॥ औरु आरति पर जंत॥५॥
नवली नौ ति पूज्यौ मदन॥ नैंनि मनो
हर कंत॥६॥ पद॥ इकताला॥ श्री
हुनवली नौ ति श्रृज्यौ वसंत॥ मिलि म
गनैंनी मन हरन कंत॥ टेक॥ अंकवा
ये सु विस विसुरत रंग॥ अंचर अंतु
राग अंगोछि अंग॥ प्रेमां बर सुंदर अ
तिरसाल॥ वहराये रंग रंगी लीवाल
॥१॥ आलिंगन अंग रनेतन सजाय

४८

॥ चरचौ चंदन तुव नसुहाय॥ सुख
आसन ऊपर कि रि संजोग॥ मुगत्त
ये वक्रु विधि ना वनौग॥२॥ अववा
यौ अधर सुधा अमोल॥ सुखवीरी
दीनी कलकपोल॥ तिरछी चितव
नि आरति उतारि॥ वलि गई श्री ह
रि प्रिया छवि निहारि॥३॥ दोहा
॥ रसिक रसिकिनी सेज पर। विवि
धि हेज विलसंत॥ फल नंदलाल दिसौ
रनसनैं। विवतन वनैं वसंत॥७॥
पद॥ इकताला॥ दोउन मैंनी कौ व
संत वन्यौ॥ वसंत वन्यौ रति रंग स
न्यौ॥ टेक॥ रसर सिकर वनर सिकि
नी सेज॥ पर विलसत विविधि विह
रहेज॥ रहि अंग माधुरी झूमि झूमि
। चित तकी नी सुख चूंमि चूंमि॥४॥

उत्सा सौंदर्य मैनाइ सौरन सुनाय ॥ रहे अलि अ
४९ लिन लोचन लुनाय ॥ बनी जंघ जुगल
रंभा अनूप ॥ फल लगे रहत नितसि
हुत रूप ॥ कैनि पटन बल नागर नि
संक ॥ लई ललित लडी लीलाय लंक
॥ उर उमगि उमगि अनुराग बेलि ॥ सी
चो सुहाग अँमृत सहेलि ॥ ॥ परसत
कपोल मरसत उरोज ॥ बलबलक बो
ल बोटत मनोज ॥ जै श्री हरिप्रिया हि
तु हिय मैं फूल ॥ नित उर सिंचु सौ आ
नंद मूल ॥ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ श्रीराधा रस
रूपनी ॥ सनी रूप गुन नार ॥ लियैं संग
विपिन अँग संगनी ॥ विहरैं विहार ॥ ॥ पद ॥
इकताल ॥ विहरैं श्रीराधे बन विहार ॥
अति नरीसर सगुन रूप नार ॥ टेक ॥
आनँद उमंग अँग संग सैन ॥ चित चि ४९

मत कारँ मथत मैंन ॥ मधुरा कृति कुं मन
डल कलें कलोल ॥ रसदैन लेन अति
छिन अतोल ॥ ॥ रति बनी जो बनीत
नी हैम ॥ सुखसनी मोहनी परम प्रेम
॥ कल कुंजनि कुंजनि कमल केलि
॥ मिलि सच पायो रति रंगरेलि ॥ ॥ लल
हलहीललित कुल लता लूमि ॥ भू
ऊमं जुमनोहर झिली झूमि ॥ बरबर
न बरन समसुमन जौंर ॥ मकरंद सं
द मति अमृत जौंर ॥ ॥ मुदि मदन
मान मर्दन महीप ॥ करि लीनौं अ
पनौं सुबसदीप ॥ जै जै श्री हरिप्रिया के
नि संक ॥ लडलडी लीडल डल डेलं
क ॥ ॥ दोहा ॥ कमल केलि मि
लि केर न दोउ ॥ बिन श्री डा दिविलाल
॥ सचकित सखियनि कै नये । निरखि
नैन छबि जाल ॥ ॥ पद ॥ इकताल ॥ दो

उत्सा
पु०

उलालकरनमिलिकमलकेलि॥ उ
रिऔरैंकौरैंदेखलिसहेलि॥ टेक
॥ सुरसारसालअद्भुतअनूप॥ जहाँ
रच्यौरंगमरतिरवनरूप॥ अहलादस
हितआनंदउदार॥ श्रीहिततजिकौ
उहिंविविविहार॥ ॥ मधिमारपरस
परउलहेऔर॥ जोवनसजोरनागरकि
सोर॥ अंगअंगउपटिछविदेतऔ
र॥ मुखहोहोहोहोवदतवैन॥ २॥
घमडायरल्यौसोरनसमूह॥ सचकि
तनयेलोचनलखिउनमूह॥ ववलिप्री
हरिप्रियामधफलिहमरंध॥ मैंडरा
यरहेगहरायगंध॥ ॥ ॥ ॥ दोहा॥ मू
उमूरतिमनभावनेकरतकुंजकौ
लकेलि॥ चलिहोसखीवरिछविजे
हौं॥ अवलोकैंअलवेलि॥ ॥ पद॥
टकनाल॥ चलिचलिहोअलिअव

लोकैंनाय॥ जहाँरमतरसिकरसनरे
नाय॥ टेक॥ ब्रिंदावनजमुनाकुंजकौ
लि॥ दोउविलसहिंनागरनवनवेलि॥
कछुकहीजातनहिंबातवैन॥ मुखदे
खतहीवनिआतनैन॥ ॥ मृदुमूरति
मनमनवनवकिसोर॥ अंगअंगउठैछ
विकीहिलोर॥ इकपहलैहाँरगम
गेरंग॥ पुनिआनिपर्यौहोरीप्रसंग
॥ ॥ अलवेलिप्रियाअलबेलौला
ल॥ अलवेलीसंगसहेलिजाल॥ अ
लवेलौखेलमच्यौअनूप॥ अलवे
लेमनभावनेनूप॥ ॥ दोदोवंद
नवंदनअरुअवीर॥ नयेसोरबो
रसवकेसरीर॥ तकितकिपरसप
रकरतमार॥ तुटितूटिपरतनूपस
नअपार॥ ॥ डफतालवैनवाजै
मृदंग॥ सहनाईमकुवरिमिलिउ

उत्सा॰
५१

पंग॥बीनां मुरव चंग मुररसाल॥कल
अम्रत कुंडली हत्न कपाल॥५॥कोला
हलसव दिसर स्यो छाय॥विचिहोतेहै
बोलत सुहाय॥पियप्यारी दियेंदोउ
जा अंस॥कीडत सुख सरवर राजहं
स॥६॥तन गौरस्यांम अनि रांम जोरि
॥लाजैं लखि कंदप रति कोरि॥ब
लि श्री हरि प्रिया अनुराग फाग॥नि
रखहिं जिनि जिनि के धन्य भाग॥७॥
५॥दोहा॥श्री हरि प्रिया नित हीय मैं
॥लसौ बसौ सब काल॥अति सुंदर व
र मोहनी।बांनिक मोहन लाल॥१॥प
द॥इकताल॥मन मोहैं री सोहैं अति
सुंदर।बांनिक मोहन लाल की॥रु
कनि छबीली रंगरंगीली।पगियां
गोरे लाल की॥टेक॥नवल नासिका
नथ मोती की।झलकनि रूप रसाल

५२

की॥श्री हरिप्रिया बसौ नित हियमैं॥
चितवनि नैंन विसाल की॥२॥दोहा
रंगरंगीली सहचरी।भरी प्रेम रस मंत
॥रति दंपति हिं वैं दौं बही।रतिरंगरं
गीलौ बसंत॥१॥पद॥इकताल॥र
तिरंगरंगीलौ रति वसंत॥देखौ देष
ऊरी कै सौ लसंत॥टेक॥रतिरंगरं
गीन वनि स्मूं हैं मि॥जहां रहे विचि
त्रि तरु लूं मि लूं मि॥रतिरंग रंगीली
लत नि पांति॥रहि झूलि झूलि फरि
ल लित भांति॥रतिरंग रंगीली रं
गभाइ॥कलकूजित को किलकु
ल सुहाइ॥रतिरंग रंगीलै मोरी मोर॥
मिलि नृत्य करत चहुं ओरी ओर॥२
रतिरंग रंगीली रंगवाग॥जहां स्यो
सिंघासन मध्य लाग॥रतिरंग रंगीले
दो उलाल॥बैठे निसंक दियें अंक।

उत्सा.
५२

मालाः४॥रतिरंगरंगीलीसखीसंग॥
करलियेंवसंतउरस्तरिउमंग॥रति
रंगरंगीलीकंनकथारि॥मधिसरस
नूतमोरजवसंवारि॥५॥रतिरंगरंगी
लीवजैम्रदंग॥कैउनिर्तितगतिपरग
तिसुधंग॥रतिरंगरंगीलीनांनमांन॥
मिलिकरतमहासहचरिसुजांन॥६
॥रतिरंगरंगीलैकेसरिनीर॥छिर
कतछविसौंछविनरेचीर॥रतिरंगरं
गीलौलैगुलाल॥बुरकौवहिंउपरि
अबीरवाल॥७॥रतिरंगरंगीलीरी
झ्नीज॥उरउमंगउठीआनंदकी
ज॥रतिरंगरंगीलीरंगरहि॥करि
निजईनां॥मनिकृपादृष्टि॥८॥रति
रंगरंगीलौरतिबिलास॥बिलसत
हिबिलासनिहियेंकुलास॥रतिरं
गरंगीलीरंगकेलिभ्रनितिबसकुहि

५२

यैंश्रीहरिप्रियासहेलि॥९॥७॥दोहा
॥फूल्यौवृंदावनफबौ॥फूलफाल
कैसाज॥फूलीफिरतसुदेविरति
॥राजउछवकैंकाज॥१॥पद॥इकता
ला॥फूलीफूलीफिरतसुदेविश्राज
॥रतिराजउछवकैंसाजकाज॥टेक
॥फूलीफूलीसहचरिसखीसाथ॥
उपकरनलियेंमनहरनहाथ॥फू
लीफूलीगावतवसंतराग॥अंगअं
गपगीअनुरागपाग॥१॥फूलेफूले
खगमृगसोलटोल॥छविदेखिदे
खिदनिकौअतोल॥फूल्यौफूल्यौ
वृंदावनअतिरसाल॥फविरहोकं
हिनपरैफूलफाल॥२॥फूलीफू
लीकावेरीकवराचार॥मंजुकेसीउ
केसीकंठिहार॥फूलीफूलीमनो
हराउरअपार॥हीराहारमहाहीरा

उत्सा ५३

रूपिनार॥४॥फूलीफूलीलैलैसरस
डार॥ऐंव मोरहरितजवनवसं
वार॥फूलीफूली कमलकरकन
कथाल॥धरिकलसउलसचली
चपलचाल॥५॥फूलेफूलेविछि
आवजैसुहाय॥रुतुरुतुतेरमक
रुतुरुतुतेपाय॥फूलीफूलीमु
खरितकिंकिनिजालि॥सुनिश्रव
नसुखाकरहोतिआलि॥६॥फूले
फूलेकरननमैंकरनफूल॥फलम
लितललितनतितिअतिअनूल॥
फूलीफूलीलटकैलटसुबेस॥गोरे
गोरेगोलकपोलदेस॥७॥फूली
फूलीबनिठनिरहिविकार॥जाय
वसंतनेंदाईविविउदार॥फूलेफू
लेश्रीहरिप्रियाप्रानपाल॥रीझि
रीझदईउरफूलमाल॥८॥२॥दो॰

५३

ललितउमँगअँगअंगमैं॥ललित
वसंतविनोद॥लालैंलाडलडोंव
हीं।मिलिललनांमनमोद॥१॥प
द॥इकताल॥ललितवसंतललि
तललनांमिलि।लालैंलाडलडों
वहीं॥ललितउमंगललितअँग
अँगमैंउमगिउमगिवरषोंवहीं
॥टेक॥ललितबाजेनैंबजतल
लितगति।सरससुघरसुरगांव
हीं॥ललितविनोदललितश्रीहरिप्रि
या।निरखिनिरखिसचपोंवहीं॥
॥दोहा॥थिरचरवनव्यापकनयौ।
वितरनवितनअनंत॥सखीसाखा वि
कौंहुंअलि।लीखामयोवसंत॥१॥प
द॥इकताल॥सखीविसाखाकीअ
लिलाखाकौवसंतऔदेखौरी॥प
नपातअरुगातगातमैं।वरन्योंनजा

उत्सा
५४

तविसेरवौरी॥टेक॥ऊंचेकवकूल
कदंवअंवजंवूविदकोविदकैलैंरी
॥पनसपयालपुंनागनागनवमीपस
रसरसफैलैंरी॥१॥सुकपिककात क
केकिकोककोकांरंडकपोतैंरी॥ क
पारावतनकीपांतिपांतिगुंनगाव
तमिलिमिलिगोतैंरी॥२॥सरवर
सरितसरोजपुंजप्रतिऊंजऊंजन्ह
विराजैंरी॥कोटिकांमलांवन्यश्री
हरिप्रियातिनहिंरिझांवनकाजैंरी
॥३॥राग॥दोहा॥विपुलपुलकअंग
अंगमैंवाओरंगरसाल॥विविहिं
वसंतवैंदांवहीचंपकवरनीवाल
॥१॥पद॥इकताला॥चंपकलतिका
चंपकवरनी॥दुदिसोविविहिंवसंत
वैंदावति॥आनेंदनरेअरविंदवद
नवर॥निरखिनिरखिनिजनैंनसिरा ५४

वति॥टेक॥विपुलपुलकअंगअंगवढौ
रसरंगतरंग उमगावति॥सुखसागरनो उमग
गरिनागरश्रीहरिप्रियेप्रतिछिनहिये
फूलसावति॥१॥राग॥दोहा॥श्रीपंचमि
सुखसरसरति।निसंकरतिउरऊजि
॥प्रमुदितचितचित्रासखी॥प्रांनप्रिय
नकौहृति॥१॥पद॥इकताला॥श्रीपंच
मिप्रमुदितचितचित्रा॥प्रांनप्रियनकौ
हृजिहृजि॥गावतसरसरागअनुरागभ
रीकलकंठनिकूंजिकूंजि॥टेक॥श्री
वजअमृतऊंडलीमकुवरिकजनप
रवावजगूजिगूंजि॥श्रीहरिप्रियासुह
कैंसोहीं।निसंकरतिउरऊनिऊनि॥
॥१॥राग॥दोहा॥तुंगविद्यारिझवतवि
॥लितपैसखीसववसंग॥मृदंगतिमृदंग
वजांवहीं॥धीधीधीधिधिलंग॥१॥पद
॥इकताला॥धीधीधीधीधीधिलंगमृदं

उत्सा॰ गगमतिवजांनहीं॥तुंगविद्या विद्यातुंगारं
५५ गअतिअधुनांवहीं॥टेक॥मंजु मेधाम
धकसिरा मिलि॥नात्र थाटथटांवहीं॥
थेई थेई ततततथेई थेई थेई थेई उ
घटांवहीं॥ ततमेधाप धरे छुना सुमे
धासुरनरांवहीं॥पुलेजूडा सहित मध
रासुदित मांन मिलांवहीं॥ वृतंगदा
उमंग अंग॥संगसंगगांवहीं॥ निरखि
निरखिहरखिहियेंश्रीहरिप्रियेंरिझां
वहीं॥ ॥दोहा॥ विमलरूपश्रीहरि
प्रिया अतिअनूप अवरेखि॥ विमलव
संतवंदौवनैं॥ चली अली इंदुलेखि॥
॥पद॥ एकताला॥ विमलवसंतवनीं सि
वसुंदरि॥गावति जैसौई रागवसंत॥टेक
॥जैसौई विमलवसंतसिंघासनपतापर
रवनिवैठेवसंत॥तैसेई विमलरूपश्री
हरिप्रियातैसेई फूले फूलवसंत॥ ॥ ५५

ईंदुलेखा॥अलीचलीइजनबसंत॥विमलबसंत
बनी ३०५

॥ ॥इतिवसंत॥अथ होरी॥ हुल
दिहरलें मासी लैंफागुणसुदिहरलें मासी
तांई॥ अनुराग निचैजयंती मध्या नास
॥दोहा॥ सहज सैंन जैसिय वनी तैसिये स
हचरि संग॥ स्यां॰ स्यामनि कुंजनैंखे
लतहोरीरंग॥ ॥पद॥ एकताला॥ स्यां
मांस्यांमनि कुंजनवन मैंरंग न रे खे
लैं होरी॥तैसियसंगसहेलीसुंदरि स
खीसहचरीगोरी॥टेक॥रमकझम
कउचकनि उरजनकी॥लचनिलं
कचितचोरी॥निरखिथकितनयनम
नमोहनकौ॥नीवी वंधनडोरी॥ ॥अ
तिअनुरागभरीपिचकारी॥प्यारी पि
यपरछोरी॥रोमरोमरमिरह्यौरंग॥आ
नंद उमंगनकोरी॥ ॥मुसकनिहस
निअवीरगुलालन॥मारमचीझकझो
री॥तिहिंधुंधरिमैं सोहत हैं श्रीहरिप्रि

अन्ता यानूकी जोरी॥ ॥दोहा॥जोरी जस नि
५६ ति गायन वा।उपजो वो आनंद॥नेलआ
ए दिन नांचते होरी प्रेम सुछंद॥ ॥पद॥
इकताल॥नैलआ ए नैलआ एरी दिन
नांचते होरी के होरी॥सब मिलि मंगल
विमली खेलौ नस्निरि अबिर गुलाल
न जोरी॥टेक॥नित्स नवो आनंद उप
जावो गावो जस जोरी के जोरी॥श्री ह
रिप्रिया लडायचाय सौं सफल करौ।
जीवन अलि ओरी॥ ॥दोहा॥नव
लरंगी लीलां तिसौं।नवलरंगीलो मी
य॥नवल खेल मिलि खेलहीं नवल
विविधि विधि वाय॥ ॥पद॥इकता
ल॥नवल किसोरी गोरी गुंन निधि पि
य संग होरी खेलहीं॥केसरि अ
रु अनुराग कुंमकुंमा नस्निरि पिच
का पेलहीं॥टेक॥नवलरंगी लीछ वि ५६

लि अंतिसौं वूका वंदन मेलहीं॥श्री ह
रिप्रिया प्रसंन वदन दो उनवनि कुंज
मैं केलहीं॥ ॥दोहा॥छविसौं छीटै
छिरकहीं।छैलि छबीली वाल॥जिय
जीवनि सी जानिकैं।परसत पदन वला
ल॥ ॥पद॥इकताला॥छविसौं छैलि
छवीली छिरकन छीटैं केसरि रंग॥
अति सुकुंवार करनकौं परसो सरसी
लसी अंग अंग॥टेक॥जियजीवनि सी
जानि जांनि मनि उरमैं आंनि उमंग॥
परसत पद जैश्री हरिप्रिया के मनक
रि मदन तरंग॥ ॥ अनुराग निकि
सोर सुंदरी मध्य ॥दोहा॥कमल
कुंजकै द्वार मिलि।रच्यौ सुरंग रसाल॥
सहज सुरत सुख संगमैं।रंगभीनें दोउ
लाल॥ ॥पद॥चलन तिताल॥एरी स
खी रंगभीनैं दोउ लाल॥रच्यौ सुरंग रसा

अन्सा ५७

लरी रंग होरी ॥ एरी सखी कमल कुंजन कैं
द्वारे ॥ विहरत बर सुकुंवार री रंग होरी ॥
२ ॥ एरी सखी सांवर गौर किसोर ॥ रंग
रंगी लै जोर री रंग होरी ॥ ३ ॥ एरी सखी
औसन पर अवतंस ॥ राजत सुगहि नु
हंस री रंग होरी ॥ ४ ॥ एरी सखी अरबीले दो
उ छैल ॥ कैसें क हियें अरैल री रंग हो
री ॥ ५ ॥ एरी सखी दोऊ मतें मनोज ॥ दो
ऊ रति के चोज री रंग होरी ॥ ६ ॥ एरी स
खी लाडलडे लडकाइ ॥ लाडलडी कैं
चाम री रंग होरी ॥ ७ ॥ एरी सखी कर पि
चकरिया लेत ॥ सुनग अंग तकि देत
री रंग होरी ॥ ८ ॥ एरी सखी कबौ न पर
तति हिं काल ॥ जो सुख बढ्यौ विसाल
री रंग होरी ॥ ९ ॥ एरी सखी कैलपलौ रैं
ग मीत ॥ सीत करत अंग नीत री रंग ॥
होरी ॥ १० ॥ एरी सखी अविरजन नयो अ ५७

पार ॥ अमक कम ऊलक सुढार री रंग हो
री ॥ ११ ॥ एरी सखी सिंगार बगे सरस सने हो
दिपत दुकूलन की देह री रंग होरी ॥ १२ ॥
एरी सखी नीनै रंग सुरंग ॥ महअद्भुत ग
ति अंग री रंग होरी ॥ १३ ॥ एरी सखी बोल
त हेले हे बोल ॥ सुनि सुनि रहत अडोल
री रंग होरी ॥ १४ ॥ एरी सखी रीऊ रहे सि
रनाय ॥ दियो सुधाधर प्याइ री रंग होरी ॥
१५ ॥ एरी सखी प्यारी रूप रम प्रवीन ॥ म
नेभायो सब कीन री रंग होरी ॥ १६ ॥ एरी
सखी विविधि अबीर गुलाल ॥ चित्रत
कीनें नाल री रंग होरी ॥ १७ ॥ एरी सखी
फगुवा दै सनमान ॥ भांति भांति पक
वान री रंग होरी ॥ १८ ॥ एरी सखी निरख
वि निसि विलास ॥ छिन एक न अवका
स री रंग होरी ॥ १९ ॥ एरी सखी श्री हरि प्रि
या हियें अैन ॥ बसऊ सदा सुख चैन री

उत्सा- रंग होरी ॥[illegible]॥ होरी केलि नि
५८ कुंज मैं बिलसा बौ बकूंनाय ॥ ललहिं
लडा बौल डैनी को सब सजनी मिलि आ
य ॥[illegible]॥ पद ॥ कत लाल ॥ लडैनी के लल
हिं लडा बौरी ॥ सबै सजनी मिलि आ
बौरी ॥[illegible]॥ निकुंज मैं केलि मचा बौ
री ॥ प्रिया सँग होरी खिला बौरी ॥[illegible]॥ रं
ग ले कौं रंग नरा बौरी ॥ चोवा चंदन च
रचा बौरी ॥[illegible]॥ लै लै पिचकारी धा बौ
री ॥ छबीले कौं छिरकि रिझा बौरी ॥
[illegible] अबीर गुलाल उडा बौरी ॥ सुंदे ब
र अंबर छा बौरी ॥[illegible]॥ बाजे बहु भांति
बजा बौरी ॥ उर आनंद उपजा बौरी ॥
प्यारी जू को फगुवा मँगा बौरी ॥ मोह
की बिहसि बढा बौरी ॥[illegible]॥ उबटनो अं
ग उबटा बौरी ॥ केसरि कैं नीर न्हवा बौ
री ॥[illegible] सहांनें पट पहरा बौरी ॥ सुखा ५८

सन पर पधरा बौरी ॥[illegible]॥ कमल की मा
लबना बौरी ॥ लाल कैं गर लहका बौ
री ॥[illegible]॥ रोरी कौ तिलक रचा बौरी ॥ मोति
न के अछित लगा बौरी ॥[illegible]॥ रुचिर
रचि बारी खवा बौरी ॥ निरखि छबि नैं
न सिरा बौरी ॥[illegible]॥ विधि कति बेद प
ढा बौरी ॥ बेदी मैं सुख बिलसा बौरी
॥[illegible]॥ गुंन भरी गारी गा बौरी ॥ ले हो क
हि सकूंना बौरी ॥[illegible]॥ रैंग हो हो हो सु
हे हे हां हां ॥ तुम गोरे हो मोहन गोरे
॥ देखन के कारे कोरे ॥[illegible]॥ सो तौ
यह दोस हमारो ॥ आंखिन मैं अंज
न कारो ॥[illegible]॥ तुम्हें जानें हो मोहन जा
नें ॥ अब नैंक रहौ किनि छांनें ॥[illegible]
नो तर कहि हैं वा दिन की ॥ बोलनि
प्यारी जू बिन की ॥[illegible]॥ तुम आछे हो
मोहन आछे ॥ को परै तिहारें पाछें ॥

उत्सव ॥६८॥ अहो अधर सुधा अनुरागे ॥
५९ प्यारी जू के पाइन लागे ॥६९॥ तुम प्या
रे लाल मोहन प्यारे ॥ कहा कहिये कर
मतिहारे ॥७०॥ कहो या मैं कौन ब
१७ डाई ॥ हम देखत हारि खाई ॥७१॥ तुम
लीनै हो मोहन लीनै ॥ आगैं न एन
अब कोई हो नै ॥७२॥ क्यौं नीचैं नी
चैं ऊंखें ॥ ए लाज लपेटी आंखें ॥७
३॥ तुम कैसे हो मोहन कैसे ॥ जन ले
भूलि गये गुन वैसे ॥७४॥ पहराय क
मल की माला ॥ करि दिये लाडि ले
लाला ॥७५॥ तुम्हें गारि कहा अब
दीजै ॥ मुख पर पानी वारि पीजै ॥७६
॥ रंग होरी हो रंग होरी ॥ बनी श्री ह
रिप्रिया जू की जोरी ॥७७॥ रंग हो हो
हो हो हो हो हो ॥ माहिगढ जोर सुरा बौ
री ॥ प्रेम के पाग दगा बौरी ॥७८॥ वे

गि लां बरिय फिरा बौरी ॥ गौनै कौ चा
व करा बौरी ॥७९॥ महल मैं सेज बिछा
बौरी ॥ हरि कै डुलहनि पोढा बौरी ॥८०॥
डरि डरि दै खिसिहा बौरी ॥ रंग मेरै ॥
नि बिहा बौरी ॥८१॥ धनि धनि नाग
मना बौरी ॥ मन बंछित फल पा बौरी
॥८२॥ कर अंगुरी चटका बौरी ॥ श्री ह
रिप्रिया की बलि जा बौरी ॥८३॥ दो
हा ॥ अमल कमल की माल उर ॥ सो
है बर नैन बिसाल ॥ रंग महल श्री हा
रिप्रिया ॥ जियौं जावत लाल ॥ ॥ पद ॥
[illegible] लाल ॥ लाल मैं सांवल नै जिय कौ
सोहैं बर नैन सलौनै बिसाल ॥ सोह
नी सूरति मोहनी मूरति ॥ सूरति प्रेम
रसाल ॥ टेक ॥ अति सुंदर सुंदर उर
ऊपर ॥ अमल कमल की माल ॥ लह
लहाति लोंबनि रंग जीनी ॥ महमत

उत्सा० तिगुंनजाला॥ रंग महलमैंराजक
६० रौदिन॥ हलहलहनिवाल॥ श्रीह
रिप्रिया प्रिया हरिछबि लखि लोच
नहेतनिहाल॥१७३॥ दोहा॥ अल
कलडीलौ छबीलौ॥ अतिरसनसौं॥
उदार॥ निसदिन चित चिकुरी रहै
॥ हियकौ मंडन हार॥१७३॥ पद॥ इक
ताल॥ मेरौ अलक लडीलौ अलबे
लौ हो॥ अलबेलौ हियरैकौ मंडन
हार॥ एकपलक विसरैं न विसारयौ
॥ धारयौ उरजैन अगवार॥ टेक॥ रंग
रंगीलौ छैल छबीलौ॥ अतिरसनसौं
उदार॥ फागु खिलावत फूलसौं मो
हि॥ करिकरि बौहौ मनुहार॥१॥ सु
ढल मनोहर मंजुलौ॥ सोहत सुखद
सुढार॥ आनंदकंद नस्यौ मकरंद दैं।
सहजसौ रस उदगार॥२॥ लागत प्या ६०

रौ अंग न नैंकै मोहि॥ मनकूं लैं उकं बा
र॥ बिछुरि परैं जो लनकूं तनतैं बी
तत कलप अपार॥३॥ चिकुरी रहैं
छिपाइ तौ चित॥ चिमतकार सुखसा
र॥ श्रीहरिप्रिया प्रेमरस रंजन॥ मंजन
सुरत विहार॥१७४॥ दोहा॥ मनमोह
न बस कारिनी॥ नख सिख रूप रसाल
॥ सो स्यामा नित नित गाइयै॥ रसिकि
नि राधा बाल॥१७५॥ पद॥ इकताला॥ र
सनीनि श्रीराधा गाइयै हो॥ गाइयै हो मो
हन जाकें आधीन॥ नैंनसलौंन नजु
परवारौं खंजन मृग अरु मीन॥ टेक॥
नासा वारौं सुवर जीम धिंगु कारा हलैं छ
बि देत॥ अतिचंचल चित आनप्रीत
मकौ निति निहीं चुराये लेत॥१॥ अरु न
बरन बैंदी सजत है॥ ललित नालक छ
बि जाल॥ सहज सलौंनी सोहनी नाहि

उत्ता
६१

देखत मोहे हैं लाल ॥ ५ ॥ अति अद्भु
त बरवन कौ सोहैं ॥ नक कनक
कौ आड ॥ निरखत नागर नाह कौं चि
त होत हैं चौगुनों चाड ॥ ७ ॥ हीकौ ह
रनी कौ फरवै लिराटी कौ जटित जरा
य ॥ जीकौ जीवन जानहैं जो देखत
रहत लुभाय ॥ ८ ॥ मुक्ता बलि सौं हि
लि झुपि लीहैं ॥ अलका वली अनू
प ॥ रसिया रसिक बिहारी कौ मन
विवस होत लखि रूप ॥ ९ ॥ सो हि
त कोमल लिख नैक जरे न गात ॥ कर न फू
लस मत सल ॥ मदनमोहन जिय जी
वनि तन कौ ॥ मैहन मन मथ सल्लु
ल ॥ गोल कपोल अलक नै अधर नैछ
बि ॥ चिबुक दिठौनों चार ॥ कंठपो
त्रि जग जोति उरसथल ॥ राजत हार
नहार ॥ १० ॥ कसी अति लसी कंचु ६१

की कुच पर ॥ बाजूबंद नर केयूर ॥ सो मखुरी कं
कन पौहौंची कर ॥ पत्र आभा जरपूर ॥ ११ ॥
अंगुरिन मैं मुदरी मणि मंडित ॥ करतल
महदी लाल ॥ कटि अति खीन कसील
हँगा पर ॥ छुद्रावलि छबि जाल ॥ १२ ॥ पौ
नति तं बर अजं घा जुग ॥ जानु पिंडुरियं
सुढार ॥ अटीर हत अलरौटा औटनि
तद पिमचावत मार ॥ १३ ॥ जेहर नूप
र चरन छबि पर ॥ रतन जटित पद पा
न ॥ अनबट बिछियन की छबि देख
त ॥ मोहत रसिक सुजान ॥ १४ ॥ और क
हां लगि बरनियें ॥ अनरन ॥ अंग अंग ओ
प अपार ॥ गौर गात अबदात अनोपम
॥ पहरि नीलांबर सार ॥ १५ ॥ रमक मंडो
लत सहचरि संग लियें ॥ दियें भुजा पिय
अंस ॥ मानहु रूप सुधा सरवर मैं ॥ सो
हत हंसनि हंस ॥ १६ ॥ नौनों के लिक ॥

उत्सा. ६२ लाकौतूहल॥ विलसत हैं बन मांहिं॥ स
कलसुखनि की संपति दंपति॥ देखन
हग नञ्च घांहिं॥४॥ मंद मंद मृदु हसनि
मनोहर॥ लसनि दसन मुख चंद॥ कर
तप्रकास सकल वन वीथनि॥ निरख
त बढत अनंद॥५॥ नवल लाडिली
लाल ललित रस॥ लीला सहज सुदे
स॥ गावत सुनत सराहत जे को उ॥ कि
ये हैं सुकृत विसेस॥६॥ यह सुध्यान
हिय धरनी मैं धरि॥ सुमिरत सांझ सवा
र॥ श्री हरिप्रिया रीझि आपनपौ॥ देत
नवल बलबार॥७॥ दोहा॥ हो हो हो
री खेलहीं॥ दो उ रसिक रसज्ञानि॥ सं
ग लियैं ललनां सरस॥ अपनी अपनी
वीनि॥१॥ पद॥ खेलत तिताला॥ हो हो
२रस हो रंग होरी खेलैं संग सरस रसज्ञानी लल
नां॥ हो हो दो उ रसिक रसज्ञानी नैं केलैं ६२

संग सरस रसज्ञानी ललनां॥ हो हो लल॥
लनां हो हो हो हो हो॥ टेक॥ हो हो रंग रं॥
गीली सखी सब आई संग सरस रसज्ञानी
नी ललनां॥ हो हो लागति हैं अति परम
सुहाई संग सरस रसज्ञानी ललनां॥ हो हो॥ २रस
ललनां हो हो हो हो हो॥ हो हो अपनी
अपनी जोरी लीनी॥ संग सरस रसज्ञानी॥ २रस
ललनां॥ हो हो चारि चारि सखी एक ति
कीनी॥ संग सरस रसज्ञानी ललनां॥
हो हो ललनां हो हो हो हो हो॥ हो हो रं
ग देवि श्री प्रिया जू लीनी॥ संग सरस रस
ज्ञानी ललनां॥ हो हो चंपलता श्री नम
दिस कीनी॥ संग सरस रसज्ञानी ललनां
॥ हो हो ललनां हो हो हो हो हो॥ हो हो
सखी सुदेवि श्री प्रिया जू लीनी॥ संग सरस
रसज्ञानी ललनां॥ हो हो चित्रा सखी श्री
नम दिस कीनी॥ संग सरस रसज्ञानी लल

उत्सा ६३ लनां॥ हो हो ललनां हो हो हो हो हो ॥४॥
॥ हो हो ललिता सखी प्रिया जू लीनी ॥
संग सरस सरस नीनी ललनां ॥ हो हो तु
म विद्या प्रीतम दिस कीनी ॥ संग सर
सरस नीनी ललनां ॥ हो हो ललनां ॥
हो हो हो हो हो ॥५॥ हो हो सखी विसा
५ रस खा प्रिया जू लीनी ॥ संग सरस नीनी
ललनां ॥ हो हो ईंडु लेखा प्रीतम दिस
कीनी ॥ संग सरस सरस नीनी ललनां ॥
हो हो ललनां हो हो हो हो हो ॥६॥ हो हो
निकलि निकसि दो उ भये उ ओरी ॥
संग सरस सरस नीनी ललनां ॥ हो हो प्री
तम स्याम प्रिया संग गोरी ॥ संग सरस
सनीनी ललनां ॥ हो हो ललनां हो हो हो
हो हो ॥७॥ हो हो विविधि खेलको सौंज
बिसाजै ॥ संग सरस सरस नीनी ललनां ॥
हो हो सरस - सुनट रन धीर बिराजै ॥ ६४

संग सरस रस नीनी ललनां ॥ हो हो ल
लनां हो हो हो हो हो ॥८॥ हो हो रस्यौ हे वे
लरस रेलपेल कौ ॥ संग सरस सरस नी
नी ललनां ॥ हो हो के सरि क्रा रि कु लेल
बेल कौ ॥ संग सरस सरस नीनी ललनां ॥
हो हो ललनां हो हो हो हो हो ॥९॥ हो हो
रंग रंग की नरि पिच कारी ॥ संग सरस
रस नीनी ललनां ॥ हो हो मार मची कुंकु
म और निनारी ॥ संग सरस सरस नीनी लल
नां ॥ हो हो ललनां हो हो हो हो हो ॥१०॥
हो हो विविधि अबीर गुलाल उडायो ॥
संग सरस सरस नीनी ललनां ॥ हो हो बर
न बरन घन अंबर छायो ॥ संग सरस सर
स नीनी ललनां ॥ हो हो ललनां हो हो हो
हो हो ॥११॥ हो हो अनअ नेनां ति बाज
नै बाजै ॥ संग सरस सरस नीनी ललनां

उत्सा॰ ॥ होहोमनकूंमेघमंगलकैंनिगाजैं॥
६४ संगसरससरसजैंनीनीललनां॥ होहोल
लनांहोहोहोहोहो॥ ३॥ होहोवरिख
कौंकछुनारनपारा॥ संगसरसरसजैं
नीललनां॥ होहोदोउघनदांमनिन
३र स येउदारा॥ संगसरसजैंनीनीललनां॥
होहोललनांहोहोहोहोहो॥ ३॥ होहो
होआनंदसिंधुवध्यौअधिकौहीं॥
संगसरसरसजैंनीनीललनां॥ होहोमु
४रस गनभयेसवकेमनमांहीं॥ संगसरसजैं
नीललनां॥ होहोललनांहोहोहोहोहो
॥ ४॥ होहोतवदुलहीअतुलासनिसो
५रस ऊं॥ संगसरसजैंनीनीललनां॥ होहो
सुखजितहाजवैठायेदोऊ॥ संगसर
सरसजैंनीनीललनां॥ होहोललनां॥
होहोहोहोहो॥ ५॥ होहोआयसरू ६४

पसरोवरजाये॥ संगसरससरसजैंनीनी
ललनां॥ होहोपहरेपटभूषनरतनमन
भाये॥ संगसरससरसजैंनीनीललनां॥
होहोललनांहोहोहोहोहो॥ ६॥ हो
होरतनसिंघासनपरपधराये॥ संग
सरसरसजैंनीनीललनां॥ होहोभांति
भांतिकेभोगलगाये॥ संगसरसरस
जैंनीनीललनां॥ होहोललनांहोहोहो
होहो॥ ७॥ होहोतिलकरचायरूपो
नखवाये॥ संगसरसरसजैंनीनीललनां
॥ होहोकरिआरतिहरिप्रियापौढा
ये॥ संगसरसरसजैंनीनीललनां॥ हो
होललनांहोहोहोहोहो॥ ८॥ १॥ दो
हो॥ ज्यौंज्यौंकहौंत्यौंत्यौंहिरंग॥ रेलैं
संगसुहाव॥ सहजरंगालैगांवतौ
श्रीहरिप्रियावन्यौंवनाव॥ १॥ पद॥

उत्सा चलत तिताला॥ रंगीलौ जांवतौ मेरौ
६५ ॥ज्यौं ज्यौं कहौं त्यौं त्यौं ही केलौं रेलैं रं
ग सुहावतौ॥ टेक॥ जो कहौं कमल
कुंज मैं चलियें। तौ न करैं अनखांव
तौ॥ जो कहुं कमल निकुंज के लि
यें। तौ करैं येही कहांवतौ॥ ॥ नित
दिन रुखलीयैं हौं सनमुख बारहतसु
खैं सरसावतौ॥ श्रीहरिप्रिया मो मैं
श्रीहरिप्रिया। सहजैं हौं बन्यौं बनांव
तौ॥ ॥ ॥ दोहा॥ हैनैं चितचाबैं च
ढी। बढी उमग अंग अंग॥ कैसी बर
षत आजु की। रंग बिनां बरि रंग॥ ॥
पद॥ इकताला॥ आजु कौ रंग बिनां ब
री॥ बरषत रंग रंगीले दोऊ लडेका ब
री॥ टेक॥ रंग रंगीले चंद्रन की रहौ च
ट कि चांदनी चा बरी॥ रंग रंगीले श्री ६५

हरिप्रिया संग हिं हनैं रंग चढावरी॥
॥ ॥ दोहा॥ लियैं फूल की हाथ मैं।
छरी नरी अतुराग॥ रंग रंगीली सखि
नसैं ग॥ श्रीस्यांमा जू खेलत फाग॥ ॥
पद॥ इकताला॥ श्रीस्यांमा जू खेलत रं
गभरी रंग होहोहोहोहोहोरी॥ रंग रं
गीली सहचरि संग लियें हाथ नि फूल
गुलाब छरी॥ टेक॥ एक ओर कौ नैं म
न मोहन तिन की सखी तितिओर क
री॥ रमकि रमकि उप कैर न लियें क
र झमकि झमकि आई सबरी॥ ॥ उ
डि गुलाल अरुन भयो अंबर पिच
कारि निकालागी झरी॥ बहो खेलत रसरे
ल पेल कौ सुधि हू की जहौं सुधि बिसरी॥
॥ डफ हिं बजावत गावत नाचत रिगारि
धमारिन धूंम परी॥ नओ हैं बिपिन सबरा
ग रंगमय कौतिक बरन्यौं जातिन री॥ ३॥

उत्साग ॥चाचरि॥ इकताला॥ प्यामनवारे मोनसौं
६६ मिलिचाचरिखेलौरी॥ को उरहै नअके
लियहेलीसुनौंसबहेलोसी॥ चोवा
चंदन अरगजा लेरंग मेंरलौरी॥ और अबी
र गुलाल उड़ेबूका बंदनमेलौरी॥ हो
य निसंक सुटंकटरौ जिनिजोंनिअवेलौ
री॥ छैलकेफैलकी सैलसवैमोईआज
^मनकी उजेलोरी॥ वकुदिनकौरंलीनलौ
नोंतिसकेलौरी॥ श्रीहरिप्रियाप्रताप
^उ नैंदुखपायनिपेलौरी॥ उठीमृग उ
रअलवेलीकैंमुखलेपनमिसिऔंनि
अरी॥ श्रीहरिप्रिया निसंक अंकनरि
ली नीं योंनसजीवनिजरी॥ दोहा
॥चढ़ेचौरी तोसी निकके मंडलम धसुधं
ग॥ देखौ नटवरनस हरि करतमो
हनीसंग॥ इकताला॥ देखौन
टवरनस करतमनमोहन॥ थेई हेरेहा ६६

रे थेई थेई मुखबोलैं॥ ज्यौं ज्यौं प्रियापुलका
रतत्यौंत्यौंवाढतपुलकअतोलैं॥ टेक॥
होरीरसबोरीसब गोरी जोरी चंऊँदिसडो
लैं॥ गावतगीतबजावतवाजेसाजेसुर
न अमोलैं॥ नाग्रिदां तागिदीदित्यां थु
ग दां थु ग्रिदां ग्रिदां दद दद अतिगति
खोलैं॥ चरनधरनमनहरनमटकक्री ^सुवच ट
लीचरिवलोलैं॥ री फि प्रिया पौंछत
श्रमवनकनलै निजनीलनिचोलैं॥ श्री
हरिप्रियानिरखत इकटक दियें कहत
होहोरीहोलैं॥ अनुरागनिधमना
गामभ्यास॥ दोहा॥ रंगरंगीलीआदि
दै॥ मिलिसबसखीसहेलि॥ आईखिलो
बनरंगनरी॥ रसहोरी की केलि॥ पद
॥ इकताला॥ रसहोरीखिलोंवनआईरंगी
लीरंगनरी॥ लियेंकलकंछ्याद्रिसुहाई रं
गीलीरंगनरी॥ रसहोरीखिलोंवनआ
ईसुदेवीरंगनरी॥ लियेंकवराआदिसु

उत्सा० हांई रंगीली रँग नरी ॥२॥ रस होरी खिलोंव
६७ नआंई ललिता रँग नरी ॥ लियें रत्नप्रभा
दि सुहांई रंगीली रँग नरी ॥३॥ रस होरी
खिलोंवन आंई विसाखा रँग नरी ॥ लि
यें माधवि आदि सुहांई रंगीली रँग नरी
॥४॥ रस होरी खिलोंवन आंई चंपलति
का रँग नरी ॥ लियें मृगनैंन्या दि सुहांई रं
२ग गीली रँग नरी ॥५॥ रस होरी खिलोंवन आं
ई चित्रा रँग नरी ॥ लियें तिलकनि आदि
सुहांई रंगीली रँग नरी ॥६॥ रस होरी खि
लोंवन आंई तुंगविद्या रँग नरी ॥ लियें
मंजुमेधा दि सुहांई रंगीली रँग नरी ॥७॥
रस होरी खिलोंवन आंई इंदुलेखा रँग न
री ॥ लियें तुंगभद्रादि सुहांई रंगीली रँग न
री ॥८॥ सखी एसब आंई सुहांई वनी ठनी
रँग नरी ॥ अपअपनी सखी संग लांई रं
गीली रँग नरी ॥९॥ करसों जनि खेलकी
साजैं वली मिलि रँग नरी ॥ एक एकनैं अ

६८

भिक विराजैं रंगीली रँग नरी ॥१०॥ बजाअ
नंत निवाजें वजों वैं अनूपम रँग नरी ॥
डफ मैं उपजैं उपजों वैं रंगीली रँग नरी ॥
॥११॥ गुंन गांवहि-वो गुनैं चाड चढैं चित रँ
ग नरी ॥ लडीला डलडन कैं लाड रंगीली
रँग नरी ॥१२॥ जब लालन कौं लियें घेरि
उमंग नि रँग नरी ॥ रंग होहो होहो टेरि रं
गीली रँग नरी ॥१३॥ लव उठैं सैंना रिसैं ना
रि निज निज रँग नरी ॥ लई सैंन निमैं सन
कारि रंगीली रँग नरी ॥१४॥ स्यौ खेल म
हा रस रेलसहेलनि रँग नरी ॥ डुडुं ओर
नतैं नई पेल रंगीली रँग नरी ॥१५॥ पिच
कार निधार निमारैं निहारैं रँग नरी ॥ नन
सारनि ओटस हारैं रंगीली रँग नरी ॥१६
॥ रँग रंग [illegible] लैं उडावैं रँग नरी
॥ बूका वंदन चैन वालैं रंगीली रँग न
री ॥१७॥ डरिकैं मुरि जैं नरां बैं बचावैं रँग
नरी ॥ उलटांवनि चितैं चुरावैं रंगीली

उत्सा

६८

रँग भरी ॥ ११ ॥ प्रिया लै कर कन्न क
कटोरी केसरि रँग भरी ॥ १२ ॥ छल सौं पिय कै
सिर ढोरी रंगीली रँग भरी ॥ १३ ॥ दै दै तारी
हसी सब वा मैं कहैं मुख रँग भरी ॥ आजु
भोरे किये घन स्यां मैं रंगीली रँग भरी ॥ १४
॥ निज दाय हि पाय चोवा पिचकाई लै रँ
ग भरी ॥ अहनै अहनै पिय जाइ रंगीली
रँग भरी ॥ १५ ॥ हसी भाँवते जी रवकी भां
भों हो हो कहि रँग भरी ॥ भये आज हसा
चे स्री स्यां मों रंगीली रँग भरी ॥ १६ ॥ सची
चा चरि खेल सुहायौ खिलार नि रँग भरी
॥ उर मैं अति मोद बढायौ रंगीली रँग भ
री ॥ १७ ॥ चाचरि ॥ चलत तिताला ॥ आ
वौ आवौ री सकल सहेलि अति रस चा
चरि खेलहीं ॥

पि
लि अप अपनी अलबेलि अति रस चा
चरि खेलहीं ॥ १ ॥ उमसब गुन गरब

६८

गहेलि अति रस चाचरि खेलहीं ॥ क
रि ल्यौ री ल्यौ कल कैलि अति रस चा
चरि खेलहीं ॥ २ ॥ रँग देवी सुदेवी जू
आवौ ॥ ललिता जू विसाखा जू आवौ ॥
३ ॥ चंपलता चित्रा जू आवौ ॥ तुंगवि
द्या इंदुलेखा जू आवौ ॥ अति० ॥ ४ ॥
केसरि कौ नीर करावौ ॥ जा मैं विवि
धि सुगंध धरावौ ॥ ५ ॥ कंचन पिचका
री भरावौ ॥ देखैं कौन कौ कौन हरावौ ॥
अति रस ग ॥ ६ ॥ बहु बरन अबीर गु
लाला ॥ भरि भरि कर कंचन थाला ॥
७ ॥ करौ मार परस पर वाला ॥ ज्यौं
बाढै रँग बिसाला ॥ अति० ॥ ८ ॥ एक
बेस कै बसन बनावौ ॥ दो ऊ दल बी
चि रूपावौ ॥ ९ ॥ करि करि उठा व
नीधावौ ॥ जाहि जीति निसांन बजा
वौ ॥ अति० ॥ १० ॥ उरकौ अनिलाष

उत्सा० पुरीजे॥प्यारसकौचसकौलीजे॥[illegible]
६९ ॥अपनअपनौछैलनवलकौजे॥श्री
हरिप्रियाकौसुखदाजे॥अतिसाउ
प॥पेलिपेलिउतहिंकरिआवैंसजो
रनिरंगभरी॥ठेलिठेलिइतहिंकरि
जोवैंरंगीलीरंगभरी॥[illegible]॥रंगरंगब
रखाबरखावैंसिहांवैंरंगभरी॥नव
खासिनमारमबाचैंरंगीलीरंगभरी॥
३७॥कैंकैंअपनैंअपनैंटोलउठां
वनिरंगभरी॥कियैंनैलसेलदोउ
गोलरंगीलीरंगभरी॥[illegible]॥गहिश्री
नमकौपटपीतनीलपटरंगभरी॥
दईगांठउराससजीतिरंगीलीरंग
भरी॥[illegible]॥देखिदेखिहियैंकुलसां
वैंकुलासनिरंगभरी॥मिलिझूम
कचैतबगावैंरंगीलीरंगभरी॥[illegible]
॥चैतबझूमका॥इकताले॥आवौ ६९

आवौरीमिलिगावौरंगीलौझूमका॥दो
उलाललनकौडुलरावौरंगीलौझूमका॥
[illegible]॥यहलौझूमकजाहीकौजाकैमन
मोहन॥हजौझूमकताहीकौताहिश्यां श्यामं
नप्रियाबसकीनरंगीलौझूमका॥४२
॥गतिराचौझूमका॥मतिराचौझूमका
॥अतिराचौझूमका॥तीजौझूमकजा
हीकौजेगावतजुगलसुहाग॥चौथौ
झूमकताहीकौतामैंकेलिरस्यौअनु
रागरंगीलौझूमका॥[illegible]॥मनभायौ॥
झूमका॥सुखदायौझूमका।हेसुह
यौझूमका॥नेहमिलेंमिरहीमाधुरी
पंचमझूमकझूमि॥अवलोकनश्री
हरिप्रियेएआईहैऊंमि रंगीलौझू ऊंमि
मका॥हेसुंदरझूमका।हेमनोहर
झूमका।हेचरौबरझूमका॥४४॥इ

उत्सा.
७०

हिंडोलनि झूंमझूमाय सुझूम करें रंगभ
री॥ सिंघासनन पर पधराय रंगीली रँग
भरी॥४४॥ करतारी देदै नाचै चहुँ दि
सि रँगभरी॥ करैं मनके मनोरथ सा।
चैं रंगीली रँगभरी॥४६॥ कोउ नैंननि
सौं हियैं लगावैं रँगभरी॥ कोउ नैं
नन मांहि बसावैं रंगीली रँगभरी॥४७॥
कोउ नैंनन कौ फल लेखैं अलेखैं रँग
भरी॥ कोउ नैंनन कौ सुख देखैं रंगी।
ली रँगभरी॥४८॥ कोउ उर अंनिलाख
पुरावैं प्रमोद नि रँगभरी॥ गावैं चैतव
गारि सुहावैं रंगीली रँगभरी॥४९॥ चैत
व गारि॥ चौताल तिताल॥ वृंदावन सह
ज सुहावनौं॥ जहां सहज सदा हरिमा
रीजू॥ स्वाति बूंद नित बरसहीं जहां॥
आनंदघन पिय प्यारीजू॥५०॥ बोलि ७०

बोलि पपीहा पीउ पीउ रसगटकलै॥ र
सगटकलै॥ तेरेई नाग सुहाग सौं। यह
वेलक अंसुरवे आईजू॥ तनकी तृषा
बुझाय लै मति मांनैं मनतृपताईजू॥
५१॥ बोलि बोलि पपीहा पीउ पीउ रस
गटकलै। रसगटकलै॥ सीपन मैं मु।
कता जमैं अरु। कदली मांहि कपूर जू
॥ सजन हियैं सुख ऊपजैं अरु। सोतै रैं
जीव निसूर जू॥५२॥ बोलि बोलि पपी
हा पीउ पीउ रसगटकलै। रसगटक
लै॥ दृगन मैं चंदन बडौ अरु। जामैं।
बास सुबासौ जू। पद तिन मैं तू है बडौ जा
कैं श्री हरिप्रिया आसौ जू॥५३॥ बोलि
बोलि पपीहा पीउ पीउ रसगटकलै। र
सगटकलै॥ गारी॥ दुकताल॥ गारी जि
नि द्यौ री इक्कै। एे अलबेले लडीले। कहा

उत्सा० नयौ जो कारे हैं। एरी ए ए अलकलडी
७१ ले॥ मनके गारे हैं महा ए०॥ गोरी कै गुँ
नगारे हैं। एरी ए ए अलकलडीले॥४॥
॥ कुटिल कहो जिनि री कोऊ ए अ
लक०। कहा नयौ जो अनंगी है एरी ए०
॥ निपट हि सरल सुभाव हैं ए अलक०
॥ स्यो मानहू केसंगी हैं एरी ए०॥५॥ इ
निसौं आन कछु जिनि कहौ ए अल
क०॥ प्यारे प्रान समान हैं। एरी ए ए अ
लकलडीलो प्यारे नयै तौ कहा नयौ
ए अलक०॥ श्रीहरिप्रिया इनि दोन
हैं एरी ए ए अलक०॥५६॥ नई मुदि
त महामत वारस हच्चरि रँगभरी॥ क
छु रहि न सरीर संभार रंगीली रँगभरी
॥५७॥ री झरी ऊ दौ ऊ सु कुँवार दरसी
ठि रँगभरी॥ निज निज रुचि कै अनु ७१

मार रंगीली रँगभरी॥५८॥ झायै आय
सरोवर संग सवै मिलि रँगभरी॥ सजे
अनरन अंवर अंग रंगीली रँगभरी॥
५९॥ वांहन जोटी किये दोउ लाल चले
गलि रँगभरी॥ सनमानी सबै सखी जा
ल रंगीली रँगभरी॥६०॥ यह होरी रसी
ली की केलि रसीली रँगभरी॥ बसौ॥
श्रीहरिप्रिया हियै हेलि रंगीली रँगभ
री॥६१॥१७॥ डोल॥ ऊंजनि ऊंजनि
डोलहीं। दियैं भुजा अंकमाल॥ मूर
ति प्रेम सिंगार की। रंगभीनैं दोउ ला
ल॥१॥ पद॥ इकताले॥ रंगीली ला
डिली रंगभीनौं मोहन लाल॥ मूरति
प्रेम सिंगार की सो है सहज स्वरूप र
साल॥ टेक॥ ऊंजनि ऊंजनि डोलहीं
हो मत्त मराल की चाल॥ बात कहत मुस
कात जात दोऊ दियैं भुजा अंकमाल॥

उत्सा० ॥३॥ गोरी कंचन वेलि सी हो जोरी स्यांम तन
७२ माल ॥ वस कुंनिरंतर हरि प्रिया हिय मैं
आनंद रूप रसाल ॥ स्थाई ॥ अनुराग
नि आनंद सिंधु मधि मानल ॥ दोहा ॥ नै
५२ सिय संग सुअंग नां ॥ अति रस सी रसा
ल ॥ अति रस होरी खेल हीं ॥ अति रस
भीनैं लाल ॥१॥ पद ॥ ललित लाल ॥
अति रस भीनैं दोउ लाल खेलैं अति रस
भीनी होरी हो ॥ नैसिय संग सुअंग अंग
नां अति अति रस मैं बौरी हो ॥ टेक ॥
अति ॥ एसो दांपति श्री राधे एकै स्यां
म घन सो हैं जू ॥ जलतरंग ज्यौं मिलि र
हे एपर तनपर तवि छूटो हैं जू ॥२॥ रति
आई सुहाई फागु की ॥ अति० ॥ आई
उमंडि उमंडि सु घटा सी के उसांवरि
के उ गोरी हो ॥ अति रस रंगन की बरषा
बरषा वैं मिलि दुहुँ [illegible] हो ॥३॥ अति ७२

ए दोऊ मन मोहनैं अरु सोहनैं सहज स
नेही जू ॥ जोरी आदि अनादि की एक
प्रांन द्वै देही जू ॥४॥ रति आई सुहाई फा
गु की ॥ अति ॥ बाजैं चंग मुरव चंग बां
सुरी बीन मृदंग उपंगा हो ॥ आवज अम
न ऊंडली मकु वरि सुर की उठत तरं
गा हो ॥५॥ अति ॥ प्यारी जू कौ मुख चं
द्रमां प्रीतम के नैंन चकोरा जू ॥ विन
देखैं कल नां परैं एरस के महा कठोरा
जू ॥६॥ रति आई सुहाई फागु की ॥ अ
ति ॥ गावत अति मन भावत मुख तैं हो
ली वचन उचारैं हो ॥ कोलाहल रह्यौ
छाय विपन मैं कहत न लहत अपारैं
हो ॥७॥ अति० ॥ प्यारी जू कैं चैन की ल
ना अरु प्रीतम स्यांम तमाला जू ॥ विन
आधार न रहि सकैं एपरे हैं प्रेम के पाला
जू ॥८॥ रति आई सुहाई फागु की ॥ अ
ति ॥ रंग रंग पिचकारनि धार निसारनि

उत्सा० ओटसहारैं हो॥सोरबोरजये अंगसब
७३ निकैलौ उनैंकनकौ उहारैं हो॥३॥अ
ति०॥ पान मयान कपूर हैं प्यारी चुहट
नी सुरंगी जू॥ इनकौ बोनिकबनि रसौ
ए सदा सरबेदा संगी जू॥४॥ रति आ
ई सुहाई फागु की॥ अति०॥ अबीर गु
लाल उडाय अबनि अंबर आछादि
त कीनैं हो॥ प्यारी जू पकरि पान प्रीत
मकौं नरि अंकवारी लीनैं हो॥५॥ अति
॥ वदन कमल प्यारी जू कौ पियमन म
धुकर महा मोनी जू॥ निधि कौ लालच
क्यौं छुटै एरसिया रस के लोभी जू॥६॥र
॥रति आई सुहाई फागु की॥ अति०॥
कहैं सहचरि तुम सुनौं हो स्यांम घनत
बन लछूटन पावौ हो॥ कै प्यारी जू कैं
पायन लागौ कै तुम हाहा खावौ हो॥१
७॥ अति०॥ अंबर बांनी को ह्यली अरु
नारि बांनी वेली जू॥ स्यांमर बांनी सु ७३

दरीया सुखैं बांनी सहेली जू॥८॥ रति
आई सुहाई फागु की॥ अति०॥ बोले मृदु
मुसक्याय लाल मन मुदित मनोहर बांनी
हो॥ हाहा खाय रु पाय परैं सो इती गाढ
कहा मांनी हो॥९॥ अति०॥ औं सुहाग
सो नैंन नैं अरु औं चुंबक नैं लो हैं जू॥
यौं इनि दोउन कैं बनैं एबिरदन केसे दो
हैं जू॥१०॥ रति आई सुहाई फागु की॥
अति०॥ श्री हरिप्रिया हित हिलन मिल
नु कौ देखि देखि सुख नारी हो॥
दै दै तारी दुहुँ दिस नैं मिलि गांवन लागी
गारी हो॥११॥ अति०॥ लसौ बसौ नैं नै नां
न मैं निति नित्य किसोर किसोरी जू॥ हे
जेन कौ जीवनि जरी श्री हरिप्रिया जू
की जोरी जू॥१२॥ रति आई सुहाई फागु
की॥ अति०॥१३॥ तथा अनुराग निधि स्वना
गामध्या नास॥ दोहा॥ वृंदावन कलकुं
ज मैं। मंजुल केलि रसाल॥ रसमय होरी

उत्सा० खेलहीं नित्य विहारी लाल ॥११॥ पद ॥
७४ इकताला ॥ रसमय होरी खेलहीं जै जै श्री
नित्य विहारी लाल ॥ श्री वृंदावन सुख
पुंज मैं मंजु कमल कल कुंज रसाल ॥ टे
क ॥ अनग सुरंग सुहां बनी अवनी अ
ति कमनीय अनूप ॥ रतु मनि मंडित
मन हरै दिव्य अखंडित सहज स्वरू
प ॥१॥ चंपक मधु कुंद कैतकी कोम
ल कुंबलय कुंदलि कदंब ॥ ललित
लता कुल संकुला लपटि लपटि रहि
रस अवलंब ॥२॥ मधुकर सरोवर रस
न सौं अमल कमल जहां रहे रस झू
मि ॥ मत्त मुदित मंडरां वहीं मधु लिह
घन मकरंदन घूंमि ॥३॥ खग मृग गन
न वन क्रीडहीं अप अपनैं मिलि सह
ज सुभाय ॥ त्रिविधि पवन हितर बन
कैं गवन करत रसन बनर माय ॥४॥
अंग अंग सहचरि रंग नरी रंगन रेन ७४

कैं रहि रंग रागि ॥ सकल खेल की मौज
लै पुलकि पुलकि रस प्रेम हिं पागि ॥
५॥ रंग रंग पिचकारी दई स्यांम स्यांमां भरी
जु के हाथ ॥ नकित कित नैनन छिर
क हीं सोर बोर कर लीं नैं साथ ॥६॥ सा
ख जबादि रुकुंम कुंमां मलयागर स्व
नसार मिलाय ॥ सरस सुगंध नि औ र
गजा उमंगि उमंगि अंग दियै लगाय
॥७॥ मोहन मन के भांवते दोऊ सुंदर
वरनवल किसोर ॥ हरखि हरखि
सुख वरखहीं निरखि निरखि निज
निज प्रिय ओर ॥८॥ विविधि भांति
बाजे बजैं एक संच सुर तांन बंधान
॥ नूपुर कंकन किंकनी वलमा वलि
कल सरस सुगांन ॥९॥ अबीर गुलाल उ
डांवहीं होहो हो हो वचन उचारि ॥ धूर
अंबर मैं अरुन ई फेलि गई वै नौविस

उत्सा ताहि॥८०॥ केलिकलावलिसहच
७५ रीसमुझायेदोऊसुकुंवार॥रंगरच्यौ
वकुरंगमैंअवकोजैवलिफूलविहा
र॥८१॥सुन्नगसिंघासननसोहनौंपद्य
२ग रामनिफूलकसुहाय॥मदनेसदन
कैचौकमैंचारुमनीजहौंदियोवि
छीय॥८२॥जोंनिसखिनकेजीयकी
अतिप्रवीनसिरमौरसुजान॥तहां
मिलिवैठेदोउललालैलैअधरसु
धारसपान॥८३॥वरनेवरनेवनिव
निरहेदहदहेमहुलमनोहरफूल॥
खेलतमैंअतिसुखवढ्यौनवजोव
नसुंदरसमतूल॥८४॥औलकलडी
लेलाडिलेकमलनकमलमचाईमा
र॥८५॥विअनुरागसिंगारकीपरीप्रेम
मधिफूलकअपार॥८६॥इततैंऊं ७५
दकलीवलीमधुकसुमनसौंकरन

कलोल॥इततैंअंबुजरसनसौंउ
घरयौकोमलकलितकपोल॥८८॥
मालतिमिलिचलिमोगरैंजुहीसेव
तीसदासुहाग॥वरकरनांसौंकेत
कीविलसतिफूलिफालिकौफाग
॥८९॥वहसैंवहसनिविलिसीमौ
विविधिभांतिफूलनकौखेल॥नि
रिखिरिफूलैंफूलसौंनईपरसपरपे
लापेल॥९०॥अपितजोंनिनिजसं
हचरीनैंकिनिहोररावेविरमाय॥
लैकरफूलनवीजनांआरतमारप
रमसुखदाय॥९१॥कोउसरवीपाव
पलोटहींकोउसखिअंजुजवांपतिवि
नवाहि॥समनेनईसवसिथलई॥
फिरिखेलौवलिजांउंउमाहि॥९२
॥जेतकीतहांलुवसहचरीसजिस
जिलीनीसौंजसंवारि॥खेलमचायो

उत्सा॰ दीसरैं दोउ सुभट फिरि उठे सँभारि
७६ ॥३२॥ अंबर मैं घन दामिनी बरसत
रस आनँद आह्लाद ॥ थल अरुवि
थल नरेस बैं एकमेक करै तजि म
रजाद ॥४४॥ चहल पहल रँग महल
मैं दोउ अहल अलबेले लाल ॥ त
ल त पर तहां निज टहै मैं श्री हरि प्रिया
प्रवीनी बाल ॥४५॥ दोहा ॥ लडहो
री मिलि खेलहीं । दोउ लडलडेला
ल ॥ लडलडी कुंज सुदेस मैं संगल
डलडी बाल ॥४६॥ पद ॥ इकताला ॥
लडहोरी मिलि खेलहीं । लडलड
कंतारी ॥ लडलडी कुंज सुदेस ला
डलडेलि डीलडलडकंतारी ॥ मद
न मदनि मातेमहा ॥ लडलडकंतारी ॥
॥ मिथुन मनोरम बेस ॥ लाडलडे लि
डीलडलडकं तारी ॥१॥ नैसिय सह ७६

चरि संग की लड ॥२॥ लडीलाड अँग अं
ग लाड ॥३॥ रची है केलि रति सेलि की
लड ॥४॥ वद्यौ प्रेम रस पर रंग लाड ॥५॥
चितै चौं पच्या है दोऊ लड ॥६॥ चारुम
ती कैं चोज ला ॥७॥ अति आदर अ
चवाइ कैं ल ॥८॥ अधरसुधा अँचोजेला
॥९॥ फूल फवे अँग अंग मैं ल ॥१०॥ अ
नेन जे तन अनुकूले ला ॥११॥ आता अ
तु वर्त्ते निसरवी ॥१२॥ देखि दियें हितुह
लला ॥१३॥ कुल कै सरि कै चहि बचे
ल ॥१४॥ करकरसनरि पिचकारिला ॥१५॥
छिरकत छैल छबीली बिनरे ला ॥१६॥ निजनिज
नेनहिं निहारिला ॥१७॥ अति रति वर
बावरम हैं लम ॥१८॥ पुष्पन पुष्पन के बंधला ॥
॥१९॥ चोवा चंदन कुंमकुंमा लं ॥२०॥ जरिव
कर्दम सौ गंधला ॥२१॥ चहल पहल
कैं दल दलें ल ॥२२॥ सकतन चरनउठ

उत्सा॰ मल्हा॰ ॥३॥ मत्त रे नैरि रिआविले लं॰
११ ॥ जक्रिअर्त्कि रहे सुभायला ॥४
॥ मोहतत्री गत्री गरग मगेल ॥ जग॰
मगे जोवन जोरला ॥ मोहत मन मुख
मोक्षरी ल ॥ सुख बाढ्रौ नहिं थोर
४७ति ला॰ ॥५॥ दम कतिं दसनावलीलं॰
॥ ल सनि हस निरेंग रेलि ला ॥ श्री
लकरलकु उरपर रहीलं ॥ बिनहि
फुलेलउ लेलि लो॰ ॥६॥ लहंगा क
टिअनुसलसैं ल ॥ लललित लेका॰
सौलाति ला ॥ लटक्कि लतालेलि
नौवली लं ॥ लिये पिये अउरागि
॥ ला॰ ॥७॥ चाव रिमाचो मैंन की लं॰
॥ हो होत्ति मुखवो लिला ॥ सब गुंन
लेके अचो गरेल ॥ तन मन अंघति
वोरिलिला ॥८॥ श्री बीरगुलाल उ
डाव तिल ॥ आरसौ छाय नन लाल॰ ११

ला॰ ॥ सूऊन सां ऊस बोरकी लं ॥ परे
प्रेम कै जो लला॰ ॥९॥ बाजे बाजै अन
गनील ॥ केलकि केनि मुरलीरला॰
॥ अमृत कुंडली मकु वेरीलं ॥ आव
जे सुरगंभीर ला॰ ॥१०॥ चलत चरचरी
चोलमैल ॥ घरि वढि होत नसंचला॰
॥ विविविचिवी नांवलकहीलं ॥ गर
वरो महंसं चला॰ ॥११॥ निर्त्तत मोरम॰
रोर सौलं ॥ छेके छेवी लेछौ कला॰ ॥
कौतिक लागे कौतिकी लं ॥ करता
रिनु कीना कला॰ ॥१२॥ खेलत खेल
तरंग रसौलं ॥ केसौ सहचरि समु
झाइला॰ ॥ तन केल नके बलि बिरचि
येलं ॥ जौ भ्रमसकल बिलाइला॰ ॥
१३॥ बौहौ विधि फगवा फूल के लं॥
दिये हिये हिलि हेजला॰ ॥ चांपि तुप
रिश्री हरिप्रिया लं ॥ पोढाये सुख सेज

उत्सा॰ ला॰॥ ॥ ॥ सोहा॥ हां हां हो हो लैंव
७८ लैं॥ केहलन परसपर वां म॥ सहज स
जन सुख बिलसहीं। जोरी गोरी स्याम
॥११॥ पद॥ इकताल॥ सहज सजेन सु
ख बिलसहीं। सुनि सजनी ए। एरी ए स
हज सुनि सजनी ए जोरी गोरी स्याम॰
हां हां हो हो लैं। नवल निकुंज विराज
हीं सुनि सजनी ए। एरी ए सहज सुनि स
५ हो जनी ए। मूरति मोहन कांम हां हो हो
लैं॥१॥ अतिरस रूप अचागरे सुनि
॰॥ए॰॥ केके छबीले छैल हां। विवि
धि विनोद बिहार हीं सुनि॰॥ए॥
सु दिजोबन कैं फैल हां॥२॥ उमगि
मिले अनुराग सौं सुनि॰॥ए॰॥ लगे
फाग कैं लाग हां। कर कंचन की पिच
करी सुनि॥ए॥ नरी केसरि बढ़ना॰
ग हां॥३॥ रूप्मा गर मलया गरी सुनि॰॥ए॰

घोरि घोरि घनसार हां॥ छिरकत छलसौं
छबि नेरे सुनि॰॥ए॥ अतिसुगंधन हिं
पार हां॥४॥ राजत दो उरसरगम मे सुनि
॰॥ए॰॥ सोरबो रसने ए अंग हां॥ अरचे
अतर अमोल सौं सुनि॰॥ए॥ सगबगे
संग सुरंग हां॥५॥ लटकि चलनि अ
तिसोहनी सुनि॰॥ए॥ मोहनि मत्त॰
मराल हां। बदन चंद चित चोर हीं सुनि
॰॥ए॰॥ चितवनि नैंन बिसाल हां॥६॥ घु
घरारी अलकावली सुनि॰॥ए॥ फ
लमल विमल विलोल हां॥ हसत ल
सत दसनावली सुनि॰॥ए॥ रंगीरंग तें
बोल हां॥७॥ धुंधरि अरुन अबीर की
सुनि॰॥ए॥ मिलि गुलाल गात्यो गैंन हां
॥८॥ कर कंजनि की चलबली सुनि॰॥
ए॥ कहि आवत नहिं बैंन हां॥ सासी॰
७८ सुनग कुलेल की सुनि॰॥ए॥ ढबसौं

उत्स॰ दईदरकायहो ॥९॥ एकबरनन्नयेनरन
७६ मैं सुनि ॥९॥ ननन पिछोनें जायहो ॥
घ्रादेखि झुंमन की दिव्यता सुनि ॥९॥
उर आनंदनसमायहो ॥ मंगलविम
लीगांवहीसुनि ॥९॥ झुंमक झुंमरू
झुंमायहो ॥१०॥ खेलतहोरी । झुंवरि
किसोरी । झुंमक झुंमरू झोरी । झुंमरू झुंमरी झुं
मरू झुंमरू ॥ अंगरंगबोरी । जोवननोरी । झुं
मकि झकोरी ॥ झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥
११ ॥ अतिरतिपागी । पियउरलागी । स
हजसुहागी । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥
अतिअनुरागी । पदमपरागी । जनि छि
नखागी । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥१२॥
बोलतहंवे । सुरलेलंबे । सखीकदंवे ।
झुंमरू झुंमरू झुंमरू झुंमरू ॥१३॥ अधरनबि
बो । अबवेत अंबे । लागिनितंबे । झुंमरू
झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥१३॥ कटिकीको ७६

रैं । नीवीडोरैं । बंधनछोरैं । झुंमरू झुंमरी ।
झुंमरू झुंमरू ॥ मदनमरोरैं । बदननिहो
रैं । रतिरसठोरैं । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू
॥१४॥ जलजरसालैं । रतिप्रतिपालैं
। अतिगतिचालैं । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुं
मरू ॥ लटबनलालैं । नैनविसालैं । लैलै
गुलालैं । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥१५॥
चटपटचटकैं । लटपटलटकैं । झट
पटझटकैं । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥
अंगअंगअटकैं । उमंगअघटकैं ।
रसगटगटकैं । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू
॥१६॥ रटतबिहारी । मैंबलिहारी । लोउ
तिहारी । झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥ जीय
जियारी । जगउजियारी । श्रीहरिप्यारी
झुंमरू झुंमरी झुंमरू झुंमरू ॥१७॥ यहरसउ
छौनहैंमहासुनि ॥९॥ सुलोनरूपा

अन्सा। मनायहो॥श्रीहरिप्रियाकीकेलि
८० नीसुनि॥१०॥सवदिनसहजसुना
यहोहोहोहोलैं॥१२॥अनुराग
निरंगी॥११॥मध्यानास॥होहो॥सह
जरंगीलीरंगभरी।रंगभरेसंगरंग॥
भीनीहोरीखेलहो।नित्यनवीनीअं
ग॥१॥पदलाडकैताल॥होमेरीसहज
रंगीलीरंगभरी।खेलैरंगभरेसंगहो
रीहो॥नित्यअनंगअंगरंगभीनी।
नित्यनवीनकिसोरीहो॥टेक॥चंद
नचारुसलौनेंदृग।अनहौनेंअति
अनियारेहो॥अंजनविनखंजन
मदगंजनरसरंजनरतनारेहो॥२॥
नासावेसरिजलजमनीकी।नीकीव
नकवनीकीहो॥मनुपियमनपीव
नपीयूषहिं।लरफतकनकतनी। ८०

कीहो॥३॥गोलकपोलजुगलअति
गोरे॥मुखनवोलरसलागीहो॥मनुकं
चनसंपुटमधिलै।अनुरागनसोंअ
नुरागीहो॥४॥चिवुकचितैंचितचु
भौरहतसखि।कहतकसौनहिंश्री
वैंहो॥श्रीनतरौंनसलौननकी।उप
मांलगिकौंनलगावैंहो॥५॥सुमन
सनेहरलीरलकैं।फूलकैंअलकैं
अलवेलीहो॥मनुमाधुरिधरुवा।
ढलकैंसखि।ललकैलखिललवे।
लीहो॥६॥कुलगजरायजरयोंअति
सोहैं।ललितलालछविछाजीहो॥
मनकुंभागमनिज्योलवालकैं।वा
हरिआंनिविराजीहो॥७॥सारीसु
हीकिनारीकोरनि।कोमकेलिरस
वोरीहो॥कंचुकिकेसा ल
सीअतलसगोरैंअंगरववसोंदीहो॥

उत्सा॰ ॥७॥ कटि अति छीन लगी न लगी
८१ सी। लफति उरोजन भारहैं हो॥ डोरडो।
री जकरी सकरी॥ पकरी लहँगा लह
कारैं हो॥८॥ चरन करन आभरन ख
रन मन। हरन बरन तरुनी कैं हो॥ म
नऊँ बेलि अलबेलि जे लिर हि। झा
लि फूलि फरुनी कैं हो॥ नैसियसंग
सहेली। निज निज। सजि सजि सौं न नि
सरसैं हो॥ मन भाये रंग अनेग उमंग
नि। अंग अँगनि मैं बरसैं हो॥९॥ श्री
तिनरा पिछ्वकारी प्यारी॥ पिय पर डारी
आछैं हो॥ हो हो हो कहि लटक चाल
सौं। लाल गहे पग पाछैं हो॥१०॥ गिरि
[illegible]म निछिरकत छबि सों। सो गंधि
क अलर अमोलैं हो॥ अरुन बरन अ
नुराग गुलालैं मुरि हसि पिय मुख पो
लैं हो॥११॥ चर चित चोबा चौंप चा ८१

य कैं चंद मुखी चटकीली हो॥ सुख
सौं धैं सों न तमन मांनत मांन मतीमट
कीली हो॥१२॥ महल पहल नई मद
न महल मैं अहलन को उअहूटे हो
॥ टूटे हार बार उर छूटे कोटि सुरत सु
ख लूटे हो॥१३॥ विविधि भांति बाज
न की बजनी सुनि सुनि अवनन सज
नी हो॥ रुचि तरंग बाढी अति गाढी अं
ग उतंग उरजनी हो॥१४॥ ऊंच परस
न परसन मिलि मोरी रोरी लगनि लगा
ई हो॥ दाय पाय पिय ले अदले बदले
मैं बाल जगाई हो॥१५॥ जै जै श्री ब्रंदाव
न मंजुल कुंज कमल के बासी हो॥ जै
सैं हौं बिलसौ कुल सौ मिलि श्री हरिप्रिया
रसरासी हो॥१६॥ [illegible]॥ दोहा॥ नवल नि
कुंज कुटीर मैं। बिबिधि बिहार बिनो

उत्सा०
८२

दा॥श्रीहरिप्रियमिलिविलसहीं।मां
निमांनिमनमोद॥५॥पद॥इकताल
॥आंनप्रियानवकुंजकुटीरमैंहे
होहोकहिखेलतहोरी॥विविधविं
नोदविहारहारमैंअतिरसभारम
चीढुकुंओरी॥टेक॥नवकुमकु
मकरभरअगरसन।भरिपिचका
रिपरसपरछोरी॥सगवगेअंगरं
गभीनैंनवा।लैगुलाललपटावतरो
री॥१॥छूटतपटआभूषनटूटत॥
सुखलूटतझुकिझोराझोरी॥श्रीह
रिप्रियानित्यनवरंगी।नवलकिसो
रनवीनकिसोरी॥२॥२४॥दोहा॥प
लबिछुरैंनपरैंकलैं।ढरैंरहैंरसढ
र॥सहजसांवरीगोरियह।जोरीप
रमउदार॥१॥पद॥इकताला॥होरी ८२

सहजसांवरीगोरीसोहैंजोरीपरमउ
दारहोरी॥परिरंभनचुंवनआलिंग।
नयेहीसहजेआहारहोरी॥टेक॥हो
रीलाडुलडीकैंलाडलडौपियरहत
सदाआधीनहोरी॥प्यारप्रीतकोओ
रनआंवैंदिनदिननेहनवीनहोरी॥
१॥होरीनिसवासरजांनतनहिंकि
तहूपरेप्रेमकूपारहोरी॥पलबि।
छुरैंनपरैंकलक्यौंहीं।ढरैंरहैंरसढा
रहोरी॥२॥होरीप्यारीकैंअनुरागरं
ग्योपियप्यारीअनुरागहोरी॥भां
नएकद्वैदेहश्रीहरिप्रियाहितजनन
नकैंभागहोरी॥३॥२५॥अनुरागनि।
धिनमुखीमधुमास॥दोहा॥जैहंदा
वनधांमसव।जनमनहरनकांम॥।
सुघरसहेलिनुसंगरंग।बिहरैंस्यांमां
स्यांम॥१॥पद॥तालचंपक॥जैहंदा

उत्सा.
८२

वनधांम॥ अति अभिरांम॥ पूरन म
नकांम॥ रसिक विसरांम॥ वहो ज
हां श्री स्यांमां स्याम होरी खेलहीं॥ ॥
कनक पिचकारी। नरी केसरि न्या
री। परस पर डारी। मचाई रंग रारी। व
हो निपट हो चतुरारी को कंकलां।
निमैं॥ ॥ अबीर गुलाल॥ रुचिर र
साल। भरि न रि थाल॥ सहचरि न्या
ली। वहो लाडिली लालन ऊपर डा
रहीं॥ ॥ उरि मुरि नरनि। बचांव
नि बिचरनि। वितन वितरनि। रस
ठर ठरनि। वहो अंग अंग मिलि रं
ग बाढ्यौ उमंग सौं॥ ॥ सगवगी दे
ह। सुमन सनेह। नहीं छवि छेह। अ
ति हिं फवेह॥ वहो छैल छबीले रंगी
ले विमल विहार रहीं॥ ॥ कमल कम
ल फूले। मिले अनुकूले। सुख सरव ८२

र फूले। अलि दृग फूले। वहो निरखि
निरखि सखियनि कौ हियौ सिरांव
हीं॥ ॥ गरबीले लाल लहिये अंकमा
ल। अद्भुत मराल। कौ है गजचाल। व
हो मंद मंद मधुर स्वर नूपुर बाजहीं
॥ ॥ सनमुख निहारि। करैं मनुहारि
॥ लखि उनिहारि। लै वलिहारि। वहो
लाल चले लागे हैं दोऊ लालची॥ ॥
पुलक परसपर। दोउ सुंदर वर। अ
मकुंद निकर॥ सोभित सुघर॥ वहो न
रा अनुराग सौं निरखति नाग सौं॥ ॥
जै जै श्री हरिप्रिया भुलगायैं हिय सौं हि
य। जिवायैं सब के जीय॥ अति सुख
दीय। वहो नित प्रति विलसहीं कुं
ज कुटीर मैं॥ ॥ रस॥ दोहा॥ विविधि
कुंज अहंदा विपन। विलसि मनोरथ कै

उत्सा०
८४

लि।सुनऊँसहेलीसोहिलौ।।सवसुख
आजसहेलि।।१।।पद।।नालचपक।।
सहेलीसुनिसोहिलौ।सोहिलौसवसुख
आज।।टेक।।सोहिलौहंदाविपनजा
मैं।विविधिकुंजविलास।।जहांआनं
दरूपनिधिमिलि।पुजवहीमनआ
स।।१।।सोहिलौमकरंदमुख।अरविं
दकौमधुपांन।।पिवतजीवतपीय
पलपल।नौहदैचितनिदांन।।२।।सो
हिलौललितलतालपटिरही।झूमि
झूमितमाल।।मत्तपल्लवफूलफ
लफवि।रहेरूपरसाल।।३।।वदनआ
नंदकंदचंदकि।वनीसोहिलौजोति
।।पौहौंमिपरस्सिपकासदूरन।जगर
जगमगहोति।।४।।मधुरकोमलसर
सुरस।सोहिलौकलितकपोल।।पो

नपोछहिंतोषहीतन।अंगअंगअलोल
।।५।।मंजुजोवनमंजरीरस।नरीसहज।
सुनाय।।रीसौरनसी।सपियलै।धरी।
सोहिलगाय।।६।।सोहिलौसुखविलसि
फूलसत।पियकंदवकीछांहि।चंदे।
चोजमनोजदोऊ।उमंगेअंगनमांहिं
।।७।।सोहिलौसुखसुनगनरूपरारमि
रसिकसिरमौर।।रहेजकिथकिवकि
तचखिलखि।जघनसघनसुठौर।।
८।।सोहिलीरंगनरीरसीलीसुखदसां
करीखौरि।।चलेचौकस्विचतुरमनि
त।उ।कैगईवुधिवौरि।।९।।रतिरवनके
नवनकीअति।वनीसोहिलीगौलि।।पु
रतपगतहंत्रानपियके।गयेगरवा।
गुंनकेलि।।१०।।सुरतिसंदरिसहचरी
स्वीसेजसुमनसुदेस।।तहांसोहनम
दनमोहन।विहरैंसोहिलवेस।।११।।

उत्सा० महामृदुलरस महलमधि।सोहिलौस
८५ रदनिवास॥लगेलालचरहत्तनिसदि
न।करिनिरंतरवास॥१२॥सोहिलौसु
खजम्यौंजेतनैं।रतनजोतिजगाय॥
नवलनेहनिसंकपौढे।अंकसौंअं
कलगाय॥१३॥सोहिलौसुखरम्यौंरा
मनि।रोमप्रतिप्रतिराचि॥जदपि
करतसैंनोगनोगी।मिथुनसुखसौं
जाचि॥१४॥सोहिलौसचिवदतज्यौं
ज्यौं।चढतचौंपअपार॥एकतनम
नविमिलिरहेऊ।विहस्यौंचहतेबि
हार॥१५॥नीलअरुनसुपीतमनिछ
वि।सोहिलीरतिमांनि॥चकितचोरन
येनरेकै।जदपिसबगुंनखांनि॥१६॥
सखिसहेलीसहचरी।मंजरीसुंदरिवे
लि॥अपनैंअपनैंऔरैंकौरैं।रहीसो
हिलझेलि॥१७॥फूलफूलनसौंफबौ ८५

मिलि।सोहिलौसनमांन॥निरखिरख
गमृगथकितनयौ।पगनरिनपाव
तजांन॥१८॥सोहिलौसुखगहरगह
बर।नस्यौभावअनंत॥लहरलैलैला
डुलादत।लडुलडीलडकंत॥१९॥
सोहिलौआस्वादसुख।आनंदमय॥
अहलाद॥उमैंगिउमैंगिउरैंडिदो
ऊ।उस्नरेउनमाद॥२०॥सोहिली
अतिवनीजोवनि।चिमतकारनिवा
ल॥सहजसौहनिमोहनी।पियक
रिलईहियमाल॥२१॥गुंनप्रजागो
रांगिअनुत।सदासोहिलिसोन॥ए
कछिनिटारितसकतिकहौं।लगे
लीअचलोभ॥२२॥कौनकहौंसनि
होसखीजो।वढ्यौउरअनुराग॥औ
नश्रीतममांनईंधनि।आपनौंसोहिल
नाग॥२३॥महाउछवनहनैंउछेन।

उत्सा० सोहिलौ सुखसार॥८॥कअवलोकनि
८६ कृपा करि रहत उर नयौ हार॥२४
॥सोहिलौ श्रीहरिप्रिया कौ।सकल सु
खकौ धांम॥कहत सुनत सराहहीं जो।
पावहीं बिसरांम।।२५॥२५॥दोहा॥
अति की गति सब होइ चुकी।तनधी
र जन धरांहिं॥मेरी जीवनि प्रांन बलि
॥१॥अलि मोहि मिलाहिं॥॥पद॥ति
ताल॥मोहि मिलाय दै री।मेरी जीव
निप्रांन॥मैं बकुतैं करि मांनिहौं।मोप
रतें री अहसांन॥टेक॥तूही तू हिय
की हितू री।तो बिन सरत न काज॥जी
व मेरया जीय की री है सब तोही कौ ला
ज॥१॥कहा करौं कैसैं न रौं री।बिन दे
खें न हितैं न॥न मोहन मुख अवलो
कनकौं।तरसत मेरे नैंन॥२॥अति
की गति सब होइ चुकी री।अब कछु र ८६

ती रही न॥तरफरत रफरा।करत फरफ
रतौ जैसैं जल बिन मीन॥३॥तन न नक
न धीर जे धरैं री॥मन नहि निपट अधीर॥प
लक सखी न हिं परत है मोहि सारखा म
गरि पुचीर॥४॥जित देखौं तित दुख म
ई री।नई दिस बिदिसा मोहि॥आनंद
कंदा चंद कैं बिनि।क्यौं सियराई होहि
॥५॥अंग अंग सिथल लैं न येरी।बुधि बि
कल बेहाल॥रहत न प्रांन के कूर स्यौं ए
बिनि गुंजा गोपाल॥६॥मन अनुसार
नि है तुही री।तो सौं कहा दुराव॥श्रीह
रिप्रिया निहचै लग्यो मेरौ।मन बेचत तो
सौं नाव॥७॥२॥६॥दोहा॥सखली यैं
सन मुख रहैं।जो निस जीव नि मोहि॥
तू मेरी सहचरि हितू।तातैं कहति हौं तो
हि॥पद॥इकताल॥सहेलि मेरौ ला
डुलडी लौ लडाय तौ है जाकैं मेरौ ही ला

उत्सा॰ ८७

३॥ रुषलीयैं सन मुख रहैं मेरैं हित ही
कौ चित चाउ ॥४॥ दिवस कहौं तौ
दिवस हैं री। राति कहौं तौ राति ॥ नांहि
दूजी बात जाकैं एकै प्रीति पनाति ॥५
॥ स्वास ग निग निप गुध रैं री। करि क
रिबौ है मनुहारि। नैंक रुखाई देखि मु
ख पर। पावत पौनी वारि ॥६॥ जो उपजै
उर मैं सखी री। सो पहिलैं ही पाय ॥ प्रग
ट दिखावत देखि सौं मोहि। परम चतु
र मनि राय ॥७॥ तन कहुं छिन कैं लो।
नां परै री। बिन देखें पिय मोहि ॥ तू मेरी
सहचरि हितू है। तातें कहति हौं तोहि
॥८॥ महामधुकर रसलालची री। लैंन कि
तौ ललचाय ॥ कहा कहौं तिहिं समैं
कौ जबरा रखौं अधर मिलाय ॥९॥ क
बहुं सहज मैं करि रही री। प्रनय कोप
जुत मांन ॥ मोहि मनावन कारनैं पि ८७

य। केतौ करत विधांन ॥१०॥ मो मांनैं नैंमं
न हैं री। जनम सफल सिरमौर ॥ मेरैं कुल
न मन तन कहौं। कहुं न हि अवलंब
न और ॥११॥ निपट लसत सहेस खीरी।
आवत मोहि जंभाय ॥ मेरैं हित चितकै
ति करैं पिय। कर चुटकी चुटकाय ॥१२
॥ केवल रस ही मैं रस्यौ री। रसिया परम
प्रवीन ॥ मैं हूं ता विन कहूं न मांनत। वा
ही रस लव लीन ॥१३॥ गुहि गुहि मोहि पह
रांवहीं री। नव फूलन की माल ॥ कर छु
वाय कुच घट निसौं मेरौ। नाक नव द
न रसाल ॥१४॥ मेरे कुं नैंननि कौं परी री।
यही अनौखी वांनि ॥ एक पलक कैं अं
तर मैं मोहि। बीतति कल्प समांनि ॥१५
॥ जैसिय चाल चलौ कैं हौं री। तैसिय चा
लत चाल ॥ मोहन मन अनुसार सौं मेरौ।
करत वचन प्रतिपाल ॥१६॥ जब मो कैं

[illegible]
बन्तिबकासन ७०२

उत्सा० ८८ सुखसेज मैं री॥ नवसहरावैं पाय॥ गहर
उसासससुमांनि कैं री॥ बोलि मधुर मुख
बैंन॥ कह्यौ तिहारी आपिहैं यह जोक
छू देखत नैंन॥ १७॥ कब कुलिश होइ
गिरि परैं री॥ मदन मूरछा आय॥ जब ज्यौं
मैं ज्यौं नां रहै मैं री॥ कहिये कहा बनाय॥
॥ १४॥ क्यौं हों क्यौं चेतन करौं री॥ रसनांर
सरस बाय॥ मन दुखित जिय जांनि कैं
मैं॥ लिये हिये सौं लाय॥ १६॥ जो सुख वा
द्यौसो सखी री॥ कहि आवत नहि बैंन॥
कै जांनत ए दोउ नैंन॥ १७॥ पीतांबर सौं
पूंछ हा री॥ स्रम बन बदन निहारि॥ पु
नि तिहिं नैंन लगाय कैं॥ राखत हाय प
रधारि॥ १८॥ अलि अंग खेले लीलट कसौं
री॥ अलक कलंक छोटि मिसि ज्यौं निं॥ अलक
सुधारन मिस लिये मेरे॥ परसि कपोलन
पांनि॥ १९॥ नये पुलक अंग अंग मैं री॥ ८८

कै जांनत मेरौ हियौ ७० ८

वा द्यौरंग अनंग॥ रोम रोम चाहत किमौ
सखी॥ स्यांम सोम सौं संग॥ २०॥ चित चा
हैं चित मौं मिल्यौ री॥ मन चाहैं मन मांहि॥
जिय चाहै जिय सौं मिल्यौ तन॥ एक मेक
होइ जांहि॥ २१॥ रसिक सिरोमनि सांवरौ
री॥ सब गुन कला निधांन॥ तदपि कहैं
मैं हौं प्रिये॥ उबपद रज रेनु समान॥ २२
॥ एक समैं कहि सैंन मैं री॥ दैंन महाव
र पाय॥ धन्य भाग निज मांनि लियौ पि
य॥ कियौ कह्यौ जिहिं भाय॥ २३॥ कठि
न लगनि की गांस है री॥ जो नै जिहिं जि
य होय॥ निस दिन खटक लगार है स
खी॥ सुधि न रहै तहां कोय॥ २४॥ केलि क
लार ति कारनैं री॥ कितौ लिलावत ला
ल॥ अति अधीन है दीन ज्यौं मेरे॥ चरन
लगावत भाल॥ २५॥ पिय लैहौं पिय लैं
हियौ री॥ कहां लौं रहै कछौर॥ मैं फूंतन

उ.सा. मन लै दियौ सखी। लगन लगाय उहि ओ
८९ र॥२०॥ रचि रचि मोहि करौं बहौरी। रि
तु रितु कौ सिंगार॥ फूलन मैं मधि फूल
कौ सुख॥ कहत लहत नहिं पार॥२१॥
फूलन कौ लहँगा रच्यौरी। अरु फूलन
कौ सार॥ फूलन की आँगिया उरजनि।
पहिरावैं फूलन हार॥२२॥ करन फूल
रच्यौं फूलन केरी। फूलन कौ सिर फूल॥
फूलन के अँग अँग आभूषन। आभूषि
न अनुकूल॥२३॥ सदा रसीले फूल सौं
री। फूल्यौ रहै नित पीय॥ फूल गहा व
न फूल मैं मोहि। मेरी जीवनि जीय॥२४
॥ मन लगाय मृदु लै रच्यौरी। नव फूलन
कौ डोल॥ मोहि झुलावैं फूल ही पिय।
कहि कहि मीठे बोल॥२५॥ फूल फू
ल जो सुख बढ्यौ री। सो सुख समुझैं कौ
न॥ रौं मन रौं मन निरमिरच्यौ मेरैं। करि ८९

हियरे मैं नौंन॥२६॥ कबहुँ मोहि पधरा
वहौरी। सुखमय सदन उसीर॥ तिहिं
कौ सुख कहा कहौं सखी। सुखमय है
न सरीर॥२७॥ सुखमय सुख समार रचैं
री। सुखमय सुमन बिछाय॥ सुखमय
मोहि सुवावहौं नहौं। आप रहै सिरना
य॥२८॥ तब मैं हसि अँकन रिकहौं री।
यह बलि कौन सी बानि॥ इतनी जिय मैं
धरत सो कहा। नई करत पहिचानि॥२
९॥ प्यारी जु सच्यौ परत नहिं नैंक हूं। य
ह तिहारे तन कौ तेज॥ इनि आँखिन ध
रि लियौ है कछू। यही सुभाव अँगेज॥
३०॥ अदभुत री तिसुनाव की। यह ग
ति समझति हौं न॥ आपहिं अपनैं तेज
तैं बलि। सरमावत सो कौन॥३१॥ हि
लि मिलि सुख बिलस्यौ सखी री। सुख
मय सेज सुहाग॥ प्रेम उमैंग अँग अँग संग।

अला.
५८

सुरति कौ । जो जिहिं लायक लाग ॥ [illegible] ॥
अति सुंदर मन मोहनैं री । सोहनैं सांव
रैं अंग ॥ बरषा मैं बरषा होइ बरसत ।
सरस तरंग । अनंग ॥ [illegible] ॥ सुहेंची रस:
ग बाग करैं री ठरैं महा अनुराग ॥ आ
पप गैं पिय मोहि पगावैं । परम प्रेम
रस पाग ॥ [illegible] ॥ बरन बरन आ नरन रचैं
री ॥ रसमय रसिक सुजांन ॥ पहिरावत
पावत अति सुख । आलिंगन चुंबन
दांन ॥ [illegible] ॥ मंजुल मनि रसमय रचैं री ।
सीस सुमन कौ आंक ॥ करन ऊं सम
लै सेई बनैं बर । बैंदी बेसरि नांक ॥ [illegible]
॥ रसमय कंठसिरी सुलरी री । डुलरी ।
तिलरी पोति । चौकी चौसरि हार चंपक
ली । मोहन माला मोति ॥ [illegible] ॥ बाजू बं
ध बलया बली री । पौंहैंची बर कर फूल
॥ रतन मुंदरी रुचि रचावैं । रसमय । ५८

अंगुरिन मूल ॥ [illegible] ॥ रसनों जेहरि पाय
लैं री । मनिमय मृदु मंजीर ॥ अनवट बि
छिया न गन हीं हद । पद पत्रन कैं तीर ॥
[illegible] ॥ अचिरज देखौ एक सखी री । उनै कं
ज बिचि कंज ॥ जा मधि नाव अनेक र ।
हे लसि । ससि सनमुख मन रंज ॥ [illegible] ॥
नवन बरंगीला डिलौरी । नवरंग नव
ल हिंडोर ॥ नव नव रंग झुलावहीं मोहि
। नवरंग जोबन जोर ॥ [illegible] ॥ होड न होड
मचांवहीं री । डांडी छाडैं खेल ॥ कछू स
नय मोहि जांनि कैं पिय । रहे हिये प
र झेल ॥ [illegible] ॥ रिमि झिमि रिमि झिमि
रंग की री । बुंद नि अंग लिजाय ॥ उत
रि कदंबन तर लै चलैं मोहि । तहां राखैं
बिरमाय ॥ [illegible] ॥ फानन तैं बन टपकहीं
री । सुरति रंग रस रौंधि ॥ रहीं सां झुसी
फूलि कैं जहौं । चपला की चकचौंधि

उत्सा. ५२

॥४४॥ सरद चांदिनी रैंन मैं स॰ संग रमा
वैं रास ॥ विविध विचिकरट गति नेदना
व सौं नित्तैन निर्त्ति कुलास ॥४५॥ वो
हो वाजन की वाजि नीरी। साजन सुर
संदोह ॥ थेई थेई रट सुघट उघट मैं
। उपजावत मन मोह ॥४६॥ कवकुं
मोहि मनुहारि कैरी। कहत कमल
दलनैंन ॥ मृदु पद निसें दिखाई ये
मोहिं अहो प्रिये सुख दैंन ॥४७॥ ज
व मंडल पर पग धरौं री। करौं अपट
आरंभ ॥ तन मन प्रांन रहैं पिय के
अंक। जैक से होइ अचंभ ॥४८॥ औ
र कहौं सुनि हो सखी री। ससि रस तान
सन मांन। रुचि [illegible] अनु
सार लिये अनुसार ल। सुंदर सुघर सु
जांन ॥४९॥ अंग अंग धुरि पोढि बौ
री। औढि सु पेसल सौ रि। कोजाचैं ५२

कौ दैं सखी न हौं भाजैं रस की रौरि ॥५
०॥ मधुरितु मोद मनोज मैं री। अंव
मौर जौ डार। सरस साख अनिला खन
सौं न रि। राखत कंचन थारा ॥५१॥ स
जिस जिसौं ज समर्पै हीं री। सब शृंगा
कौ साज। महा सुख मुख तें पढैं औ
श्रीयं अभिराज ॥५२॥ छबि लेकर सौं
छिरकहीं री। नव केसरि कौ नीर ॥ अ
रुने अबीर गुलाल सौं भरै रौ। बरखत
नैन सुखचीर ॥५३॥ घसि घसि अं
ग लगावहीं री। मृगमद मलय कपू
र ॥ परसत ही पावत सुख तन मन।
म मन प्रेम कै पूर ॥५४॥ एक समै सु
ख मैं सखी री। सोई सेज मैं जा रि ॥ बा
म हाथ हियपर पस्यौ तब। कौ कौ उ
ठी पुकारि ॥५५॥ जब पिय हसि मोहि
यैं। कसौ री। यह आई उर कौन ॥ कौ

उत्सा॥ हिसमुऊदयें अहो प्रिये जो नप
५२ रैत्रमजौं न॥८४॥ अहो जौ न वल्लेन
उकहौं मैं॥ सुनकुसुमन की गाथ॥
फूलिपरी गहवर वन मैं जहौं॥ सखी
न को ऊ साथ॥८५॥ चनकमूदपि
यें आइ कैं मोहि॥ न रिली नी अंकवा
रि॥ याले संत्रम ऊपज्यौ उर को बौ
उठी पुकारि॥८६॥ सुनत श्रवन पि
यसखी री॥ वाढ्यो अति आनंद॥
हरखि लेत न लैया हरखि मेरो॥ निरखि
निरखि मुखचंद॥८७॥ तो सौंक
ऐंका छुरावहै री॥ तो बिन कौन केलि॥
तै मेरी श्री हरिप्रिया हैं॥ मन अनुस
रि सु हेलि॥८८॥ २७॥ अनुरागनि
कर्नें कौ सामध्या नास॥ होरी॥ नरि
ज़ोरी बरजोरी बरा॥ अरि अरि उरज
उतंग॥ स्यांमा गोरी स्याम संग॥ खेल ५२

त होरी रंग॥ ध्रुव॥ तितालौ॥ स्यांमा गोरी
॥ खेलत होरी॥ सांवरे श्री नमसंग॥ नरिन
रि जोरी॥ बरवरजोरी॥ अरि अरि उरज उ
तंग॥ टेक॥ लाड़लडीलड़ बावति लालै
॥ लै लै गुलाल सुरंग॥ तरक रि लिये अंत
अंतर मनहरनी॥ कै कै तरनिहै नंग॥१॥
पिचकी सौं रिचकी जुरि मुरि कैं॥ दुरि दु
रि दुरनि सुढंग॥ सगावगे कि येरगवगे
हिय सौं नवजोवनि अंग अंग॥२॥ ली
ग फाग अनुराग फूल मैं॥ फूल फवे ब
लौ रंग॥ श्री हरिप्रिया सन मुखौं विलस सुख
तो फूलसत उलसि उमंग॥३॥ रला॥ दो
हा॥ अलक रलक अमकेनजलेक॥ उ
रपर हार बिलोल॥ दामनि सीडो लैं प्री
या फूली फूल अमोल॥१॥ पद॥ तितालौ॥
प्यारी जू फूली फूल फूल सौं॥ रिमि झिमि
रिमि झिमि डोलैं॥ मर्कत मनि के अहल

उत्सा महल मैं। कोकिल ज्यौं कल बोलैं॥ टेक
५३ ॥ अलकुँ श्रमकन की झलकनि। उर
पर हार बिलोलैं॥ केसरिया फरिया तर
हरिया। लहँगा ललित अमोलैं॥ ५॥ ज
गमग जोति जराय जरी सी। दिपति दा
मिनी ओलैं॥ ठमकि ठमकि पग धरति
धरनि पर। रूप अनूप मतोलैं॥ ७॥ अ
ति रति रंग रँगी नव जोबनि। उमँगि उमँ
गि रस ढोलैं॥ श्री हरिप्रिया धन्य बड़भा
गि। जो या बिरधि बिरोलैं॥ ८॥ २५॥ अबु
समा तिबिचित्र सो नाम ध्या नास॥ दोहा
॥ लै लै अनि लाखन गनैं। मनैं सहित
निज अंग॥ करै समर्पन रमैं यौं॥ हरि
सौं होरी रंग॥ पद॥ इकताला॥ रमैं यौं
हरि सौं होरी रंग॥ बड़ै भागन तैं फागन
आयौ। करत तहि करत उमंग॥ टेक॥
अद्भुत बन कंकन कपिचकारी। नरि ५३

केसरि कैं नीर॥ छबिलि छींट छबि सौं
छलकरि कैं॥ छिर कैं स्याम सरीर॥ १॥
चोवा चंदन अतर ऊमऊमां॥ बऊसु
गंध की रेलि॥ रिझवैं रसिक रसाल ला
ल कौं। करि मननाई केलि॥ २॥ अबी
र गुलाल उड़ाय अनूपम। लगियें उर
से सर्पि॥ लाख लाख अनि लाखन कै
गन। तन मन सकल समर्पि॥ ३॥ कैसौ
सुख कै हैं यौं बिलसत। अरस परस पि
य संग॥ मन मोनत निजु फगुवा लैहैं॥
पैहैं प्रेम अनंग॥ ४॥ श्री हरिप्रिया कह
ति सहचरि सौं। सुनि सब उहौ सरांहि॥
खेल मच्यो नव कुंज सदन मैं। हिलिमि
लि हियें उमाहि॥ ५॥ २६॥ दोहा॥ मेरैं कं
र बर दीजियें। उर आनर न उतारि॥ अ
लकलड़ी अल बेलि बलि। बिहरौ गर
भुज धारि॥ ११॥ पद॥ ताल चंपक॥ बलि
बलि अलकलड़ी अलबेलि॥ यह हो

रार त्तिरसमैं बोरी।विहरौ वहियांमेलि
॥टेक॥देऊ उतारि दृग निधिमो कर
।उर कौ हार हमेलि॥लै पिचकारि च
की उरजन पर।वरसौ रस की रेलि॥१
॥देखू गे कैसौ सुख पय हौ।कमल
ऊं जे कैं केलि॥रूखि लेऊ प्यारी सह
चरियह।श्री हरिप्रिया सहेलि॥२॥
३॥दोहा॥आनंद अहलादनि दोऊ
।रतिरंग रेलि रचाय॥रस होरी खेल॰
त नये।सगवग सहज सुभाय॥१॥प
द॥इकताला॥प्यारी विहारीलालसौं
रस होरी खेलैं॥लटकीली गजचाल
सौं।वृंदावन मेलैं॥टेक॥जोवन जो
र उमंग सौं।रतिरंग हिरैलैं॥लै पिच॰
की कर कमलसौं।पिय तन पर पेलैं
॥१॥अति निसंक लचलकसौं नरि
अंक सकेलैं गहि गाढी अहलादिनी
आनंद अलवेलैं॥२॥अंतर लायत

न तर करी॥नव तिया नवेलैं॥सगवग की
नी डारि कैं।सासी तुफुलेलैं॥३॥चहलप
हल्लै नई महल कौ।या वगर वगेलैं॥श्री
हरिप्रिया जे धन्य हैं।ते यह रस झेलैं॥४
॥३॥दोहा॥अवलोकन मुख माधुरी
।परि है अंतर आय॥बाल अहो वलिडा
रियें।इनि नैंनन नहिं वचाय॥१॥पद॥इक
ताला॥एहो वचाय डारौ इनि नैंनन नहिं।
सुनिय ऊ स्यां मां प्यारी॥अंतर मुख अ॰
वलोकन कौ सहि।सकत न सौं हति हा
री॥टेक॥ति• यें गुलाल कर जब देखौं त
व।डर लागत तिय नारी॥मति यह अं
नि परैं अंखियन मैं।अनाच की अंखिया
री॥१॥पहिलैं ही रंग रस्यौ प्रेम रंग।पु॰
नि तुम केसर डारी॥कहा कहौं यह
प्रीति रावरी।अद्भुत रीति निहारी॥२॥

उत्सा
९५

मधुकडोलनिहेहेबोलनिपरअंनक
रौंबलिहारी॥श्रीहरिप्रियाबसीहिय
मैंछबिटरतनहीछिनिटारी॥३॥७३॥
दोहा॥सरसकुंजसंगसहचरीसखी
सहेलीबांम॥रसबोरीहोरीदोऊखेल
हिंगोरीस्यांम॥१॥पद॥इकताल॥तथा
अडाणौ॥चलततिताल॥होरीखेलहीं
रसबोरी॥सांवरेसैंगस्यांमांगोरी॥टेक
॥सरसकुंजमैंसखीसहचरी।मनमोह
नीसलौंनी॥अनंदभरीरतिलाडगहे
ली॥अतिअद्भुतअनहैंनी॥१॥परसि
कहितकीरूपजोबनी॥बिमलकार
नीजीमां॥सुनसुंदरसनीकनकतनी
बनी॥अनुरागनिअभिरामां॥पिचक
रियानरिकेसरिसौंकीनीफरियांके
सरियां॥तकिसुकुंवरियांढरियांसुढ ९५

रनिलैगुलाललफधरियां॥३॥नीजि
नीजिरसरीझिरसिकनैंननिसौंनैंन
मिलाये॥बदनबदनभुजभुजनरि
नरिकैं।अरिअरिउरनिअराये॥४॥
परसपुलकबसहिलिमिलिझिलिर
सरंगअनंगबढांवैं॥अपअपनैंदां
यनिबौहौनायनि।चायनिचहलम
चांवैं॥५॥उमगिउमगिबोलनिबहो
लनि।हसनलसनअनुरागे॥निध
नीज्यौंधनपायनछाडतलाङतलालच
लागे॥६॥बाजेंअनअनभांति[illegible]ब
जावत।मधुरमधुरकलराव॥गा
वतहंसकअतिमनभावत।उमगा
वतचितचाव॥७॥इहिंविधिनित
बृंदावनविहरत।नित्यविहारविहा
री॥श्रीहरिप्रियासिंगारप्रेमकी।मूर
तिमंगलकारी॥८॥३४॥इतिहोरी॥

॥अथ डोल॥ चैत्र वदि ५ डिवा॥ अनु
राग॥ निकोरसुखी [illegible]॥ दोहा॥
आवकुरी गुंन गाइयैं। मिलि अनुरा
ग निटोल॥ झुलवहिं लाडलडीयकैं
। लाडलडनकौं डोल॥१॥ पद॥ तिता
ल॥ आवकुरी मिलि डोल झुलावैं॥
लाडलडुनकौं लाडलडांवैं॥ टेक॥
नैन मनके अभिलाख पुरावैं॥ अति आ
नंद उछाह बढावैं॥१॥ निज निज रु
चि सिंगार सजावैं॥ निरखि निरखि छ
बि नैंन सिरावैं॥२॥ स्यामा स्याम हिं सु
ख बिलसावैं॥ कै कै मुदित हियैं झु
लसावैं॥३॥ मंगल विमल खेल मचा
वैं॥ अंग अंग रस रंग रचावैं॥४॥ विवि
धि भांति बाजित्र वजावैं॥ अनुराग
निगुंन गोरी गावैं॥५॥ चित्रसुखी॥ गो
री गोरी गोरी श्री राधिका॥ मन भावन

कौ नांम॥ गोरी। गुँन गरवीली सांवरी॥
सो है सब सुख धांम॥६॥ गोरी। गोरी गो
री श्री राधिका॥ गोरी। लाडलडी ला
डिली। प्रीतम प्रांन अधार॥ गोरी। ला
डलडी ली सांवरो। सो है सब सुख सा
र॥७॥ गोरी। गोरी गोरी श्री राधिका॥
गोरी सहज सलौंनैं दो ऊलला। सह
ज सलौंनैं किसोर॥ गोरी। श्री हरिप्रि
या हियमैं वसो। सहज सलौंनी जोर
॥८॥ गोरी गोरी गोरी श्री राधिका॥ के
सरि कुमकुम नीर भरावैं॥ तन कत
न कतन कौं छिरकावैं॥९॥ चोवा के
र चित्र बनावैं॥ अबीर गुलाल क
पोल लगावैं॥१०॥ कोमल कमल मा
ल पहिरावैं॥ प्रांन प्रीतम कौं प्रेम प
गावैं॥११॥ फिरि फिरि वारि रिझावैं
॥ आनंद कैं आसन पधरावैं॥१२॥ मु

उत्सा-

६७

खमुखसौंसनमुखसुरवांवैं॥जुगल
चंदकौंरहसिरमांवैं॥ ॥कमलक
मलएकतकरवांवैं॥मर्कतमनिकं
चनखचवांवैं॥४॥मननावनकेजोग
जुगांवैं॥सहजसुधाधरसचेअच
वांवैं॥५॥रचिरचिरुचिकीवीरी।
खवांवैं॥वदनविलोकिविलोकि
सिहांवैं॥६॥करिआरतिअंगुरी
चटकांवैं॥श्रीहरिप्रियाजूकीब
लिजांवैं॥ ॥दोहा॥अतिअनु
रागभरेहियेंकियेंनखसिखसिंगा
र॥डोलसुबरनीपरदोऊफूलहिंप
रमउदार॥ ॥पद॥ [illegible]कौ॥दो
ऊफूलहीं।डोलसुवरनकी॥अति
मनफूलहीं।बलिजांऊंचरनकी॥
चरनकीवलिजांऊंअलि।अरुनई
तरुवनिकीलसी॥चारुअंगुरिनि

६७

नखनिमनिकी।जोलिजगमगजिय
वसी॥ ॥दोऊफूलहीं॥अनवट।
नगजरे।विछियावाजनैं॥पदपत्रछ
विनरे।नूपुरछाजनैं॥छाजनैंनूपु
रपदकंहपर।परेजेहरिपायलैं॥ल
लितलहंगा।कलितकसकटि।क
स्योसहचरिचायलैं॥ ॥दोऊफूल
हीं॥नीवीवंधनडोरी।किंकनीकन
ककी॥रतनजटितरसवोरी।विर
चीवनककी॥वनककीविरचीऊ
चनपर।खचीकंचुकिरसरली॥हा
रहीरहमेलचौसर।चंदचौकीचप
कली॥ ॥दोऊफूलहीं॥दुलरीअ
रुतिलरी।मालामोहनी॥सुंदरीअ
मरलरी।कैंठसिरीसोहनी॥सोहनी
कैंठसिरीसुहांवनि।वाजूवाजूवंध
बनैं।ऊवऊवीअलिफवीछूरी।कं

उत्सा॰ कनपौ हौं चीप छिमनैं ॥४१॥ दोऊ फू
५८ लहीं ॥ करकर पान। सो जै सुंदरी ॥ रत
नविधान। सो है मुंदरी ॥ मुंदरी अंगुरी ॥
नि सो है ॥ मोहै मन नख आवली ॥ मह
पु अरेंग नि रंगी महावर। तैं सिय रंगम
गी कर तली ॥४२॥ दोऊ फूलहीं ॥ चि
बुक दिठौनी। सो है सान की सुनंग
सुठौनी। दुति अधरान की। अधरान
की दुति दसनन स्म कनि चौका चम
कनि मन हरैं ॥ करन फूल कपोल अ
लकैं ... फूल कैल खिलोयन
हरैं ॥४३॥ दोऊ फूलहीं ॥ बरना सा बेसरी
। मोती की बनी। अँखियां रस भरी ॥ चं
चल चितवनी ॥ चितवनी चंचल ब
नी अंजन। अंजिता मन रंजनी ॥ बरु
नी पांति न जाति बरनी। जो है सब सु
ख संजनी ॥४४॥ दोऊ फूलहीं ॥ इं गुर की

५८

गुर की ॥ बैंदी जराय की। लटकनि म
नि रुर की ॥ आड़ सुहाय की ॥ सुहाय
की आड़ स्याड़ सौं लैं। बांधी लाड़ लड़ी
लिड़ी ॥ ललित लाल लगी लरैं मुक्ता
नि मांग। आड़ी लिड़ी ॥४५॥ दोऊ फूलहीं
॥ बनी चंद्रि मूल। खुन सिर फूल कैं ॥ चं
द बदन अनुकूल। कूल दुकूल कैं ॥
दुकूल कैं कूल सो है सुन हरी ॥ सारी
किनारी रंग सुहीं ॥ कंचुक चिक्कनस
बे सुचैं नी ॥ बैनी मृग नैंनी गुहीं ॥४६॥ दो
ऊ फूलहीं ॥ तैसे ई बनें बिहारी ॥ अंग
अंग छबि न्यारी ॥ मुकट लटकनि म
हारी ॥ चटकनि चंद्रिकारी ॥ चंद्रि
कारी चटकि रहि कछु कहि परैं न ।
हिंचे हि चहीं ॥ नगन निर्मित जोति ज
गमगा। लगी कैं लहि लहीं ॥४७॥ दोऊ फू लगी

उत्सा॰
९९

कंध॥ तुररा सुनहरी॥ तारनु कौ सोहैं॥
अतिछवि छहरी॥ मनकौं मोहैं॥ मोहैं
मनकौं लरी मोतिन॥ लगी लटकनि
लाल सौं॥ आड कनक ललाड ऊप
र॥ बनी बनक बिसाल सौं॥ २॥ दोऊ
फूलहीं॥ जौहै सौंहनी॥ आंखैं अति
यारी॥ हित की जौं हनी॥ हिय की हर
नियारी॥ हरनियारी हीय की बनी॥
नथनियां मनमथन की॥ बडडे मोती
अग्रता की॥ नौंहि उपमा कथन की
॥ ३॥ दोऊ फूलहीं॥ गोल गोल कपो
ल॥ अतिरससौं भरे॥ तिनपर कुंडल
लोल॥ अलकनि सौं अरे॥ अरे अल
कनि नग जरे जगमगाहिं अवन सुहां
बनैं॥ रदन छद रद वदन मैं सुखसद
न मदन सुहां बनैं॥ ४॥ दोऊ फूलहीं ९८

ठोडी गाड सुदेस॥ मृगमद की कनी॥
सोहत अतिहि सुवेस॥ बरवांनिक बनी
॥ बनी वांनिक कंठ कौस्तुभमनी मु
नि मुक्तावली॥ बसी उर उरबसिक सौं
नी॥ कंचुक पर हीरावली॥ ५॥ दोऊ
फूलहीं॥ करन कनक केयूर॥ कटके
पौंहौंची फबी॥ छलौ छगुनियां हूर।
नखन मनि की छवी॥ छवी मनि की
अति फबी कटि। निकटि पटुका
जरकसी॥ उडु और छुटि रहे छोर अ
तिहि मरोर वंसी बरकसी॥ ६॥ दो
ऊ फूलहीं॥ कांची कंचन की कटि सो
हत सुघटी॥ पटी रतनेन की॥ रुचि चुंनि
जटी॥ जटी चुंनी बिचित्रता सौं॥ मुक्ता
जाल जे गाम गौं॥ मखतूल फुंदनि अ
ति फबी छबि देखि छबि छबि डिगमगौं

उत्सा। १०७ ॥छ॥ दोऊ झूलें हीं॥ सुघरी सूथन पा
य। नूपुर आनन रन॥ नख मैं नि अरु
न सुहाय॥ तैसे ई पद तरन॥ पद तर
न तैसे ई बरन कौ। पुनि रैंग रंग महा
वरी॥ नख तैं सिख सिख तैं नख छ
वि फबी गोरी सांवरी॥४७॥ दोऊ
झूलें हीं॥ मंद मंद मुसकात॥ जु ज
अंस निदीये॥ करत परस पर बात
। अति अनुरागही ये॥ हीये अति
अनुराग सहचरि राग गोरी गाव
हीं॥ तुंग विद्या की सखी म करा छंद
ग बजावहीं॥४८॥ दोऊ झूलें हीं॥ नि
तें करत मन भावत नीरज नैंनी॥ अ
बीर गुलाल उडावत सैंना बैंनी॥ ॥
सैंना बैंनी कै केंके सरि। ऊमक ऊमों
ह्विर कां वहीं॥ अति सुगंधिक अरग १०७

जा लै लज्जा न जि मुख लों वहीं॥४९॥ दो
ऊ झूलें हीं॥ कौतिक बढ्यौ अपार क
हत नहीं बनैं॥ दोऊ परम उदार अति
रस पैं सनैं॥ सनैं रस मैं दोऊ नागर
नव किसोर किसोरी॥ जै जै श्री हरि
प्रिया जू की। रहो अविचल जोरी॥५
०॥ दोऊ झूलें हीं॥ अनुराग निविचि
त्र सोभा मध्य मास॥ दोहा॥ कमल नैं
न कर कमल लियें। हिलि मिलि रंग र
साल॥ झुलवहि ललनां झूलहीं। अ
ति रस रंगीलाल॥५१॥ पद॥ तालचप
क॥ झूलत लाल झुलावत ललनां
॥ अति रस रंग रह्यौ डोल॥ अंग नि अं
ग उमंग तरंग अनंग प्रवाह बह्यौ डो
ल॥ टेक॥ कमल नैंन कोमल कर सुं
दर कमल लियें डहडह्यौ डोल॥ श्री

उत्सा॰
९१

हरि प्रिया हित हित लन मिलन कौं सुः
खन हि जाति कह्यौ डोल ॥९॥३॥ इति
डोल ॥ अथ फूलडोल ॥ चैत्र सुदि एका
दसी ॥ अनुराग निधस्य नाम मधा नो
सारो लाः रंग रंगीले रंग लैौं। लसौ वसौ
हिय मोर ॥ झूमि झूमि दोउ फूलहीं। फू
ले फूल हिंडोर ॥१॥ पद ॥ हिकताला ॥
झूमि झूमि दोउ फूलहीं। फूले फूल॰
हिंडोरैं ॥ रंग रंगीले रंग सौं फूलहीं। फू
ले फूल हिंडोरैं ॥ अलबेले आनंद मैं
। फूले फूल हिंडोरैं ॥ लागि लागि अं॰
ग अंग सौं फूलहीं। फूले फूल हिंडो
रैं ॥१॥ मोहन मन [illegible] बनौ। फूले फूल
हिंडोरैं ॥ लटके छबीली भांति सौं फू
लहीं ॥ फूले फूल हिंडोरैं ॥ ललित ल
[illegible] ताप छबि सौं। फूले फूल हिंडोरैं ॥

९१

लहलहांति लहकौं तिसौं फूलहीं।
फूले फूल हिंडोरैं ॥२॥ कमल कम
ल मिलि केलहीं। फूले फूल हिंडोरैं ॥
जुही जुही निजु राय कैं फूलहीं। फूले
फूल हिंडोरैं ॥ चंपक मरुआ कुंद केत
की। फूले फूल हिंडोरैं ॥ राय वेलि चि
त चाय कैं फूलहीं। फूले फूल हिंडोरैं
॥३॥ मालति महकति मोगरैं। फूले॰
फूल हिंडोरैं ॥ मौलसिरी चंबेली सौं फू
लहीं। फूले फूल हिंडोरैं ॥ बिंबन बिं॰
ब बिहार हीं। फूले फूल हिंडोरैं ॥ रह
नि निवारी नवेली सौं फूलहीं। फूले
फूल हिंडोरैं ॥४॥ करनां करनां न
रन मैं: फूले फूल हिंडोरैं ॥ फले फूल
फूल फालसौं फूलहीं। फूले फूल हिं
डोरैं ॥ बोलत कोकिल कलरवौ। फू
ले फूल हिंडोरैं ॥ कोमल कंठ रसा॰

उत्सा॰ लसौं फूलहीं॥ फूले फूल हिंडोरैं॥४॥
१२ चकित चकोरी सहचरी॥ फूले फूल
हिंडोरैं॥ निरखि बदन बिधि चंद्रमां
फूलहीं॥ फूले फूल हिंडोरैं॥ वंक वि
लोकनि रसभरी॥ फूले फूल हिंडोरैं
॥ तैसिय रसभरी तंद्रमां फूलहीं॥ फू-
ले फूल हिंडोरैं॥६॥ लाडलडीले ला
डिले॥ फूले फूल हिंडोरैं॥ लाडलडा
वत लाडसौं फूलहीं॥ फूले फूल हिंडो
रैं॥ हित बसौ मेरै हियैं॥ फूले फूल हिं
डोरैं॥ श्रीहरिप्रिया चित चाडसौं फू
लहीं॥ फूले फूल हिंडोरैं॥७॥१॥ दो०
॥ फूलैं फूलैं फूलकैं॥ श्रीहरिप्रिय प्रि-
यसंग॥ नवरंगीलाली दोऊ लल
न रंगमगे रंग॥१॥ पद॥ झकलाल गरं
गरंगीले रंगमगे नवरंगीलाला॥ दोऊ
रूपनिधान रंगमगे॥ एरी ए॥ नवरं-

२

गीलाला॥ नवतन हंदाविपन मैं नव
रंगीलाला॥ बिहरत बितान बिधान
रंगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला॥१॥
सहज सलौनै सोहनैं नवरंगीलाला
॥ सुंदर वरसु ऊंबा रंगमगे॥ एरी ए
॥ नवरंगीलाला॥ उमंग अंग अंग
भरे नवरंगीलाला॥ उर आनंद अ
पार रंगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला
॥२॥ फूल हिंडोरैं फूलहीं नवरंगी
लाला॥ कचौन परत हियें हेत रंग-
मगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला॥ लटके
ललित लता लियें नवरंगीलाला॥
लचनि लंक छबि देत रंगमगे॥ एरी
ए॥ नवरंगीलाला॥३॥ मत्त सुधा रस
पांन कैं नवरंगीलाला॥ तन मन रहि
ने सैना र रंगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगीला
ला॥ पुलकन प्रेमानंद मैं नवरंगी-

लाला॥ विचलत विपुल विचार रंग॥
मगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला॥४॥ प्र
प्रदेस केवेस कौ नवरंगीलाला॥ वं
धन नयो विमोचरग मगे॥ एरी ए॥
नवरंगीलाला॥ छकेसदो छविछा
कमैं नवरंगीलाला॥ सहरतनहिं
नसकोचरगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगी
लाला॥५॥ यह फूलौ है फूल कौ
नवरंगीलाला॥ याकी रीतिहि और
रगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला॥ दि
न दिन राज करौ दोऊ नवरंगीला
ला॥ फूलि फूलि इहिं ठौर रमगे॥ ए
री ए॥ नवरंगीलाला॥६॥ हित्रूवसौ
मेरे हियैं नवरंगीलाला॥ श्रीहरिप्रि
या संजोग रगमगे॥ एरी ए॥ नवरंगी
लाला॥ ए नैन न हू निति करौ नवरं
गीलाला॥ सुरत सुधा कौ जोग रग

मगे॥ एरी ए॥ नवरंगीलाला॥७॥४॥ श्री
कुराग विचित्र सोनो मध्यानोसम॥
दोहा॥ फूलसदन श्रीहरिप्रिया। फूलव
हिं हियें फूलसमाय॥ फूलत फूले फूलदो
ऊ॥ फूल डोल सरसाय॥१॥ पद॥ लाल
चमक॥ फूलत फूल डोल दोऊ प्यारे
। फूले फूले फूल सदन मैं॥ फूले फूले
सुख अंबुजन की। फूली सुखमा फूल
सदन मैं॥ फूली फूली सहचरि गावत
। सरस राग मिलि फूल सदन मैं॥ फू
ली फूली श्रीहरिप्रिया लखि। हिय
फूलन सा वन फूल सदन मैं॥१॥२॥ दो
हा॥ फूलत फूली लाडिली। कियें फूल
सिंगार॥ प्रीतम फूलन फूलौं वहीं। का
रिक रिव कुमनुहार॥॥ पद॥ लाल
चमक॥ फूलत फूली फूली प्यारी। प्री
तम फूले फूल फुलावत। फूल डोल
पर फू[illegible]

री॥यह सुख देखैं ही वनि आवत॥दे
खे॥फूल कमल कर लियें लाडिली॥
पिय मनुहार मनावत॥श्रीहरिप्रिया
निरखि न्यौछावरि।करत फूल वलि
हारी।ज्यौं ज्यौं फूलन अंग समावत॥
॥४॥इति फूलडोल॥अथ फूलमं
डली॥चैत्र सुदि १२ तें वैसाख सुदि १२ तां
ई॥अनुराग निधि चित्र सो नाम ध्या
न॥दोहा॥फूल महल फुलवारि मैं
।फूल सिंगार किये॥श्रीहरिप्रिया वै
ठे दोऊ।फूले फूल हिये॥१॥पद॥इ
कताल॥देखौ सखी फूलन की फुल
वारी॥फूले फूल महल मैं वैठे फूलि फू
लि पिय प्यारी।।टेक॥फूलन कौ सि
र मुकट विराजै।फूलन मांग सँवारी
॥फूलन की कलगी जगमगी छवि
।फूलन की चंद्रिकारी॥१॥फूलन
के आभूषन पहरैं।फूलन के चुक ४

सारी॥फूलन की अंगीयां उपरैंनां फू
लइजार लहँगारी॥२॥फूलन सिर ख
र फूलन कौ मंडप फूलन के छाजा सी
।फूलन के छवि देत झरोखा॥अरु
फूलन की जारी॥३॥फूल मई सव दौ
र दौर फवि।फूलि रही फुलवारी॥
फूल चौक मैं फूल फूल की।छूटत
फूल फुहारी॥४॥फूलि सिंघासन
आसपास ठाढी।फूल सवै सहचारी॥
फूल फूल की सौंज लियें कर॥फूलन
फूल सिंगारी॥५॥फूलन चैंवर ढुरावत
ति फूली।लै फूलन विजनारी॥प्यारत
प्यार सुगंधन की।लपटैं मन हरत महा
री॥६॥कहा कहौं कछु फूल फूल की
॥सोहैं अति सोभारी॥श्रीहरिप्रिया फू
ल फूलन पर।फूल करौं वलिहारी॥
॥७॥अनुराग निकेट पे का नाम ध्या

उत्सा·
१०५

नास॥दोहा॥फूल सिंघासन पर दो
ऊ।बनि बैठे अनुकूल॥फूले गरब
हियां दिये अंग अंग फूले फूल॥१॥
पद॥ताल चंपक॥फूले फूल सुमनग
आसन पर।बनि बैठे बनी री बनि दो
उ जन॥फूल समान न गात बात बत
रात जात बनी री बनि दोउ जन॥टेक
॥फूल बसन मैं लसन फूलें अनुकू
ल रहे बनी री बनि दोउ जन॥फूल स
रोज बदन कैं चोजन।चढे वढे बनि
री बनि दोउ जन॥१॥फूल सकल सु
ख मूल परस्पर।करत केलि बनि री
बनि दोउ जन॥श्री हरिप्रिया निहारि
फूल फबि छबि छिपावत बनी री बनि
दोउ जन॥२॥२॥दोहा॥फूल बसन
पहिरैं प्रिया।गोरैं तन सुख दैंन॥द ५

चिद बि खुलि खुलि जात हैं॥निरखि
लाल के नैन॥पद॥ताल चंपक॥
फबी फूलन की फरिया गोरी कैं गो
रैं गात॥नै सौंइ लहैं गाल हिलोव
नि लौं ललित लै कलह कात॥टे
क॥फूलन की अंगिया उरजन प
र॥फूलन अंग समात॥श्री हरिप्रि
या निरखि फूलन छबि।दविदवि
दृग खुलि जात॥१॥३॥अथ राग।
नि आनंद मध्य नास॥दोहा॥फू
ले मई बन लखि गई।तन मन की स
ब सूल॥फूलें नई उर फूले हो।कह
कहौ सुख फूल॥१॥पद॥तिताला॥
हौं कहा कहौं सुख फूल मई॥फूल
हि फूल फबी सब बन मैं।तन मन।
की सब सूल गई॥टेक॥फूल दिस
नि बिदिसनि मैं फूली॥छिति अंबर

उत्सा०
१०६

मैं फूल छई॥ फूल लता द्रुम सरित
सरन मैं। खग मृग सब तौ फूल छ
ई॥ ११॥ फूलनि कुंज निलय निक
रन मैं। बरन बरन मैं फूल नई॥ श्री
हरिप्रिया निरखि नैंन निछबि। फू
लन कैं उर फूल नई॥ १२॥ ६॥ ॥
इति फूल मंडनी॥ अथ चंदन सिं
गार॥ बैशाख सुदि ३॥ अनुराग
निसुरंगागामध्मानास॥ दोहा॥
सहचरि सुकृद स्वरूपिनी। श्रीह
रिप्रिया कैं हेत॥ चंदन अंग सिंगा
र करि॥ बनि बैठे छबि देत॥ १॥ पद॥
ताल चंपक॥ कुंज बिहार निकुंज।
बिहारी। बनि बैठ चंदन चित्रसा।
री॥ चंदन अंग सिंगार कियें हियें
। चंदन सम सीतल सुखकारी॥
टेक॥ घसि चंदन घनसार सुकृद

६

नी॥ करि अरचन चरचे पिय प्यारी॥
श्रीहरिप्रिया प्रसन बदन की। बार
बार छबि ऊपर बारी॥ १॥ २॥ दोहा
॥ रद रस चंदन चित्र करि। लेत मद
न मन मोहि॥ श्रीहरिप्रिया अंग अं
ग की। अद्भुत छबि रहि जो हि॥ १॥
पद॥ तिताल॥ सुंदर बर बिबदि बि
चंदन कैं। अंग अंग अद्भुत चंदन सो
हैं॥ बिचित्र चित्र बिचित्र रदन रस॥
मदन कोटि मन कौ मन मोहैं॥ टेक॥
॥ तन मन सकल लैन ये सीतल तउ।
कैलन हिं परत हैं परत बिछो हैं॥ श्रीह
रिप्रिया की केलि कला बलि। हरख
न निरखि सखीजन जो हैं॥ १॥ २॥ दो
हा॥ आदि अवैट तिथा सु तिथि। पूजि
त कै दोउ आज॥ चंदन अंग सिंगार कि
यें सोहत संग समाज॥ १॥ पद॥ तिताल

उ॰सा॰ग॰ सोहतआजसरसचंदनकौ॥सुनग
१०७ सिंगारकियेंननमैंरी॥रंगमहलके
रायअंगनविचि॥बिलसतजुगलस
खीगनमैंरी॥टेक॥आदिजुगादि
अखैटतियाकरि॥सुजिनकैदोउ
मुदिमनमैंरी॥श्रीहरिप्रियाकोअं
गअंगछवि॥वरनैंजोकोकविजन
मैंरी॥२॥३॥दोहा॥अंकमालदिये
लालदोऊ॥चलतमत्तगजचाल॥
चंदनविविविचिअंगकी॥लहरैंउ
ठतरसाल॥पद॥तिताल॥सुवजन
मनफंदनजगवंदन॥चंदनहीचंद
नतनपहरैं॥विचिविचिउपजतअ
तिहिअनूठी॥गउरसावरेअंगकि
लहरैं॥टेक॥अंकमालदियेंलालदो
ऊकहुँ॥चलेचलतकहुँठमकतठ
हरैं॥श्रीहरिप्रियामत्तगजवरज्यौं॥ ७

राखेहैंबांधिगुंननकरिगहरैं॥२॥४॥
इतिचंदनसिंगार॥अथमत्तबिहार॥
जेष्टसुदि॥अनुरागनिकुरंगगामध्या
न॥॥दोहा॥केलिस्वरूपसरोवरमैं॥कं
तकोमिनीजोर॥वनबिहारमिलिजू
ऊहीं॥नहिंसूझहिनिसभोर॥१॥पद॥
इकताला॥वनविहरतकंताकोमिनी॥
केलिस्वरूपसरोवरमैंमहा॥मत्तमनो
हरजोमिनी॥टेक॥कमलनमारपरस
परजूझत॥नहिंसूझतदिनजोमिनी॥श्री
हरिप्रियाहरषिहियमैंज्यौं॥रसबरष
तघनदामिनी॥१॥१॥दोहा॥जलक्री
डारसरचेदोऊ॥सहजसुनगउरला
गि॥सुरतसरितश्रीहरिप्रिया॥अत
नअंगअनुरागि॥१॥पद॥इकताला॥
दोऊजलक्रीडारसरचे॥ज्यौंमोज्यौंम
सुरतसरितामैं॥मगनअतनतनकन

उत्सा॰ रचे॥टेक॥सोहतसहजसुभगउर
१०८ लागे।मर्कतकंचनमनिखचे॥श्रीह
रिप्रिया।विमलवनवरषत।निरषत
खगमृगमदमचे॥४॥३॥दोहा॥तैसि
यअंगसंगनिसखी।लियैंसंगसचि
सैल॥छबिरकतछविसौंनरेजलकेलि
करतदोउछैल॥४॥पद॥इकताल॥
जलकेलिकरतदोउछैलरी॥तैसिय
छैलिछबीलीअंगअंग।संगसहचरी
सैलरी॥टेक॥करसौंछरखलीवतहै
नहिं।पावतहैगहिगैलरी॥श्रीहरि
प्रिया।प्रबलपुलकारत।उरिजोबन
कैंफैलरी॥४॥३॥दोहा॥ऊकझोला
ऊकझोलअरि।रहेटरतपलनांहिं
॥मनऊंमरालकिलोलहीं।सुधासिं
धुजलमांहिं॥४॥पद॥इकताल॥ज
लमांहिनेरेरसडोलहीं।मानऊंसुधा ८

सरोवरमांहीं॥मत्तमरालकिलोलहीं॥
टेक॥छबिरकतछींटपरसपरपुलक
त।पुलकतमुखसौंबोलहीं॥श्रीहरि
प्रिया।अरिरहिटरतनहिं।ऊकझोला
ऊकझोलहीं॥४॥५॥इतिजलविहार॥
अथरथारोहनसमय॥आषाढसुदि
॥२॥अनुरागमैंउरंगांमामधामास॥दो नि
हा॥वनीठनीस जनीसवैं।सेवतत
नमनदीय॥देखकुरीछविसौंदोऊ
रथआरोहनकीय॥४॥पद॥लालच
पक॥देखकुरीदेखकुछविसौंदोउ
।मनमथरथआरोहनकीयें॥आव
तअतिमनभावतसंपथ॥श्रीनमप्रि
याप्रेमरसपायें॥टेक॥कोउसखी
विमलवीजननांवीजत।कोउसखि
वासच्चमरकरलीयें॥कोउसखिजै

उत्सा॰ १०९

जैसछ्उचारत।सुमनउछारतउम
गतहीयें॥८॥वनीठनीछूटछूटीक
टीकी।नटीचटीचहूंओरनिहीयें
॥श्रीहरिप्रियावदनविधवांनिक
।निरखतहैंहरखतमनदीयें॥९॥
॥दोहा॥मनमथमांनहरैंनिरखि।
गौरस्यांमछबिजाल॥अनापुंजरथमें
दोऊ।राजतमोहनलाल॥१॥पद॥
तालचपक॥मोहनलालविराजतर
थपर।देखतमनमथमांनहरैंरी॥
मनहूंमहामंगलकीमूरति।अना
पुंजविचिकेलिकरैंरी॥टेक॥गौरस्यां
मअभिरांमअंगछबि।वरनवरन
अंवरनिधरैंरी॥श्रीहरिप्रियालस
निरंगनीनीहसनिमनोहरसुमनझ
रैंरी॥२॥३॥अनुरागनिअकेविंदाम ९

धानास॥दोहा॥सोभादेखतसुखबढ्यौ
।कहिनहिंआवतपार॥राजतरथप
ररगमगे।नवरंगीसुकुंवार॥१॥पद॥
तालचपक॥रथपरराजतरगमगे।नव
रंगविहारी॥लाडलड़ीकैंसनमुखैं।रू
खरहेनिहारी॥टेक॥अंगसहांनैंसाज
केपहरैंपटनारी॥भूषनजटितज
रायके।जगमगातमहारी॥१॥पोनन
रेमुखचंदकी।मुसक्यांनउज्यारी॥च
टकीलीचितचुभिरही।एहोटरतन
टारी॥२॥छूटीछूटीछटंकिया।सह
चरिसुकुंवारी॥फरियासीसलपेटि
कैं।अैंचतअंगवारी॥३॥बोलतवच
नसुहांवनैं।कोकिलसुरसारी॥लेऊं
लेऊंललकारही।नवजोवनवारी॥४॥
सोभादेखतसुखबढ्यौ।कहिजातन

पारी॥श्रीहरिप्रियाकीकेलिनी॥नि
तिआनँदकारी॥५॥३॥अनुरागनि
धुन्यनागामध्यानास॥दोहा॥उमग
अँगअँगमैंबढी।कोककलारसझू
रि॥ललनांरथलैललाकौं।चढीप
लाकरिहरि॥१॥पद॥तालचपक॥
ललनांरथलैचढीललारी॥अधरसु
धारसप्याइपियाकौं।करिकैंहरिप
लारी॥टेक॥हितसहेलीसौंकलौ
हांकौ।तुमसबमैंसबलारी॥यामग
कीपगपगमहिरमिहैं।अछिपेथ
लीथलारी॥१॥उमँगअंगअंगनि
मैंबाढी।गाढीकोककलारी॥श्रीह
रिप्रियानिहारतहैंजे।जिनिकेनागन
लारी॥२॥४॥इतिरसारोहनसमया
अवरिघारितुबिलार॥ ॥

अनुरागनिबुक्कमालामध्यानास॥
दोहा॥टपकिटपकिबूंदैंपरैं।पा
ननतैंरसनोउ॥वहांजोटीकियैंनरु
तरैं।छटैनीजतदोउ॥१॥पद॥चौ
ताल॥टपकिटपकिबुदैंपरत॥
पातननतैं।छटैनीजनदोउवहांजो
टीकीनैंरसनीनेंतरुतरैं॥गौरस्यां
मलसरीरपहरैंकसौंनीचीर।चुह
चुहेचुवैंनीरमनुअनुरागरंगधरु
बाऊरैं॥टेक॥घनगरजनिदांम
नितरजनितैं।डरिनोमनिलपटाति
गरैं॥श्रीहरिप्रियाजूकीरीझनिजो
निरहसिवहसिदेखि।मनमथरतिम
नेमांनहरैं॥१॥२॥दोहा॥स्यांमलघनसं
गदांमिनी॥विहरतसुरतसमाज॥कैसी
मनकीमोहनी॥वनीविहारनिआज॥१
॥पद॥चेलनतिलाल॥आजुवनीनवरं

गबिहारनि॥कैसीमनकौंमोहैं॥सा
मलघनसंगबिद्युतिसीद्युति।अच
लअंगअविछोहैं॥टेक॥अतिअ
नूपअंबरमैंबिहरत।सुंदरवरस
रसोहैं॥श्रीहरिप्रियारसिकरसलं
पट।जानतिहैंजियजोहैं॥१॥३॥दो
हा॥वतवतातवातनिवहौ॥अति
घातनिरतिराज॥मत्तमहारसविल
सहीं।कंदमकुंजदोउआज॥१॥प
द॥इकतील॥आजदोऊकदमकुं
जविचिबसे॥स्यामास्याममत्तमादि
करस।करनकरनमैंकसे॥टेक॥
बातनिवतबतातबकुघातनि।गा
ननिगुंननगसे॥श्रीहरिप्रियानिरखि
हरषतमन।बरषतवनविहसे॥१
॥२॥दोहा॥छाडेकदमतरकुंजगरै
।हियेंहियेंपनपेम॥रिमिझिमिबुं २।

दनिबरषहीं।बनघननजितननेम॥
१॥पद॥चलनतितालं॥रिमिझिमि॥
बुंदनिबरषतबनघन।छाडेकदम॥
तरदोउजनैं॥स्यामास्यामगरबहि
यांदीयें।नेरेहीयेंप्रेमपनैं॥टेक॥
लहलहिललितचूंनरीमैंमिलिनई
उतिहैनाहंनरीतनैं॥श्रीहरिप्रिया
रसरहसिबहसिअंगअंगरगबगे
रंगरनैं॥१॥४॥दोहा॥अतिरतिवन
वरषनदोऊ॥तैसोईघनगरजंत॥
मुखरितमोरीमोरसुर।मदमातेउम
दंत॥१॥पद॥इकतालं॥बरषनदं
पतिअतिरतिवनरी।जैसोहीगर
जतघननघननघन।पवनसनन
सननननरी॥टेक॥मुखरितमोरीमो
रमधुरसुर॥उमदातेमहामातेमद
नेरी॥श्रीहरिप्रियातैसेईरसभीजत

उ.मा अलापतननननरी॥ ॥५॥ दोहा॥
११२ चहलपहलनईमहलमैं गईअह
लेतरषाइ॥ अद्भुतवरषावरषहीं॥
घनदामनिहरषाइ॥ ॥पद॥ चपक
ताल॥ आजुवनेअद्भुतवरषा वरषी
॥सजलस्यामघनसंगसौदामनि।व
रनांमनिहियहरषी॥ टेक॥ चहल
पहलनईसकलमहलमैं गई अ
हलनिनतरषी॥ श्रीहरिप्रियमि
लिरहीनिरंतर।हितूसहेलनिसरषी
॥ ॥६॥ दोहा॥ यमुनांतटसंघटविट
प।जहांकोकिलकलबैंन॥ ठाढेजुअ
अंसनिदियें।देखकुरीनरिनैंन॥ ॥
मीर पद॥ चंपकताल॥ देषौसखीदोउक
दमतरठाढे॥ यमुनांतीरैंनरूवनि।
की।कोकिलकूजतगाढे॥ टेक॥ सु
जापरसपरअंसनिदीनैं॥ अंगअनं २

गनिबाढे॥ श्रीहरिप्रियाजुरतिरसभीनैं॥ सु
रतलिंकनैंकाढे॥ ॥७॥ दोहा॥ अंगअंग
रसरंगपर।कोटिकामवलिहार॥ विह
रैंविपनविहारदोउ।सुंदरवरसुकुंवार॥
॥पद॥ इकताल॥ विहरैंविपनविल
री विहारनि।अंनिमोंनिमनमोदपरसप
र।नैनकनपांनलिहारनि॥ टेक॥ अंग
अंगरसरंगतरंगनि।कोटिकामवलि
हारनि॥ श्रीहरिप्रियाअटकिरहेदो
उछिननिजनैंननिहारनि॥ ॥८॥ दोहा॥
तनतनसौंमनमनमिले।भयेदोउइक
देह॥ विपनगेहवनवरसहीं।ज्यौंज्यौंस
रसतनेह॥ ॥पद॥ चौताल॥ प्रीतमप्या
रीविराजतविपनगेह।वरसतमेहज्यौं
ज्यौंसरसतनेह॥ तनतनसौंमनमनसौं
मिलायरहे।दोउजनधनीधन॥ अंग
अंगरंगमिलिभयेएकदेह॥ टेक॥

उत्सा
११२

उमंगि उमंगि अनुराग अधिका आनं
द उपजावन अति ही अछेहा ॥ श्री ह
रिप्रिया हिय बसो सुख संपति दंपति
। कोक केलि कोविद सहज अनूपम
रहा ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ गाढे आंगन कुंज कै
सांवर गौर किसोर ॥ रीझत भीजत स
हज सुख रंग रंगीली जोर ॥ १ ॥ पद ॥ इ
कताल ॥ सहज सुख रंग रंगीली जोर
। सुंदर नवल किसोर ॥ सघन कुंज कै
आंगन गाढे मिलि सांवर तन गोर ॥ टे
क ॥ नैंननि नैंननि बूंद निवरषन । बन घ
न गरजत घोर ॥ श्री हरिप्रिया रीझत भी
जत दोऊ ॥ दै दै प्रान अकोर ॥ १ ॥ ५५ ॥
दोहा ॥ भीजे अंबर रंग सुहां । रहे अंगल
पटाय ॥ कुंज कुटी आंगन दोउ । लागत
परम सुहाय ॥ १ ॥ पद ॥ ताल चपक दो ।
ऊजन लागत हैं अति नीके । भीजे अंग १२

अंगलपटानैं अंबर रंग सुही के ॥ टेक
॥ गरबहियां दियें नरे उमंग नि । आंग
न कुंज कुटी के ॥ श्री हरिप्रिया कहं
लौं बरनौं । जो गुन प्यारी पी के ॥ १ ॥ ५६ ॥
अनुराग निमग्न सुंदरि मझावास ॥ दोहा
॥ झूमां झूमां झरलग्यो । उनय घटा इ
हिं बार ॥ कदम सदम की ओट वलि
नि धर करमौं विहार ॥ १ ॥ पद ॥ इकता
ला ॥ राजन झूमां झूमां झरलागौ ॥ भीजै सा
री झमक झमक बागौ ॥ टेक ॥ कर कु
न अरबीजो उँ वलि । अहे छबीली छै
लि ॥ भीजि बसन अंग अंग के । जै है रंग
रस फैलि ॥ १ ॥ उनय उनय ए अरसि ।
नैं । आई घटा झुकि भूमि ॥ चपला चमक
नि चकुं दिसा । रही रसालनि लूमि ॥ १
॥ परीस कलस खियांनि कैं । चकचौं ।
धी चखियांनि ॥ कै हैं न उसगबगासवे ।
अबैनजो यह बांनि ॥ ५७ ॥ दै दै टेर सुहाव

अष्टा॰
११४

नी।रटत मेह मेह मोर॥विनय करत यौं
वैन महीं। दिखवतु वैनन की ओर॥४॥ले
ऊ वलि ओट कदम कौ आगौ॥श्रीह
रिप्रिया निधरक कै अनुरागौ॥५॥१२
॥दोहा॥श्रीहरि अंग संग प्रिया सुख।
कै सैं बरन्यौं जाति॥रंग रह्यौ दोउ लल
न मिलि। खेलत रति रस घाति॥१॥पद॥
चलत तिताल॥ललन संग खेलन रंग र
ह्यौ॥रंगनरी लाडिली अंग अंग सुरत
समर जीती नवजुवती। सेज सुहाग ल
ह्यौ॥टेक॥दैंन नैंन चित चैंन मैंन रस।
उर अंबुज उमह्यौ॥श्रीहरिप्रिया अ
परमित सुख सो। मुखन हिं जाति क
ह्यौ॥१॥१३॥इति वरषा रितु विहार॥अ
थ पहिली तीज॥श्रावण सुदि ३॥अ
नुराग निकुंज माला मधि आंगन॥दोहा
॥रमत तीज सब सहचरी। चली जुगल
मिलि संग॥सांवन सहज सुहांवनौं।अ १४

लि वदौं वनौं रंग॥१॥पद॥लाल रूपक॥
सहज सुहांवनौं दिन आज। मास सांव
न सुख वदौं बन पुरवनौं मन काज॥
टेक॥ कुंज कुंजन तैं चली मिलि सह
चरी सजि गोल॥मन कुं आई अर सि
तैं एउ तरि पुतरिन टोल॥प्रमुदि पद
वंदन कियौ कलन कै स्यौ वचन सुभा
खि॥आई वलियाली जु कै। सौं हार कौं
अमिलाखि॥१॥देखियैं जग मगत कैं
सी लगत प्यारी भूमि॥हरित रंग सुहां
वनी परि आवनी छवि ऊमि॥सुनत श्र
वन सुदेस वैनों चले आनंद झौंन॥प्रि
या जू कैं अंस भुज दियैं सहचरि सैंन लियैं
॥२॥झुंड झुंड नि उमडि दांमिनि घेरि
विचि घनस्यांम॥को उ आगैं को उ पा
छैं कोउ दहिन वांम॥एक एक नितैं
अधिक उमड्यो जांवहीं कौ रूह॥लहरि

उत्सा.
११५

दारसुदारगावतहंसगावनिसमूह॥३
॥हरिषिपथकरिमिथुनमनमथसक
लवनकोंबेलि॥जायजमुनातटच्वदे
नवेरंगफूलनझेलि॥देतजोदासहच
रीआनंदउरनसमाय॥अलकअंच
लहारतैंहटिरहेकटिलपटाय॥४॥
देखिछबिचित्रिनतोरहींचकुंओरख
गमृगमोर॥मिलिपरसपरकहतजै
जैजयतिजुगलकिसोर॥तेसौइघ
नआयघुमड्यौदरसदेपतिहेत॥नि
रखिसोभासजलकैतननवदनबुंदनि
देत॥५॥चपलचपलाचमकिचकुं
दिसवारहींनिजप्रांन॥रमकझमक
निदेखिअपनौंपरहलौअभिमांन॥
त्रिविधिसीतलमंदसौरभपवनग
वनसुदेस॥चरनबंदनकरनकौंव
लिकिमोअंनिप्रवेस॥६॥सरवरि ११५

तुकीसंपदारितुरूपपावसभारि॥आ
इबेलिछबिदेखिवेकौंहरखिहि
यमैंझारि॥देऊइनिहिंदयानिधे॥
कछूकोंमनोफलजोइ॥नजतना
वअनन्यकैकैसुध्दअंतहसोइ॥७
॥सहजसुखउत्साहसेवासुरसिसं
पतिसार॥विलसहींदोउझूलसि
हियमैंतीजकौसौहार॥धन्यजि
निकौभागहैजेनिरखहींभरिनैंन
॥हित्श्रीहरिप्रियाकौसुखसदा
आनंददैंन॥८॥१॥इतिपहिलीतीज
॥अनुरागनिमुक्तमालामध्यनास॥
दोहा॥उमगनरेअंगअंगमैं।संगस
हिचरीजाल॥फूलफूलमैंबैठदोऊ
झूलतलाडिलिलाल॥१॥पद॥इक
ताल॥झूलतलाडिलीलालहिंडोरैं
।झुलावैंसखीधोरैधोरैं॥टेक॥झूल

उ.सा फूलमैं बैठे दोऊ। उमंगें अंगमाहैं॥
२१६ तैसियरंगरंगीली सहचरि सखी सं
गमनमाहैं॥ लाडलडैनकौं लाडलडा
वत। क
फि कहि बचन लडौं हैं॥ सुनि सुनि सुनि
सुनि नीजि नीजि रस। रीझि निरीझि
रिझौहैं॥१॥ नवरसाबरै गात मनोह
र। सुहेरंग पट पहरैं॥ लहलही लिला
बनिलावनि मैं। लावनिताकी लहर
॥ मंजुल मुकट चंद्रिका चटकनि। छु
टैं छबि निकी छहरैं॥ नाना बरन बरन
आभूषन। आभूषित गुन गहरैं॥२॥
इकइककरन गहे डोंडी। ह्वै जै कर दे
ग रैव हियां॥ उरननेरे आनंद मधुर
मुख। मंद मंद मुसकहियां॥ वरकपो
लपरकिरनि कचनेकी॥ सनीसनेह
समहियां॥ अतिरसभीनी चखियनि

की। चितवनि मैं चित चुरहियां॥३॥ उ
मडी घुमड़ि घटा सब दिसिनैं। लागत प
रम सुहाई॥ तैसिय दामनिकी कलकौं
धनि। चकचौंध निछिनछाई॥ हरी न
ी हरैं भरे द्रुमनप्रति। हरीलता लपटा
ई॥ तैसिय चटचा. तक सुक पिक रट
मोरनि मोर मचाई॥४॥ बहत सहज सु
खदायक सीतल। मंद सुगंध समीरे॥
परसत ही सरसत अंग अंग मैं। अति
अमृत की सीरे॥ खिसनि ऊसम अंच
रकी फहरनि। श्रमकन समन सरीरे॥
सुनि नसुनगस कलबन सं पति। मधु
लिट मनसनीरे॥५॥ उमगि उमगि अ
ंगरागनि गावति। सुकमालिनि अलि
यां॥ बाजनि की बाजनि सुरसाजनि र
तिराजनि रंगरलियां॥ तानन रंग नि[illegible]
सबधंगनि। कौतक बढी अतुलियां॥

नैनमनमगनमहासुखसरवर।सोह
नसुखमंजुलियां॥६॥कोऊसखीक
रलियेंबीजनां।कोऊचौंरकरढोरैं॥
कोऊसखीकरलियेंमोरछल।झुकि
झुकिझूमिझकोरैं॥कोऊसखीसुख
बासबीलियें।कोउजरीनरिसोरैं॥
अपनीअपनीसौंजनसजिसजिसब
ठाढीसबओरैं॥७॥जुगलचंदआनंद
उजागर।नागरताकीरासी॥नितिनव
कुंजनबनसुखबिलसत।नित्यबिला
सबिलासी॥लगीरहतनितिसंगचको
री।सहचरिखासखबासी॥श्रीहरिप्रि
याप्रमोदप्रमोदहि।निरखिनिरंतर
दासी॥८॥२॥दोहा॥नवलनिलयनीर
जमहा॥आंगनअंगरसाल॥नवलहिं
डोरैंझूलहीं।आलीरीनवलाल॥१॥प
द॥नालनबमका॥आलीरीझूलतहैंन

वलाल।नवलहिंडोरनो॥टेक॥नवल
वृंदाविपनअबनी॥सहजसुखदरसाल
॥ललितलतिकालपटिरही।लहल
हीतरुनतमाल॥फूलफलदलबिम
लझलमल।वरनवरनबिसाल॥नयो
सुरतिलसकलबनघन।मुदितमकौ
करमाल॥१॥नवलकुंजनिकुंजप्रति
प्रति।रहीअतिछबिछाय॥उमडिउ
मडिसुघाटघटसौं।घटाघुमंडीआइ
।बकनपांतिसुनोंतिदमकनि।दांम
नीदरसाइ॥त्रिबिधिपवनैंगवनकी।
मनरवनलैनरमाइ॥२॥नवलनिरमल
नीरजमुनां।वहततरलतरंग॥तहांक
मलकूलडहडहे।अँगअंगरंगसुरंग
॥जुगलतटीनगजटीसुमनसुअटीसोर
नसंग॥तीरतीरनितरुनकीछबि।नीर
उदितउतंग॥३॥नवलचातकसुक

अष्ट॰ पिकन की। मधुकर धुंनि सुनि मंद॥ कु
१८ हकि केकै के के की केकनि। निरिं करन
सुछंद॥ बज निबान नि विविधि ओली॥
सुमिलि चाली चंद॥ तैसिये रमकनि झ
मकनि तिमैं। वढत अति आनंद॥५॥
नवल नीरज निलय आंगन रचो रंग
हिंडोर॥ तहां झूलत फूल फूले। उनै
नवल किसोर॥ पुलक प्रेमानंद मां सु
ख बेधौं नांहिं न थोर॥ अंग संगनि सह
चरी। छबि निरखि लेत हिलोर॥६॥ नवल
लचक निमचक नि मैं। मुरि उरनि की उ
रझांनि॥ कंचन की छबि कटिनि कटि।
सौं। लटकि अटकी आंनि॥ अरुन बर
न पटंबर नि की। फ बिरही फहरांनि॥
चपल चखि चित बनि लसी हिय बसा न
ड मुसकांनि॥७॥ नवल डांडी कर गहैं।
दोउ झूमि झुकि रस लेत॥ मृदुल अंग १८

मनोज मोहन सुरत संगनिकेत॥ चंद्रि
का की चटक मंजुल। मुकट अति छ
बि देत॥ किरत कबरी कुसुम रंजन। लि
रत गुलिक उपेत॥८॥ नवल केलि क
ला कुतूहल। रमत रहसि उमांहि॥ झू
मि लियें दोउ रसिक सनमुख। सुख न
बरन्यौं जांहिं॥ सखि सहेली सहचरी।
छबि। निरखि दृग न अघांहिं॥ हित
श्री हरिप्रिया बिलसत। कुलसि हीय म
न मांहिं॥९॥२॥ दोहा॥ खंभ अनूप म
खर्न के॥ डांडी चार सुढार॥ झूलत रं
ग हिंडोरनां॥ प्रीतम परम उदार॥१॥
पद॥ त्रिताल॥ प्रीतम झूलत रंग हिं
डोरैं॥ मदन सदन कै द्वारें॥ उनय अ
नूप खंभ कंचन के। डांडी चार सुढारैं
॥टेक॥ मचकि मचावत अति मन भा
वत। गावत राग मलारैं॥ श्री हरिप्रिया

निरखि हरखत हियें। बरखत प्रेम अपा
रैं॥१॥३॥ दोहा॥ अछित दियें मुक्ता रु
चिर। रोरी तिलक रसाल॥ बाल झुलावैं
रंगसौं। झूलत मोहनलाल॥१॥ पद॥
इकताला॥ झुलावैं नवल छबीली बा
ल। हिंडोरैं रंगसौं॥ झूलत मोहन स्यां
म सलौंनौं। सोहन मोहन लाल। हिंडो
रैं रंगसौं॥ टेक॥ रोरी के तिलक अछि
त मोतिन के। अमल कमल की माल॥
श्रीहरिप्रियाजू के प्रीतम। सरस प्रे
म प्रतिपाल॥२॥४॥ अनुराग निर्के
विंदा मध्या नाम॥ दोहा॥ रंग महल के
आंगनैं। अंगन रेख छबि जाल॥ झूलत
रंग हिंडोरनैं। रंग रंगीले लाल॥१॥ पद
चपकै ताला॥ झूलत रंग हिंडोरनां। न
व रंग रंगीले॥ रंग महल कै आंगनैं। छ
बिन रेख छबीले॥ टेक॥ रंग कसौं नाची

रमैं। अनिलसैं सरीरा॥ मनु अनुराग।
विवेकसैं। सेवत सुखसीरा॥ जगमग
जगमग जोतिकै। आभरन उदारी॥ मनु
ऊं देह धरि आए हैं। कौतिक उतिधा
री॥२॥ अलबेली अलकावली। बौऊ
बैस विराजै॥ फरवा मनऊं सिंगार कै।
छूटै छबि छाजै॥३॥ मंद मंद मुखचंद
की। मुसकनि सुहाई॥ सहज चकोरी
सखिन कैं। हिये करत सिराई॥४॥ नैं
न अनी की कोर सौं। चितवैं निहिंचोरी
॥ मनऊं अपार सह हिसौं। नरि देत स
रोरी॥५॥ इक इक कर डांडी गहैं। इक
इक अंस दीयें॥ झूलत फूले फूल सौं।
प्रेम अमल पीयें॥६॥ जोटा देत अलीन
लौ। मद गजगति लोलैं॥ देखि देखि मु
खऊंन कै। सुख बद्धो अतोलैं॥७॥ या
मऊरस कैं महिरैंसी। सोई जलजांनैं॥

उत्सा
१२

श्रीहरिप्रिया लड़ायकैं। पोढैं निज धा
नैं॥२॥५॥ इति हिंडोर॥ अथ फूहरि॥
अनुराग निसु रंगमाला मध्यान्हास॥ दो
हा॥ फुनगनूं मिघुमड़ी घटा। अति अ
नूप अभिरांम॥ सोहत रंग वढांवनौं।
परम सुहावनौं धांम॥१॥ पद॥ इकता
ला॥ तथा चलत तिताला॥ सखी वृंदाव
न निज धाम। परम सुहावनौं॥ सखी सो
हैं अति अतिरांम। रंग वढांवनौं॥ टे
क॥ सखी लहलह ललित तमाल। बे
ली लपटि रही॥ सखी सरस प्रेम कैं जा
ल॥ आनंद महमही॥२॥ सखी फूली
हैं रूप अपार। कोमल कनक तनी॥
सखी नरी हैं गुंनन कै भार। मोहनी सु
रति वनी॥३॥ सखी फुनगनूं मिछवि
देत। सवदिस हरी हरी॥ सखी कद
नी हियहरि लेत। निर्मल नरी नरी॥४

२

सखी नध्य सरोज सुदेस। रँग रँग फूलि
रहे॥ सखी सारस हंस विरोरा। बोल
त गहगहे॥४॥ सखी घुँमड़ि घटा चहुँ
ओर। दांमनि दमकै हो॥ सखी मुरव
रित मोरी मोर। झींगुर रुमकै हो॥५॥
सखी वक आवलि की पोति। राजत अं
ति भली॥ सखी निरखत नैंन सिरांति
। किलकनि अधिक अली॥६॥ सखी
रम किरमकि मद मंत। सहचरि डोल
हीं॥ सखी संग किसोरी कंत। केलि कि
लोलहीं॥७॥ सखी वरन वरन बौऊ रं
ग। अंबर बरपहरैं॥ सखी गवर सांव
रैं अंग। उपजत छवि लहरैं॥८॥ सखी
जगरमगर जगजोति। व्यापि रही वन मैं
॥ सखी वरनत लघुमति होति। अति
आनांनन मैं॥९॥ सखी स्यांमा स्यांम सु
खरासि। वहियां जोटी किये॥ सखी म

उत्सा॰ झरमझरम् फुहारि। अति अनुराग
१२१ हियें॥१॥ सखी चंद वदन चित चोर॥
चंद्रिका चारु लसी॥ सखी श्रीहरिप्रिया
किशोर। मूरति मन मैं वसी॥२॥१॥
दोहा॥ हिलिमिलि गुन गन गावहीं
। प्रमुदित प्रमुद समाज॥ रंगनीनीर
ति रंग सौं। झूलैं झुलवहिं राज॥१॥ प
द॥ इकताला॥ राज झूलैं झुलावैं हो झु
लावैं हे। रंगनीनीर ति रंग सौं। कसहि
यो हे॥ राज आवोल हरि लडावैं हो। ल
डावैं हे। लाडलडी जू के अंग सौं क
सहियो हे॥ टेक॥ राज हिलिमिलि गु
न गावैं हो। गुन गावैं हे। नवनागरि जू
के नेह सौं कसहियो हे॥ राज निज नैं
न सिरावैं हो। सिरावैं हे। देखत एक
त देह सौं कसहियो हे॥१॥ राज रस
रह सिवनावैं हो। वनावैं हे। सांमा २१

जू के सुहाग सौं कसहियो हे॥ राज हि
यरैं झूलसावैं हो। झूलसावैं हे। अल
वेली अनुराग सौं कसहियो हे॥२॥
राज प्रमुदित प्रमुदावैं हो। प्रमुदावैं
हे। सहजहि संग अनंग सौं कसहि
यो हे॥ राज छवि परवलिजावैं हो॥
वलिजावैं हे। श्रीहरिप्रिया उमंग सौं
कसहियो हे॥३॥२॥ दोहा॥ सखी हि
तु सहेली हरिप्रिया॥ जाकैं जाको चा
य॥ फूल गुलावी डहडह्यौ॥ रह्यौ रस
झूमि सुहाय॥१॥ पद॥ इकताला॥ न
था चलत तिताल॥ सखी डहडह्यौ फूल
गुलाव कौ। सखी रह्यौ सुरंग रंग झूमि
॥ सखी वृंदावन की कुंज मैं। सखी सर
स प्रेम रस झूमि॥ टेक॥

सखी अति कोमल आनंदन सौं॥

दे॰भा॰ सखीरा औरति सुखसंग ॥ सखीमह
१२२ कौ मोहन महमह्यौ । सखी लहलह्यौ
लाड अनंग ॥ १ ॥ सखी सहज सुहायौ
सोहनौं । सखी चिमत कारकौ रूप ।
सखी सुंदर वर सुन्दर सनौं । सखी॰
सीऔ अमृत अनूप ॥ २ ॥ सखी प्या
रौ आंनक्रूतें सदा । सखी सो है सरल
सुभाव ॥ सखी हित सहेली श्री हरि
प्रिया । सखी जाकें जा कौ चाव ॥ ३ ॥
अ ढोल ॥ पावस रितु संपति सवै । त
ने सिंगार सजाय ॥ आंन प्रिया के पर
सहित । आयौ घन घुमडाय ॥ १ ॥ पद
॥ इकताल ॥ आज घन घूमडि आयौ
हे । आज घन घूमडि आयौ हे ॥ लगैं
अति परम सुहायौ हे । लगैं अति पर
म सुहायौ हे ॥ १ ॥ प्रियाजू कैं परसन॰
काजैं हे । प्रियाजू कैं परसन काजैं हे २२

॥ सकल सिंगार विराजैं हे । सकल सिं
गार विराजैं हे ॥ २ ॥ मुकट सिर सुरधं॰
नुदियें हे ॥ २ ॥ माल वगपंकति हियें हे
॥ २ ॥ ३ ॥ फरवा असैं छवि छाई हे ॥ २ ॥
अलक उर ऊपर आई हे ॥ २ ॥ ४ ॥ गर
ज अतिही छवि पावैं हे ॥ २ ॥ मधुकर मु
खवैंन वजावैं हे ॥ २ ॥ ५ ॥ पीतपट वि॰
द्युत पहरैं हे ॥ २ ॥ दमक अति दीपति
गहरैं हे ॥ २ ॥ ६ ॥ किंकनी नूपुर वाजैं
हे ॥ २ ॥ हंस कुल कूनित समाजैं हे ॥ २
॥ ७ ॥ प्रियाजू सौं विनती कीजैं हे ॥ २ ॥
याहि अंकौं नरि लीजैं हे ॥ २ ॥ ८ ॥ ति
हारैं हित अकुलायौ हे ॥ २ ॥ करौ यु
कौ मन भायौ हे ॥ २ ॥ ९ ॥ स्वेदकन अंग
अंग सरसैं हे ॥ २ ॥ मंद मंद बूंद निकर॰
सैं हे ॥ २ ॥ १० ॥ भली रितु पावस आई हे ॥
२ ॥ दई इहिं नौं तिदिखाई हे ॥ २ ॥ ११ ॥ नैं

उत्सा॰
१२३

कअवविलवनलीवोहे॥२॥वेगि
हीयाहिमिलावोहे॥२॥१३॥सदाके
सहजसनेहीहे॥२॥आदिमधिअंत
मैंएहीहे॥२॥१३॥जुगलछबिनैंन
निहारैंहे॥२॥अपनपौसरवसवा
रैंहे॥२॥१४॥सफलजीवनिकरिजा
नैंहे॥२॥हरिनिजनागवखांनैंहे॥
२॥१५॥बनियांअनूपमजोरीहे॥
२॥सलोंनीसांवरीगोरीहे॥२॥१६॥
रहसिकैंरंगरमांवैंहे॥२॥चरनमैं
सीसनमावैंहे॥२॥१७॥मदनमोह॰
नसुखकारीहे॥२॥रँगीलीरूपउप
ज्यारीहे॥२॥१८॥लहरियांमैंलहरि
लेडांवैंहे॥२॥कमलकलऊंजदि
खावैंहे॥२॥१९॥जहंमिलिरंगविह
रैंहे॥२॥श्रीहरिप्रियाप्रेमतिहारैंहे
॥२॥२०॥४॥दोहा॥ठांठंसुखसंपति

२२

सवै।दंपतिमनभाईजु॥सरससुहाईहेस
खी।वरषारितुआईजु॥१॥पद॥चलत
तिलाल॥सखीसरससुहाईहे।वरखारि
तुआई॥सखीअतिछबिछाईहे।सव॰
निकैंमनभाई॥१॥सखीहरितसुअव॰
नीहे।रवनीमनहरैं॥सखीकुरबकीदब
नीहे।निरखतनैंनठरैं॥२॥सखीसघ॰
नसुहांवनहे।विपनझिलिझालिरलौ
॥सखीसुखउंजोवनहे।मुखनहिंजा
तिकह्यौ॥३॥सखीठांठंसोहतहे।सर
वरजलभरे॥सखीमनकौंमोहतहे।जल
जसुरंगररे॥४॥सखीनांनांपछीहे।बो
लतबोहोनते॥सखीनित्यउयछीहे॥
मोहनमदमते॥५॥सखीपवनसुगंधीहि
॥सीतलमंदवहैं॥सखीसमरसमंधीहि
॥आगतनहरिदहैं॥६॥सखीनवनववे
लीहे।लपटीतमालनसौं॥सखीरतिरस

५५

उत्सा· रेली है। झेली झालन सौं॥७॥ सखी घन
१२४ उनयौ बनि है। अति गहरावनी॥ सखी
मन सरसावनि है। बन बरसावनी॥८॥
सखी बकन सु पांती है। अंबर मैं उडैं॥
सखी अति मद मांती है। निरखत नैंन जु
डैं॥९॥ सखी चपला चमकैं है। चकैं दि
सि चंचली॥ सखी अति रस रमकैं है॥
राजैं रति रली॥१०॥ सखी सुरधनु सो है
है। पचरंग रंग कौ॥ सखी मन कौ मोहैं
है। उदित अनंग कौ॥११॥ सखी जमु
नां तट की है। अति छवि छाजि रही॥
सखी सुनग सुघट की है॥ रंजन राजि
रही॥१२॥ सखी कुंवरि किसोरी है। गो
री रंगा नरी॥ सखी रति रस बोरी है। पह
रैं चूंनरी॥१३॥ सखी सांवर वर सौं है। मि
लि सुख बिलसहीं॥ सखी भुज दियें ग
रसौं है। अति हिय मैं हुलसहीं॥१४॥ स

खी जोबन जोरी है। श्री हरि प्रिया दंप
ती॥ सखी अंखियां भोरी है। बसौ सुख
संपती॥१५॥ ५॥ दोहा॥ चल कुं विलंब
न कीजियैं। अंग संग सेवा काज॥ को
मल बन की कुंज कल कोकिल बोल
त आज॥१॥ पद॥ इकताला॥ आज क
ल कोकिल बोलैं है। कल कोकिल बो
लैं है॥ कोमल बन की कुंज मैं कसहि
यो है॥ डहडहे कदम निओलैं है। कद
म निओले है। प्रिय पछिन के पुंज मैं क
सहियो है॥१॥ अंग संग सेवा काजैं है।
संग सेवा काजैं है। चल कुं विलंब न की
जियें कसहियो है॥ बनौं यह वानिक
आजैं है। यह वानिक आजैं है॥ अछ
न अछुन पग दीजियें कसहियो है॥२
॥ ओटि लेकुं अलछित सारी है। अल
छित सारी है। जैसियै अंगियां उरोजन की

उत्सा कसहियोहे॥ तैसोईलहैंगालहकारी
१२५ हे। लहैंगालहकारीहे। कसितटना॥
सिमरोजकी कसहियोहे॥३॥ नूपु
रनिरहपनपहरैंहे। निरहपनपहरैं
हे॥ मुकुलमनोहरनाबकेकसहियो
हे॥ हारहियगुहिगुंनगहरैंहे। गुंहि
गुंनगहरैंहे। मंजुलमुक्तानाबकेक
सहियोहे॥४॥ सुअंगसुगंधलगांवैं
हे। सुगंधलगांवैंहे॥ अतरउमंगअ
मोलकौकसहियोहे॥ चरनइहिंचा
लचलांवैंहे। इहिंचालचलांवैंहे। हि
इनरचरमफोलकौकसहियोहे॥५॥
जायनिजनैननिहारैंहे। निजनैननि
हारैंहे॥ नागनरीनूकौनीरिलैक
सहियोहे॥ जथारुचिकैंअनुसारैं।
हे। रुचिकैंअनुसारैंहे। टहलकरैं
फुमगीरिदेकसहियोहे॥६॥ आद

२५

रकरनिकटबुलाईहे। करिनिकटबु
लाईहे। जांनिसुनटरतिकेलिमैंक
सहियोहे॥ सकलमनवंछितपाई
हे। मनवंछितपाईहे॥७॥ हरिप्रिया॥
रसरेलिमैंकसहियोहे॥७॥६॥ दो
हा॥ मदमातेगजराजज्यौं। अरिरह्यौ
टरतजुनांहिं॥ इतआवोअलियौंअ
हे। कहाखरीउतमांहि॥१॥ पद॥ इक
ताल॥ कहाकहौंउतक्यौंखरी। इत
आवोरीअलियो॥ सुखदेवैंयामज
नकौं। पुरवैमनरलियो॥ टेक॥ मद
मातेगजराजज्यौं। अरिरह्यौअटलि
यो॥ हरिनमांनैंनैंकहूं। रसफंदनिफ
लियो॥२॥ अतिगाढैंगुंननमैंगह्यौ। त
उरहैनसचलियो॥ छूटीलटपटफ
सनयो। डोलैंरलबलियो॥३॥ सुनतब
चनसहचरिसजी। नबरंगनवलियो

॥ऊंल्यौ बनमैं जायकैं।सनमुखसौं ब
लियौ॥४॥स्यांमांजूके अंगसंगमैं।
मिलि जोंमनि जनलियो॥ रिझ्योरसि
करसालकौं अनुगतिय अनुलियो
॥५॥बरसिसिरानैं मेघज्यौं।अंगअंग
सिथलियो॥मुकटनवायो चरनमैं।
चितवैं हूतलियौ॥६॥ज्यौंज्यौं प्रियाल
लकोरहीं।यहछाडौठलियो॥अजौं
मनमैं रहिजाहिगी।कछुकसर कु
टलियो॥७॥अबपीछैं नयें क्यौंबनैं
।फिरजाउसैंनलियो॥एआईयासुब
लियें।मोरामुतसलियो॥८॥अतनन
अलीसौं मिलिचलौ।ज्यौंपरैंसफलि
यौ॥रंगबढ्यौ वैंचौगुनौं।दीजितुहैं अ
कैलियो॥९॥उरधरिबचअलबेलीके
।मदहथियाइलियो॥कंचनबनकी
अवनिमैं।बिहरैंवरवलियो॥१०॥

फूलझरीसीलतांनिकौं करीनरीनत
लियो॥स्वेदसलिलतनसिलसिलौ
।सोहैंमंजुलियो॥११॥मनबांछाश्रन
नई।सुरतरूकैंतलियो॥श्रीहरिप्रिया
ढिगआयकैं।ओढतअंचलियो॥१२
॥इतिलहरि॥अथपवित्रा॥श्रावण
शुदि११॥अनुरागनिमुक्तमालामध्या
भास॥दोहा॥अतिप्रबीनमुखरूख
रही।निरखिबदनसुखदाय॥परमप
वित्रावालए।उरपवित्रपहराय॥१॥
पद॥चौताल॥पहरावतिरचिपरम
पवित्रा।परमप्रबीनपवित्रवालए
॥मुखरूखरहीनिहारिबदनछबि
।मदनमोहननबरंगीलालए॥टेक॥
तिलकरचायरूचिररोरीकौ।अछि
तलगाएललितभालए॥श्रीहरिप्रिया
बिलोकिबिबसनई।अंगअंगरईरू
पजालए॥१॥२॥दोहा॥जांनत्रांनहि

उत्सा
१२७

नजुगलकैं। लै आई सखनीय॥२॥ कौ।
पवित्रा पाट कौ। पहरैं प्यारी पीय॥
॥पद॥ इकताल॥ पवित्रा पहरैं प्री
तम प्यारी॥ पचरंग पाट जरी वर फौ।
दा सोना बढिय महारी॥ टेक॥ सखि
नसौं जरखिकन कधार बिचि। फूला
विधि विस्तारी॥ प्रांन प्रियन के प्रां
नत्रांन हित। पहराए सुखकारी॥१॥
यह सुख देखि देखि अनुरागहिं।
नागनरी सहचारी॥ श्रीहरिप्रिया।
की या छबि ऊपरि। करि तन मन ब
लिहारी॥२॥२॥ दोहा॥ सांवन मास स
हांवनौं। रसिक लाडिली लाल॥
रंग हिंडोरैं झूलहीं। पहरि पवित्रा मा
ल॥१॥ पद॥ इकताल॥ आज कौ सोना
बनी है बिसाल॥ रंग हिंडोरैं झूलन।
झूलत पहरि पवित्रा माल॥ टेक॥
झोटा देत पवित्र सहचरी। नरी प्रेम २७

हिय आल॥ जुगलचंद अरविंद वदन
छबि। निरखत नैंन निहाल॥१॥ चक्रं
औरी गोरी रसबोरी। गावत गीत रसा
ल॥ मृदु बाजित्र वजाय विविधि वि
धि। एक संच सुरताल॥२॥ रागरंग र
ह्यौ छाय विपन मैं। वरनैं को कवि जा।
ल॥ री फिरी फिरा तेमद माते। रसिक।
लाडिली लाल॥ सांवने मन भांवनें कौ
सुख यह। अति पांवन प्रतिपाल॥
श्रीहरिप्रिया परमधन जोरी। सदाव
सौ मम नाल॥४॥३॥ अनुराग निसु
रंग गाम अध्यानास॥ दोहा॥ चित्र मई
सी ह्वै गई। महा मनोज न बनाम॥ अद्
तपहरि निपेखिकैं। गौर पवित्रा स्यो
म॥१॥ पद॥ तिताल॥ गौर पवित्रा पह
रैं स्याम। सोना देखि छबी कीरति सजनी
विसरि गई पति की नाम॥ टेक॥ कहति

उत्सा·
१२८

मनहिं मन महा मगन ह्वै यह उदाम
किधौं वाम ॥ कबहूं न देखी सुनी अ
लौकिक। अद्भुत छबि अभिराम ॥१॥
तीन लोक में जितनी संपति। सो स
ब मेरैं धाम ॥ याकौ रचनहार जो वि
धनां। है कोउ याही नाम ॥२॥ सांवन
शुक्ल पक्षि एकादसि। दिवस पा
छिलैं जाम ॥ श्री हरिप्रिया लखि चि
त्र भई ज्यौं। भई मनोज के नाम ॥३॥
४॥ दोहा ॥ सुकल पक्षि एकादसी॥
सांवन परम उदार ॥ आजि पवित्रा
दिन बडौ। गावौ मंगलचार ॥१॥ पद॥
त्रिताल॥ सखी री गावौ मंगलचार। प्री
तम दोउ पवित्रा पहरैं। आज बडौ त्यौं
हार ॥ टेक ॥ शुक्ल पक्ष पांवन सांव
न की एकादसी उदार। जुगलचंद्र छ
बि देखि देखि कैं। लैहू सबै सुखसार ॥

२८

॥॥ विविधि भांति मेवा अरु मिश्री। दा
खौं दाख छुहार ॥ कनक कथार रचि भोग
लगावौ। आनंद लहौ अपार ॥२॥ बीरी
रचि रचि देहु कमल मुख। करि कैं तिल
क लिलार ॥ करौ आरतौ श्री हरिप्रिया
कौ। जावौ अलि बलिहार ॥३॥४॥ दो
हा ॥ लसत सुनग उर स्यांम कैं। मनमो
हन सब ठाट ॥ देखहु री पचरंग कौ
बन्यौ पवित्रा पाट ॥१॥ पद ॥ इकता
ल ॥ देखौ री आज पवित्रा पहरैं प्रीत
म पचरंग पाट कौ ॥ सोहत सुनग स्यां
म उर ऊपर। अति हि सलौनैं घाट कौ
॥ टेक ॥ अछित सहित रोरी कौ रंज
न तिलक ललाट कौ ॥ श्री हरिप्रिया
निरखि यह सोभा। मन मोह्यौ सब ठा
ट कौ ॥१॥२॥ दोहा ॥ ज्यौं अली बिधि सौं
नली ॥ परम पवित्रा चारु ॥ रंगरली क

उत्सा०
१२५

रलैइ कैं। पहराये सुकुंवार॥ ॥ पद
॥ तिताल॥ पवित्रा रचौ सुरंग सुदार॥
वीचि वीचि चौवा लगै छवि सुठि साठि
नवरा ततार॥ टेक॥ मंत्रित
करि कर लेइ रंगीली पहराए सुकुं
वार॥ कहा कहौं सोभा तिहिं छिन की
भयो विमोहित मार॥१॥ गावहिं अ
ली मिली सुर मंगल। करि जै सब्द उ
चार॥ श्री हरिप्रिया प्रान प्रीतम की
जोय जाय बलिहार॥२॥ इति प
वित्रा॥ अथ राखी॥ श्रावण सुदि १५
॥ अनुरागनि सुक्कमाला मध्यानास॥
दोहा॥ रतन सुंदरी जतन रचि अति
नरहस्य रमाय॥ राखी रंगीली छवि
निरखि पल पल लेति बलाय॥१॥
पद॥ इकताला॥ रंगीली राखी रहसि
रमाय॥ अति जतन रचि रतन सुंदर २६

री। कर बंधन करवायौ॥ टेक॥ बैठे दो
ऊ सुनग सिंघासन। अति छवि रहि
छाय॥ श्री हरिप्रिया निरखि नैन नेन
नि पल पल लेति बलाय॥२॥ अ
नुरागनि सुरंगमाला मध्यानास॥ दोहा
॥ सावन हूल्यौ सरूल्यौ धरि हूल्यौ छ
वि हीय॥ रछा बंधन करत है। कर
श्रीफल देतीय॥१॥ पद॥ तिताल॥
सांवन शुक्ल सलौंनी हूल्यौ॥ रछा
बंधन करत सहचरी धरत हियें छ
वि हूल्यौं॥ कर पकराय सुरंगित श्री
फल। पढत मंत्र तजि मूल्यौ॥ देति
असीस सदा सुख विलसौ। श्री हरि
प्रियास हूल्यौ॥१॥२॥ अनुरागनि वि
चित्र सोभा मध्यानास॥ दोहा॥ प्यारी
कर पकराय कैं। कंचौ लेकु बलिहा

उत्सा. रि॥रक्षाबंधतेरतननकौ॥बेकुंतज
१३ ननविसरावरि॥४॥पद॥तालचंपक
॥रतनकीराखीसखी बांधतजत
नसौं॥प्यारीजूकैं करपकरायक
ह्यौ लेकुंवलिनेहगुनपोइ अतिआ
नाहै अतनसौं॥टेक॥सुंदरसलौ
नीअनहौनी औअपूरबहै॥ब
कुंतविचित्रताकैं निपजीनतन
सौं श्रीहरिप्रियाजूकैं लायकवि
राजै यह।छाजैं छबिजाकीजबरा
जैं उजलतनसौं॥२॥३॥अनुराग
निअर्कैबिंदापथ्यामास॥दोहा॥
रखनी गजगवनीसबकै।सजिशृजाकौसाज
॥राखीबांधनकौंचली।रंगमहल
मैं आज॥१॥पद॥तालचंपक॥रंग
महलमैं आजैंरी।दोउलालविराजैं ३

॥राखीबांधनसहचरी॥मिलिचली
समाजैं॥टेक॥जगमगातगजगामि
नीपगनूपुरबाजैं।पहरैंबसनसु
हावनैंनगभूषनराजैं॥थारनरीस
वसौंजकीकरकंजनिभ्राजैं॥गाव
तगीतसुरीतिसौंमधुरैंसुरसाजैं॥
आ।अरचैंआयउमंगसौंअतिही
छबिछाजैं॥श्रीहरिप्रियाप्रसन्न
कैपुरयेमनकाजैं॥३॥४॥इतिरा
खी॥अथपाछिलीतीज॥भादवा
वदि॥३॥अनुरागनिपुक्समालाम
भ्यामास॥दोहा॥पुलकदोऊअंग
अंगमैं।नवजोबनसमतूल॥ती
जहिंडोरैंफूलहीं।कालिंदीकैंकू
ल॥१॥पद॥तितालं॥तीजहिंडोरैं
फूलतफूलेनवजोबनसमतूले॥

उत्सा॰
१३१
५ अंग

पुलकपरसपरदोउसुंदरवर॥ग॥
हिंडोंडीसुजमूले॥टेक॥उदितअ
नंग.अंगनिमैं॥खगमृगसबसुधि
भूले॥श्रीहरिप्रियाप्रसन्नवदन
क्रीडतकालिंदीकूले॥१॥३॥इति॥
श्रीपाछिलीलीज॥ ॥अथलाल
जूकीबधाई॥नादबावदित्र॥अ
नुरागनिमुक्तमालामध्यानास॥दो
हा॥करकंचनकीथारधरि।जरिपू
जाकौसाज॥बजतबधाईमहलमैं
।आईसखीसमाज॥१॥पद॥इकता
ला॥महलमैंबाजतआजबधाई॥
बनिबनिसखीसबआई॥वरनव
रनसारीतनपहरैं।लागतपरमसुहा
ई॥टेक॥सकलसौंजनरिझारि
नमें।करकंजनिभरिलाई॥थांनप्रि ३।

यनकौंप्रजिपरसपर।करतकेलिम
नभाई॥१॥सुरतसमुद्रऊकोरीगोरी।
अंगसैंगनिसरसाई॥लहलहलतिरं
गनीनीनोंमनि।दोंमनिसीदरसाई॥
२॥उमगिउमगि।अनुरागनिरागनि
तांनतरंगबढाई॥नंनंननननन
ननननंनं॥अतिअद्भुतछबिछा
ई॥३॥सुनिसुनिपरमप्रसंसितदौऊ
।आदरिनिकटबुलाई॥श्रीहरिप्रि
यासकलजुबजननकी।मनअभिला
खपुराई॥४॥१॥अनुरागनिधन्युना
गामध्यानास॥दोहा॥थांनवारिबलि
हारिलै।सुधिबुधिसकलबिसारि॥
बदनसुधानिधिनिरखिकैं।फूलीत
नमहचारि॥१॥पद॥इकताला॥स
ह्चरिफूलीअंगनमाई।बदनसुधा
निधिनिरखिस्यांमकौं।सबमिलिमो

उतवजपातयहुवाधानजोरिंगजनिजानदसमुदाइगोडु
कंदिासिउमाडउवोंहुमसागरफुलनाडयेसमाई॥ ३०२२

उत्सा० दवढाई॥टेक॥वारत प्रांनलेत वलि
१३२ हारी॥तनमनसुधिविसराई॥गाव
तगीतपुनीतमहलमैं।क्वनिअंवर
छितिछाई॥न्यरिमोतिनथारप
रसपर।डारतअतिछविपाई॥पर
मप्रेमरसबोरी गोरी निरखतनैंनसि
राई॥२॥छूटतपटआभूषनटूटत
।सुखलूटतअधिकाई॥जैजैजैख
करिकरिबोलत।डोलतडोलसुहा
ई॥३॥नारीकुलरोहिनीआठें।अ
ईनिसाजैनआई।प्रगटेश्रीहरिप्रि
याप्रांनधनानंदसिंधुनिमनाई॥
॥२॥दोहा॥देकुहमैंमनमांनती।तो
सीकहुबननांहिं॥नवललालकैंसो
हिलैंहमआईसबचांहिं॥१॥पद॥
इकताल॥लालजूकैंसोहिलैंहमआ
ईसबचांहि॥देकुवधाईमनकीमां ३२

नी।जाकौंदेखिसिहांहिं॥टेक॥भाग
सुहागनिनरीसहचरी।तोसीकहुबन
नांहिं॥श्रीहरिप्रियाप्रांनधनजीव
नि।सदारहैंउरमांहिं॥२॥३॥दोहा॥
करकुअलेकुलमहलकौं।महामा
होत्सवपाय॥बरसगांठिविलसाइ
यै।सवमिलिमंगलगाय॥१॥पद॥
इकताल॥बरसगांठिमोहनकीस
वमिलिमंगलगावौ॥रंगमहलकैं
रायआंगनमैं।मोतिनचोकपुरावौ
॥टेक॥वारवारत्रतिफजापतीकौ
।वंदनमालवनावौ॥सींकनसहि
तसाथियारचिरचि।विचिविचिकल
सलगावौ॥१॥हरेपातकीकदली।
रोपो।पटहनिसांनवजावौ॥जथारी
तिअकुवायललनकौं।पीतांवरप
हिरावौ॥२॥रतनजटितकंचनसिंहा

उत्सा॰ १३२

सनापरिदंपतिपधरावौ॥तिलकरचा
यरुचिरगोकें।ऊपरअछितचढावौ॥
३॥स्वस्तिबाचिनीअलियनसौंमिलि
।विमलीवेदपढावौ॥मुनिमुनिवां
नीउनिकेमुखकी।पुनिपुनिहियैंसि
हावौ॥४॥सबमंगलकौमूलमहोत्स
व।प्रतिमोदौंप्रमुदावौ॥श्रीहरिप्रि
याआनप्रीतमकौं।नवनवनेहल
डावौ॥५॥५॥दोहा॥मंगनकूंपरस
नप्रेमनिधि।उमगीसलिलापांति
॥बजैतबधाईअवनसुनि।अली
चलीनलिनीभांति॥१॥पद॥तिताल
काफी॥बजैतबधाईआजअली
री॥छितअंबरदिसछायरहीधुंनि
।सुनिसुखहोतअलीरी॥टेक॥क
रलियैंधारसकलजुबतीजन।स
जिसिंगारचलीरी॥गावतगीतपु॰

३३

नीतरीतसौं।सोहतकुंजगलीरी॥
१॥आनंदसिंधुबढ्यौअंगअंगमें
।बाढीरंगरलीरी॥प्रीतमउदैप्रसन्न
होतहैं।जैसैंकुमुदकलीरी॥२॥ठौ
रठौरमंगलमयआपी।रोपीकल
कदलीरी॥मंजुलमुक्ताचौकपुरा
ये।धरपितकलसथलीरी॥३॥प
ऊंचीआयरावआंगनमैं।ज्यौंसुख
सलितढलीरी॥श्रीहरिप्रियाप्रे
मनिधिपरसन।इतउतडगनडु
लीरी॥४॥५॥दोहा॥जितदेखौंतित
हीतितैं।हंनीउतिसबठौर॥सुखप्र
सन्नलखिलालकौं।भईआपकछु
और॥१॥पद॥तिताल॥आजकछु
औरैंआपभई॥जितदेखौंतितही॥
तितदीपत।मंगलमोदमई॥टेक॥

जसुधारांनीकीमहिमावलि।दिस।
विदिसोनिछई॥आनंदकैआनंद
उदैनयौ॥हंनीदमकदई॥२॥वन
वेलीबिमलीअनुकूली।फूलीफू
लनई॥श्रीहरिप्रियासन्नवदन
लखि।तनमनसूलगई॥२॥६॥
इतिलालजूकीवधाई॥अथप्रि
याजूकीवधाई॥भाद्रपदसुदि ८
॥अनुरागनिविलासावलीमध्या
भास॥दोहा॥नछित्रविसाखारु
चिरमैं।अरूनोदयसुखदाय॥भा
दौंसुकलाअष्टमी।प्रियाजनमज
सगाय॥१॥पद॥तालचंपको॥भा
दौंसुकलाअष्टमिआई॥अरुनो
दयविरियांसुखदाई॥नछित्रवि
साखारुचिरमहारी॥प्रियाजन्मउ

त्सवअतिभारी॥भारीअतिउत्सव
प्रियाजूकौ।जन्ममंगलगांवहीं॥नि
रखिसोभाहरखिहियमैं।परमप्रीति
बढ़ावहीं॥रचऊरचनांविविधवि
धिसौं।चारुआंगनचरचियें॥बांधि
बंदनमालद्वारनिध्वजपताकासुर
चियें॥१॥धरऊसाथियेंसीकजुराबो
।मंजुलमुक्ताचौकपुरावौ॥विधव
नकलसथरपनांकरियें॥मधिअ
वीतपुंगीफलधरियें॥धरियेंपुंगी
फलजुअदेत।वेटवेचेंउचराइये॥
मधुरदुग्धकावायप्रियाकौंकनक
पटपधुराइये॥पीतसारीलालहँगा
।स्यांमअंगियांअतलसी॥आडकेस
रिनाकबेसरि।निपटसादीमुखससी
॥अंगअंगकीअमितगुराई।निर

उत्सा. खिलौन जीवनि सी पाई॥ आनंदि
१३५ त उर मांहि उमाहें। सुंदरि सुजे न
रि नै औ चांहें॥ चाहै नै औ नरि सुज
नि सौं। सहचरी तन चित वहीं॥ ए
क छिन विन परस पिय कौ। वर
सवरस नि वित वहीं॥ अति विच
छन जो निजिय मैं। दयारस ली जो
न ली॥ स्याम कैं औं गलं गसुंदरि।
करी आरोपित अली॥ झालट कि
दयो औं धरामृत प्यारी। भरि लीनी प्री
तम अंक वारी। जुगल किसोरी जोरी
सोहैं॥ देषत कोटिकां मरति कोहैं॥
को हैं रति अरु कांम कोटिक। सकल
जन मन कौं हरैं॥ महा मोहन रूप अ
द्भुत। स्वच्छ क्रीडा करैं॥ लेकुरीति
जनैंन कौ फल धन्य भाग मनाइये॥

अब अनन्या प्रिया जू कौ जन्म मंगल
गाइये॥ ४॥ सखी सहेली सहचरि बो
ली॥ वे आई मिलि अनगन टोली॥ एक
एक तैं अधिक अनूठी॥ तिनहिं प्रि
या जू सब निधि लूठी॥ लूठी निधि सब
तिनहिं प्रिया जू। प्रेम पुलक न मांव
हीं॥ बिबिधि बाजे साजि सुर सौं। कंठ
कोकिल गावहीं॥ बढ्यौ अति उत्साह
कौतिक। सुनि श्रवन अति सुखन रैं॥
मैं डुलरा कौ बाजि कहि कांहि। जुगल
कौ जस बिसतर रैं॥ ५॥ डुकलाल॥ आ
ज बडौ दिन आईयौ। बाजि बाजि मंडुल
रा॥ पिय प्यारी गुंन गाऊ अरे। बाजि बा
जि मंडुलरा॥ प्रगट भई जोरी नली॥
बाजि बाजि मंडुलरा॥ खिल खिल खिले
हौ लाऊ अरे॥ बाजि बाजि मंडुलरा॥ ६
॥ कीरति रांनी की लली। बाजि॥ सब ब्र

उत्सा० १३६

जग्यान आधार अरे॥६॥ कुलरीं बैंता कौं
सवैं। वाजि॥ इहीं वड़ौ सुखसार अरे
॥७॥ रसिकन कैं हित कारनैं। वाजि
॥

लीलास्त्व तेअ

नेक अरे॥८॥ जिनके गुन को वरनहीं
। वाजि॥ वहियें वड़ौ विवेक अरे॥९॥
ए आई सब सहचरी। वाजि॥ गा
वत तेरे संग अरे॥ तूसबकैं सिरता
ज है॥ वाजि॥ तो बिन होत न रंग अरे
॥१०॥ प्यारा प्रआंगन महल कैं। वा
जि॥ मानौ मंगलचार अरे॥ आनँ
द अहलाद निरोऊ॥ वाजि॥ प्रा
टकियो सुखसार अरे॥११॥ श्रीरं
गदेवी अति रंगभीनी॥ मनभावती
बधाई दीनी॥ जो जो जिनकें जियकी बा
धा॥ सो सो सबकी पुरई साधा॥ साधा

पुरई सबकी सोसो॥ अनतर है कहौ का
ईये॥ कलपद्रुम समीप चिंतामनी॥
जो जब पाईये॥ दैअसी सब सुखनकै
सुख। कहत को मित सुखनहो॥ नि
त्य अविचल राज श्रीहरिप्रिया कौ
राजत रहो॥१२॥१॥ दोहा॥ करणासु
बदुख चूरणा। मम शरणा उर कैं वा
रि॥ श्रीराधे प्राणाधिके। जयति कृ
ष्ण सुखकारि॥ शरणापति जयति॥
वालजीवा॥ जयति श्रीराधिका। कृष्ण
सुखसाधिका। सुगुण आराधिका।
मम शरणं॥ जयति हरिसंगिनी।
कृष्णधनदामिनी। मत्तगजगामिनी
। मम शरणं॥१॥ जयति रतिवर्द्धि
नी। प्रीतमसपर्द्धिनी। मम शरणं॥ ज
यति रसदायका॥ प्रिय सयन सायका
। निरुपन वनायका। मम शरणं॥२॥

अ.सा.
१३७

जयति नवनागरी। सर्वसुखसागरी
।दिव्यगुनआगरी। ममसरणं॥ज
यति दिव्यंगनी। स्यामनिजसंगनी॥प्रे
मरसरंगनी। ममश्रारणं॥३॥जयति
मृदुहासिनी। नीलवरवासिनी। पर्म
परकासिनी। ममश्रारणं॥जयतिम
नमोहनी। सर्वतनसोहनी। दयासंदो
हनी॥ममश्रारणं॥४॥जयतिमृग
लोचनी॥दृष्टिदुखमोचनी। रूस्यम
नरोचनी। ममश्रारणं॥जयतिआनं
दनी।गुरुगुणछंदनी। पीयमनफं
दनी।ममश्रारणं॥५॥जयति निधि
रूपिका। नागवति नूपिका। ममस
रणं॥जयतिकलकेलिनी। रंगरस
रेलिनी। मदनमदपेलिनी। ममश्रार
णं॥६॥जयतिजनपालिनी। लोचन
विसालिनी॥रसिकारसालिनी।मम ३७

अद्भुतानूपिका॥ ३०५

श्रारणं॥जयतिजनतारणा। सर्वदुख
चूरणा। परानंदपूरणा। ममश्रारणं
॥७॥जयति श्रियश्रेष्ठिनी। महारस
वेष्ठिनी। परापरमेष्ठिनी। ममश्रार
णं॥जयतिमणिमालिका। मंजुरस
सालिका। प्राणपतिपालिका। मम
श्रारणं॥८॥जयतिपियपोषिका॥
नित्यतनतोषिका। लोकसरसोषि
का।ममश्रारणं॥जयतिसुउदारिनी
।प्रियवदाचारिनी। चरितचितहा
रिनी।ममश्रारणं॥९॥जयतिजगजि
तुपमा। नितंवनिमनरमा। वर्तुलस्त
नेसमा।ममश्रारणं॥जयतिपद्मान
ना।वेणिवरवंधना। केशमनरंजना
।ममश्रारणं॥१०॥जयतिकृतिगोच
रा।सरसिकरुणाकरा।रासरसतत्प
रा।ममश्रारणं॥जयतिनगभूषणा।

उत्सा॰
१३८

पियजलजनशुभ्रणा। श्यामसंतर्पणा
। मम शरणं॥१२॥ जयति हरिकामि
नी। मनहरा नोमिनी। श्रियाभिरा
मिनी। मम शरणं॥ जयति वरला
लिना। लाल हित संहिता। कृष्ण हृद
यस्थिता। मम शरणं॥१२॥ जयति
छविबिंबाजिता। कृष्ण कटि विराजिता
। नित्य सुखसाजिता। मम शरणं
॥ जयति नवकंजनी। नक्र मनरंज
नी। सर्वसुखसंजनी। मम शरणं॥
१३॥ जयति श्रुत सुंदरी। महारस मंज
री। विश्वगुंणवल्लरी। मम शरणं॥
जयति हेमांगदा। श्यामसेव्या सदा
। रति रहसि रंगदा। मम शरणं॥१४॥
जयति हितश्रालया॥ नेहिनी नि
लया। मंजु माला धरिया। मम शरणं।
।जयति रसरासिनी। कादिकउपा ३८

॰ जयति विद्याधरा। कृष्ण...जनवरा। सर्वसुखविस्तरा॥ मम शरणं॥ उ॰ १०

सिनी। विपनपतिवासिनी॥ मम श
रणं॥१५॥ जयति हरिधीमता। रस
मया रसरता। कृष्ण अंगसंगता। मम
शरणं॥ जयति मृदुलाकृता॥ स्ने
हिनी सुधाधृता। सौरभ्या सादृता। म
म शरणं॥१६॥ जयति वरसविता। तां
बूलचर्विता॥ गोरीगुंणगर्विता। मम
शरणं॥ जयति प्रिय तल्पगा। निर्म
ली कल्पगा। रंगरति शिल्पगा। मम
शरणं॥१७॥ जयति पियपूजिता॥
कलस्वर कूजिता। कोकिलच मूजि
ता। मम शरणं॥१८॥ जयति मृत्ति
कुंडला। कामिला कोमला। कुंजकौ
तूहला। मम शरणं॥ जयति रुचि
रारमा। रसजरासंगमा। निगमगुम्पा
गमा। मम शरणं॥१९॥ जयति मी॰

उत्सा. १३९ रूपदा। श्रेयसी पारदा। सौकृदासा
रदा। ममश्रारणं॥ जयतिरसवर्षो।
नी। नित्यहियहर्षनी। ममश्रारणं॥
२१। जयति गुणआवली। कुटिला
लकावली। सुत्रसोनावली। ममश्रा
रणं॥ जयति हरिजल्पिता। चारुति
लकांकिता। कृष्णपरिवंदिता। मम
श्रारणं॥ २२॥ जयति गुणअर्नवा।
किंकणीकलरवा। नित्यनवउत्स
वा। ममश्रारणं। जयति सौनागिनी
। प्रीतिप्रतिपागिनी। कृष्णअनुरा
गिनी। ममश्रारणं॥ २३॥ जयति ज
नेआलिहा। इंदिरासुस्पृहा। पीय
मुखमधुलिहा। ममश्रारणं॥ जय
ति कृष्णस्फुता। कृष्णगुणगणरता
। कृष्णमनवंछिता। ममश्रारणं॥ २४ ३९

जयतिनंदसुपालाइललिजितमुखाजसुमतीकृतसुषाममश्रा
रणं॥ जयतिगवलिललीकी [illegible]

जयति सुखसद्मिनी। पीयमधुपप
द्मिनी। अंतहअत्ववृद्मिनी। ममश्रा
रणं॥ जयति हरिनर्त्तिनी। नेत्रुवसव
र्तिनी। स्यामसंधर्त्तिनी। ममश्रारणं॥
२५॥ जयति दुखखंडनी। चारुकल
मंडनी। कृष्णउरमंडनी। ममश्रारणं
॥ जयति श्रोणाधिके। कृष्णआराधि
के। हरिप्रियाराधिके। ममश्रारणं॥
२६॥ दोहा॥ कृष्णसरोवरहंसनी
। कृष्णतरोवरवेलि॥ राधेराधेराधेज
य। श्रीराधेरसरेलि॥ २७॥ जयति॥ ला
लेरूपको। राधेराधेराधिके जयराधे
राधेराधिके॥ राधेराधेराधिके। श्री
राधेराधेराधिके॥ ॥ कृष्णकांतम
नोहरा। जयराधेराधेराधिके॥ सर्व
गुणगणांतस्वरा। श्रीराधेराधेराधि।

उत्सा॰ १४०

के॥२॥कृस्नमनमधकर हिता।ज
यराधेराधेराधिके॥मालतीवनमह
किता।श्रीराधेराधेराधिके॥३॥कृ
स्नआनंददायका।जयराधेराधेरा
धिके॥नित्यनौतमनायका।श्रीरा
धेराधेराधिके॥४॥कृस्नसुखदासा
गरी।जयराधेराधेराधिके॥अमित
रूपउजागरी।श्रीराधेराधेराधिके॥
५॥कृस्नचितआकर्षनी।जयराधे
राधेराधिके॥

सदा
रसघनवर्षनी।श्रीराधेराधेराधि
के॥६॥कृस्नपंकजपोखिनी।ज
यराधेराधेराधिके।समरहिमउ
खशोखिनी।श्रीराधेराधेराधिके॥
॥७॥कृस्नहियसरहंसनी॥जयरा

४०

धेराधेराधिके॥सकललोकअवतंस
नी।श्रीराधेराधेराधिके॥८॥कृस्न
तरवरवेल्लरी।जयराधेराधेराधिके
॥सदाअमृतरसभरी।श्रीराधेराधे
राधिके॥९॥कृस्नमनमृगडोरिका
।जयराधेराधेराधिके॥वसीकरन
किसोरिका।श्रीराधेराधेराधिके॥
१०॥कृस्नप्रानकपूरहिन।जयरा
धेराधेराधिके॥महागुनामंजुलित
श्रीराधेराधेराधिके॥११॥कृस्नअ
लिमनरंजनी।जयराधेराधेराधिके
॥सहजसुलितकंजनी।श्रीराधेरा
धेराधिके॥१२॥कृस्नचातकस्वा
तिकी।जयराधेराधेराधिके॥जीव
जीवनिश्चातिकी।श्रीराधेराधेराधि
के॥१३॥कृस्नकनकसुहागनी।ज

२कौ॥नदानवलो॥ठल्ल जयराधेराधेराधिके॥भानु हिय रंग
-बाढिलीश्रीराधेराधेराधिके॥१५॥ ३०३

उन्मा॥ यराधेराधेराधिके॥ द्रवकेरावड
१४१ भागनी।श्रीराधेराधेराधिके॥१४
॥कृष्णजेलचरजेलोमया।जयरा
धेराधेराधिके॥अहर्निसआधारम
या।श्रीराधेराधेराधिके॥१६॥कृष्णर
सआस्वादनी।जयराधेराधेराधि-
के॥उरसदाउन्मादनी।श्रीराधेराधे
राधिके॥१७॥कृष्णसंपतिसवसा
।जयराधेराधेराधिके॥त्रेयसीप्रीत
मवसा।श्रीराधेराधेराधिके॥१८॥
कृष्णतनेघनदांमिनी।जयराधे-
राधिके॥श्रीयाहरिप्रियास्वांमिनी
।श्रीराधेराधेराधिके॥१९॥ ॥
इतिप्रियाजूकीबधाई॥अधरसदा
न॥अनुरागनिविलासावलीमध्या
भास॥दोहा॥जदपिसकलसिरमौ १४१

२हेतेरियआसनिदांनप्रिया॥इनकौइतनौ
उनमांनप्रिया॥ ३०४

रनउतेरियआसनिदांन॥अहोप्रिया
प्रतिपालदै।अधरसुधारसदांन॥२
॥पद॥चेलनतितालै॥नथासोरचि
॥दैअधरसुधारसदांनप्रिया।करि
सजनकौसनमांनप्रिया॥१॥इहतौ
तिहारैंईआधीनप्रिया।जैसैंजलजी
वनिमीनप्रिया॥रसियारसकेरस-
लीनप्रिया।छिनहूंबिछुरैंतनछीन
प्रिया॥२॥लैउरसौंउरलपटायप्रि
या।कमलनसौंकमलमिलायप्रिया
॥पियप्रांनरहेसिरनायप्रिया।चले
नैंननिनीरचुचायप्रिया॥३॥नैंकस
दयसुहष्टिनिहारिप्रिया।तुहीजी
वनिआधारिप्रिया॥पियप्रांननकौं
प्रतिपारिप्रिया॥अबअपनौंविर
दसम्हारिप्रिया॥४॥करसौंकर-

उत्सा जिनि जूट कारि त्रिया ॥ बलि बिन न बि
१४२ या निरबारि त्रिया ॥ रस ठरनाकौ रस
ठारि त्रिया । दुख दवनैं देकु उबारि त्रि
या ॥ ५ ॥ तुम बिन गति नांहिन औन
त्रिया ॥ पोखियें पंकज पति नांन त्रि
या ॥ निसदिन तुव गुन गान गांन त्रिया
। पीवत पीयूष समांन त्रिया ॥ ६ ॥ क
बके मुख रुख रहे जोय त्रिया । छिन स
४३त केन न इतं होय त्रिया ॥ कछु बन त
उपाय न कौय त्रिया ॥ राखे है सौं मरौं
मनोय त्रिया ॥ ७ ॥ तिन सौं इति नीक
रियेन त्रिया ॥ अपनैं पननैं टरियें
न त्रिया ॥ औति की मति आचरियें
न त्रिया ॥ उपजी वनि संहरियें न
त्रिया ॥ ८ ॥ हो सब बातन सुख दैंन
त्रिया ॥ या मैं कछु अचिरज हैं न त्रि ४२

या ॥ महा मंगल मूरति मैंन त्रिया ॥ का
रियें करुणा रस औंन त्रिया ॥ ९ ॥ कल
ऊंज कमल बिलसाय त्रिया ॥ हितु
रूप हियें कुलसाय त्रिया ॥ मांन नीम
नौज मनाय त्रिया ॥ पिय पर तन तिहारैं
पाग त्रिया ॥ १० ॥ ऽ कैं ज्यौं नांनैं ज्यौं जि
वाय त्रिया ॥ गयो बदन महा कुम्हिला
य त्रिया ॥ रहे सासें समाय त्रिया ॥ म
नरमनैं लेकुरमाय त्रिया ॥ ११ ॥ गई के
लि अंग पियराई त्रिया ॥ नई खेद कं
पनि यराई त्रिया ॥ यह उचितन हौ
राई त्रिया ॥ प्रतिपारे हैं औंन सदाई
त्रिया ॥ १२ ॥ प्रतिपाल त्रिया प्रतिपाल
त्रिया ॥ तुम करुणासिंधु कृपाल त्रि
या ॥ पलपल पिय और हि हाल त्रि
या ॥ पहरावो मरगजी माल त्रिया ॥ १३
करियें मन पूरन काम त्रिया । ज्यौं छिन

उ०स० पावै बिसरांम प्रिया॥ नई देह कदम
१४३ की दांम प्रिया॥ दोउ मिलि विलसौ सु
ख धांम प्रिया॥१४॥ रखौ मुकट चरन
न तर छूटि प्रिया॥ एतै परदेनि हौ छूटि
प्रिया॥ रस कौ बनवारि दबूटि प्रिया
॥ लिखैं तो षित न कूतौ त्रूटि प्रिया॥
१५॥ उर कौ अभिलाष पुराय प्रिया
॥ करुणा मय नां उकहाय प्रिया॥
इकै दैकु महल मुकलाय प्रिया॥ ए
रहे अति हि अकुलाय प्रिया॥१६॥
इन कौ बनही कछु दोष प्रिया॥ करि
रहे कौन बिधि रोष प्रिया॥ पिय आंन
न कौ परिपोष प्रिया॥ ज्यौं लहै पर
म संतोष प्रिया॥१७॥ बलिहारि प्रिया
बलिहारि प्रिया॥ बलि बलि जांउ सु
कैंवारि प्रिया॥ नरिलै नरिलै अंकवा
रि प्रिया॥ रिझिलै रिझिलै रिझिवारि ४३

प्रिया॥१८॥ लै सजुन सेज सुधारि प्रि
या॥ अलबेली यह उनिहारि प्रिया॥
मिलि अंग संग रंग बिहारि प्रिया॥ प
ट पीतांबर औढारि प्रिया॥१९॥ अ
पनैं धन सौं धरि नेह प्रिया॥ सब भांति
स चाय सनेह प्रिया॥ लीजे कबहू न
हिं छेह प्रिया॥ दीजे सुख निरसंदेह
प्रिया॥२०॥ इकै दैकु प्रिया इकै दैकु
प्रिया॥ जगजीवन कौ फल दैकु प्रि
या॥ रति रस कौ बस कौ दैकु प्रिया॥
सुनि सस कौ सुख कि नि दैकु प्रिया
॥२१॥ मेरैं दृग आवत नीर प्रिया॥ ल
खि लखि पिय कैं तन पीर प्रिया॥ ध
र कत हिय रो न जि धीर प्रिया॥ चित
होत असंत अधीर प्रिया॥२२॥ दो
हा॥ सुनि सहचरि के बचन पुनि॥ दे
खि लाल कौ हाल॥ करुणा नरी कै

उत्सा॰
१५५

सोदरी॥हरीबालनतकाल॥२३॥ पि
यललियोहैलगाय उरोज प्रिया॥ अंबो
ज मिलाय अंबोज प्रिया॥ विलसाब
तिरति केचोज प्रिया॥ मनमुदितम
नोज मनोज प्रिया॥२४॥ उरउमगि
मिली अलिलारवि प्रिया॥ अपनौं
सनेसचसचारवि प्रिया॥ कियो आ
दरसनसंनारवि प्रिया॥ रंगरलीन
वीरसरारवि प्रिया॥२५॥ रसिमार
सलीनौं लाय प्रिया॥ निज अंगसौं अं
ग मिलाय प्रिया॥ बिहरत अंतरग
तनाय प्रिया॥ अपनैं सुखसहज सु
नाय प्रिया॥२६॥ हवरवन विलस
तरंग प्रिया॥ नववासादिकंसवसं
ग प्रिया॥ अलबेली फेली अंग प्रिया
॥ रतिरेली उमगा उमंगा प्रिया॥२७॥
सरसी आनंद अनुराग प्रिया॥ सुख

रतिबनीजोबनीजोग प्रिया॥ मनमोहनि
लाडैंलागि प्रिया॥ उं॰ १

सुंदरि शेमापागि प्रिया॥२८॥ अति अ
द्भुत कनका केलि प्रिया॥ रसिका
रसरूपा रेलि प्रिया॥ चित चिमतका
रवन बेलि प्रिया॥ नवरांगी गर्वगहे
लि प्रिया॥२९॥ सुनसुनगसुंदरसनि
जांम प्रिया॥ एआई मिलि अनिरांम
प्रिया॥ हनिकौपुरवौमनकांम प्रिया
॥ एसदासुचिंतकबांम प्रिया॥३०॥
महाराज प्रिया महाराज प्रिया॥ सब
ही विधि सब सिरताज प्रिया॥ मह
उमहालायक साज प्रिया॥ हकैंक
रऊ अलेकैंत आज प्रिया॥३१॥ मैं
मन वच यही मनाउँ प्रिया॥ नितिउ
ठिति हारोई गुन गाउँ प्रिया॥ यहसुख
खतन अघाउँ प्रिया॥ श्रीहरिप्रिया
बलिबलिजाउँ प्रिया॥३२॥२॥ ॥
इतिरसदान॥ अथ सांझी॥ आश्विन

उत्सा· वदि॥१॥अनुरागनिचित्रसुखीमधा
१४५ नास॥दोहा॥चित्रविचित्रवनावके
छुनिछुनिफूलेफूल॥सांझीखेल
हिंदोउमिलि॥नवजोवनसमतू
ल॥१॥पद॥इकताल॥सांझीसांझ
मिलिखेलहीं॥दोउनवजोवनसम
तूलहो॥चित्रविचित्रवनावके।
बौहौछुनिछुनिफूलेफूलहो॥टेक
॥पहरैंबागतनसुखी।अतिलागेम
नरुचिदाईहो।वरनवरनआनरंन
कीकछुकहिनहिंजातनिकाईहो
॥२॥गौरस्यामअतिरामरंगनरंअं
गअंगछबिदेतहो॥वदनचंदकी
चंद्रिकाचितवितहिंचुरायेलेतहो
॥३॥नैवनवपल्लवप्रीतिकेसखी
देतकमलकरआयहो॥अतिसौर ४४
नसौंसोहनैंमनमोहनैंसहजसुना

यहो॥३॥गावतगोरीगुंनेजरीसहचरी
सकलकोलकूजिहो॥रंगरस्यौनक
स्यौपरैंप्रतिप्रतिप्रतिमांकौंहूजिहो॥
४॥महलमहलमैंधुंनिछईसुनिश्रव
नेनईगतिगंजहो॥चकितथकित।
सबैकेरहीलखिअद्भुतसुखमनरंज
हो॥५॥रतनजटितरतिमंजरीकर
लैकंचनकीथालहो॥आरतिवार।
तिउकुंनकीलखिलखिबिनैंन
विसालहो॥६॥हिरनीहारिनीक्रीह
रितामुग्धादिमनोहरवेसहो॥इनि
कौसुखइनिहींवनैंमुखवरनैंकहा
विसेसहो॥७॥यहसांझीकौसुखस
मैंसमझैंजेसमुझनिहारिहो॥हितस
हेलीश्रीहरिप्रियाजीवतनितिनैंन
निहारिहो॥८॥१॥दोहा॥वौहौनाय

नहियजियनेरे।चुंनिचुंनिसुमनसुरं
ग॥मांझीखेलनसांझमेलि।पियप्या
रीदोउसंग॥१॥पद।इकताल॥पिय
संगविहारनिलाडिलीमिलिखेलन
सांझीसांझहो॥चूंटनसुमनसुचाय
केवौहोनाथहियेंजियेंमांझहो॥टे
क॥इंदीवरकल्लकलीललीवरको
कनदनकरलीनीहो॥सुनगगोद
मैंदवटिमोदसोंनारिनवायनवीनी
हो॥१॥पियबोसेसुमसुहीसेवती
सदासुहागबसंतीहो॥चुंनिचुंनि
चारुचंवेलिनवेलिसुफेलिलडे
लिलसंतीहो॥२॥सौंनसुगंधीजाय
रायंत्रवीनाहो॥सरसगुलालगुला
वमौलसरिमेलिनईलवेलीनां
हो॥३॥लैलैफूलडुफूलनमैंअनु

फूलअलौकिकनीकेहो॥मकमा
लतीजातिजूथकीकरवीरनहरहीके
हो॥४॥अनअनेनोतिरंगरंगनकेसक
लसुगंधसुहायेहो॥चतुरचौंपचितचा
ढवढिवढिगाढेमदनमनायेहो॥५॥
चहलपहलनिजमहलऊंजकौंरनि
कलनीतिलिपाईहो॥रचीसेवारिस
हेलिनिसमनमनेअलिलाखपुराई
हो॥६॥हजीपरमप्रीतिसचिस्यांमां
स्यांमसंहरनसाधाहो॥खरनथ्यास्न
स्नोगभरनटरिहरनविततनतंवाधा १न
हो॥७॥देयहगंचलरहेतनकतजि
चेंचलनामजिमौंनांहो॥पुनियासूप
पिवायपुलकतनदेवीराफचिरौंनांहो
॥८॥नीराजनकरिचरननसिरधुरिके
हलउचरिमडवैंनाहो॥देवीसदाप्रम

उत्सा। नवदनअयेमहाअंतुमहअैंनांहो।
१५७ ॥४॥ सुफलअदा बिसदा जस दारसदा
दवनी दुखदं दाहो॥ सुबेन अधिप
ति ईस्वरी अति विनर नउर आनंदा
हो॥५॥ सुख बिलास बिलसत सांझीसां
झी सांझी सुखसानी हो॥ श्रीहरिप्रिया
विहारि नवल छबि नारि बारि पीवैं पां
नी हो॥१२॥२॥ इति सांझी॥ अथ वि
जैदसमी॥ आश्विन सुदि १०॥ अनु
राग निविचित्र सोभा मध्यानास॥ दो
हा॥ अंग संग निसंग लै सखी। लेक
सबै सुख लूटि॥ आजु बिजैदसमी नि
सा विजै करौ सुगजूटि॥१॥ पद॥ ता
ल चंपक॥ आजु विजै दसमी उजिया
री॥ विजै करौ पियसौं मिलि प्यारी॥ न
व जोवन सुजैं वारी॥ टेक॥ अंगसंग।

५७

निसंग लै सहचारी॥ सुख लूटौ अति ना
री॥ श्रीहरिप्रिया जां तें बलिहारी॥ बारं
बार तिहारी॥१॥२॥ दोहा॥ सुनग सेजर
नधीर कौ। बर बिहार बलि आज॥ देखौ
दृग भरि लख्यौ पथ्य। लख्यै जोर सुगराज
॥१॥ पद॥ इकताला॥ आज बलि विजैनें
नजरि देखौ॥ सुनग सेज रनधीर वीर
कौ बर विहार अवरेखौ॥ टेक॥ जोब
नजोर किसोर मनोहर लख्यै लख्यौ पथ्य
लेखौ॥ श्रीहरिप्रिया प्रबल कौ संग
मश्र मुदित कै हिय पेखौ॥१॥२॥ दो
हा॥ सब तियसं पतिज्ञी ति मन मुदित
अैंसजु जदीनि॥ विलसत लाडिलि ला
ल दो ७॥ विजै विपिन रस्नीनि॥१॥ प
द॥ ताल चंपक॥ लाडिली लाल विजै
बन मैं विलसैं फूलसैं अति हीरस्नीनैं
॥ कौंन टरैं पन तैं रनधीर धरैं पग सां

उत्सा॰ मुहिमंकविहीनैं॥टेक॥दंपतिसंपति
१५८ जीतिसवैमनमोदभरेहदवेहदकीनैं
॥राजतराजसिंहासनपरश्रीहरिप्रि^
यादोउअंसभुजदीनैं॥१॥३॥दोहा
^महनि ॥अहलनिसहचरी।नईचित्रअवरे^
खि॥दसहीदिसदंपतिविजै।छईदे
खिरीदेखि॥१॥पद॥तालचपक॥दे
खिरीदेखिआजदसहीदिसदंपति
विजैछईछई॥कटकीसहितधारउ
रखटकीहारिजुहारिगईगई॥टेक॥
महत्नि चितवतिसकलअहलनिकैमनुचि
त्रमईमई॥श्रीहरिप्रियापदांबुजआ
श्रयउमगतिअनयनईनई॥१॥४॥
इतिविजैदसमी॥अथरासोत्सव॥आ
श्विनसुदि१५॥अनुरागनिकनैकोंना
मथ्यानास॥दोहा॥विविधिनेदगतिज
तिसहित।सकलकलासिरमोर॥अ

५८

तिरसवरसतसरदकी।सरबरिजुगल
किसोर॥१॥पद॥तिताल॥सरदसरब
रीअतिरसबरसत॥नवलजुगलमंड
लमैं॥विविधिनेदगतितानमानबं^
धानगाननकलउघटततार्थेडलमैं॥
टेक॥राजिनीजिवनवेलिडहडही।र
हीहत्रिदेआखंडलमैं॥श्रीहरिप्रिया
निरखिनैंनसुख।वारिआनपलपल^ ^नि
मैंउमगीउरमंडलमैं॥२॥१॥दोहा॥उ
घटतताथिताथिता।ततथेंथेंततकी
नें॥नागरिनागररासमैं।निर्त्ततनवगति
लीन॥१॥पद॥तिताल॥नागरीनागरनि
र्त्ततरासमैं।नईनईगतिलीनैं॥हस्तक
भेदविनेदपरायन।पायनवरजतिबी
नैं॥टेक॥उघटततताथिताथिताथे।त
तंमंततकीनैं॥श्रीहरिप्रियानिरखि
तनमनधनन्यौछावरिकरिदीनैं॥१॥२
दोहा॥अतिअद्भुतदेखीनहग।सुनीन

उत्सा॰
१४९

काहूतंउँ॥तोगतिपरिप्यारी अहो।वा॰
रीवारी जाँउँ॥१॥पद॥तिताल॥वारीवारी
एहूँजाँउँ।तिहारीगतिपरिप्यारी॥अ॰
तिअद्भुतदेखीनसुनीकहुँ।जोजोतोपैं
कल्यारी॥टेक॥सबगुंनसीवसरूपसिरो
मनि।नागरिनिपुनमहारी॥श्रीहरिप्रि
यासदाहियनैंननि।बसिरहियैंबलि
हारी॥२॥३॥अनुरागनिविचित्रसोना॰
मध्यानास॥दोहा॥कलाजितिकजग॰
न्रत्यकी।रंचेकवचीनकोंउ॥ललित
मृदुलगतिरासमैं।खेलतलालनदोउ
॥१॥पद॥तालचंपक॥खेलतलालन
ललनोंरासे॥ललितमृदुलगतिमिलव
तिलासे॥टेक॥श्रीवृंदावनसरदजोंमि
नी॥संगलियेंसतकोटिकांमिनी॥१॥वा
जोअनअनंनोंतिनुबजवति॥एकसुर॰
निकलसुंदरिसजवति॥२॥गावतिसु॰
घरसंगीतसुढारा॥सुनिसुनिरीझतदो

उसुकुँवारा॥३॥न्रत्यकलाजितनीज
गमांहीं॥कोउनवचीरंचकहनिमां॰
हीं॥न्रृकुटिविलासनिविहसिनदोवैं
॥कोटिकोटिकंदर्पलजावैं॥४॥ला
गदाटमैंकुसलकिसोरी॥अद्भुतगति
उपजावतिगोरी॥६॥रीफिरीफिभ्रीत
मटनतोरैं।यहछविसदावसोउरमो
रैं॥७॥हलनीमांनिवीनतीलीजै॥श्री
हरिप्रियाचरनरजदीजै॥८॥४॥अ
नुरानिकंदर्पकामामध्यानास॥दोहा
॥थेईथेईरटउघटहीं।सुघटसुगतिग
तिलीय॥रासमध्यरसनरेदोउनिनेत
प्यारीपीय॥१॥पद॥इकताल॥नित्त
नेरासमैंरसनरे॥अतिप्रवीनपियप्या
रीदोऊ।रासमैंरसनरे॥टेक॥ऊऊ
फ़ोऊऊफ़ां।फनकतथुंगथुंग॥लकित
धकिततधीधीकततनतथेईथेई।उघट
नरासमैंरसनरे॥निरखिवदनपरव

उत्सा० लितश्रीहरिप्रियारासमैंरसनरे॥१॥५॥
१५० दोहा॥अतिरसरासउलासनरि।विवि
धिविकटगतिलीन॥आनप्रीतमसँग
रमतिश्री।राधासुघरिप्रवीन॥१॥प
इकताल द॥सुघरिराधिकाप्रवीनि।आनप्रीत
मकैंसंग॥उरसिनरिउलासरमत।
रुचिररासरंग॥टेक॥धीधीधीधीधी
त धिलंग।वजतिजतिमृदंग॥उघटंसु
खा।ततततथेईतकेतथुंगथुंग॥१॥नृ
तुपदविन्यासविसदविकटगतिसु
धंग॥लागदाटउरपतिरपनौंहिन्दकु
टिलंग॥२॥सचवनिसुरनिलंकलवनि
उवनिकुंचउतंग॥सचवनिसुरनिकंठ
कीनीकोकिलाकुलपंग॥३॥अति
प्रसन्नवदनसदास्वामिनीसुअंग॥
रीझिलायलईहियेंश्रीहरिप्रियाउ
मंग॥४॥६॥दोहा॥वृंदावनआनंद
घनानवनितिकुंजनिवास॥नितनित

५

मोहनमोहनी।सुदनरीमंडलरास॥
१॥पद॥इकताल॥रासमंडलमध्य
निर्तितमोहनीमोहने॥वृंदावननं।
वनिकुंजसुंदरआनंदघन॥लागदा
टउरपतिरप।उघटतसंगीतसुल
प।रागरंगतानमान।गानसुघरसम
सुरन॥टेक॥त्रिभुवनहस्तकनदेखा
साम्हेंविलासमंदहास॥हियेंफूला
सनरेदोऊ।गवरसांवरतन॥रीझि
रीझिनीजिनीजिसुरतरंगअंगअं
गउरउमंगमाधुरीतरंगमथनको
टिमदन॥१॥अतिप्रवीनप्रीतम
निजपानिवरपानिआनिप्रानप्या
रीअमितजानिपौढ़तहैंश्रमकन
॥करतजन्होंरखवासीहरिप्रियास
सीदंपतिकीवारिनारिआपनपौध
नफूलीतनमन॥२॥७॥दोहा॥नित

उत्सा॰
१५१

थेई उघटत सुगति। त्रूंग त्रूंग रंग रंग ररी
॥श्रीरसिकनिन्हूं गावही। रासमध्य रस
नरी॥२॥ पद॥ तालजत्ता॥ रासमैं रसन
री रसिकनी सु गावै॥ सरिगमपधनी
पनिगमपधनीप॥ ननननननननन
न। त्रेन त्रेना सुगति उपजावै॥ टेक॥
गिड़गड़दा गिड़गड़दा तततततत।
थेई थेई पततवे कुतग तिन्हेद सुत।
परनि सम जावै॥ कुमकिं द्वं द्वं दनन
द्वनन द्वं द्वं द्वं मकि मृदंग श्रीहरिप्रि
या सहचरी बजावै॥३॥ ८॥ दोहा॥ रंग
नरे गुंन रसनरे। सांवरगौर सहास
॥ दोउ रसिक मनमोहनै॥ सरस नृ
त्तत रस रास॥१॥ पद॥ ताल चंपक॥
नृत्तत रस रास रसिक मन मोहन दो।
ऊ बहियां जोरैं॥ रंगनरे रसनरे गुंन।
नरे सोंन्नित सांवर गोरैं॥ टेक॥ ऊऊ

५१

ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ऊं ऊनन ऊनन ऊ मां
झी मां झी मां मृदंग घोरैं॥ धधमफध
फफ धधं मफ धां धां तां तां तां नन नो
रैं॥२॥ मुकट लटक अरु चटक चंद्रि
का न्हृ ऊ टिमटक चित चोरैं॥ श्रीहरि
प्रिया प्रसंन वदन परसी फिरी फिसि।
रद्धौरैं॥३॥ ६॥ दोहा॥ गति मैं सुगति त्रि
गाध लै। जति मृदंग साधे जु॥ ए दोउ नि
र्त्तत रास मैं। रसिक स्श्री राधे जु॥१॥ प
द॥ ए दोउ निर्त्तत रास मैं रसिक श्री राधे
॥ अति त्रिअनंद नरे उघटत तत ता धे॥
टेक॥ नाग्रि दा दा तं तां ग्रि दि दी तं। ध
धधधधधधधधधी तं॥ थुंग थुंग थुंग
तुंग विद्या बजावत धे धी ना धे॥ जैजै।
श्रीहरिप्रिया प्रवीन निर्त्त कला कोटि
ऊसला। त्रेलगलगगगगगगगग
तिमैं [illegible] गति त्रेति त्रेगा धे॥११॥

उत्सा०
१५३

टतझीनैं॥श्रीहरिप्रियाजोदीवीलीझी
ननननननननकीनैं॥२॥४॥अनुरा
गनिखलितानननामध्याजास॥दोहा॥
श्रीहरिप्रियानुपरसपर।करिकरि
निपटनिहोर॥मुखसौंमुखजोरैंदोऊ
।नित्तिननवलकिसोर॥१॥पद॥तिता
ला॥एरीनित्तेतरीनवलकिसोरकिसो
रीजोरीमुखसौंमुखजोरैंजोरैं॥उरप
तिरपगतिलेनसुलपतोननननननन
तोरैंतोरैं॥टेक॥बजतमृदंगताकथुं
ग्रदाथुंग्रदांथथंथांथथंथांथांथनन
ननैंथोरैंथोरैं॥श्रीहरिप्रियाप्रवीन
परसपर।करिकरिनिपटनिहोरैंहोरैं
॥२॥५॥अनुरागनिरत्नकलामध्याजा
स॥दोहा॥मदनमोहननननननकरत।
मोहनवदनविकास॥अतिरतिमृदु
गतिमोहनी।रमतिआनुरसरास॥१॥

५३

॥पद॥तालजात॥रमतरसरासमनमो
हनीमृदुलगतिमदनमोहनवदनन।
ननननननकरत।उघटपरिंनरटक
टिनिकटिअघटअटसुघटसांगीतथ
टअपटझटसुरनरत॥टेक॥त्रिग्रिदा
ग्रिग्रिदांग्रिददददददंददददंधध
धधधधधधधधंमृदंगधुंधुंधरत॥क
लाकोटिकनिपुननित्यश्रीहरिप्रिया
ननननतनतनतत्ततत्तथेईउच्चरत
॥२॥२५॥इतिरासोत्सव॥अथब्याह॥
अनुरागनिखंजनाक्षीमध्याजास॥दो
हा॥श्रीराधारुक्मविवाहसुख।सरव
समंगलमूल॥नितिनितिरचतसहे
लियांनरीप्रेमपरफूल॥१॥नरीप्रेमप
रफूलसवहितकीअलिअलवेलि॥
ब्याहविनोदनसुखसच्यौ।हिलिमिलि
सवैसहेलि॥२॥सवैसहेलिमहेलियां
राचीरंगरसाल॥सरवसतिनकैंसंप

उत्सा॰ दोहा॥देखौदेखौरीसखी॥चिदानं
१५२ घनरूप॥प्यारी राधेकौबन्यौ। वृं
विपिनअनूप॥१॥पद॥इकताला॥
५ दे प्यारीराधेकौवृंदावनदेखौदेखौरीआ
दीनंदघन॥तैसीयेसरदउजियारी
रीकौरुचिकारी।तैसोईत्रिविधिव
हैपवनेसननेसन॥टेक॥कुंजकुं
जद्रुमबेलीप्रफुलितअलिबेलीझू
लीरसझूमिझूमिरहीरतिरेलीतन
॥तहांश्रीहरिप्रियाकुलासखरेरचौ
रासरसिकप्यारेलालतत्ताथेईथेई
५ न उघटतनैनननसौं॥१॥१॥अनुराग
निकुंजनाकीमध्यगास॥दोहा॥न
रनचिबुकलियेंचरनमैं।नईनई॥
तिउपजाय॥नित्तनप्रेमउमंगसौं॥
एदोऊकैबिपाय॥१॥पद॥तिताला॥
एदोऊनित्तनछबिपावैं॥करैंकर

नमैंचिबुकचरनमैंनईनईगतिउपजा
वै॥टेक॥हसनिलसनिदसननकीद
मकनि।चितवनिचित्तचुरावै॥नूंकै
हिविलासचपलआयतअतिअँखि
यनिमारमचावै॥१॥रीफिरीफिरसखी
जिदरसपरप्रेमउमंगउमगावै॥श्री
हरिप्रियानिसंकअंककनरिलैलैनं
कलगावै॥२॥१२॥दोहा॥सुघटसुर
निसंघटउघटनीदीबीलीझीना॥रू
पउज्यारेरासमैंनित्तनरीरसभीन॥
१॥पद॥तिताला॥रासमैंनित्तनरीर
सभीनैं॥प्यारीप्यारेरूपउज्यारेदोउ
गरवहियांदीनैं॥टेक॥थेईथेईरट
सुघटउघटहीसुरसंघटपरवीनैं॥
उरपतिरपमैंचटचटसुलपघटअ
लगलागदटलीनैं॥१॥थुंकटथुंथुं
५२ कटअपटझपटझटझोंझोंझंकें

ती।दंपतिपतिव्रतिपाल॥३॥दंपतिसं
पतिसहजसुख।कुलहनिहूंकौलाल॥
तदपिब्याहविधिविरचिहों।विविधि
विनोदनिबाल॥बाललालसुखमैंस
चो।रचेसहेलिनिसंग॥अद्भुतब्याह
विनोदमैं।नीजिरहेरसरंग॥५॥नाजी
ब्याहविनोदरस।सरससहेलिनिबा
ल॥कहतसबेआबौअली।लड़बैं
दोऊलाल॥६॥पद॥तिताल॥दोउ
लालनब्याहलड़ावौरी।छबिनिरख
ननैनसिरावौरी॥टेक॥फूलनकौ
मंडपछ्वावौरी।सुचसरससथंनस।
चावौरी॥१॥रंगनीनैंकौंवांनबनावौ
री।सबमंगलमोदबढ़ावौरी॥२॥सुध
तेलफुलेललगावौरी॥बकुवाजेवि
विधिबजावौरी॥३॥ऊबटनोंअंगउ
बटावौरी॥केसरिके[illegible]रन्हवावौरी
॥४॥अंगअंगनिसिरीबढ़ावौरी॥स

हानैंपटपहरावौरी॥५॥गौरीकौतिल
करचावौरी॥मोतिनकैअछिनच।
ढावौरी॥६॥सेहरासीसबंधावौरी
॥हसिहसिवौरीजुरवावौरी॥७॥
सबसोनानिरखिसिहावौरी॥प्रेम
कैपागपगावौरी॥८॥दोहा॥प्रेमप
गेनिरखैंदोउ।हरखैंसबमिलिहेलि
॥आवौरीअलबेलिबेलि।बाढैरस
रसरैंगरेलि॥१॥रँगरेलीहेलीलिये।
करनलगीगुनगांन॥बनोंबनीजुव
नायकैं।बानैंदोऊबांने॥२॥पद॥
तिताल॥बानैंबांनरंगीलीरंगीले।
हेक्नैउलहनिरसिकैरसीले॥टेक
॥विमलाबारिजबदनीबाला।विधिसों
बांधतबैंदनेमाला॥१॥फूलनकौमंड
छैबिछावौ।सखीमोहनीमहासुहायौ
॥२॥कनकलतासौंलटकतडोलै॥
कलबैंनीकोयलज्यौंबोलै॥३॥गर

उ.ला. बनरी मंगल बकु गावै ॥ भांति भांति
१५५ दोउ लाल रिझावै ॥ ४ ॥ कोउ रतन चौ
की लै आई ॥ रंग महल मैं आनि बिछा
ई ॥ ५ ॥ बनौं बनी दोउ बैठाये ॥ निरखि
निरखि उर नैंन सिराये ॥ ६ ॥ कोउ रंग
रेलि नितेल चढावैं ॥ वेलि मेलि रस
रैलि लगावैं ॥ ७ ॥ बडभाग निवडभा
गमनावैं ॥ श्री हरिप्रिया निरखि बलि
जावैं ॥ ८ ॥ १ ॥ दोहा ॥ वेलि जो ऊंचौ
कौ चतुर ॥ बैठे रंगरली ॥ सौंधैं सरस सु
वांब ही ॥ अति हि विचित्र अली ॥ ५ ॥
पद ॥ ताल तेताला ॥ अली अति हि विचि
त्र चितरचौ पचरंगी ॥ मोद मदउ कुंन कै
मन महारी ॥ टेक ॥ कोउ अति हि अ
लबेलि उर मैं उमांहीं ॥ सबे अहल म
हली फिरै महल मांहीं ॥ १ ॥ कोउ ऊ
मकु मो घोरि अंगराग ल्यावै ॥ को ।
ऊ रंगरेली उअंगरंग चढावै ॥ २ ॥
५५

कोउ अंग उवटाय अंक वाय ल्याई ॥
रुचिर मुकट रचि मोर मोरी बनाई ॥ ३ ॥
सुरंग रंग बागैं विराजैं रंगीले ॥ उ आ
भरन अंग अंग भ्राजैं छबीले ॥ ४ ॥ सु
आइ उसव सिमिटि कै ठौर सौना
॥ चढी देखि सिर सिरी द्विगन ए लो ।
ना ॥ ५ ॥ सोहिलो ॥ तिताल ॥ हो स्यांमा
स्यांम सिर सिरी चढी ॥ रोरी कौ तिल
क अछित मोतिन कौ ॥ तिन सौं मि ।
लि कलकांति वढी ॥ टेक ॥ बडडे नै
नै अंन अन हौं नै ॥ कौंन न कौ नैं को
र कढी ॥ श्री हरिप्रिया प्रांन प्रीतम ।
की ॥ परमा परतन परत पढी ॥ २ ॥ २ ॥
दोहा ॥ पढी परत कहौ कौंन पैं ॥ परमा
परम पराज ॥ अंग अंग बांनी वढी स
जै सहानैं साज ॥ १ ॥ साज सोहनैं से कु
रे सोहन नैंन विसाल ॥ अंग अंग उम

गनरेदो ७। लाड़लडीलेलाल ॥२॥ प
द॥ तिताला॥ लाडलडीलेदो ऊलाल
॥ सोहत सुंदर नैंन बिसाल ॥ टेक॥ अ
लबेले अंग अंग रहे फबि लखन ॥
के मृपन छबि की छबि सदा सलौ॥
ने सहज सनेही ॥ एक प्रांन दीपत बै
देही ॥१॥ सीस सेहरै जगमग जोती
जरे जराय महामणि मोती ॥ सजे
सुरंग महानैं बागे ॥ बैठे दंपति अति
रति पागे ॥२॥ मुख तें बोल रैंगिनी ॥
जिरहेलसि ॥ बात करत कछु मंद मं
द हसि ॥ सोभा केसरवर मैं मानौं ॥
फूल सति हंस हंसनी जांनौं ॥३॥ रस
रंगनीनैं दोऊ लाला ॥ सोहत उर मो
तिन की माला ॥ हलै डुलै हनि नख
सिख सोभा ॥ श्री हरिप्रिया निरखि ॥
चितचोभा ॥४॥३॥ दोहा ॥ चितचोभा

गोनामयौ ॥ नखसिख रूप निहारि ॥ चं
दमुखी चकोर लैं ॥ गावत मंगलचा
रि ॥ मंगल गावै विविध विधि ॥ विधु
बदनी चकोर कोद ॥ भयौ कुलाहल वि
पिन मैं ॥ भयौ सबनि मन मोद ॥१॥ मो
द बढ्यौ मन रंग बढ्यौ ॥ आनंद उम ॥
ग्यो हीय ॥ सोभा सरस सुहावनी ॥ प्रीतम
श्री हरिप्रीय ॥२॥ प्रीतम श्री हरिप्रिया
कौ ॥ प्रति अंग निरखि रीम ॥ दिन दूलै
देखौ सखी ॥ लाल भावतौ भा म ॥३॥ पद
॥ तिताल ॥ देखौ री दिन दूलौ लाल ॥
भावतीकौ भावतौ ॥ नवल किसोरी गो
री संग लियै ॥ हिय मैं हरष बढ़ावतौ ॥ टे
क ॥ सुंदर स्याम कमल दल लोचन ॥ अं
ग अंग छबि पावतौ ॥१॥ रसिक सिरो
मनि रसिक लाडिलौ ॥ रस बरषावर
पावतौ ॥२॥ माथे मुकुट मनोहर सो ॥

उत्सा०
१५७

है। मनि मोती फूल कौं वतौ॥३॥ छैल
छबीलौ गरब गहीलौ। रंग रंगीलौ सु
हांवतौ॥४॥ लाडलडी कौं अचल।
सुहाग। हमारैं भाग जगावतौ॥५॥ अ
ति अनुराग नस्यौं अलबेलौ। लोयन
लागलगावतौ॥६॥ श्रीवृंदावन नव
निकुंज मैं। नित विलास विलसां
वतौ॥७॥ श्रीहरिप्रियाजी नकौ प्री
तमन नवनव सुख सरसांवतौ॥८॥
५४॥ रोल॥ नव नव सुख सरसावतौ॥
तनमन प्रानधनौ॥ लाडलडी लीला
डली। बनरी संगबनौ॥१॥ बनौ बनी
के ब्याह कौ रसमय मंगलचार॥ श्री
रंगदेवी संगसहचरी। गावत परम
उदार॥२॥ परम उदार सहेलियां।
फूली फिरत फवै॥ रंग निरंगरंगी
नहीं। सेवत सखी सवै॥३॥ सबै सखी

सब सेव मैं। फूली फिरत उमाहि॥
रंग रंगीली अली कौ। रंग सोहिलौ चा
हि॥४॥ सोहिलौ॥ लितालौ॥ रंग सो
हिलौ रंगरली कौ। रंगरंगीली रंग अ
लीकौ॥ टेक॥ श्रीरंगदेवीजू नवबा
ला। विश्वा नाउत्तमा विलीसा॥ रंगरं
गनीनी रंगरंगीली॥ नवल जुगल से
वा गरवीली॥१॥ सरस सरूपा मधु
रानन्दा। पद्मा स्थामा सुरस सारदा॥ ए
कटारतोरीसी गोरी॥ जिन कैं जीवन
एकहिं जोरी॥२॥ किरपाला देव देवी
सुंदरि॥ पद्मा स्था अरु ऐंद्रा सहचरि
॥ एकहिं सांचै मां हिढरीसी॥ छबि की
छैरी जराब जरीसी॥३॥ रामा वामा
छल्ला को मिले॥ पद्मा नाम्रकृति रू
पानां मिनि॥ कुंदन की सी वेली सो

उत्सा. है॥महा मोहनी मन कौं मोहै॥४॥गौ
१५८ रांगी केसी रूप विचित्रा॥ कुंकुम देवी
हित्र विचित्रा॥ कलकंठी ससिकं
ला रुकमला॥ कंदरपा हित सुं
दरिन वेला॥५॥ नागवति कामाध
वि अभिसिता॥ गुंनकी आकरि वेहत्र
नालसिता॥ सबै सखी सब सेवा मां
हीं॥ फूली फूली फिरत उमांहीं॥६
॥भांति भांति के लाडल डावैं॥ ला
डल डी ले अति सुख पावैं॥ रंग रं
गी हियैं रंग निनारी॥ श्री हरिप्रिया
निरखि सुख कारी॥७॥५॥ दोहा॥
सुखकारी सबके सदा। श्रीनंनके प्र
तिपाल॥ सरबस जीवनि सखिन
कौ। नवेल लाड़िली लाल॥१॥ नव
ल लाड़िली लाल कौं। अदेखत ब्या ५८

हअनूप॥ अलि मिलि गातहिं गांवहीं
।विमली मंगल रूप॥१॥ मंगल विम
ली अली सब। मंगल व्याह विहार॥ मं
गल सखी सुदेविका। गावत मंगल
चार॥२॥ सोहिलौ॥ तिताल॥ सखी
सुदेवि के मंगलचार॥ गावत विम
ली विमल विहार॥ टेक॥ सखी सहे
ली अरु सहचरी। मिली मंजरी और
सुंदरी॥ कावेरी मंजु केसी कवरा॥
केसी कंठी हार मनहरा॥१॥ महाही
रा अरु हीरा हारा॥ हित प्रदीप का
परम उदारा॥ चटकनेरी जहांचा
रु चमेली॥ सुखमासनी महा अल
वेली॥२॥ अहली महली फूली फू
ली॥ फिरत जुगल सेवा अनुकूली
॥नीरज नैंनी नेहन बीना॥ नागरि

उत्सा॰ नवलान वरँगनीनौं॥३॥नवन सुं
१५९ दरीनावण्यकासा॥सुखस्वरूपि॥
कासहज सुहासा॥मंजुलमाला॥
केलिकलावलि॥रतिरसालि का
रसरतनावलि॥४॥मंजुमोदनी मौ
जमनौजा॥मान मंजुला सरदस
रोजा॥सुखदा सुखदसरूपा सर
सा॥सानुरक्तिनी बानावरसा॥५॥
महामोद मंगलगुंन गावैं॥मौजमनौ
जनिमन उपजावैं॥जूथजूथमिलि
जुगलरिझावैं॥नृत्यकरैगावैंरु व
जावैं॥६॥रंगमंजरी रंगवढावैं॥चा
रचौंपनी चौंपचढावैं॥आंनदन
री उरमैंन समावैं॥श्रीहरिप्रियानि
रखिसुखपावैं॥७॥अनुरागनिसु
रंगमाल[illegible]भानास॥दोहा॥सुख॰ ५९

पावैसुनिगांनगुन॥हितू अली मनमां
नि॥कौं मन गावत पीयकौं॥कौंमनि
कौ हितजांनि॥७॥कामण॥चलत
तिलाल॥कौंमनकरौं गुकौंमनि रँगनि
रंगा उं लाल॥सुंदरस्वरूपकरिस्याम॥
ताविटां उं लाल॥टेक॥श्रीराधाराधा
राधाप्यारीजपनिजपां उं लाल॥डोरी
कौडोरौपियहियकैंपुवां उं लाल॥
१॥पांननकेपांनपीय आंननमेरां उं
लाल॥लालनलालमुनिकरिलरनिजु
लों उं लाल॥२॥प्यारीपदकमल मैंन
मरनमां उं लाल॥तौ हितुकी सहेली
श्रीहरिप्रियाकीकहां उं लाल॥३॥
दोहा॥लालपीयकीचितवनी॥टौंनां
नैरीविसाल॥गवरूप अंजन अंजौं
नैननिमैंरहैवाल॥कामनां॥चलत
तिलाल॥सुंदरस्यांमसलौंनां पियकी
चितवनिमांही टौंनां॥गवरूप चि

उत्ता नवनि मैं रँगि हौं। करूँ कौं मन रस लौं
१६ नौं जू॥२॥ टेक॥ प्रिया पदन कौं होय महा
वर। नख पद तरी रँगों उं जू॥ ऊँवरि
चरन आंगा कौ नूपर। होय चरन च
हूँ टों उं जू॥३॥ कंचन तन मैं मन पलि
यां करि। जा मैं अंग लपटों उं जू। वाही
के पट कौ पट का कै। करि कैं करि ज
करों उं जू॥४॥ रूप गुनन गुंथन की।
सूथन॥ कै कैं तन लगि जों उं जू॥ नैं
न नि मैं प्रिय अैंननि करि कैं। गाढे ग
५उ हि न गहौं जू॥५॥ रूप जाल कटि किं
कनि कै कैं। हिलग हार हियलौं ऊं जू
॥ ऊँवरि मनोरथ माला कै कैं। चौकी
चित्त करौं ऊं जू॥६॥ अति सु ऊँवार
भुज निकुति कै कैं। बाजू बंध बंधों ऊं जू
॥ प्यारी पद छवि पौंहौंची कै कैं। पहौं
चनि मैं पहुँचौं ऊं जू॥७॥ अंगुरिनि
छवि कै मुंदरी अंगुरिनि। नख आउ ६

राग रँगों ऊँ जू॥ कर कैं वलन की प्रना
होय कैं। हस्त कमल मिलि जों ऊं जू॥
८॥ कर कौ कर पर फूल लगों ऊं।
निरखि निरखि सुख पों उं जू॥ सिरै
पेच लनजो तिज गमगो। जगमग जो
तिजगों ऊं जू॥९॥ कलगी मैं मधिना
यक हीरा। तेज पुंज नैले कों ऊं जू॥
करन निकुति कै कुंडल करन नि।
नगन सुजटित जरों ऊं जू॥१०॥ वेसरि
कौ मोती मन करि कैं। नासा मंडि मैं
डौं ऊं जू॥ वंक चित वनी होय प्रिया
कौ। नैननि मांहि समों ऊं जू॥ तिलक
नील मोतिन के अछित। प्रिया हूँ सं
निकुति ल्यौं ऊं जू॥ अधर दसन मैं अ
रुन पीक कै। अंग अंग मांहि रमों ऊं
जू॥११॥ हेमांगी हिय मांहि धारि कैं।
पिय श्रीन निरखि जों ऊं जू॥ नकरि
नक रि प्रिया के उर ल्यों ऊं। सुख मौंन हौं

उत्सा. वैसों ऊं जू॥२॥ अदनपों नमक्क सुधा
२८। करों ऊं॥ मन वंछित सब घों ऊं जू॥
श्रीहरिप्रिया निहारि रूप छवि। छ
विछवि मांहि छकों ऊं जू॥३॥८॥
दोहा॥ छवि छवि मांहि छकाइकैं।
निरखौं रंग अपार। नैंन रंगु नगा
५दो ऊ यकैं। लइ ऊं सु ऊं वार॥१॥ दो उसु
ऊं वार लै डाय हूं। अदेतुन रूप व
नाय॥ नील पीत रस रंग कै। नवनव
रंग कराय॥२॥ पद॥ चलत तिताल
॥ नीलपीत रंग सूत रंगों ऊं। न रख।
सिख अंग मपों उं जू॥ डोरा करि कं
रि उर पहिरों ऊं। मध्य केर करि रस
पों उं जू॥ टेक॥ लोयन कौं अंजन लै
लैकैं। कं जन न मोंहि अंजो ऊं जू॥ म
न रंजन कौं हं जन करिकैं। ऊं जन मां
हि बसों ऊं जू॥२॥ बीमचरन प्रिया
अोंगों लैहूं। छबि जल मां हिं मिलों

ऊं जू॥ श्रीराधा मंत्र निमंत्रा ऊं। नैंन
निकैं कैंपों ऊं जू॥३॥ मोंन समुंद कौ
हंस बनों ऊं। मोतिन थार चुगों ऊं जू
॥ नवल महल मैं वास करों ऊं॥ प्रे
म सुधा सरसों जू॥४॥ रूप सरोवर ५उं
मैं सपरों ऊं। कंचन वरन वनों ऊं जू
॥ सबर समुख दवे सन पहिरों उं। हि
तैं अंग राग लगों ऊं जू॥५॥ कंचन
मनि मरकत मनि ल्यों ऊं। भूषन
प्रेम जडों ऊं जू॥ रचि रचि तन सिंगा
र सजों ऊं। सरस किलोल करों ऊं जू
॥६॥ कलकदं वछाया वैठों ऊं। अ
मृत फल अचवों ऊं जू॥ श्रीहरिप्रि
या पद रूप ररों ऊं। हंस हंस निफुल
सों ऊं जू॥७॥८॥ दोहा॥ फूलसों हेंस
हंसनी। अवकरूं और वनाव॥ नैंन
कुंज तन नैंन जरि। भूषन अंग लगाव

उत्सा० ॥१॥पद॥चचरितिताल॥तेजपुंजत
१६२ मलेतनमनाई॥बंकविलोकनिलों
ऊंजू॥कोकिलसुरनिमिलौंऊंता
मैं॥मधुकेओंवरसरोंऊंजू॥२॥टे
क॥कच्छकपोललटरंगरचोंऊं॥
नैंननिमांहिनरोंऊंजू॥वरनवर
नकेवेसवनोंऊं॥ललनोंलाललडों
ऊंजू॥३॥कवहूकरूमहाउरप्रिय
कैंपटनखलगिजोंजावैजू॥कव
हूविछियाअनवटकवहूपदसोना
वनिआवैजू॥४॥नूपुरपदपरिपां
ननकैंकैंजेहरिचित्तलगावैजू॥क
वकूकलहिंगाहिमध्यदेसमैंकेत
किकेलिललावैजू॥५॥कवहू
किंकनिकछूक्षीनकटिकोकिलक
लरवुमोहेजू॥कवहूचौकहियेकैं
अंगियनिकमलनिकंजनिजोहे ६२

जू॥६॥कवहूबाजूनिहारिबारिकैं
बाजूबंधसुधारैंजू॥कवकूकचूरा
चूरीपहुंचीकैंकरिहैरससारैंजू
॥७॥करपरकलकरफूलनिक
वहूअंगुरिनिमुंदरामुंदरीजू॥अं
तरकैअनुरागरंगसौंरंगेहस्तन
खेहधरीजू॥८॥कवहूहारमाल
करिहियमैंकरिहूंढुलरीतिलरी
जू॥चौकीचंपकलीचौलररीमो
तिनमोतिनिवररीजू॥९॥चंपव
रनतरननिकरिसारीचंपनिचंप
कमोतीजू॥कैंवलकेमोदसुगंध
मनोहरलैतहोतजगजोतीजू॥१०
॥करननमैंऔरननकैंवलकेजू
मकमधुकलहावैजू॥लोयननमैं
कैंअंजनलगिहैखंजनअंगलजा

वैन्॥८॥सीसफूलनलगिमांगमो
तिलरराजेचौकदरसांऊंन्हे॥क
५ जटनि चनमिलायैलटकौंऊंन्फूलनिसु
खबिलसांऊंन्॥८॥फूलतफूल
तफूलफूलधैकैंवलकैंवलसर
५ री सावैन्॥श्रीहरिप्रियानिहारिरि
कैंरूपरंगपरसावैन्॥१२॥८॥
दोहा॥रूपरंगपरसायकैंमुकट
बनावैतमाल॥मुरलीधरधरनि
र्त्तैंहीं।तरुकदंबमिलिबाल॥१॥
पद॥चलततिताल॥प्रियाकोक
न्दमुकटबनावैमुरलीअधरबजा
वैन्॥नवनबकंलालतागुंनगावै
ततथेईतांनसुनावैन्॥१॥टेक॥च
रनचरनपरनृत्यदिखावैबंकबि
लैबलिजावैन्॥लंकलचकिलच

कैंलचकावैरीझिमहारसपावैन्॥२
॥गोरांगीकौंरंगलगावैउज्जलजोति
करावैन्॥अंगअंगमैंचोपबढावै
प्यारीपदसिरनावैन्॥३॥नैंनसैंन
मैंअैंनकरावैरजरंजितपदध्यावैन्
॥श्रीहरिप्रियाप्रियरूपबनावैल
खिसोनाबलिजावैन्॥४॥१२॥दोहा॥
बलिजाऊंश्रीहरिप्रिया।यहसुख
अबमोहिदीजे॥रूपअनूपमलाडि
ली।निरखिनिरखिसुखलीजे॥१॥पद
॥चलततिताल॥निरखिनिरखिप्रि
यरूपअनूपमअैंनरतनगुंनगावै ५ त
न्॥नखनितरुनिअरुनाईलखिल
खिकुमदनिकुंबलनिरावैन्॥टेक
॥लालनिनैंननिमधकचंपकैंला
लीलालनगावैन्॥वारवारअंगअं

उत्सा० गपरिलावतविछुरननैंकसुहावैजू
१६४ ॥प्रियाउरनिआरोपितधरछविप
दसमकरिपरसावैजू॥समनहिंजां
निकुमदकलकैंवलनिमसरिमस
रिसरसावैजू॥२॥देखिबौरताविह
सिविहारनि।निजरदरंगररावैजू
॥श्रीहरिप्रियाकोलैबलिहारी।रू
पदहैनलपावैजू॥३॥१२॥दोहा॥
रूपदहैनलपाइकैं।लागिमानिहूं
आजि॥चरनकँवलकीअरुनता।
रहोसरोजनिसाजि॥१॥चरनकँव
लकीअरुनता।कमलकुमदरंगा
य॥केहेमध्ककेतकिकँवल।
कलसनिवासबसाय॥२॥वासव
सैतबहीलहै।सोनापरमरसाल॥सी
सफूलतरुराजवद।बस्योंसुकैरीना ६४

ल॥३॥पद॥चलननितालु॥सीसफू
लनरुनालसुकैरी।नैननिनैनरंगा
बौजू॥लटकटिनौंहलटनकोलट
कनि।निरिकपोलपरसावौजू॥टे
क॥बिवसिनयेप्यारौनहिंकीजे।
एहीवरमोहिद्याबौजू॥वाकुसुम
लनिकूलनिकैंवलनि।कुंजनिमां
हिंरखाबौजू॥१॥कैतकिकेलिर
हैंकैलगिकैंरहौकहौसुकहाबौ
जू॥छिनछिनजीकुंपायसुधाधर
॥याजीवनिमोहिप्याबौजू॥२॥नव
मंडलतरुरतनमनोहर॥रसनि
सुबासबसाबौजू॥नवलकुंजकी
छौंकरिकरि।रसबरषाबरषाबौ ४या
जू॥३॥श्रीनित्यकिसोरीराधागोरी
स्यामासरससुहाबौजू॥श्रीहरिप्रि
यारसरूपसहेली।यहसुखनिति

बिलसा वौ॥४॥१३॥ दोहा॥ बिल
सावौ श्री हरिप्रिया। देषूं सहचरि हि
य॥ सरबस तन मन सखिन कौ। प्या
री प्यारौ सोय॥१४॥ प्यारौ हरिप्रिया प्रा
न कौ। सुखदास बही कौ जु॥ लाडल
डी लीबनी कौ। बनां बन्यौं नी कौ जु॥
१॥ सोहिलौ॥ तिताल॥ लाडिलौ ब
नां बन्यौं अति नीकौ। लाडलडी ब
नरी कौ॥ टेक॥ सुहीपाग सिर पेच
सु केरी। और मोर मोती कौ॥ उज्जल
अछित सहित सोहे वर दियें तिल
क रोरी कौ॥१॥ कंजन षंजन गंज
न अँखियां। अंजन रंजन जी कौ॥
चितवनि चारु महा मन मोहै। कौ
है कौं तरती कौ॥२॥ सुंदर बदन र
दन रस राचे। छियें छोर उतरी कौ
॥ बागौ अंग लागौ रँग नीनौं। पडु

का हरी जरी कौ॥३॥ रंग रंगीलौ छैल छ
बीलौ। औ पति अैंन अमी कौ॥ श्री हरि
प्रिया प्रांनधन सरबस। सुखदायक स
बही कौ॥४॥१५॥ दोहा॥ सबही के सुष
दा दोउ। बनां बनी विवरूप॥ चित ल
गाय चित चौप सौं। चौरी रचौ अनूप
॥ पद॥ तिताल॥ दोउ लालन माहा
लडा वौरी। छबि निरखत नैंन सिरा वौ
री॥ टेक॥ चौंरी रचि रंग रमा वौरी। बि
हसन की बेदी बना वौरी॥१॥ सुख
आसन परि पधरा वौरी। हित कौ गँ
ठजोर जुरा वौरी॥२॥ जांवरि मैं मन न
रमा वौरी। सुविधो कत बेद पढा वौरी
॥३॥ लेवा जुग जोरि षिला वौरी॥ ह
ठडोरन छोर छुरा वौरी॥४॥ गुंने नारी
जुगारी गा वौरी। छबि देखि देखि ब
लिना वौरी॥५॥ दोहा॥ बलि जां कैसा

रूपकी।।भांवरि लेह फिराय।।साहो॥
सुभग सुहावनौ। सबही कौ सुखदाय
।।१।।सबही के सुखदा दोउ।।मन म
नोहर मीत।।चौरी लै कर चालियै।
मंगल गावत गीत।।२।।गावत गीत
सुहावनैं। आगें कै सहचारि।।लै आ
ई दोउ लाल कौं। चौरी चतुर विचा
रि।।३।।सोहिलौ।।ताल जोत्रा।।चा
रु मती चंदनी रची चौरी।।लूंमिरहि
ललित छबि झूंमि झौंरी।।टेक।।म
धि विराजै दोउ बनी अरु बनी।।दे
खि छबि छकि रही सुरति सजनी।।
१।।आसपास नि विलासनि उलास
नि।।गावै मिलि गीत मंगल हुलास
नि।।२।।करसौं कर जोरि कर हियैं
सिरावै।।लाडले दोउन कौं लाड
लडावै।।३।।साह की सकल रसरी।

तिनी की।।करत न ईभांवती भांवती।।
की।।४।।आरती साजि श्री रंगभीनी।।उ
गलमर वारि वलिहारि कीनी।।५।।
मंद मुसक्यात भुज अंस धारैं।।अह
ल सुख गहल श्रीहरि प्रिया निहारैं
।।६।।१५।।दोहा।।निहारैं श्री हरिप्रि
या कौं बाढी अदभुत कांति।।रचनां
रचति वितांन की। सहचरि विधि
विधि भांति।।१।।विविधि भांति रचनां र
ची।।लीयें ललन को सुख।।सहज सं
वारी मोरना बेदी सरस जु सुख।।पद
।।तिताला।।सुख बेदी सोरना सँवारी।।
विविधि भांति रचनां रची भारी।।टेक
।।बनी बनी दोउ बने बनाए।।सुखद
सहेली रूप धराये।।चारु मुख वाचकं
चोर निहारी।।अलबेली अनुरागनि

उत्सा॰
१६७

वादी॥७॥रंगसुदेवीचौंरदुरावै॥ललि
तविसाषालाइललडावै॥चंपलता
चित्रा छवि निरखै॥व्याहविनोदनि
वरषावरषै॥२॥तुंगविद्या इंदुलेषा
तनमैं॥उमगीआनंदमातनमन॥
मैं॥नितिप्रतिनेहनवीनीजोरी॥श्री
हरिप्रियाकिसोरकिसोरी॥३॥द
॥दोहा॥कुँवरिकिसोरीरँगरली॥
दिव्यसुललितनु विसेष॥चंपकलत
चित्रतईहू॥तुंगविद्यावर वेष॥१॥
तुंगविद्याविद्यानिपुन॥नांवरि
दयवीन॥रसिकनांवतेमाहकें॥व्या
स्करतसुखलीन॥२॥रसिकनांव
तेउकुँनकौं॥रिझवतरचिविधिआ
ह॥विदितसकलविद्यानलीआ
लीतुंगविद्याह॥३॥सोहिलौ॥नाल ६०

नाना॥तुंगविद्याविदितसकलविद्या
नली॥नांवतेउकुँनकौरसिकनांवति
अली॥टेक॥रचेसिरमोरमौरीवितनजि
तनकै॥तिलकदैगौरिअछितलगाये
॥व्याहविधिविसतरतवेदीवैठायेदो
उ॥वनांअरुवनीवनेईवनाये॥१॥फे
पुरोहितरुचिररिचाउचारतसखी॥
एकगठजोरिनांवरिफिराये॥सकल
सुरसाछिकरिकरनरचवायरँग॥छो
रिहथलेवसवसुखकराये॥२॥मंजु
मेधासुमेधारूतनमेधिका॥मधुरेछ
नासखीमधुस्यंदा॥गुणनिचूडाव
रांगदामधुरमाधुरी॥मोदमदनाल
सारसानंदा॥३॥चकुँओरनघरीनि
जप्रियासहचरी॥नरीअनुरागआ
तिरंगबौरी॥हियेंउमदातकोउआ
नपत्रैंलियें॥चौंरढोरैंकोउगातगोरी
॥४॥कोउवीरीविरचिदेतमुखजुग

उत्सा. लकैं॥ कोउ बिथुरी नअलकैं सँवा
१६८ रै॥ कोउ दृग अंजि करि कंजअंगु
रीनि करि॥ कोउ मनरंजनी छबि॥
निहारै॥५॥ चंद्रिका चारु चूड़ा च
तुरि चित्रनी॥ चंद्रकांता चंचला च
कोरी॥ कोमला केतकी कामरस कं
दला॥ केलि कसतूरिका माकिसो
री॥६॥ कोउ लै मुकर ठाढ़ी सखी स
नमुखैं॥ कोउ निज नैंन के फल हि
लेखैं॥ कोउ अनुरागिनी बाल के ना
लपर॥ ललित ला लहिं लखैं रहि नि
मखैं॥७॥ मगन मन प्रेम आनंद
के उदधि मैं॥ मुदित मुखकंज अ
ति उदित ओपैं॥ निरखि श्री हरि॥
प्रिया बदन बर चंद्रमा॥ चारु चह
लैंन कहि जात मो पैं॥८॥ १७॥ दोहा
॥ मो पै जात न कहि कछू लौं बरि
नंद सुहाय॥ बनी बनी राजैं दोउ मं

गल मोद सुहाय॥ मंगल नागसुहाग
के। चंद मुखी चकोर॥ गावत रैं
नि सुहावनी। सुख कौ नांहिन छोर॥
२॥ छोर न चोर न अमित सुख॥ अति
आनंद छायो। मंगल बरषत रैंनिरस
। सब मन मोद न यो॥ ३॥ पद॥ तिता
ला॥ नयो सब न मन मोद॥ रस बरष
त च कोर कोद॥ आज की मंगल रैंनि
सुहाई॥ अति आनंद उछाह। उमगे दकं
उर नित मा ह॥ श्री हरि प्रिया रंग नरे
। मन बंछित सब सरे॥१॥१८॥ दोहा॥
सरे सबै बंछित सुफल। सोभा सहज
सुहांहि॥ अलक लड़े दोउ लाड़िले
। महा मुदित मन मांहि॥१॥ मुदित म
हा रस रँगि रह्यौ। सो सुख कह्यौ न जा
य॥ मंगल मनि राजै जहाँ। बाजै कौ
नव धाय॥२॥ पद॥ तिताला॥ मंगल

उत्सा. मनिमोहनराजै।जहांक्यौंनवधाई
१६९ बाजैरी॥टेक॥दोउसांवरेदोऊगोरे
॥दोउएककछबिछाजैरी॥१॥एकहिं
वैसप्रानमनएकहिं।एकहिंसुखसु
खसाजैरी॥२॥वनेवनायेवनींवनीश्र
ति॥लखिरतिपतिमतिलाजैरी॥३
॥प्रियाप्रसंनवदनीकौवैनवानां
तनिनांतनित्राजैरी॥४॥रंगवेदी।
मैंरंगनरेदोउ।श्रीहरिप्रियाविराजै
री॥५॥१७॥दोहा॥राजैरीदोउरंगन
रस रे।दूल्है श्रीदुलही॥सोनासंनिहारि
कैं।अलवेलीउलही॥१॥उलहीवे
लिआनंदकी।अदेखतसोनापेखि
॥दूलहदुलहनिलालकी।रंगभरी
छविदेखि॥२॥पद॥तिताल॥देखि
देखिछविदूल्हैदुलही॥उरमैंआ
नंदवेलीउलही॥टेक॥नांतिनांति ६९

दंपतिहिंरिझावै॥रसरंगनिवरषा
वरखावै॥नारीतिनांतिविसतारै
॥सुनगासाघाचारउचारै॥१॥चिम
तकारनीचित्तचुरावै॥प्रेममंजरी।
प्रेमपुरावै॥इंदारिकावधाईदेत
॥नवलजुगलदूल्हैकैहेत॥रसि
कारईलौंनउतारै॥आनंदाजु।
आरतीवारै॥नदसौरनानागमना
वै॥गुंनगरबीलीगारीगावै॥३॥प
द॥तिताल॥आवौरीमिलिगारीगा
वौ॥सुंदरस्यांमरिझावैंरी॥स्यांमसुं
दरकेनैनसलौनैं॥लखिलखिनिज
नैनसिरावैंरी॥टेक॥कहततुम्हैंस
वस्यांमसुंदरतुम।कैसेसुंदरस्यां
मन्हो।जांनतहैंहमतौतुम्हैंनीकैं।
लीनैंहोविनदांमन्हो॥१॥वेदपुरां।

उत्सा. नैनेद कहा जो नैं। कहत तुम्हैं गुन
१७० जाल जू॥ सो तो एक दिनां हम देख
।पहिरैं बिन गुंन माल जू॥२॥ होय
निरंजन मन रंजन अंखियन मैं अं
जन धायो जू॥ प्यारी जू को प्यायस
धाधर। जग जीवनि हम प्यायो जू॥
३॥ मोहन होड मुहायो मन होइ॥
कुल्म कहाये लाल जू॥ दीपन के
सूधे सुलटे परि। सब अंग उलटी।
चाल जू॥४॥ जैसे हौ तैसे कहा क
हियें। श्री हरिप्रिया जू के संग जू॥
रंग महल के रति विहार मैं हारि रहे
निज अंग जू॥५॥२०॥ दोहा॥ निज
निज अंग लडाय कैं। सहचरि गा
वत गारि॥ कहत सबै गोरे तुम हिं
।देखौ प्रकर निहारि॥१॥ पद॥ च ७१

लत तिताल॥ तुम गोरे हो मोहन गो
रे। कौ उस्यांम कहै तेनोरे॥टेक॥
सो तौ यह दोस हमारौ॥ आंखिन मैं
अंजन कारौ॥ तुम जानैं हो मोहन जा
नैं। अब नैं कर हौ किन छांनैं॥१॥
नांतर कहि है वा हि दिन कौ। बोल
नि प्यारी जू बिन कौ॥२॥ तुम आछै
हो मोहन आछै। कौ परै तिहारै पा
छैं॥३॥ अहो अधर सुधा अनुराग
।प्यारी जू के पायन लागे॥४॥ तुम प्या
रे हो मोहन प्यारे। कहा कहियें
कर मतिहारे॥५॥ कहो या
मैं कहा बडाई॥ हम देखन हाहा खा
ई॥६॥ तुम लौनैं हो मोहन लौनैं॥
आगैं नये नये अब कोउ होनैं॥७॥
क्यों नीचैं नीचैं जावैं॥ ए [illegible] लप
टी आवैं॥८॥ तुम कैसे हो मोहन

उत्सा० कैसे ॥ हमरे गुंन देषौ ऐसे ॥६॥ पद
२७१ रायक मकमल की माला ॥ करि
दियला दिले लाला ॥२॥ तुम्हें गा
रि कहा अबदीजे ॥ मुख परि पानी
वारि पीजे ॥३॥ संग गोरी हो संग गो
री ॥ वनि श्री हरिप्रिया जू की जोरी
॥४॥२॥ दोहा ॥ जोरी गोरी रंग न
री ॥ सहचरि सब सुषदेत ॥ जो बरि
न रिगुंन गारिगय ॥ वदन वलइ
या लेत ॥१॥ लेत बलैया वदन की
॥ फूली मात न अंग ॥ रह सिब धा
ई गांव हीं ॥ ललिता जीनी रंग ॥५॥
सो हिलौ ॥ तिताला ॥ ललिता ल
लित रंग नीनी ॥ गावत मंगल रह
सिब धाई ॥ मंगल रस रंग निअनु
फूली फूली फूली अंगन माई ॥
टेक ॥ सुंदर सुनग सुघा सन सोह

७१

न ॥ चैठे रसिक सिरोमनि राई ॥ वद
न निहारति लेत बलैया ॥ मांनि मा
नि निज नाग वडाई ॥१॥ रतन ज
रा रति कला सुनेत्रा ॥ नेत्र रेषिका
अति मन भाई ॥ सुंदर सुषी ध्वनि
हा हंसी ॥ केलि कला पनि परम
सुहाई ॥ तांन मती ता रावलितर
ला ॥ तांन तरंग तनन तरु नाई ॥ ला
ष लाष अनिलाष उरन के ॥ पुर
वति तउ मति हैपति नपाई ॥२॥
॥ सुख सहेलि रचि पान षवावत
॥ सुख प्रसन्न रु रुष लै चित लाई ॥
प्रीति पगी रंग मगी जगमगी ॥ नव
जोबन जग जोति जु छाई ॥४॥ अ
ति उदार दोऊ अलबेले ॥ रीझि रं
ग वरषा वरषाई ॥ जीवन जोरी श्री ॥

उत्सा॰ हरिप्रियाकी।जोतिनोंनिसवकों।
१७२ सुखदाई॥धमार॥दोहा॥सुखदेनो
वरिगारिगुंन।करेबधाईगीत॥जु
वाखिलावनजुगलकौं।कोहारैको
जीत॥१॥जीतीदुलहनिलाडिली
।आनंदनयोअपार॥हरखिहियैं
हितुसहचरी।डारयौपियगरहार॥
२॥हारडारिपियकैंगरैं।गरबीली
गुंनगोर॥कुलसनहसतकरांवही
।चोरडोरनोंबोर॥३॥हठडोरनजु
छुरांवही।सहचरिसवरसबोर॥दे
खिछकनिछबिछैलकी।कहिन
हिंछूटैवरजोर॥४॥पद॥तिताल॥
नहिंछूटैवरजोरलालनडोरनों॥
तुमचितवतकहाचकुंबोरलालन
डोरनों॥टेक॥लीजैकोउबुलाय
लालनडोरनों॥जोअवकरैसहा

यला॰॥१॥हमतौहैंसवएकला॰॥
जिनकैंएकहिटेकला॰गॅ॥२॥प्यारी
प्रियाजूकेपायलालनडोरनों॥३॥
दोहा॥पायपरैसहीनये।अरकौंत
जतअरैल॥लाजेनरेकहिसकत
नहिं।छैलकरिहारेछैल॥१॥पद
तिताल॥छैलबरहैलजायलालन
डोरनों॥हठिचोरनननलायलाल
नडोरनों॥श्रीरंगदेवीदीयोछोर
लालनडोरनों॥नईनिरखिमहारस
बोरला॰॥६॥आनंदवढ्यौअपारला
॰॥श्रीहरिप्रियालैवलिहारलाल
नडोरनों॥७॥२७॥दोहा॥लैबलिहा
रीश्रीहरिप्रिया।डोरछोरमनमत्त॥
कहतचलौलैमहलमें।कीजैरंगर
सत्त॥१॥पद॥तिताल॥दोउलाल।

उत्स नमाहलडा वौरी।।छविनिरखतनैं
१७३ नखिरा वौरी।।टेक।।रसरंगमहलप
धरा वौरी।।पैसारैपदपरसा वौरी।।
१।।सा जिंत्रवा जिंत्रवजा वौरी।।वौहो
विविधिवधावौवधा वौरी।।२।।न
वकुंजमैंकेलिकिला वौरी।।नैंन।
नि नरिनरिरसपा वौरी।।३।।सुखसे
जकौसुखविलसा वौरी।।रंगीलीकै
रंगरचा वौरी।।४।।रंगस्पामसुगवर
रंगा वौरी।।जलननतेजकरा वौरी
।।५।।सुखजैजैसवदसुना वौरी।।अ
लिआनंदमैंउमगा वौरी।।६।।दोहा
।।आनंदमैंउमगायकैं।भरीसवैसु
खरंग।।लैआईअलिमहलमैं।फू
लीसवअंगअंग।।१।।अंगअंगनिर
सरंगरंगी।आनंदअधिपरीजु।।।। ग्र

लाडलडावैचंपलता।चितमैंचौंप
भरीजु।।२।।सोहिलौ।।तिताला।।चं
पलताचितचौंपभरी।अंगअंगनि
रसरंगररी।।टेक।।मृगलोचनिसुन
चरिताचंद्रा।चंद्रलतिकाप्रियसह
चरी।।मणिकुंडलामंडलीकेंदुक
नैंनिसुमंदिरामन मंजरी।।१।।म
णिमालामेधामधुमालति।मदन।
मंजरीमनोरमा।।महाविचित्रामित्रा
मोदाअनुरागिनीअनोपमा।।२।।
आनंदलताअदभुताआना।अमि
तप्रभाआनंदभरा।।लाडलडुनकौं
लाडलडावत।लाडलडीसवलाड
भरा।।३।।मधुरामधुरमृदंगवजाव
तगरवीलीगावतगुनगात।।चंद
मुखीमुखचंगवीनवर।।वालासुर

मालागुपुनीन॥४॥रंगरलौकछुक
लौपरतनहिं।उमलौआनंदसिंधु
अपार॥तनमनमगनभयेसवहिन
के।अतिरसलीनरहीनसँभार॥५
॥वनीबनीवैटेवनिबांनिकै।राजत
छविछाजनअनहौंनी॥श्रीहरिप्रि
याकिसोर किसोरी।जोरीगो
रीस्यांमसलौंनी॥६॥२७॥दोहा॥जो
रसलौंनीमहलमैं।राजतरंगभरी
॥गांनकलानृत्यतअली।रिझवत
रसनिरी॥१॥रिझवतश्रीहरिप्रि
याकौं।रतिरसघातजनाय॥सबवा
ननिमैंचतुरअति।चित्रासखीसु
हाय॥२॥सोहिलौ॥तिताल॥चित्रा
सखीचतुरसबबातनि।जांनतअ
तिरतिरसकीघातनि॥टेक॥तिल

कनिमोरसुगंधिकवैंनी।कोंमिल
कोगुंजनरीरसाला॥कोंमनागरीना
गरवेली।कोमोहननामनैंनिविसा
ला॥१॥जयाजयंतीविजयाविस्ना
॥बीनांवालमतीवनवेली॥विधु
वदनीसुखसदनीस्यांमांरम्पारदनी
अँगअलवेली॥२॥सजेसिंगारसिं
गारसुंदरी।रचिआननेंजपारुचि
कै॥रायवेलिमालापहिरावति।
लायप्रसूनसुमनसुचिकै॥३॥दरप
नलैदिखरावतिदरपा।कंदरपाकि
येतिलकसँवारि॥अछितलगाय
लड़ायललनकौं।पीवतमांनीवा
रिनिहारि॥कोऊसखीरतिमंगल
गावति।चौपलगावतउरनउमाहि
।कोऊसखीसैंननिसमझावति॥
अतिसोहनमोहननचाहि॥४॥

उत्सा री किंगी किनी जेत दोउ प्यारे ॥ देखि
१७५ देखि रस बरषा पुंज ॥ महाप्रेम रस
मत्त श्रीहरिप्रिया ॥ कीनौं आप प्र
वेस निकुंज ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ करि
प्रवेस निज कुंज बर ॥ राजत बनी
बनी ॥ रस रंग निरस बिलसहीं ॥ मो
हत मुकटमनी ॥ १ ॥ मुकटमनी ध
नधनी दोउ ॥ दूल्है दुलहनि बाल
॥ मंजु कुंज मैं विलसहीं ॥ मोहनि
मोहन लाल ॥ २ ॥ पद ॥ तिनाले ॥ बनी
२की बनी जोर बनी ॥ नित नव कुंज मं
जु मंदिर मैं ॥ दूल्है रसिक रसिक दु
लहनी ॥ टेक ॥ मोहन मोहनि मैंन
मुकटमनि ॥ मुकटमनी स्यांमा धन
धनी ॥ श्रीहरिप्रिया प्रति प्रतिछि
न प्रमुदित ॥ निरखि निरखि सोभा
सुखसनी ॥ १ ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ सरसनि ७५

कुंज बिराजहीं ॥ उपजत सुख के पुंज
॥ बनी बनी रस रंग मैं ॥ गुंजकरत निज
कुंज ॥ १ ॥ कुंज बधाई गावहीं गोरी सु
जस सुजांन ॥ ललनां लाडिलडीं वहीं ॥
गावहिं सुख सुखदान ॥ २ ॥ सुख श्री
राधाकृस्न कौ ॥ सेवैं सदा सु वेख ॥ मो
ह विनोद निसंग लि मैं ॥ गुंन अगाध इं
दुलेख ॥ ३ ॥ सोहिलौ ॥ ताल जात्रा ॥ ॥
सखी इंदुलेखा अमित गुंन अगाधा
॥ सेवै सुख सदा श्रीकृस्न राधा ॥ टेक
॥ संग सहचरि नरी रंग राजै ॥ तुंगवि
द्या रसा तुंग छाजै ॥ १ ॥ चित्रलेखा चि
त्रांगी सुसंगा ॥ रंगवाटी उमंग अंग
अंगा ॥ २ ॥ मोहनी मोदनी मैं नकारी ॥
सुंदरी मोहनी सोभनारी ॥ ३ ॥ रागरंगारंगी
ली रंगावलि ॥ रसिक रंजनि रसीली
रसावलि ॥ ४ ॥ अंपनि अपनी लियै

उत्सा
१७६

सौंजनदी॥ रूपसागरनैंमथिमन
ऊंकादी॥५॥ लागि रही सब निकैं
एक डोरी॥ जुगलमुखचंद्रमांकी
चकोरी॥६॥ जगरिजग मगि रही जो
तिलौंनी॥ फैली मनु विपन सुखमां
सलौंनी॥७॥ श्रीहरिप्रिया कुंजसु
खपुंजसोहै॥ कोटिकंदर्पकी क
लामोहै॥८॥२७॥ दोहा॥ मोहै बनैं
नि कुंजमैं। दंपति रति जू क्षै॥ हा
सि विनोद निरंगरंगे। श्रीउलहा
नि हूक्षै॥१॥ हक्षै उलहनि जुग
लकौ। रूप अनूप सिंगार॥ निरखि
निरखि सुखबरनहीं॥ विधवत
अमित अपार॥२॥ अति अपारकों
कहि सकै। अदभुत आनंद रूप॥
कौमरकत मनि दांमनी। सहजानंद ७६
स्वरूप॥३॥ सहजानंदस्वरूपकी

अह्लादनि अवतारि॥ विद्युतव
रनी लाड़िली। मृगनैंनी सुकुंवारि॥
४॥ सोहिलौ॥ तिताल॥ विद्युतवर
नी हो मृगनैंनी॥ रूप अनूपम सा
बसुपदैंनी॥ टेक॥ चंद्रवदनैं नैं
नां अनियारे॥ रतनालेमधि चंच
लतारे॥ अंजन मन रंजन रेखाउ
ना गंजनकंजन खंजन गारे॥१॥
भौंह बनी नासा नकबेसरि। अधर
दसन रसनां अरुनाई॥ ठोडी गाड
कपोल अलकें अरु। करन कुंस
म कांनन छवि छाई॥२॥ बरवेंदी
बैंनां अरु बैंनी॥ मनहरलैनी मां
ग सुहाई। मोतिन लर सुंदर सोभा
सखि। लखि लखि लोचन रहत लु
भाई॥३॥ कंठाभरन उतंग कुंचन

उत्सा.
१११

पर। कसी कंचुकी अतलस मा
टी॥ बाजूबंध चुरी कंकन गजरा
कर पोंन सुछबि बाढ़ी॥४॥ अंगु
रिन मैं मुंदरी मनि मंडित। नख न
पोंल करतली सुरंग॥ उदर सुदे
स सुबेस नाभि सर। बरनत अति
मति होत पंग॥५॥ कटि किंकनि
लहंगा लहकारी। सारी तन सुख
जेहरि पायनु॥ पायल बिछिया
नखनि महावर। अनवट गजग
ति चलति अदायनु॥६॥ खायैं
पांन मुसक्यांन मनोहर। जगम
गाति नव जोबन जोति॥ अमित
अनूप रूप श्री हरि प्रिया। चितैं
चखिन चकचौंधी होति॥७॥ रूप
दोहा॥ चकचौंधी नैंन नि लगी। दे ४७

घत उलहत निरूप॥ अवहू कै दे।
खो सखी सुंदर अति हि अनूप॥२॥
अति सुंदर तन सोहनैं। मन मोह
न अभिराम॥ बरनत बैंन वनैं न
सखी। कमल नैंन घनस्याम॥२॥
सोहिलौ॥ तिताला॥ घनस्याम बर
नैत न कमलनैंन। बरनत बैंन व
नैं न सखी॥ अति सुंदर सोहन म
न मोहन। मूरति मंगल मैंन सखी
॥टेक॥ सुहीं पाग सिर पेच सुकै
री। छोगा अति छबि देत सखी॥
लहलह मुकैलरन संग बिलगी
कलगी हियहरि लेत सखी॥१॥
तिलक नाल तिरछौं हों भौंहीं। बि
हसौंहीं चखि लोल सखी॥ अल
करलक श्रुति कुंडल सौं मिलि।

उत्सा०
१५८

झलकत ललित कपोल सखी॥
२॥ नासा अग्र मुक्ता मंजुल की। उ
ज्जल द्युति रहि दमकि सखी॥ अध
र अरुन रस भीनी रसनां। रद चौ
कार चौंध मकि सखी॥३॥ सुख
दैंनी रस सनी मनोहर। मृदु मुख
हस नि रंगीली सखी॥ चिबुक दि
ठौंनी अति लौंनी की। रहि छवि
छाय छबीली सखी॥४॥ कंठ कं
ठ कसि बकं चुकि पर। वर मुक्ता
मणि माल सखी॥ सहज श्रोन रन।
अंस अवनत सी। अदभुत बाहु
विसाल सखी॥५॥ कटि नट पि
दु का हरितन जेरी अति लसि अ
तलसनि जव बसन सखी॥ पटी पुर
टि सु घटी जटी जत नन्नि। निरमि त

९८

रतन नि रसन सखी॥६॥ चरन चार
श्री भूषन नू पित। नख पद तरु।
अरुन ई सखी॥ श्री हरि प्रिया प्रा
न की सोभा। परि मैं व लिब लि ग।
ई सखी॥७॥ ॥५१॥ दोहा॥ बलि ब
लि गई सखी सवै। देखि दुहून को
हेज॥ सवै चार करि माह के। वै
ठे सुख सेज॥१॥ माहि बिराजे से
ज पर। श्री हरि प्रिय लियें संग॥ फू
लसि फूलसि हिय बिलसही। वा
औ अति रति रंग॥२॥ पद॥ तिता
ला॥ बाढ़ौ अति रति रंग सेज पर
॥ दूलै दुलहनि अलबेली ले
॥ अलबेले अंग अंग॥ टेक॥ नित
नवीन किसोर लाल दोउ। नित न
वीन अनंग॥ विलसत विविध वि

उत्सा॰
१३९

लासविलनको॥श्रीहरिप्रियाजू
कैं संग॥५॥ध्रुव॥दोहा॥संगप्रिया
पियविलसहीं।रसरंगवरषिव
रषि॥वड्भागनिवलिजायअ
लि।सो॥नानिरषिनिरषि॥१॥निर
षिनिरषिश्रीहरिप्रिया।हिलिमि
लिहियहरषंत॥नवलविसाषा
सहचरी।नवलरंगवरषंत॥२॥
सोहिलौ॥नालजोना॥नवलरंग
वरषैंविसाषासहेली॥नवलव
रमहलकीचहलेलागी॥अति
हिआनंदउत्साहमैंरगमगी॥ज
गमगी उरनिअनुरागरागी॥नव
लकैंवलासनासीनहोउल्लाडि
लेकेलिकलवेलिअंगअंगवा
टै॥झेलिरसफूलिरहेफूलिमधु

महमहै।डहडहैगहगहैगुंननिगा
है॥१॥माधवीमालतीचंद्रलेखाचप
ला।कुंजरीसुरभिसुनेश्रीननाहर
नी॥एकतैंएकमंगलसनीअन
गिनी॥वरतनीवनीनहींजातवर
नी॥२॥मंजरीसुंदरीसषीअरुस
हचरी।अहलमहलीफिरैफूलि
फूली॥गीतगावैविहसिरहसिरस
रीतिसौं।प्रीतिनिधिमगनसुधिस
कलभूली॥३॥केलिरसौविलन
लनविपुनसौंरलेसुमिलि॥हितन
हिलिमिलिरलीविमलविमली॥
निरषिश्रीहरिप्रियाहरषिवारत
नैं॥कोगनैंभागमहिमांफली॥
अली॥४॥३॥दोहा॥अलीनिरषि
नवसेनसुख।मनमुदितरसपिज

नि

अन्सा. ॥कहत परसपर प्रेममय। निर
१८०। खौ नाव निंज॥१॥ निज निज नाव
नि सौं सवै। नैंन नि निरखौ रीय॥
कैसी विराजेत आजकी। सुंदर ख
र जोरीय॥२॥ सोहिलौ॥ तिताल॥
निज निज नाव निसौं निरखौरी॥
कैसि विराजत सुंदर जोरी॥टेक
॥करनकों मनों पूरन मनकी॥
जेनेजीवनि तनघन गोरी॥१॥स
हज सलौंनी सोभा सरसत। वरस
तरंग अनंगन कोरी॥२॥ श्री नि
यारी अंजन नेतुल श्री पियां। चंचल
चित वनि चितचोरी॥३॥ दोउदो
उनके प्रीतम प्यारे॥ प्यारे होतन
इक छिन होरी॥४॥ निस्पन वीन ८०
कि सोरला डिलौ [stain] निस्पन वीनी

निसकि सोरी॥५॥ कोटि कोटि कंद
र्प दर्प कौ। कोटि कोटि रति कौ मति
मोरी॥६॥ सुनो परसपर अंसन दीनैं
॥रसनी नैं छवि फवी न थोरी॥७॥ नि
रखि नैंन श्री हरिप्रिया सहचरी॥ दे
पति पर डारत तेन तोरी॥८॥ ३२॥
दोहा॥ बेन तोरत गावन गुंन नि। प्र
मा निरखि जोऊ जन॥ कहत प्रीन
के प्रांन ए। रंगनी नैं दोऊ जन॥१॥ दो
उ रसिक दोउ सरस सुख। दोऊ रूप
के धांम॥ दोऊ दोउनके अंग अंग॥
नीनैं होरंग स्यांम॥२॥ सोहिलौ॥ तिता
ला॥ रंगनी नैं हो अंग अंग स्यांम॥ दो
ऊ रसिक दोउ रूप धांम॥ टेक॥ दो
उ सरस दोउ सुख सहेलि॥
दोउ प्रेम आनंद वेलि॥१॥
दोउ दोउनके उर निहार॥ दोउ दोउन

उत्सा॰ केचिमनकार ॥२॥ दोउदोउनके
१८१ लेडेलाड़ ॥ दोउदोउनकेचितैंचाड़ ॥
३॥ दोउदोउनकेरतिमनोज ॥ दोउदो
उनकेचितकेचोज ॥४॥ दोउदोउन
केजीवनिजीय ॥ दोउदोउनकेप्यारी
पिय ॥५॥ दोऊदोउनकेकमलनैंन
॥ दोऊदोउनकेचैंनऐंन ॥६॥ दो
ऊदोउनकीबनीबाल ॥ दोउदोउ
नकेललितलाल ॥७॥ दोउदोउन
केकैवनेअंग ॥ दोउदोउनकेसह
जसंग ॥८॥ दोउश्रीहरिप्रियाएका
श्रांन ॥ दोऊदोउनकेसहजत्रांन ॥९
॥ ॥ दोहा ॥ श्रांनत्रांनदोउदोउनके
सखियनिसुखअमित्त ॥ सबैमिली
रसरंगरली ॥ हिलीमिलीनिजहित
॥१॥ हितूअलिनकेउरनमैं ॥ अलि
आनंदप्रकास ॥ नवकिसोरसुखरा
सिजैनखनितिकुंजनिवास ॥२॥ पद ॥ तिता
ल ॥ नितिनवकुंजनिवासीजैजै ॥ नवल द॰

किसोरीगोरीराधे ॥ नवकिसोरसुखरा
सीजैजै ॥ टेक ॥ नवलनागरीनाग
रदोऊ ॥ नवलविहारविलासीजैजै
॥ नवलहितूश्री हरिप्रियाहीयमैं
॥ नवआनंदप्रकासीजैजै ॥२॥ ३४
॥ दोहा ॥ जैजैकहिसहचरिसबै ॥
अवैदेऊसुखएह ॥ बनोंबनीगति
अंकपुनि । निरखैंनैंननिनेह ॥१॥
बनोंबनीकीजोरिवर ॥ बनीजुअद
भुतनीय ॥ हरिजुबनीश्रीनांमिनी
नांमिनेहरिजुबनीय ॥२॥ सोहि
लौ ॥ लालजात्रा ॥ हरिबनीनांमि
नीनांमिनीहरिबनी ॥ जोरिअदभु
तबनीबनोंबनीकी ॥ बिसदवरखां
महंदाविपिननित्यनव । कुंजमैंके
लिकमनीयनीकी ॥ टेक ॥ मुकटि

उत्स. १८२

रचि मोर सिर मोहनी कें लसैं ॥ मदन
मोहन के सिर मोरी सोहै ॥ अंग छवि
जगमगै कौं न घन चंचला को मर
ति की कला कोटि सोहै ॥ ४ ॥ हार हि
य लाल कै बाल के माल उर ॥ मोक्ति
की मंजु मनि पट सहांनैं । अमल
उद्योत कर । आभरन हरन मन ॥
माधुरी मदन तन लहलहांनैं ॥ २
॥ पाय को सुरँग उतरीय लै उमग
सौं । रंगदेवी रुचिर गांठ जोरी ॥ च
पल चख जिवित बनी तिरछि करि
अति लसी । मंद मुसकै हसी नव
किसोरी ॥ ३ ॥ गाहि गावैस हेली स
खी सहचरी । सुंदरी सुर मिली टो
लटोलैं । नूतन नव मंजरी वाम भक ८२

रति मनौं । कंठ कल को किला बोल
बोलैं ॥ ४ ॥ पद ॥ तिताला ॥ नवरंगी
हो नवरंगी । तुम मनाय दोउ नवरंगी
॥ टेक । श्री वृंदावन की कुंज गलि
न मैं गरबहियां दै डोलौ ॥ आपस
मैं अनुराग नन्ह थेई थेई बोलौ ॥ १
॥ जो नेना नेन गात सांवरे । गोरै अं
खिन आगै ॥ प्यारी तैं प्रिय प्रिय प्या
री तैं बदलन वार न लागै ॥ २ ॥ जी
तै सेज गमगत जगन मैं । कौन क
है तुम हारे ॥ हारे कहैं सोई हारे हैं
कहि कहि कैं मैं तिहारे ॥ ३ ॥ अल
कलडैती नू अलबेलो ॥ अलबेला
लडो अलबेलो ॥ प्रिया प्रसंन बदनी
कै पाछैं मन आवै त्यों खेलो ॥ ४ ॥ जा

उ.ला.
१८२

लाला ॥ परम रमनीय दोउ रसि
कराजी व सुख। सकल सुख सींव
...... सौभाग्य सींवा । लाग
अनुराग चित चौंप रस रंग न रै। सु
रत रस निरि रै हिये जु नायौं वो ॥ सां
वरी दुलहनी गोर दूलह निरखि
हरखि हिय मैं हित न्यौछावरैं ॥
धन्य जिय मैं धरैं सु मन वरिखा क
रैं। मुद नर सहज जै जै उचारैं ॥ १॥
सिंधु सव सुखनि के मूल मंगल
महा। मान जितमैं नके श्री प्रिया
की ॥ छवि लखि छवि पावती। सुरस
वरखावती। रहसि मन भावती श्री
हरि प्रिया की ॥ २॥ ३॥ दोहा ॥ दि
न दूलह दिन दुलहिनी। दंपति। फर

चित चाडिले ॥ कोम रूप रति धाम
अंग रंग भीनै लाडिले ॥ १॥ पद ॥ ति
ताला ॥ लाडिले रंग भीनै नवीनै ॥ दो
ऊ गरव हियां दीनै नवीनै ॥ टेक ॥
स्यांमा स्याम वरन तन मोहै। गवर वर
न तन स्याम नवीनै ॥ १॥ कोम रूप
रति धाम रंगीले रीझत अति अति रं
म नवीनै ॥ २॥ वडडे नैन मैंन मद
माते। वंक विलोकनि नेह नवीनै ॥
हास विलास हुलास नरे हिये
परसत अंग तमेह नवीनै ॥ ४॥ स
दा सरवदा सव सुखदायक। नाय
क नित्य किसोर नवीनै ॥ ५॥ परम
रसिक सुकुंवार सिरोमनि। सहज
हि सुंदर जोर नवीनै ॥ ६॥ नित दूलह।

उत्सा॰ १८४ हदिन दुलहिनी दंपति॥ श्रीवृंदाव
न केलि नवीनैं॥७॥ श्रीहरिप्रिया
विलोकि वदन छवि उलहत आ॰
नंद वेल नवीनैं॥८॥२६॥ दोहा॥
नव नव आनंद नित करै। प्रेम॰
प्रकास सदीव॥ जंत्रै दूल्है दुलहि
नी। पोसत वो दोउ पीव॥१॥ पद॥
तिताल॥ दोउ लालन व्याहुलडा
वौरी॥ छवि निरखत नैंन सिरावौ
री॥ दूल्है दुलहनि पोटावौरी॥ डार
उरि हृग देखि सिहावौरी॥ धूं धनि
धनि निज भाग मनावौरी॥ श्रीहरि
प्रिया की वलिजावौरी॥३॥ दोहा
॥ वलिजावौ सहचरि सवै। तनम
न पद नैल गाय॥ पोसये रस रंग मैं ८४
रस रंग मैं रैंनि बिहावौरी॥ वौहो मन वांछि
त फल लावौरी॥३॥ ३०५

मिली सरस सुखदाय॥४॥ पोटे रसिक
सुला डिले। वनी बनी मन भाय॥ श्री
हरिप्रिया रस रूप की। तन मन रहे
समाय॥२॥३०॥ इति व्याह॥ ॥
अथ सुपठौनी॥ अनुराग नि विलासा
वलि मध्ये नास॥ दोहा॥ सुखस्वरू॰
पिका आदि सवा। सजि सौंज सलौंनि १सजि
॥ स्वौ जुगलवर की महा। सुखदैंनी
सुपठौनि॥१॥ पद॥ ताल चंपक॥ सु
खस्वरूपिका सखी सलौंनी॥ स्वौ जु
गलवर की सुपठौंनी॥ सकल सौंज
जरित ररिस हवारी॥ नरिधरी कंच
न कौ पर थारी। कोपर थारी कंचन
की। छवि नरी चऊं और निधरी। रत
न जडी जतन की मणि। कलस पंक

उत्सा. तिविसतरी॥चंद्रकांतामयसुचौकी।
१८५ रचितचारुचुनीनिकी॥गंगसागरतुं
गवांनिक।वनीवरतसरीनिकी॥१॥
वस्त्रविचित्रकपिसकौसेई॥कन
३७ कतारपूरेंबिटेई॥रचिरचिराखेवे।
ससुवेसा।वकुविधिरंगेसुरंगसुदे
सा॥सुरंगसुदेसारंगेवकुविधि।
नरेछविछाबनिनरे॥वरनवर
नवनायचुनिचुनि।उपरिछादन
औछरे॥सुछुगुलिकअमोललैलै
॥ललितगहनेंगुनगुहें॥इवेनरि
नरिधरेसुधारे।कनकमनिनगके
गुहें॥२॥मफरमिठाईअनिअनि
अलियां।सबदिसराषीनरिनरिड
लियां।मेवादाखविदांमछुहारी।पि ८५

सनानुहनीगिरीरुचारी॥गिरीरुचा
रीसुपारीश्रीफल॥चटकरंगनके।
लछे।थैलीमैनरिधरेसुहरे॥पत्रम
हदीकेअछेनरिधराईंगुरोटियां।
मयनोटियांकजरोटियां॥वनीक
कहींचिंडुमी।मखतूलिमंजुलचो
टियां॥३॥एसवसौंजधरीचकुंओ
री।कोरनोंकेनरेकमोरा॥केसरि
मृगमदमलयकपूरा॥पुरेसुगंधा।
निधरेसपूरा॥धरेसपूरापुरेसुगं
धनि॥अतरसासीअतिलसी॥नरी
सुमनसनेहऊमऊम।सुरंगरंग।
निसौंरसी॥आदिअनअनेनांतिअ
धुतसकलसौंजदहेजकी॥चहुंओ
रनिचौंपसौंलैधरीसहचरिसेजकी

उत्सा० ॥४॥ सेज सुवरनी वरनि न जाई। पटी
१८६ पाट पचरंग वुनाई। अछी तिछीन।
व रंग निहाली। कसनां सौं कसिरा
खी आली॥ राखी आली कसनां सौं
कसि। सची मोरि सुपेसली॥ गलम
सूरे गीदुवनि की वेनी। छवि अति
हीनली॥ वैठस्यां मास्या मदोउ र
हसि रंग नरे हियें॥ आपनि आप
नि सुखदनि धि कौं सुचित कैसन
मुख लियें॥५॥ केलि कला कौ त
करसनींनी॥ वकु विलास वित
रनमैं वीनी॥ बाजे विविधि नांति
वजवाये॥ मनहर मंगल गीत ग।
वाये॥ गीत गबाये मनहर मंगल
फूली फूलि सहेलि मां॥ सूहे पट ८६

पहराय अभरन। रचे अंग अलवे।
लियां॥ तिलक दै अछित लगाये।
लै वलैया वदनकी॥ सौंज सबस
सुख्याय सारति। करि दई सुखस
दन की॥६॥ रंग रंगीली सहचरि
सखियां॥ सववात नि मैं तनपर
सुखियां॥ उचित रीति जो जो सव
कीनी॥ निज निज रुचि पहरांवनि
दीनी॥ दीना पहिरांवनि सवनि
कौं। फुलक अंगन मां वहीं॥ भ्रांन
वेहभे नलनसौं। कछु विहसि वि
नय सुनांवहीं॥ तुम हो परम प्रवी
न सव गुंन। प्रिया जू गुंन तोरी है॥
निपट लाज सुनावइ नि कौ निव।
ऊंगे वलि तोरी है॥७॥ ए है जूजीव

उत्सा. निहमजीकी॥ए हैं जु संपतिसच
१८७ हीकी। ए हैं जु आनेंदकीदाता॥६
निहंदेखिजीवैंदिनराता॥जीवैं
दिनराता इनिहिं देखि। नांहिं अव
लंबनवियें॥ वकुतकहां लौंवरा।
नियें जु। प्रांनदेहमनु मलियें॥।
विलसौश्रीहरिप्रियादोऊ। हमैं
श्रीउंचरिजांनियें॥ माहामोहनम
हलकी निज। टहलवीकरिमांनि
यें॥च॥२॥ दोहा॥ भांतिभांतिअति
रतिलियें। हितजिमावतहेत॥भो
गभांवते लालको देखैंही सुखदेत
॥पद॥ चलनललितालल॥ भोगभांव
तेल्या लडुकुंवनको। देखैंही वनिआ
वैंरी॥ भांतिभांतिके अतिरतिरु ८७

चिसौं। हितकरिहितुजिमावैंरी॥
टेक॥ मनसिजमहलसुनगसुख
आसन। रसिकसिरोमनिराजैंरी॥
चौकीचौंपथारधरितापर। प्यार
महलबिराजैंरी॥१॥ ऊटिलके
टोक निकोरकटोरनि। षटरसविं
जनसोहैंरी॥ फुलकाफूलसरूप।
ससकरिका। भावेभातछतगो
हैंरी॥२॥ परसनिकरसनिमरस
निसरसनि। वरसनिचारिप्रकारैं
री॥ नवकनोरूप आदिक अतिस्वा।
दिक। मादिकरसतारैंरी॥३॥ क
हियेकहा कहां लगिकहियें। सां
मगिरी कीसामारी॥ जोजोचहतल
हतसोसोई। रचीरसोईरामारी॥४॥

विचि विचित्र अंचवत अधर सुधा।
रस। अलबेले अनुरागे री॥ हास।
विलास विनोद निवित रत। कि
कनि कौतुक लागे री॥५॥ जैं बन
होइ तौ जैंइ चुकैं इनिकें तौ निस
दिन औसें ईरी॥ भूख प्यास के मन
ऊं प्रकट मनि। रूप तिहि होत नहिं
कैसें ईरी॥ ह्वा लसौ वसौ नैंननि
मैं यह सुख। संपति सहज सुनावै
री॥ श्री हरिप्रिया प्रांनधन जीवनि
विनां कृपा को पावै री॥७॥२॥ दो
हा॥ कनक लता ता पछि सौं। ल
हलहर होसु है न॥ सरस सुंदरी सो
हनी। पौढि पैं सुख सेज प॥ पद
॥इकताल॥ राग मारू मैं॥ पौढियैं।

सुखसेज प्यासा। सरस सुंदरि सोह
नी जू॥ महा आनंद रूप की निधि रची
मन मथ मोहनी जू॥ टेक॥ चिमत।
कार निला इश्रमा। शरीर निरस नां
पिनी जू॥ श्री हरिप्रिया तापि छेल
हलेऊ। कनक लतिका कांमिनी
जू॥१॥३॥ इति सपठौंनी॥ अथ दि
वारी॥ कार्तिक बदि अमावास्या
॥ अनुरागनि के लिकौ मुदी मध्या
भास॥ दोहा॥ आजु दिवारी की नि
सानी की जगमग जोति। कोटि को
टि राका निकी॥ देखि मंद दुति हो
ति॥१॥ पद॥ इकताल॥ आजु दिवा
री की निसनी की। कोटि कोटि राका
रजनी की देखि नेइ दुति फीकी॥ टे
क॥ चांद दिपति दीप माला बलि रं

उत्सा· १८९

जेन मंजु मनी की॥ जगर जगर रहि
वगर वगर मैं। औ पञ्चनो प मई की
॥७॥ रतन सिंघासन बैठे दंपति। स
जि संपति सब ही की॥ छिपी जाति छं
चलता चित की। निरखत कों मरती
की॥८॥ आस पास छटी छवि वांटी
सहचरि प्यारी पी की॥ मन भावत
जुव जुवा जुरा वन लै लै दिस पिय
ती की॥९॥ वाजी बदत जु राजी कै
कै। आप आपनी रुचि ही की॥ मुक
रि जात जे वदावन आवत सौं हदि
बावत जी की॥१०॥ मन अनुसार
नि हित सहेली। कै दिस अलवेली
की॥ हार डारि दीनों पिय गर मैं जो
नि विवस ताधी की॥११॥ वेकु मेवा
पकवांन मिठाई सजी सौंज हटरी

की॥ करि ओपार केलि विसतारत।
कोम कला कमनी की॥१२॥ श्रीग सं
गनि नव वामा आदिक सहचरि रंग
देवी की॥ श्री हरि प्रिया सकल मन
वंछित पुरई आस सब ही की॥१३॥
दोहा॥ जै सिय नग मनि जोति लन। जं
गम गान सुखसाज॥ तै सिय नि सदा
पावली। विलसत दंपति आज॥१॥
पद॥ इकताल॥ विलसत आज दि
वारी दंपति। तै सिय नग मनि जो
ति जगत तन। तै सेई सुमन वेलित
रु संपति। जै सिय कुसमनि सानीलां
बर उडुगन से मुक्ता लर कंपति॥ मं
गल वार उचार कमल मुख। मधुकर
मधुकर बानी वरजंपति॥२॥ हावभा
व सुतेत करतक टाछै। मोनकु मंददी

उत्सा. पसिखलंपति॥श्रीहरिप्रियानि
१९ रखिछबिराजी।मंदमुसका किधौं
दीपनिचंपति॥२॥१॥दोहा॥पहरै
चीरसुजरकसी।जैसियतनदुति।
बाल॥तैसियदीपतिहैमहा।दिबि
दीपनिकीमाल॥१॥पद॥इकताल
॥श्रीजुदिपतिदिबिदीपमालिका
॥पहरैंचीरजरकसीतनदुति।कं
चनसीमिलिनवलबालिका॥टे
क॥तैसियजोतिजगीदीपनिकी
।जैसियजुगलकिसोरजालिका॥
श्रीहरिप्रियानिरखिछबिहरखत
।नगमुक्तनकीमालिआलिका॥
१॥३॥इतिदिवारी॥इहिंबिधियह
उत्साहसुख।अतिरसनसोअनं
त।अथमबसंतहिंआदिदैदीप ९०

दोनेपरिअंत॥१॥समैंसमैंनेमित्ति
कति।महलटहलनिरतिनाय॥जिनिकि
पराजोपावहीं।ध्यावहिंमनबच
काय॥२॥कुंडलिया॥इष्टजजन
रसरीतिमन।मिलैनाहिमिलिदे।
ऊ॥नंतरपरिहैंठौऊयह।निश्च
उरधरिलेऊ॥निश्चैउरधरिलेऊ
एऊसबैपरिहोई॥यातैपरजेक
हैंमहाव्रतिबायीसोई॥श्रीहरि।
प्रियाकौरहसिरस।मधुकरमिष्टनै
मिष्ट॥परमहंसआचार्यकौ।अद
भुतहृदगतइष्ट॥१॥दोहा॥इक
श्लोकदोहाजुद्वै॥पदरातउपरि
नैयास॥श्रुतोनासघुनिदेइहा।इ
कऊंडलियालास॥१॥सबसतऊ
परिनौऔसीसुखउत्साहव्रबान॥

उत्सा.
१९

अतिघनिउत्सवपदनकौ।इहि
विधिसमुक्षिसुजांन॥२॥कवि
त॥चौदहबसंतचबतीसहोरी
तीनडोलच्यारफूलडोलच्यारफू
लमंडनीकही॥चंदनसिंगारच्या
रिच्यारिहीविहारजलरथहूके।
च्यारित्रयोदसबेरघामही॥एक
तीजपांचहैहिंडोरेसांतलूहरि
पवित्राकेसाततरायीच्यारिहका।
तीजही॥पटऋतुतीनिलीलुला
डिलीबधाईरसदांनएकसौजी
दोयजांनियैयहीसही॥३॥विजै
दसमीकेच्यारिपंचदसरासकेहैं
च्याहकेसैंतीसलुपछौनीतानजा
नियें॥तौनिहौंदिबारीकेविसदह
दयाहालौहैसबपदएकसौरुनै ९१

थासीवधांनियें॥महानिजरहसि
श्रकासीहैमहलनैकेलिरसिकअ
नन्यनकेहेतउनेमांनियें॥चाह
तहौजोपैपदपरमप्रवेसकियौ
तौतौयहमनवचप्रीनिकैंअगो
नियें॥४॥ ॥इतिश्रीपदवि
भागनिकुंजरहस्यश्रीमहादिव्यम
हाराजेस्वरप्रवरपरमहंसवंसाचा
र्यश्रीमद्हरिव्यासदेवजूकृतश्री
महावांणीउत्साहसुखसंपूर्णं॥२
॥श्रीहरिप्रियास्वामिन्यैनमो
नमः॥अथमहावाणीश्रीसुरतसुख
लिख्यते॥श्लोक॥राधाकृष्णावहंवं
देरसरूपौरसायनौ॥वृंदावननि
कुंजेषुनित्यलीलासमाश्रितौ॥१॥
गौरस्यामौमहारम्यौ।कोटिकंदर्प

सुरतसुख

सुर० १५२

मोहनौ॥रंगदेवीसेसमानौपरान
क्तिप्रदाधिनौ॥२॥दोहा॥जैजैश्री
हितसहचरी।भरीप्रेमरसरंग॥१
प्यारीप्रीतमकैंसदारहतजुअनुदि
नसंग॥१॥कृपापायतिनकीकहौं
महाबांणीसुखसार॥प्रीतमस्या।
मास्यामकौ।अद्भुतसुरतविहार
॥२॥अनुरागनिरत्रेकलामध्याला
स॥दोहा॥चित्ताकर्षनिचंचला।
चंरलनिधिनुरसप्रेम॥जयतिनित्य
नागरिनिपुन।रसिकमनीतनहेम
॥१॥पद॥लालजीत्रा॥जयतिनव।
नित्यनागरिनिपुनिराधिके।रसिक
सिरमौरिमनमोहनीजू॥चारुछवि
चंचलाचित्तआकर्षनी।बर्षनीप्रे
मघनमोहनीजू॥टेक॥सहजसि।

घात्रसिधात्रकालिकप्रजा॥दिव्यवर
कनकतनमोहनीजू॥स्वांमिनीसुप
दश्रीहरिप्रियाविसदजस।प्रांनकी
परमधनमोहनीजू॥१॥२॥दोहा॥ल।
लितवलितउरपरदलित।कलित
कमलकीमाल॥लालवालकैंवस
बसे।वसीबालवसलाल॥१॥पद॥ला
लजीत्रा॥लालवसबालकैंबालवस
लाल॥सुरतसुषसेजपरहेजनरेवि
लसहीं।फूलसिचितचाहिलेलाडि
लेलाल॥टेक॥कमलमालाकलि
तललितउरपरबलित।दलितश्रृं
गश्रृंगरतिरलितदोउलाल।श्रीह
रिप्रियासुमिलिझिलिरहेरसजेमि
उभि।जैंमिचुमिचूंमिविक्षवदनवि
बलाल॥१॥२॥दोहा॥श्रोढिएकप

श्रु०
१६३

टपौटेदोउ॥श्रीहरिप्रियाप्रवीन॥
सघनकुंजघनबनजुमैं।बिहरत
अतिरसलीन॥१॥पद॥तालआ
ड़ा॥सघनघनकुंजबनबिहरैंदो
ऊ।परमपरबीनरसलीनमृदुमु
जेनरैं।गरैंलगिबितनतनबिह
रैंदोऊ॥टेक॥एकपटओढिपौढे
प्रमुदिप्रांनधन।महामगनमगन
मनबिहरैंदोऊ॥श्रीहरिप्रियाहर
खिहियेंसेजसुखबरखहीं।समुख
रुखलियेंललनबिहरैंदोऊ॥१॥
३॥दोहा॥अंगअंगरसछहिकरिउ
छपारसिपदलाल॥चलतप्रांनप्र
तिपालकैं।सनमुखरुखलियेंला
ल॥१॥पद॥तालजोत्रा॥सनमुखरु
खलियेंललनचलतनवबालकैं ९

॥एकआनाहिअनुकूलआनंदउ
ररहतज्यौंचहतत्यौंप्रांनप्रतिपा
लकैं॥टेक॥छबिरसछहिकरिउ
छअंगअंगसकल॥सुछसंतुछपद
परसिनिजलालकैं॥श्रीहरिप्रिया
सहजसुखसुखीसेवतसुरतजुर
नजियमैंनइतनीधनीलालकैं॥१
४॥दोहा॥मृदुलकमलजिमिन
मिगये।अमितमहारसमैंन॥कर
तकेलिदोउलालकै।लगेनैंनसु
खसैंन॥१॥पद॥तालजोत्रा॥लगि
गयेनैंनसुखसैंनदोउलालके॥
करतहीकरतकेलिकेलिकोमल
कुंवर।कमलजिमिनमिगयेअमि
तरसजालके॥टेक॥सकलसहच
रिमिलीपायसहरायबहिंनायचि

सु.र.
१५४

तबदिरहेजिनहिनितखोलके
॥तिनहिहितरचेनकेवचनश्रीह
रिप्रिया।जिनिजगावौकहतसो
येद्रहिंकालके॥१॥५॥दोहा॥सर
सपरसपरअरसबस।रगमगअं
गसंगहेज॥जिनिजगाउएरीइन्हैं
।सोएअमितसुखसेज॥१॥पद॥
तालजात्रा॥एरीइन्हैंजिनिजगाओ
।एसोएसुखसेजदोउअमितसुख
सदन॥परसपरसरसरसअरस
बसविवसविवि।विपुललसवि
लसमदमदन॥टेक॥रगमगेरं
गअंगअंगसुंदरसुघर।सगावगे
संगलगलगावगावदन।श्रीहरि
प्रियाहियसौंहियजियसौंजियत
नसौंतन।मनसौंमनमगनछदछ

दन॥१॥६॥दोहा॥छविपावतकै
सैंअहो।कियेसेजसुखसैन॥निर
खोनैकिनिहारिनै।निसाउनीदे
नैन॥१॥पद॥तिताल॥निसकेउ
नीदेनैंनींदजेनावै॥एतुमकौंजा
गिवौईसुहावै॥टेक॥कौतुकिय
निकौंकौतुकनावै।न्यायविला
सनिवालकहावै॥१॥नैंकतौनि
हारिदेखोकेसैंछविपावैं॥पीछें
तौकरौगीजोतिहारेउरआवै॥२॥
श्रीहरिप्रियाकौंअवनैंकजुकला
वै॥सावधानभयेतेंरमैंगेस्यौंरमा
वै॥३॥७॥दोहा॥नैंनउनींदेरैंन
केसोयेसैंनसुहाय॥काहेकौंइ
निकौंअहोलगाजगावनआय॥
१॥पद॥तिताल॥काहेकौंजगाओ

सुर०
१९५ इक्कौं सौं नंददेऊ सबहीं।। निस के
उनींदे नैंक सोए है एऊ अबहीं।। टे
क।। ऐसी अलबेली छबिया हीं
छिनक बहीं।। फिर तौ सुचेतन
यें नयें जागति ढबहीं।।१।। तरनि कि
रनिऔं निपरैं तेज तबहीं।। सहज
सुभाव तैं रहें गे जागि जबहीं।।२।।
श्रीहरिप्रिया कौं सुखदायक सब
हीं।। ऐसौं अपरत कौं मकी जियेन
कबहीं।।३।।८।। दोहा।। सुरत सम
र कै रंग मैं। अंग अंग रहे समोय।।
ज्यौं कल पावैं लाडिले। करऊ नैंक
बिधि सोय।।१।। पद।। तिताल।। ज
गि हैं तौ बैंहीं लौं लगि हैं। नैंऊं ल
डैतेनकौं कल देऊ।। सुरत संग।
अंग अंग अमित नये। रंग ढंग क

९५

छुदीसत एऊ।। टेक।। बीतैं औं नि
स ही तैं जबहीं। ज्यौं निपरैं औ सो है
नैंऊ।। श्रीहरिप्रिया धन्य धनि इन
कौं। नित प्रति उमगेई रहत औ।
छेऊ।।२।।९।। दोहा।। लटकि रहे यूं
के यूं हीं। अमित दोऊ सुकुँवार।।
नैंसु कनक दे परन तू। औ हे इक्कौ
इहिं बार।।१।। पद।। ताल चपक।। दै
री दैतूज कनैं कपरन।। सब निसबी
ती बिलसत इनि कौं। कांम केलि ज
गरन।। टेक।। यूं के यूं हीं लटकि रहे
अबहीं। दियें भुज सौं भुज गरन।।१।।
श्रीहरिप्रिया अमित दोऊ मृदु डासूर
लि मन के हरन।।२।।१०।। दोहा।। सज
सुहाग जगे निसा। पागे रंग अंग अंग
।। लगें मोहिनी के औरी। इहिं बिरियां

सुर०
१९६

विवि संग॥४॥पद॥ताल चंपक॥ल
गैंनी के मोहि अरी इहिं विरियां॥उ
र करि हे अंग अंग न सुरझत॥पट प
र हरि पुरुष पिरियां॥टेक॥सेज सुहा
ग सकल निस जागे राग रंग रुचि रि
यां॥श्री हरिप्रिया निरखि मौद्वा च
रि करौं प्रांन फिरि फिरि यां॥५॥११
॥दोहा॥विमद मदन मद होन ल
खि॥सहज रदन रस रंग॥जगे सेज
प्रिया लाल दोउ॥विलसि सकल॥
निस संग॥१॥पद॥ताल जात्रा॥स
कल निस विलसि प्रिया लाल जा
गे॥सुरत सुख सेज पर उमंगि वैठे
दोऊ॥अंग अंग सहज अनुराग रा
गे॥टेक॥विमद मद मदन लखि॥
होत विधु वदन छवि॥रदन रस रंग ९६

द्विविरा ग दागे॥श्री हरिप्रिया सहज॥
सुंदर सुघर रसिक वर॥परस पर प्रेम
कैं पाग पागे॥२॥१२॥दोहा॥अंग अंग
अति रतन रति॥रंग रहे छवि छाजि॥फू
ल सकल सुख मूल मिलि॥रसिक से
ज पर राजि॥१॥पद॥ताल जात्रा॥रसि
कनी सेज पर रसिक राजे॥अंग अंग॥
अतन रति रतन रस रंग मगे॥महा मद
मत्त मोहन विराजे॥टेक॥फूल फूले॥
विमल विपुल फूले फूल फूले न॥दल
दलन न अमल नेल नैन भ्राजे॥श्री हरि
प्रिया सकल सुख मूल मिलि विलस
हीं फूल सही हिय नेरे सुछवि विभ्राजे॥२
॥१३॥दोहा॥करत रहो निस दिन दोउ
अद्भुत रस कौ मेह॥देखि देखि जी॥
ऊँ सखी सुख की सोभा एह॥१॥पद॥ता
ल चंपक॥कहि न परै सोभा या सुख की

सु.र. मेरे नैंनन कौ सरव सधन। जौ ऊं देषि
१ए देखि दुति सुरव की॥ टेक॥ और कछू
नावत नैंहिं जिय मैं। लगी रहौं लगन।
कया हि सुरव की॥ श्री हरिप्रिया कर
त रहौ निसदिन। अति अदभुत वरषा
पीयूरव की॥ ४॥ १४॥ दोहा॥ प्रवर प्रेम
सरवर परी। परी हरबरी होय॥ निरषि
सुरत सागर मगन। रही सखी सुरव जो
य॥ १॥ पद॥ ताल जात्रा॥ निरखि सुरव
रही सखी सकेल सुरव जोय॥ सुरत सा
गर मगन मदन मोहन दोऊ। अनग
अंग अंग रंग रंग रस जोय॥ टेक॥ च
जकजकी की चकचकी सी। जकी सी॥ थकी थक
थकी सी टकी टकटकौय॥ श्री हरि।
प्रिया प्रवरकै प्रेम सरवर परी॥ परी
ज्यौं लरबरी हरबरी होय॥ १॥ १५॥ दोहा
॥ तुम महिं बनत हैं तन नहिं। अनत सनन
ं जोबन

ए

किहिं भांतें॥ अब तौ अति गति नई स
बाद रस देऊ बलि जांतें॥ १॥ पद॥ ता
ल गौरा॥ नैंक दरस दइये दरस बलि
जांतें॥ अब तौ अति गति नई निरखि
नैंन निनई। दई जो दई सो लई बलि जां
तें॥ टेक॥ तुम महिं जोबन तन जोबन तन।
और न कहैं॥ अनतन हिंस नत सुनि
विनै बलि जांतें॥ श्री हरिप्रिया जिनि
हिं लषि जीजियतु है जगत दीजियतु
हैं ह्गहिं हरष बलि जांतें॥ १॥ १६॥ दो
हा॥ तुव पद प्रापति लालसा। लगी र
हति उर मोर॥ अहो आनंद निधि स्वा
मिनी। हूं बलिहारी तोर॥ १॥ पद॥ ता
ल चंपक॥ हौं वलि वलि आनंद निधे
अव॥ तुव पद प्रापति की रहै लालसा।
बोल कहौ यह कौन विधे अव॥ टेक॥
जांनि परी जिय मैं नेक छूं यह। वांनि सा।

सुर०
१९८

दासुखदोनिरिषेअब ।।श्रीहरिप्रिया
अहेस्वांमिनितोबिनि। नांहिनसूझत
सखसिषेअब ।।२।।१७।।दोहा।।लगन
ललितकैसी अहो। लसनिहसनिमु
खचंद।। देषकुं देखकुरी सखी। दं
पतिछबिसुखकंद।।१।।पद।।ताल
ओता।। देषोदेखकुरी छबिलाडिली
लीलेकी।। लगनकैसी ललितलस
निमुखचंदकी।। हसनिमंदमंदम
नहरनिदृहिकोलेकी।। टेक।। छू
टिरहिअलकश्रमबुंदबेनफलके
नेन। पलकथकीबांदलेकरलेकउ
रमालकी।।श्रीहरिप्रियासुरतरस
रंगअंगअंग। अलबेलिरहेझलि
रतिरेलिप्रतिपालकी।।२।।१८।।दो
हा।। अंगअंगनागरनवल। पहरि
कैंवलकीमाल।। मेरेहियमैंसुखस ९८

नैंबिलसौदोऊलाल।।१।।पद।।ता
लओता।।बिलसौदोऊलालमेरैहि
यमदनसुखसनैं।।सुरतरसलीन
अंगअंगनागरनवल। कमलकी
माललहलहीडहडहतनैं।।टेक।।
मुकटकीलटकअरविंदपदपर
सिनी।सरसिनीसमरअद्भुतसुभ्रो
नैंदघनैं।।श्रीहरिप्रियाललित
उरसौंमिलीफिलिमिली।दिलिमि
लीदिपतिद्युतिजोरजोबनजनैं।।
२।।१९।।अनुरागनिललितानना
मध्याभास।।दोहा।। पियचूंबितछ
बिलसिरही। ऊमिऊंमिअंगअं
ग।। ललनाललितसुगतिरली।।
मिलिलालनकैसंग।।१।।पद।।ति
ताल।। ललितगतिलसीअहोबलि

ललनां लालन मिलि विलसी ॥
ऊं मि ऊं मिर ही अंग अंग छवि ।
चूं मि चूं मि विलसी ॥ टेक ॥ सुरत
समर सुख मन सुख सजनी ॥ रजनी
रूख विलसी ॥ श्री हरि प्रिया अंकु
अंकित कै अति निसंक विलसी
॥१॥२१॥ दोहा ॥ मदु रस मत मोहन
महा । सोहन अति अबदात ॥ अ
लक लडे उरझे दोऊ । सुरझिस
कात न गात ॥१॥ पद ॥ तिताला ॥
अलकें लडी उरझी पिय उर सों ।
पियरहे अलकें डी उरझा इ उर
॥ मदु रसमत्त महा मन मोह
न । सोहन सकत न तन सुरझाइ
उर ॥ टेक ॥ अहल दोऊ अलबे
लै अंग अंग ॥ आटे गा टेगुन सुरझा

इ उर ॥ श्री हरि प्रिया निहारि बद
न छवि । जोत मदन मन मद सुरझा
इ उर ॥१॥२२॥ अंउ गति विश्वा ।
भास ॥ दोहा ॥ उमग अंग
अंग रंग नरे । सुठ रै सुनग सुजान ॥
रसिक रवन मोहन रसिका रवनी
करि रसपान ॥१॥ पद ॥ ताल जोत्री ॥
रसिकरवनी रसिकरवन मोहन म
दन । वदन रसपान करि मत्त मन ॥
उमग अंग अंग रंग नरे सुठ रै सुनग
। सोना सुंदर सनी धनी धन । टेक ॥
डहडहे सुरत सर कंज मधु महम
हि लहलहे ललित तन ॥ श्री हरि
प्रिया प्रिया हरि अदल बदले विपु
ला पुलक छवि छलके आनंद घन
॥१॥२३॥ दोहा ॥ अदल बदल छवि

सुर० रहीफबि।बिपुलपुलककुलितदौ
२०० नै॥राजतरंगरंगीलेदोउ।रमतर
हसिरतिरौंन॥राग पद॥तालचप
क॥राजतरंगीलेदोऊरसिकरसी
लेलाल॥रसमसेरहसिरमतरति
रौनरंग॥अदलबदलछबिअति
उलितरहीफबि।उपजतचावहाव
निजरेअंग॥टेक॥गौरस्यांमल
सरीरसुरतसमरधीर।बिनचीर।
बिहरतबिपुलपुलककेअंग॥श्री
हरिप्रियालखिहियेंफूलसांनीहो
री।जोरीसुखसांनीसोहैसरससुं
गसंग॥१॥२३॥दोहा॥जलतरंग
ज्यौंनैंनमैं।तारेरहेसमोय॥प्रेमप
योधिपरेदोउ।पलन्यारेनहिंहोय॥
॥पद॥तिताल॥प्रेमपयोधिपरेदो ऊ

ऊप्यारे।निकसतनांहिंनकबकु
रैंनदिन॥जलतरंगनैंननितारेज्यौं
न्यारेहोतनजतनकरौकिन॥टेक
॥मिलेहैंनांवनेनागसुहागनेरोअ
नुरागछबीलेछिनछिन॥श्रीहरि
प्रियालगेलगदोऊ।निमिषनरहैं
एकनिएकनिबिन॥१॥२४॥दोहा॥
पागेप्रेमसिंगारमैं।भीजेसहजसुरं
ग॥बागबिलसदअनुरागदिबि।अम
तकेबिबिअंग॥१॥पद॥तिताल॥
अद्भुतकीबिबिमूरतिमोहनी।मो
हनेन्हैरसरंगभीनैं॥प्रेमसिंगारमैं
पागेहैप्रीतम।अंगअंगनवसरंगा।
भीनैं॥टेक॥अतिअनुरागकेबा
गमैंविहरत।नितनबिपुललस
रंगभीनैं॥श्रीहरिप्रियासुजीवनि

षु॰ जोरी। प्रगटविसद जस रँग नौं।
२०१ नैं॥१॥२५॥ दोहा॥ प्रेम पुंज प्रिय प
रि ओरि रहे। टरत न रन तु रि जोट
॥ मन बारे घूमत महा। नेह अगड
की ओट॥१॥ पद॥ त्रिताल॥ नव
रँगनीनी नेह अगड मैं नीद घुरैं घू
मत मत बारे॥ निपट निसंक सुर
नर न जीते। सकल केला संहरन
भारे॥ टेक॥ झूमि झूमि झपकत
झिझिकत दृग। सिथिल गात न
हिं जात सँभारे॥ श्रीहरिप्रिया प्रेम
पुंज मी परा। अरि रहे पर न टरत न
हिं टारे॥२॥२६॥ अथ राग नि विला
सावलि मध्या नाम॥ दोहा॥ सहज
सनेही दे हि द्वै। दीपति दिन हि अ
पार॥ नित विहारी जय जयति विल
२०

स नित पर वलिहार॥१॥ पद॥ ताल ख
पक॥ जय जय जय श्री नव नित्य विहा
री॥ हौं या विलसत नित पर वलिहारी
॥ सदा सहज सुख सुरत सनेही। ए
क प्रान दीपति द्वै देही॥ देही द्वै दी
पति दिन हिं दिन। छिन हीं छिन रा
ति रंग रंगे॥ एक वैस किसोर जोब
न जोर अद्भुत अंग अंग अंगे॥ सकल
निस विलसे वितवत उ। हिपतित
ने कन मन रनैं॥ चटैचौज मनोज म
रति। महा मंगल रस सनैं॥१॥ सुनग
सेज सुंदर सु विदाई। मृदुल सुरंग सुम
ग मनभाई॥ तापर स्याम निवेस त गो
री॥ करत विनै रूख लिये किसोरी
॥ लियैं रूख सन मुख किसोरी॥ पल

सु०र०
२०२

कपायनिपरसहीं॥सदयऊदय
विहारिनिजउर॥धारिमकरंदरसब
रसहीं॥पुलकअमउमंगहिलि
मिलि॥रहसिरंगरलैंहितैं॥अघ
टघटनीं अहहहृदनिकों॥अनी
हिनदेखीकिनैं॥२॥कौंकका
लामैं ऊसलहोऊए॥अतिगति
के आधीसकोऊए॥कौनसक
तिआईहनिमांहीं॥अधिकअ
धिकअधिकातिहिंजांहीं॥अ
धिकअधिकहिंजातिहैं॥अधि
कातिरातिनदिनगिनैं॥वाति
सीकोउवातिहों उमगातिअतिम
तिव्रतिछिनैं॥तैसियैअनुकूल
फलदल॥सुमनसंपतिसदनकी

झिलिरहिरसरेलिकेलिसहेलिअ
नुमितमदनकी॥३॥गरवरोषअ
हंसीकरहीं॥जौंहच्चदायनाकसर
धरहीं॥श्रमवनबूंदवदनतनऊ
लकैं॥कवकुझिझिकिऊपका
तिहैंपलकैं॥पलकैंऊपकातिहैं
कवकुंपुरिजातिअलवलवलकि
कैं॥लिपलगतिसुऊंवारिअतिल
गिललसतिपियगरललकिकैं॥मन
ऊंमर्कतकनकमनिरवचिरचीरति
रागावली॥अहलअलवेलेमिथुन
आनंदअहलादनिअली॥४॥जदपि
जुगलसहजेसुकेंवारा॥तदपिरसव
सरमतविहारा॥कुलटसिरोमनिधीर
अधीरा॥सकततनतनकसेंनारिसरी
रा॥सरीरहिनसैंनारिसकत॥मदोन्म

सुर. नमहा अगोचरे॥सकल जोंन सथांन
२२ परहरि। प्रेमजोजो मेंपरे॥पागखसि
घसिमां गत्तैरहि। लरकिलरथरवा।
लकैं॥पीकलीककपोल अंजन। अ
धरमहावरलाल कैं॥५॥यह छबि बिस
दा बसौ हियमेरैं। प्यारे हो उनसों ऊस
बेरैं॥देखि देखि नी कैंयाजोरी। लगे
रहौ निति अँखियां मोरी। मोरी अँखि
यां लगे रहौ निति। और अभिलाख
नै हौं॥धन्य आगमनाय महलनि। ट
हलमैं तनपर रहौं॥अहो करुणाम
य कृसोर सि अनुग्रह मोपर करौ॥
बिसद बेरदी तार हद बेन। जोनपदम
मक दधरौ॥६॥सावधांन अबमौंनहिं
करियें। रूख हीलै सब सुख बिसनरि
यें॥एमहामङ्गलमनोहरमूरति। सही
परतिकैसैं इनि पैं अति॥ अतिपरति

कैसैं सही इनि पैं नैं कनैंन निनिरखियें
॥आतुरी नैं कहा असो। होतजोधीरज
लियें॥वेद लिसी गई बाल मोंन कूं मा
लसी मुरझाइ कैं॥रस बिसाल हिं चह
न तैनों। लेऊं लाल मनाइ कैं॥७॥प्रि
यासैं निसहचरि समझाई। समझि सैं
नमैं चैंन लिहाई॥यह रस दुल्लभ हैं
दुल्लभ। बिना कृपा कैंसैं लहैं सुल्लभ॥
सुल्लभ कैंसैं लहैं कृपा बिनि। महा अ
गम अगोचरा॥ सेसमहेस नहिं लहत जा
कौ। पार अपरंपरपरा॥ जयति श्रीह
रिप्रियाजोरी। चिदानंद प्रकासिनी॥
अविकैंताकृति कोटि मन्मथा। मोह
नी केलि बिलासिनी॥८॥इति॥दोहा॥ मो
नमनावत मां ननी। पियलैलैंवलिहा
रि॥लाल बिहारी सैन सुख। मुख दरख
रहे निहारि॥१॥पद॥कैंदारा॥ बिहर

श्रु२०। २०४

नसेन विहारनी॥संगुलाल विहारी॥
लाडलडीली रूपमाहैं निहारी॥टेक॥
मांनमना वति मांनिनी।आग्या अनु
सारी॥श्रीहरिप्रिया पद पद्म की।लै
लै बलिहारी॥१॥२०॥दोहा॥या अन
न्य व्रतपोत के।हो तुम खेवनहारि॥
मोहि कृपा करि देहु अंग।संग सेवा सु
कुंवारि॥१॥पद॥इकताल॥मोहि कृ
पा करि दीजिये।अंग संग की सेवा॥
अहो विहारनि लाडिली मेरे तुम देवा
॥टेक॥या अनन्य व्रत पोत के।हो
तुमही खेवा॥श्रीहरिप्रिया जु मोसों
हटै।इच्छो कि निसेवा॥१॥२१॥दोहा
॥तुम जिनि करतैं परिहरौ।विनती सु
निलीजै जु॥श्रीकरुणा निधि लाडिली
।इतिनी कहा कीजै जु॥१॥पद॥इक
ताल॥श्रीकरुणा निधि लाडिली।इति ४

नी कहा कीजैं॥निति प्रति पारैं हैं ति
हैं दिरसन दान दीजैं॥तुम जिनि क
रतैं परिहरौ।तुमहीं तें जीजै।श्रीह
रिप्रिया जन जांनि कैं।विनती सुनि
लीजैं॥१॥२२॥दोहा॥प्रांन प्रिया सु
खदा सदा।श्रीस्यामा सुकुंवारि।रा
धे लाडगहेलिडी।अलवेली रिझवा
रि॥१॥पद॥इकताल॥अहो बलि
लाडगहेलिडी राधे अलवेली रि
झवारि।श्रीस्यामा अति रांमा रामा
।सुखधामा सुकुंवारि॥टेक॥प्रांन
प्रीतमा प्रिया प्रेयसी।प्रेमा परम उ
दारि॥श्रीहरिप्रिया सलौंनी सुंदरि।
मोहि बिनी सिरदारि॥१॥२३॥अनु
रागनि टहल लतस्य रामध्या ना सा॥दो
हा॥अहो लट हलत तस्यर सवै।चह

पुर०
२०५

लपहलहिलिहेज॥मिलिमहल
निविलसांवही।लैदंपतिसुखसे
ज॥२॥पद॥तालचंपक॥विलस
तिदंपतिअतिसुखसंपति।म्हु
लसेजपरहेज विहार॥नसरअ
हलटहलमैंमहलनि।चहलपह
लरसरहलनिहार॥टेक॥कोक
कलाकोविदरनधीरनसकतस
रीरनचीरसंभार॥श्रीहरिप्रियाम
दनमनमोहन।हिलिमिलिवाढ्यौ
रंगअपार॥२॥२२॥दोहा॥सम्हरि
गातछुरिजातफिरि।छुरिछुरिजा
तसहेलि॥दंपतिकौदेखुअ
री।अद्भुतरतिरसकेलि॥पद॥चौ
ताल॥देखिरीदेखिआजुदंपति।
की।अतिअद्भुतरतिकेलिकलो ५

लनि॥सम्हरिगातछुरिजातजुरत
फिरि।आनंदउरनसमातअनोल।
नि॥टेक॥जाचतराचतमाचतमु
रिमुरि।ढरिढरिनरिनरिअंकअमो
लनि॥श्रीहरिप्रियाअंगअंगउम
गित।अरिअनुसरतकरनकलो
लनि॥२॥२३॥दोहा॥परतछिनांनी
परतिहै।सियरांनीसिथरांनि॥म
नमांनीसांनीसुखैं।रांनीरवनरवांनि
॥पद॥चौताला॥सुरतिरतिरांनीरी।
रांनीमनमांनीरसनिधिरवनरवां
नी॥अतिअरसांनीगतिदरसांनी।
छविरहतनछांनी॥श्रीहरिप्रिया
वदनकीबांनीनईअबऔरहिवां
नी॥२॥२४॥दोहा॥दृष्टिपरतजब
जबदोउ।दीखतनेररतनेरात॥ज

सुघसांनीसरसांनी॥टेक॥परतछिजांनी
परतसिरांनीसिथरांनी

पु२०
२०५

लपहलहिलिहेज॥मिलिमहल
निबिलसांबहीं।लैदंपतिसुखसे
ज॥२॥पद॥तालचपक॥बिलस
तिदंपतिअतिसुखसंपति।महु
लसेजपरहेजबिहाग॥तसरअ
हलटहलमैंमहलनिचहलपह
लरसरहलनिहार॥टेक॥कोक
कलाकोविदरनधीरनसकतस
रीरनचीरसँभार॥श्रीहरिप्रियाम
दनमनमोहन।हिलिमिलिबाढ्यौ
रंगअपार॥१॥२२॥दोहा॥सम्हरि
गातछुरिजातफिरि।छुरिछुरिजा
तसहेलि॥दंपतिकौदेखकौअ
री।अद्भुतरतिरसकेलि॥पद॥चौ
ताल॥देखिरीदेखिअजुदंपति।
की।अतिअद्भुतरतिकेलिकलो

लनि॥सम्हरिगातछुरिजातजुरत
फिरि।आनंदउरनसमातअतोल।
नि॥टेक॥जाचतराचतमाचतमु
रिमुरि।ढरिढरिनरिनरिअंककअमो
लनि।।श्रीहरिप्रियाअँगअँगउम
गित।अरिअनुसरतकरतफकझो
लनि॥२॥२३॥दोहा॥परतछिजांनी
परतिहैं।सियरांनीसिथरांनि॥म
नमांनीसांनीसुखैं।रांनीरवनरवांनि
॥पद॥चौताला॥सुरतिरतिरांनीरी।
रांनीमनमांनीरसनिधिरवनरवां
नी॥अतिअरसांनीगतिदरसांनी।
छविरहलनछांनी।श्रीहरिप्रिया
बदनकीबांनीनईअबऔरहिबां
नी॥१॥२४॥दोहा॥हेछिपरतजब
जबदोउ।दीखतेनैरतनैरात॥च

सुघसांनीसरसांनी॥टेक॥परतछिजांनी
परतसिरांनीसिथरांनी

बलबश्री हरिप्रिया की। अक
ही आवत बात॥ पद॥ चौताल॥
बातें अब अकही आवत इनि
की। जोंनी जात न जात॥ जब जब
दृष्टि परत न रत ई सो। सुधि न बक
बैरि तात॥ टेक॥ निस वासर बा
दर ज्यौं दरसत। बरसत हून अ
घात॥ श्री हरिप्रिया बल अति
लोरवत। सदा प्रेम ऊसलात।
रूप॥ अनुराग नि आनंद मध्या
मास॥ दोहा॥ उमगन रें अंग अं
ग मैं। संग सग बगे साज॥ विलस
त आनंद महल मिलि। मदन मो
हन दोउ आज॥१॥ पद॥ इकता
ला॥ आज सखी आनंद महल में
मदन मोहन कल केलैरी॥ उम

गि उमंग गन घन ज्यौं बरसत। अरस
परस रस रेलैरी॥ टेक॥ सुनग सेज
पर दो ऊ सुंदर वर। रसिक पुरंदर रा
जैरी॥ रहसि रंग अंग अंग रंग बगे।
संग सग बगे सा जैरी॥१॥ श्रीन प्रिया
परसं सि परम पद। चंद वदे मुदित म
न मैंरी॥ सन मुख रूप सुरब विलस
त फूलसत अति आसक्त अलन में
री॥२॥ अरुन वरन मन हरन बद
न छवि। सुधा सदन सर सौं हैंरी॥ नै
न मैन रस आनंद नचित। चैन च ढी
धकुनौं हैंरी॥३॥ मधुर अधर रसनौं
रस रसवत। चसवतन चसकैं लागैरी
॥ दसन खंडगंड निमूढ मंडित। पी
कली कपर पागैरी॥४॥ सुरत सम

सुर॰ ररनधीरकुँवरकमनीयकला।
२०७ कुलनायकरी॥वितरतविविधि
विनोदमदोन्मत।महासुन्नटसुख
दायकरी॥५॥लष्येलष्योपष्यमि
ष्युनगष्योगष्यो।विहसिवष्योवष्य
विहरैंरी॥श्रमवनबुंदवदनतन।
फूलकत।अलकरलकछुविछु
हरैंरी॥६॥मोतिनलररहीतूटिछूटि
रही।चिकुरचंद्रिकासिरतैंरी॥मृ
गमदसनिसिंदूरबिंदुवनि।रही
न्हैकुटितनिलिरतैंरी॥७॥रसवा
दीरसवादरहेअरि।अधिकतअ
रसनआवैंरी॥श्रीहरिप्रियाअ
नुकूलकिलोलनि।निरखिनैंन
सचुपावैंरी॥८॥छंद॥दोहा॥सफ

लमनोरथहोतसव।आवतहियें
जितेक॥मेरेनैंनकौअरी।यहअ
हारहैएक॥१॥पद॥तालचपक॥
तथाइकताल॥अरीमेरेनैंननकौ।
आहार।कलनपरैंपलएकविनो
मोहि।अवलोकैंसुखसार॥टेक॥
सकलमनोरथसफलहोततवाक
रतहियेंसंचार।श्रीहरिप्रियाप्रा
नजीवनिधन।कौयहसुरतविहा
र॥१॥३७॥दोहा॥याअतिगतिके
औरकौं।कैसेंईपावतहौंन॥जव
देषौंजवजगेसे।लगेचटपटीकौं
न॥१॥पद॥चपकताल॥तथाति
ताल॥अरीएकौनचटपटीलागैं
रहतसदारतिरागे॥अतिकौऔर
नआवतकवहू।वकुतजतनक

सुर० रिषागे॥टेक॥निसवासरजाग
२०८ नअरुसोवत।जेवदेखौंजेवजा
गे॥श्रीहरिप्रियापरतनहिंकछु
कही।कैसिखगनिमैंखागे॥१॥
३८॥दोहा॥कमलऊमदनीछंद
कौ।दायकउरआनंद॥जयतिसु
रतरंनधीरविवि।विसदरूपर।
विचंद॥१॥पद॥तालजात्रा॥ज
यतिसुरतरंनधीरदोउकुंवरऊ
लमंडनें।खंडनेंदर्पकंदर्पदल।
के॥विसदवरवेसरसिकेससम
वसुघर।सारसुखरूपसिरमं।
निसकलके॥टेक॥अद्भुतानंद
केकंदकमनीयकलचंदरवि
छंदऊमुदनिकमलके॥श्रीहरि
प्रियाप्रानपोषनप्रवरप्रतिदिनां

।छिनछिनांदरनदुखपजहिपल
के॥१॥३८॥दोहा॥महलमहामोहन
सहज।कुंजगसेजनरिअके॥सुखस्व
रूपसनमुखरूखैं।विलसतदोऊ।
निसंक॥१॥पद॥इकताल॥विल
सतदोऊलाडिलेमिलिमदुरसरं
गविहारहो॥सहजस्वरूपमहल
मोहनमहा।कुंजगसेजसुखसार
हो॥टेक॥जाचतजतनरतनराचे
नरति।करिकरिबौहोमनुहारि।
हो॥नरतअंकअनुसरतलियैंरू
खा।सनमुखश्रीसुकुंवारिहो॥१॥
आधीनतअवलोकिअधरमधु
अचवायोअलवेलिहो॥अंगअं
गप्रतिचटीवढीवर।विपुलपुलक
कलवेलिहो॥२॥परस्विवरनकर

सुर०
२०५

करसिकसोदरि।रहेकमलपरझे।
लिहो॥मोनेऊंमदनमनोरथकेगन
।लीनैसकलसकेलिहो॥३॥परम।
उदारिटरीटबिसौंकबि।दबिमरकै
नअतुकूलिहो॥देखैहीवनिआव
नयहछबि।कहतजानमतिडूलि
हो॥४॥सोरतसारसआवेतसचपाव
ना।ननमननसुरसुऊलायहो॥अधि
कतजंनितंनिभुवचितवत।रहत
नवैउऊलायहो॥५॥सदयसुहाइ
पोषसंतोषत।ज्ञानेस्वरिपरवीनिहो
॥सरबेसरसदैरहसिरमावतभाव
नसोसोईकीनिहो॥६॥टसकतिहो
नटसानैननिकी।पुरवतउरअभि
लासहो।निरखिनिरंतरश्रीहरिप्रि
याकौ।निरवधिनिसविलासहो॥७॥ ४

७॥अनुरागनिसुरंगंगामध्यानास
॥दोहा॥कमलकुंजकिसलयसय
नारमतरहसिरतिराज॥प्रेमप्रदाअंगअं
गप्रतिरंगरंगेदोउआज॥१॥पद॥
मालकोस॥आजकमनीयकैसौरकि
सलयसयन।करतमिलिकमलक
लकुंजकीकेलिनी॥रहसिरतिरव
नराचिरुचिररगमगारसिकै।रमनरं
जनररेंगरसरेलिनी॥टेक॥परम
परिपोषप्रतिअंगसुअनोप्रदा।प्रेम
परकासदाआपदापेलिनी॥अवि
रुताकेतिकियासारखोतंत्रिया।सु
खदरूपाश्रीश्याहरिप्रियाहेलिनी॥
१॥७॥दोहा॥बढिबढिबहसचटेदो।
[illegible]रतराबनबेबियाय।मनमोहनसो
[illegible]नमहा।अमबनजलकसुहाय॥१॥

सुर।
२१०

पद॥तिताल॥श्रमवनवूंदवदननैन
सोहत।मोहतमनमोहनमदमाते॥व
ढिवढिवहसचढेरनरावते।छविपा
वतअतिलगतसुहाते॥टेक॥सजि
वरवस्त्रसस्त्ररुचिरँगके।अस्त्रउमं
गअंगउमगाते॥श्रीहरिप्रियासुरजं
गजोदनजोरकिसोरकुँवरलड़का
ते॥१॥ध्रु॥दोहा॥मधुकरमधुकरनूपुर
वजैं।कलकिंकनीरसाल॥अलक
लड़ीलड़वांवहीं।दैअधरामृतलाल
॥२॥पद॥तिताल॥अंगनिअंगउमंग
निनरिनरि।अलकलड़ीलड़वाव
तिलालहिं॥लैलैसुखदसुमनस
ज्यापर।दैदैअधरसुधाअतिपालहि
॥टेक॥मधुकरमधुकरनूपुरवाजैं।
कलकिंकनिरवरुनितरसालहिं १०

॥श्रीहरिप्रियाप्रेमरसलंपट।अध
नैअधरनउरऊपरचालहिं॥३॥ध्रु
॥दोहा॥कुंजमहलकलकमलज
हाँ।रहेफूलचकुँकोद।संगविहा
रनिरंगनरि।विहरतवितनविनोद॥
१॥पद॥तिताल॥विहरतआजेवि
हारविहारनि।संगविहारीवितन
विनोदनि॥कुंजमहलएकोंतरहि।
स्थल।फूलिकमलकलरहेचकुँको
दनि॥टेक॥झूमिझूमिझटकनझु
किझपटन।सुखदपटनदोउनरि
नरिगोदनि॥श्रीहरिप्रियानिरखि
नैंननिछेवि।पलपलवारतिअंन।
प्रमोदनि॥२॥ध्रुव॥दोहा॥मुदितमनो
जनिचोजचढि।सनमुखरुखधरि।
वांह॥करतकेलिकमनीयदोउ॥सी

सुर॰
२११

नवलरूकी छोंहा ॥१॥ पद ॥ तिताल ॥
सीतल छांह कदमतरू कीनहों ॥ क
रतकेलि मनरंजन दोऊ ॥ मुदित म
नोज चोज चढि सनमुख सुरत सम
रसुखसंजनदोऊ ॥ टेक ॥ विविधि
विलास हुलास हियनि को । परका
सि कहू गअंजनदोऊ ॥ श्रीहरि
प्रिया प्रवीन परसपरा धरिधरि ग
रे कर कंजनदोऊ ॥ १ ॥ ५५ ॥ दोहा
॥ लालन संग हिलिमिलि रली ॥ क
हों लगि बरनि सुनाऊं ॥ अरु अल
बेली बाल हौं । विहरनि की बलि जां
ऊं ॥ १ ॥ पद ॥ इकताला ॥ बलि जांऊं
विहरन की हौं ॥ टेक ॥ अरु अल
बेली बाल ॥ लाल मिलि राख्यौ रंग र
साल ॥ करी हमैं अनुकूल लैई निहाल ॥१॥

॥ कंचन बेलि तमाल ॥ चढि चढि वि
रही जोवन जाल ॥ अति छवि फबि
रही इहिं काल ॥ बलि जांऊं विह
रन की हौं ॥ २ ॥ मन मथ मान मनाय
॥ पियबस किरली नैं अपनाय ॥ अ
पनैं जी कैं जलन नजाय ॥ अधरम
धुर अचवाय ॥ अंग अंग सौंरतर
स रचवाय ॥ मोहन सनमुख सुख स
चवाय ॥ बलि जांऊं विहरन की हौं
॥ ३ ॥ करि केल वचन विलास ॥ बिल
सी पिय संग प्रेम प्रकास ॥ पुजई स
कल मननें की आस ॥ उर उमगाय
उलास ॥ नागरि नैं नागर पिय पास
॥ पौढी अंक निसंक निवास ॥ बलि
जांऊं विहरन की हौं ॥ ४ ॥ बरसी अ
मृत धारा ॥ सरसी अंग अंग उमगा ॥ अ

श्रु र.
२१२

पार॥ टरि टरि अपनी टर निसुढार
॥श्री हरिप्रिया वलिहार॥ पिय कौ
करि राख्यौ हियहार॥ लै लै उर ज
निकै अंगवार॥ वलि जांऊं विहर
नि की हौं॥४॥४३॥ दोहा॥ उलट
पुलट छवि फवि रही। उरझनि उ
रझल वेलि॥ देखि देखि जीजै सु
यहा नवल जुगल वर केलि॥१॥
पद॥ ताल जोगी॥ तथा नट॥ नव
ल वर कुंवर की केलि मन भांवनी॥
देखिही देखि जीजै सखी जुगल छ
वि। कैसी अति फवि रही उरझनि उ
रझांवनी॥ टेक॥ अलक कुंडल
करनफूलन क वेसरि जु। वलय
रसनावसन उलट पुलटी वनी॥ प
रमपावित्र श्री हरिप्रिया रति क। १२

थ्या॥ कोटि मनमथन उर विथा उप
जांवनी॥२॥४४॥ दोहा॥ हिल नेहे
जे सुखसेज रस। रेलनि केलि प्रवा
हु॥ मेरे नैननि तैं छिनकु॥ इत उत
जिनि टरि जाहु॥१॥ पद॥ इकता
ला॥ तथा नट॥ मेरे नैननि तैं छिन
जिनि टरौ॥ सुरत समर रन धीर कुं
वर वर॥ जो मो पर करुणा करौ॥
टेक॥ हिल नेहे जे हिय सुन गसेज
कौ। सहज सुढर ढार निढरौ॥ श्री
हरिप्रिया रस रेलि केलि कला।
महल टहल मन संचरौ॥२॥४८
॥दोहा॥ कै छू अटक री खी नहीं।
दियौ महल मुकलाय॥ मदन मन
हिं मोहनि प्रिया। सव दिन सहज

सुनाय॥२॥पद॥तालचंपक॥
लथाधुरियाधनाश्री॥मदनमन
मोहनीप्यारी।पियकौंदियोहे
महलपुकलाय॥कछूअटके
राखीनतनकहू।लेऊलियोजो
जोय॥टेक॥अतिउदारिसुऊं
वारिसिरोमनि।सबदिनसहज
सुनाय॥श्रीहरिप्रियाअपरमि
तउपमा।कहतरहतसुऊंचा॥
य॥२॥४५॥दोहा॥लहतनछिन
उपरम्पता।सहजरँगेरँगअंग
॥वितवतदिनविलसतसुख
हिं।इकरसनरेउमंग॥१॥पद
तालचंपक॥नथानट॥लथाधु
रिया॥सदासुखविलसतहीदि

नजात॥लहतनहींउपरमितात
नकऊं।अधिकअधिकअधि
कात॥टेक॥सहजरंगरँगिरहे
रसिकदोऊउमगनहूनअघातम
श्रीहरिप्रियाप्रकतिअतिगति
कीकहिनहिआवतवात॥१॥४६
॥श्रेउरागनिष्ठनयधेनुरामधा
नास॥दोहा॥अरुनअसितसम
ऊनकोउ।जिहिंनायेसबएको॥
जोंसोंजोंनपनोंजुसों।जियकोहे
उजिनेक॥१॥पद॥तालचंपक
॥रावरेजीयकोजोंनपनोंजोंसों
नेजिनेक॥अरुनअसेतनेद
समुऊनकोउ।जाकेंनायेंइंदीव
रकोकनदएक॥टेक॥नैंकऔ
गैंचलिदेखौकेसेसुखकैहैए

पुर०
२१४ ।मनमैं न औहैं नौ नौकी जियो टे
क॥ श्रीहरिप्रिया हित हितकी
कहति को ऊ। तिन मैं कछू नौ
विवेक॥१॥५॥ दोहा। देषत न
ली खेलन्यौं। चकित थकित रहि
जात॥ प्रकति तिहारी औ कु प्रि
या। यह समुझी नहिं जा त॥१॥
पद॥ ताल चंपक॥ प्यारी जू ति
हारी प्रकृति कछू समझी न जा
ति॥ यों कियें यों यों कियें यों कै
कैं जाति॥ टेक॥ औ नमैं न देख
न नेली कें खेलन्यौं। चकि थकि
रहि जाति॥ श्रीहरिप्रिया न्या प्र
कर लागी। हरि हरि जाति॥१॥५
२। दोहा॥ अवलम्बल कि नि।
हेऊ कौ उ। सुईना कैं निकलैं जु

॥अदल महा या नगर मैं जोरावरि
अवलै जु॥१॥ पद॥ ताल चंपक॥ जो
रावरिन चलै या नगर मैं अदलौं॥
कैसो ई अबल सबल कि निहेऊ
कौ ऊ। सुईना कैं निकलैं॥ टेक
॥ जां निपरैं औड वैंड जो विनिक।
है पैं उइत उनैं हलैं॥ श्रीहरिप्रि
या जू कौ राज अविचल। छूटलैं
नौ टलैं॥१॥५३॥ दोहा॥ मुखरु
ख टगटग जोइ रहे। देखि प्रिया
तन नैन। लई सिथलगति लाल
की। विकल सकल वंधेज॥१॥
पद॥ ताल चंचलत॥ तिताल॥ देखि
लई लाल की गति सिथली॥ टेक॥
टगटग जोइ रहे मुखरुखलै। र
गरग स कल विकल॥ श्रीहरि।

ऽडगडगमगतनगततनकनलगा॥ कै
अति उथलपथल॥ तु०३

सुर०

प्रियाललनतेजकैआगैं।अकल
निलागैंअकले।।१।।५४।।दोहा
।।किहिमगआऊं स्वांमिनी।सु
नऊंसकलसुखदाय।।अहल
महलचिकनायमैं।खिसिलप
रतमोपाय।।१।।पद।।तालचपक
।।किहिमगआंऊंमेरौपगनांहिं
ठहरैं।।प्यारीज्रलिहारीमैंतोआ
नाहीकौअधिकारी।लगनहिं
लागैंजहांकैसैंपगठहरैं।।टेक
।।अहलमहलकीचहलचिक
नाईजामैं।खिसिलपरतडगपग
नांहिठहरैं।।श्रीहरिप्रियासुनौं
स्वांमनिसकलसुखदायककै
देखौवलिजैसैंपगठहरैं।।१।।५
५।।दोहा।।श्रीहरिप्रियाअँगसंग

लै।सनमुखरूखहिसिधाय।अखंडे
सखंडेआउचालि।इनउलंघनगा
डिगाय।।१।।पद।।तालचपकता
लातिताला।।सुखेसखेचलेआवौ
।।इनउनपगनडिगैंडगमगकै।
औंसवहांसुखपावौ।।टेक।।याव
नेसवठांराजतिहारौ।जिनमनड
रैसैकावौ।।श्रीहरिप्रियाअंग।
संगनिसँगलै।सनमुखरूखहि
सिधावौ।।१।।पद।।दोहा।।गहवर
ऊंजनिऊंजनैं।आगैंअलुनठौर
।।हितसखीसँगलैचले।तहांला
लसिरमोर।।१।।पद।।तिताला।।हि
तसखीसँगलैचलेलाल।।गहव
रऊंजनिऊंजनैंआगैंजहांवोलत
कोकिलारसाल।।टेक।।कुनिकु

सुर० निकलियनिसेजबनाई।मृदुल
२१६ मनोहर निजकर वाल॥श्रीह
रिप्रियामिलिमिलेपरसपर।उर
वरपहिरिकमलकीमाल॥१॥५
७॥अनुरागनिगौरमुखीमध्याला
स॥दोहा॥सुनगसेजसनमुखल
खहिं सावधानसुरताल॥गिरा
१ गोरी गुन मधुरधुनिगांवहीं।गोपाल॥२
॥पद॥तिताल॥गावतगोरीगु
नगोपाल।सुनगसेजसनमुख
सुंदरवर॥कहिकहिकोमल
वचनरसाल॥टेक॥सावधान
सुरसप्तसरिगमप।धनिलग
यधुनिरहेइकताल॥दुरनिमु
रनिग्रीवांनैननिकी।अलकर
लेककुंडलहाल॥१॥करि १६

करिनखसिखरूपनिरूपन।तन
करिलियोकदमकीमाल॥श्रीह
रिप्रियारीझिरसलीनोदियोअप
नौसरबसतनकोलाल॥२॥५८॥दो
हा॥लैरुखश्रीहरिप्रियाकी॥जि
हिंछिनजैसियजोइ॥सोईगावत
गुननरे।मिथुनमुदितमनहोइ॥१
॥पद॥तिताल॥लयेमुदितमनमि
थुनकिसोर॥जोईगवावतिगाव
तसोई।लैलैसुरमंदिलकलघोर॥
टेक॥सकलकलापरवीनपरस
पर।लोनतरंगसुधंगनथोर॥श्री
हरिप्रियासहजसुंदरवर।सुघर
सिरोमनिचितवितचोर॥२॥५९॥
दोहा॥एकभावरुचिएकही।एक
भावइकरंग॥नहिंबिछुरतभीन

षु०र०
२१७

मदोऊ।विहरतमिलिइकसंग
॥१॥पद॥चलततिताल॥नहिं
विछुरतपलप्रीतमदोऊ।विहर
तसँगसंगेरसरंगे॥एकहिंनाव
चावरुचिएकहिंएकहिंरगरंगे
रसरंगे॥टेक॥एकहिंवैसत्रान
मनएकहिं।एकहिंअंगअंगेरस
रंगे॥श्रीहरिप्रियाहिलिमिलेप
रसपर।ढरिढरिढँगढंगेरसरंगे॥
१॥८५॥दोहा॥अंगसंगनिसँगलै
सबै।संध्यासमयउदार॥विहर
तविविरुचिहिलिमिलेवनघ
नकुंजनविहार॥१॥पद॥चलत
तिताल॥विहरतवनघनकुंजनु
विहार॥संध्यासमयसंगअंगसं
गनि।मिथुनमनोहरमनमथिमा ए

१॥टेक॥चंपकमधककेवराके
तकि।कदलिकदंबनिअंबअं
नार॥कमलगुलाबकेलपतरु
चलदल।रहेझुकिझूलिझूलि
फलेनार॥२॥सदासुहागसेव^
तीन्हहीं।मुकलतामालतीआया
र॥पियवासैंबसिमौलसिरीकै
मौलसिरीमहकाकचनार।र
॥तरुवेलीझेलीरसरेली।अल
वेलीआज्ञाअनुसार॥निजनि
जमनअमिलाघनकेगन।पा
यपायतननयेउदार।३॥सुचिसौ
रेवाटीरुचिगाटी।हिलिमिलि
गोरिनुठौरिसुढार॥श्रीहरिप्रिया
सहजसुखदायकसदासवनि
केश्रानअधार॥४॥८६॥दोहा॥

सुर. २१८

चटे वटे चित अवलगनि। श्रीह
रिप्रिया अरैल॥ रस अचागरे ए
अहे। छके रहत नित छैल॥
॥पद॥ तिताल॥ छके रस अ
चगरे दोऊ छैल॥ रहत सदा चि
त चटे चटेई। बटे वटेई फैल॥ टे
क॥ कौन परनि परि रहे अहे ए
गहत नहीं छिन गैल॥ श्रीहरि
प्रिया अवलइनि की गति कौ स
मुझै विनि सैल॥१॥ छं॥ दोहा॥
जो निपरी हियकी सबै। आवत
इहिं मग जो जु॥ आवत प्रिया अंग
संग कौ। रस कौ चस कौ मोजु॥१॥प
द॥ तिताल॥ रस कौ चस कौ मन भा
वत जू॥ जो निपरी हियरैं कौ सबै
अब। निति उठि इहिं मग आवत जू॥ १८

॥टेक॥ लाल चलागे ईल रवि थत अ
वेत वा परचित चित चलावत जू॥
श्रीहरिप्रिया अंग संग को मोसुख
विनां सुरुख को पावत जू॥१॥ द
श॥ दोहा॥ जरिन रिअंक निसंक।
दोउ दुरि दुरि रस की रेलि॥ मद मा
ते मिलि करत कल। कुंज सदन में
केलि॥ पद॥ तिताल॥ कुंज सद
न में लाल लाडिली। करत मदन
रस माते केलि॥ जरिन रिअंक नि
संक नवल वर। नागरि निपट नि
होरि निहोरत। दोरत दुरि दुरि रस
की रेलि॥ टेक॥ घुरि घुरि अंग अ
नंग तरंग वटी वन वेलकत बद
न विरमा। चटा वन तरु चित रुचि
की वेलि॥ श्रीहरिप्रिया सुरतरन

सुर॰ ३१९

धीर। सरीरन चीर सँवारि सकत न क
हुँ। ओट किर हेहट ओट कसु हेलि
॥१॥ दृष्टि॥ अनुरागनि केलि कौ मु
दी मध्या नाम॥ दोहा॥ विमल अंग
मैं फूल मलैं। तन झाँईं तजि पाज॥
रसिक रवन की राजिनी॥ देखु कुरी
ओ कुआज॥१॥ पद॥ ताल जोतो॥
आज अद्भुत रसिक रवन की राजि
१सखि नी॥ देखि री देखि सुरत सुखसा॥
जिनी॥ टेक॥ कँमल मिलि कँमल
की विमल छवि छाजिनी॥ फूल कि
झाँईं रही पेलि पुलपा जिनी॥१॥
रुनुनु नूपुर कुनुनु किंकनी वा॥
जिनी॥ सुनि श्रवन होल सुख मध्य
रधैं निगा जिनी॥२॥ हरि प्रिया प्रि
या अंग अंग प्रति भ्राजिनी॥ मद १९

नमन मोहनी औरि अधिराजिनी॥३
॥ दृष्टि॥ दोहा॥ लसनि भुजनि मैं का॥
सनि की। वसि जुरही हिय मोरि॥
एमा ओरी उपरि लै। तिन जुडारियें॥
नोरि॥१॥ पद॥ ताल जोतो॥ एरी मा
ओरी पर तोरि तिनु डारियें॥ रोमरो
मनि नुप्रति होइ है॥ थोक पिरि
तौ उपा छवि हिं अवलोकत नेहारि
यें॥ टेक॥ लगत कैसी लसनि गस
नि अँग अँग की। कसनि भुजन की
वसनि उरतैं न हिं टारियें॥ श्री हा॥
रि प्रिया प्रति दिनों विपुल पुलक
नि भ्रमा। देखि अनिमेखि तन मन
ऊधन वारियें॥२॥ दृष्टि॥ दोहा॥ सक
ल कला को बिदरवरै। नरे उमंग अं
ग अंग॥ श्री राधा सँग सेज मैं रमनर

सुर० मनरसरंग॥३॥पद॥तालजात्रा॥
२२० रमतश्रीराधिका रमनरसरंगरी॥
सुनगसुखसेजमैंहेजसुखसं
गी॥टेक॥करतरसबसरसिकचु
बनालंगरी॥देतरसदारिढरका
यलउटंगरी॥सकलविधौनिमें
विसदसरबंगरी॥अमितरतिप
ति निरखिहोतिगतिपंगरी॥ल
लितछविरहितुलसिकुल सिअं
गअंगरी॥सोहैंश्रीहरिप्रियानु
रिनुबनजंगरी॥४॥६४॥दोहा॥दि
नांरैंनसुखसैंनइति।महादैंनचि
नचैंन॥हिलिनिमिलिनिवरजु
गलकी।सदावसौहियअैंन॥१॥
पद॥तालजोत्रा॥नवलवरजुग
लकी हिलिनि मिलिनी।सदाहि २०

यसदनमैंकरऊदंपतिमदन।के
लिअलवेलिरतिरेलिरिलिनी॥टे
क॥दैंनचितचैंनसुखसैंनदिन
रैंनमहा।मैंनरसअैंनछविनैंनफि
लिनी॥श्रीहरिप्रियापरमआनंद
उपजांवनी।रहसिमनभांवनीउर
सिखिलिनी॥१॥६५॥दोहा॥जुर
निमुरनिअंगअंगकी।दुरनिसेज
रसरागि॥छुरनिछदनछविदेखि
यऊ।रहेउरनिविविलागि॥१॥पद
॥तालजात्रा॥देखिरीइकूंनिकीउ
रनिउरलागिनी।लगतिकैसीजुर
निमुरनिअंगअंगकी॥दुरनिसुख
सेजमैंहेजरसपागिनी॥टेक॥हार
वेरवारवेधुरनिछविदेतहरिलेत
हियछदनकोछुरनिरतिरागिनी॥

श्रु०
२२१

श्रीहरिप्रियाप्रवरपरिरहे सरव
रसुरत। तुरतमनमथुनमनमूर
छातागिनी॥१॥ दृष्टा। दोहा॥ रैनदि
नहिंछिनछिनहिंप्रति। परनिप्रे।
मसरहेलि॥ जुगलकुंवरवरकों।
ज्ञहो। अलबेलीयहकेलि॥१॥ प
द॥ तालतीताला॥ केलिअलबेलि
नीविविकुंवरकी॥ रैनिदिनछिन
हिंछिनहनहिं अवरनरुचहि। प
रेपरपरनिद्रहिं प्रेमसरकी॥ टेक
॥ अधिकहिं अधिक अधिकातन
निति जात हैं। बालकहिं आतन
हिं अपरपरकी॥ श्रीहरिप्रियाप्रा
नपोषनप्रवरमुकटमनि। कर
तहींरहतवरिखासुऋरकी॥१॥
७०॥ अनुरागनिकनेकोतामथ्या रा

ताल॥ दोहा॥ सुंदरतासोभा रूपमनि
रूपसीलरसरासि॥ सुजनग्रीवांदिये
जुगलवर। विहरतहियेंहुलासि
॥१॥ पद॥ तिताल॥ विहरतजुग
लहियेंसुजनग्रीवां॥ सुंदरतासोभा
रूपसिरोमनि। रसकीरासिरूपकी
सींवां॥ टेक॥ हाचनावआलिंगन॥
चुंबनदेतपरसपरप्रीतमप्यारी।
॥ अतिअधीरअनुरागविवसदो
ऊ। सुरतरंगरंगरंगेमहारी॥१॥
रसमयरसिकरसीलीसोमनिर
समयरसिकरसीलीकेली॥ रस
मयरहसिनिरखिहरखतहियें।
रसिकहितश्रीहरिप्रियासहेली
॥२॥७१॥ दोहा॥ कहाकहौंकह
तनवनैं। सोभाअद्भुतसो उ॥ श्री

जुगल आनंद की। मूरति मन हर
हो उ॥१॥ पद॥ तिताले॥ रसिक र
सिकिनी रति रस नी नैरी जुगल-
आनंद की मूरति॥ कहा कहौं क
हत न बनि आवै। सोभा सरस म-
लौं नी सूरति॥ टेक॥ कोक कला
कुल कोविद दोऊ। प्रीतम प्रिया
प्रेम रस पूरति॥ श्री हरिप्रिया दं
पति सुख संपति। सदा रहौ हिय
मांहि सफूरति॥१॥४१॥ दोहा॥ अ
ति सुंदर वर परसपर। करत प्रान
प्रतिपोष॥ कलकलोलनी कम
ल की। निरखि फुरी निरदोष॥१॥
पद॥ तिताले॥ कमलनि कुंज की
नी की कलोलनि॥ देखि री देख
दृग नैननि रिद्धि पति। संपति अमल २२

अमोलनि॥ टेक॥ करत परसपर
अति सुंदर वर। टक टोलनि झक-
झोलनि॥ मोरि मरोरनि छोरनि छ
लक रिना वी वं धनि बोलनि॥१॥ल
पटनि उरझ पटनि झुकि झटका-
नि॥ अटकनि अतन अनोलनि॥
श्री हरिप्रिया प्रान परिपोषत। ढरि
ढरि रस की ढोलनि॥२॥४२॥ दोहा
॥ छाजनि छाजनि लहलही। लखि
सब रही अचैन॥ बनि ठनि बैठनि-
विविन की। रचि रुचि रंजनि खंजन
॥१॥ पद॥ तिताले॥ बैठे विवि विवेंगले
बनि ठनि री॥ च्यारहिं औरख भर
चिरं जनि। रहिस वस हौं अचैननि
स निरी॥ टेक॥ छाजनि छाजनि रा
जनि रविरंग। साजनि सोभा अंग।

धुर० अंग निरी॥श्रीहरिप्रिया केलि
२२३ वेली मिलि रली झेली झुकि झूम
निरी॥१॥७४॥दोहा॥कोमल कि
सलय सयन पर। सोहत कुंवर
किसोर॥मैंन मनांवनि देखि स
खि। मोहत री मन मोर॥१॥पद॥
तिताला॥मोहत री मन मैंन मनां
वनि। रसिक कुंवर वर की कुंव
रांवनि॥टेक॥कोमल किसलय
सयन सुहांवनि॥ता पर सुंदर दर
निदरकांवनि॥१॥अति रति रं
ग अनंग बढ़ांवनि। उमंगि उमं
गि उरसों उरलांवनि॥२॥अधर
सुधा अचवनि अंचवांवनि॥द
सन खंड गंड निमंडांवनि॥३॥श्री
हरिप्रिया विमल विलसांवनि॥ २२

सदासवनि कौं सुख सरसांवनि॥४
॥७५॥दोहा॥कि कुंवर सकें न रुके
रहैं। विसद सुजस जग जास॥अं
मृतरस के अचगरे। चसे सदा च
सचास॥१॥पद॥तिताला॥अति
अचागरे अंमृतरस के। मिथुन म
थन मन मथ मजलस के॥टेक॥
सकल कला कुल केलि निकस
के॥रुके रहत नांहिन कि कुंवर
सके॥१॥विसद विनोंने प्रगट ज
ग जस के॥श्रीहरिप्रिया चसे चस
चसके॥२॥७६॥दोहा॥मर्कत म
नि मंडल उपरि। सकल कलानि
उधंग॥निर्त करत तिन थल ट्यती
अलग लाग पिय संग॥१॥पद॥
तिताला॥लेति अलाग निलागल

सुर०
२२४
५ ल्ये

डैनी॥ निर्सं करत मर्कत मंडल प
र॥ आपट अंग पिय संग अडैनी॥ टे
क॥ नैन त्यौं ई ई उघटनी॥ सकल क
ला कुल मैं सुघडैनी॥ श्री हरिप्रि
या ग्रबर ग्रकटीकनि। वर विद्या
वि तप ल्लिवडैनी॥१॥७७॥ दोहा
॥ उरझि पुरझि तन एक कै। रहे अ
हे सुनि बाल॥ कैसे आज विराजहीं
। नवल लाडिली लाल॥१॥ पद॥
त्रिताल॥ लाडिली लालन कौ वर
बांनिक। देखिरी देखि निहारि॥
कैसे विराजत आज अलौकिक।
कौ समकौं उ निहारि॥ टेक॥ उर
झि पुरझि कै रहे एक तन। जोवन
जोर विहारि॥ श्री हरिप्रिया बारिज
लपी जियें लीजियें री बलिहारि॥ २५

१॥७८॥ दोहा॥ बिनैं इक्कैं एरी अहे
। विहरत ही दिन रैंन॥ जोरी अति र
ति रंग रंगी। दै सुख प्रेम सुखैंन॥१॥
पद॥ त्रिताल॥ अति रति रंग रंगी
नव जोरी॥ कुंवर किसोर किसो
री॥ विहरत हीं दिन रैंन बिनैं इक्कैं
। हे सम सुझावै सोरी॥ टेक॥ नवही
नैंन निहारि हित अलि मन लिसि
बये हग कोरी॥ श्री हरिप्रिया प्रे
म सुख दै दै। सुरत समुद्र झकोरी॥
१॥७९॥ दोहा॥ अंग अंग रंग रगबगे
लग बगे सदा लहियें जु॥ श्री सुवि
राजनि कुंनिकी। देखत ही रहि
यें जु॥१॥ पद॥ लोल चंपक॥ बनी
है आज विराजनि विविकी। देख

नहीं रहियें जु ॥ सुरत रंग अंग अं
ग रंग बसे । लगे बगे लहियें जु ॥ टे
क ॥ सदा रहौ यह केलि बेलि चा ।
हि । मन हौं मन महियें जु ॥
श्री हरिप्रिया प्रबर अनुकूल नि
।क हौ कहा कहियें जु ॥ १ ॥ ७० ॥
अनुराग नि अल बेलि केलि मध्या
भास ॥ दोहा ॥ अंग अंग छबि बाल
की । लाल हियौं हरि लैन ॥ देखत ही
रहियें सदा कहियें कहा जु बैंन ॥
१ ॥ पद ॥ चलत तिताल ॥ देखत ही
रहियें कहियें कहा । हे मन हरनी
लाल बाल छबि ॥ अंग अंग मैं रंग
रंग मैं हिलि मिलि रही रस जाल बा
ल छबि ॥ टेक ॥ नख सिख जो रि । २५

चसी चटरस चस ॥ आकृति कुंड
लहाल बाल छबि ॥ श्रीहरिप्रिया
पहरि उरलीनी ॥ मन कुंमरगजी
माल बाल छबि ॥ २ ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ सु
रत समर रन जीतिकैं । सोहत प्रि
या सुछंद ॥ टरकि नाल बैंदी रही ।
स्वेद सलिल कैं संद ॥ १ ॥ पद ॥ चल
त तिताल ॥ रही टरि नाल लतैं बैंदी ।
बाल कैं । स्वेद सलिल कैं संद ॥ घसि
रव सि मांग रही सनि मृगमद श्ल
थ अधर मुख चंद ॥ टेक ॥ विथुरि
बार गंडनि पर मंडित पीक सुली
क अमंद ॥ श्रीहरिप्रिया सुरत रन
जीति । छकी छबि देति सुछंद ॥ २ ॥
७२ ॥ दोहा ॥ प्रिया प्रबल परताप ।
पिय रहे री फिरन जूटि ॥ सरबस रस

पुर०
२२६
४स

कसलालकौ।लयौलुटेरनिलूटि
॥२॥पद॥लालचपक॥लुटेरनि।
लाडिलीलालकौ।लयौसरबरलू
टि॥बांधिकियोअपनैंबसकस
करि।क्यौंकूनपावललूटि॥टेक
॥छैलछबैलमकलेकलो।कलकति
की।गईआलसीटूटि॥श्रीहरिप्रि
याप्रतापप्रबलतें।रीझिरहेरत
लूटि॥१॥८३॥दोहा॥फहरनिफू
मनिडकूनिकौ।फककोरनिदि
तरैंन॥कुंजकुटीकौकेलिनी।
कहाकहौंकहिबैंन॥१॥पद॥
[illegible]तितालो॥कहाकहौंकेल
निकुंजकुटीकौ॥गोरीस्यांमसह
जोरी जरसबोरीजोरकुटीकौ॥टेक॥स
दारहौरहरिओरखियनिऔंनीलेंनी

अधरघुटीकौ॥१॥लकिंदलकिअं
सनिपरिफलकनि।अलकनिसी
सघुटीकौ॥२॥भ्रमजेलसिथलस
कलेअँगअंगनि॥ओवनिउचटि
घुटीकौ॥मोरनिमुरनिदुरनिरस
दौरनि।कोरनिलाहलुटीकौ॥३॥
झूमनिफहरनिफककोरनिमैंमो
तिनमाललुटीकौ॥श्रीहरिप्रियाप्रे
मविहरनिमैं।नेमनिपाजफुटी।
कौ॥४॥८४॥दोहा॥श्रीबदुरनिक
टिकौमुरनि।छुरनिकचनिछबि
जाल॥अंगुतवांनिकेआजबलि।
बनैंटनैंगीलाल॥१॥पद॥चेलन
तितालो॥अंगुतवांनिकबनैंटने
गी॥चरनेचरनेपरधरैंअधरमुरली

श्रुर।
२२७

चितवनिन्हसौंहविनंगी॥टेक॥क
टिकीसुरनिदुरनिग्रीवनिकी।क
चकीछुरनिरूरनिरसरंगी॥श्रीह
रिप्रियावसौनितिहियमैं।सहजसे
जसुखसुरतसुधंगी॥२॥८५॥अनु
रागनिविचित्रसोलामधानास॥
दोहा॥अतिनिसंकलचलंकमैं।
सुखमयंकमटकंति॥मिलीरसि
कवरसौंप्रिया।लाडलडीलटकं
ति॥१॥पद॥इकताला॥देखौरीदे
खौलाडलडीकीलटका॥सुनगसौं
मघनतननतापिक्कसौं।अलबेली
कीअटका॥टेक॥अतिनिसंकल
चलंकअंकमैं।सुखमयंककीम
टका॥श्रीहरिप्रियारसिकवरसौं
मिलिगटकतिरसकीगटका॥२ २१

॥८६॥दोहा॥अँगअंगअनँगअटै।
दोउ।अनकूलेचितचाइ॥सोहत
हैंश्रीहरिप्रिया।सुखसंपतिलडि
लाइ॥१॥पद॥तालचंपक॥सोह
तहैलडैलडैलाडेआज॥अंगअं
गअनँगअटैअनुकूलेवढेवि
वितचितचढेचाडेआज॥टेक॥
सरसविदसनिमदुमधरहसनिमैं
परतमनोहरगंइगाडेआज॥श्री
हरिप्रियासुखसंपतिदंपति।र
तिपतिअतिकोदेतआडेआज॥
॥८७॥दोहा॥जदपिशांनकीवे
धिनी।सजीसौंजअंगअंग॥तदपि
नासामैंदियोसोहतललित
लवंग॥१॥पद॥तालचंपक॥ल
लितलवंगनासिकासोहै।वदीसौं

सुर॰ २२८ हितिरहौंहीचितवनि।अतिहितं
सौंहीउरकौंपोहैं।।टेक।।एतेपर
इंगुरकौसुरंको।।लापरमगमदे।
विंदुविमोहैं।।श्रीहरिप्रियाप्रान
वेधनकौं।सजीसौंजजामेंकजी
नकोहैं।।२।।पद।।दोहा।।हौलैंहौ
लैंमहलकी।धरनीचरनधरंति
।।अतिमदमातीलाडिली।गजग
तिलियेंडोलेति।।२।।पद।।इकता
ल।।लाडिलीलालकैंमदमाती।
गजगतिलीयेंडोलैं।।मकेतमनि
केअहिलमहिलमें।चरनधरति
हौलैंहौलैं।।टेक।।लटकीलट
अटकीअंसनिपर।चटकीली
चखिलोलैं।।लसनिहसनिमेंद
सनिसिखरदुति।सुरैंगीरंगतेंबो २८

लैं।।१।।कुकिकुकिदेनलेतअध
रमृत।।सपरसिपांनिकपोलैं।।श्री
हरिप्रियानिरखिनैंननिसुख
वारतप्रानअमोलैं।।२।।पद।।दो
हा।।एकपलकविछुरैंनबिवि
लगेटगैसुखसाखि।।ललितसे
जपरललनमिलि।रमतरहसि
रसराचि।।१।।पद।।तालचंपक।।
लालनांललितसेजपरहेजेनरे।
हियें।विछुरतजियेपरतपलकल
नां।।टेक।।अनुरागेवडभागेदो।
ऊ।।दृगलागेइकटगनहिंटल
नौं।।श्रीहरिप्रियाप्रानकैंसन।
मुख।जिहिंसुखचाहततिहिंरु
खचलनां।।२।।[illegible]।।कियेंपांनर रहोल
समनमनां।।आसग्रानिकीसैन

सुर०
२२९ ॥ उमगन्न रे मिलि चले दोउ॥ कुंज
कुटी की गैल॥१॥ पद॥ ताल रूप
क॥ चले मिलि कुंज कुटी की गैल
॥ उमगन्न रे अंग अंग रंगे। अंग सं
गनि की सैल॥ टेक॥ किये पान र
स मत्त परस्पर। छकनि छके दो
ऊ छैल॥ श्रीहरिप्रिया प्रसन्न व
१८ दन अलबेले अलकैं डेल॥१॥९२
॥ दोहा॥ कमलनि कँमल कलो
लही। बोलहिं वचन रसाल॥ सुरंग
सेज पर मदमते। राजत मोहनला
ल॥१॥ पद॥ इकताल॥ मदन मद
माते मोहनलाल॥ राजत सुरंग से
ज पर दोऊ दियें भुजा अंकमाल॥
टेक॥ कँमल कँमल मिलि कलि
कलोलत। बोलत वचन रसाल॥ २९

श्रीहरिप्रिया सुरत सर स्वर मैं क्रीडत
मिथुन मराल॥२॥९३॥ अथ रागनि
कंदर्प को मास मध्याभास॥ दोहा॥ जो
री गोरी सांवरी। प्रान प्रिया पिय की जु
॥ सदा सुरस वरसावती। अरुनाव
ति जिय की जु॥१॥ पद॥ ताल रूपक
॥ जोरी भावती जी की सांवरी गोरी स
लौनी प्रीतम पी की॥ टेक॥ सकल
सुख सौभाग्य सींवां नित्य नवनी की
॥ सुरस वरसावती हित श्रीहरि
प्रिया ही की॥१॥९४॥ दोहा॥ रंगरँगी
लै देखि छवि। लज्जित अति रति कां
म॥ करत केलि गर मेलि भुज। स्यां
मा अंग संग स्याम॥१॥ पद॥ इकता
ल॥ रंगीली रंगीलौ विराजैं॥ चलि व

सुर॰
२३॰

लि जो उंरी हौं आ जैं सांवरे अंग सैं
ग गुंन अभिरांमां स्यामां देखि लि छवी
ली छवि रति पति लाजैं ॥ टेक ॥ वा
ऊ कंठ मेलि रंग रेलि झेलि कर
न के लित लूतमाल कनक वेलि
उपमां पराजैं ॥ श्री हरिप्रिया जू कौ
परम पवित्र जसौ बसौ जसौ हियें
लियें सुरत समाजैं ॥ १ ॥ ५४ ॥ दोहा
॥ रहसि विनोदन रे दोऊ । करत नहा
सि परहासि ॥ नागरी नागर सुघर
वर । सुंदरता की रासि ॥ १ ॥ पद ॥ इ
कताल ॥ नवल वर नागरी नाग
र दोऊ रूप उजागर दोऊ सोभा
के सागर दोऊ सुंदरता की रासि
॥ आलिंगन चुंबनादि करैं हियें ३

उनमादि रहसि विनोदन रे हासिप
रहासि ॥ टेक ॥ मोहनी मन मोहैं नौं
हें सौं हनी तिरछौं हैं सौंहैं । कुटिल
कटाछि हौं हैं । भ्रू कुटी विलासि ॥
निकट निहारैं तन मन प्रान धन न्यौ
वारैं । उमंग अपारैं श्री हरिप्रिया
निज दासि ॥ २ ॥ ५५ ॥ अनुराग नि
कुंज सुंदरी मध्या भास ॥ दोहा ॥ सव
निस विलसी फूलसि हियें । पेलि के
लि की कूंदि ॥ सुख दसे ज मैं सुंदरी
वर सि वितन वन वृंदि ॥ १ ॥ पद ॥
लौलेचपक ॥ वरसत वन वि
नोद वन वृंदी ॥ सारा रैं नि सुख दि
नी सुंदरि । सुख दसेज मैं सूंदी ॥ टे
क ॥ रग मगा रंग अनंग अंग अंग ।

सुर। संगसुरतरससरूंदी॥ श्रीहरिप्रिया
२३१ हितिमिलेपरसपरपेलिकेलि।
कीरूंदी॥२॥१६॥ दोहा॥ सिथलअ
पितनहिंगहतमग।रहेटगैंटग
लाय॥ सोभाबिहरनिविविनिकी
।निरखतनैंनसिराय॥१॥ पद॥ इ
कताला॥ सोभानिरखतनैंनसिरा
य॥ विवकंजनविचिविधुमनरंजे
नअवतसुधासुखदाय॥ टेक॥
मकैतमनिकेंचारुचौकमैं।राखी
चहलमचाय॥ भरतजबैंडगलग
तनहींलग।रहेटगैंटगलाय॥१॥
सिथलअपितनहिंगहतगैलपि
यछैलपरेवेपाय॥ श्रीहरिप्रिया
प्रसन्नवदनवर।करगहिलियेउ ३१

ठाय॥१७॥ दोहा॥ तुमबिनिस्वांमि
निसुखनिधे।कोसमुझैयहमर्म॥ मो
हिदेरूपदपमैंप्रिया।हैंजुतुमहिंस
बसमर्म॥१॥ पद॥ इकताला॥ प्रिया
मोहिदीजेहेपदपर्म॥ प्रणतनिपा
लकपालकसोदरि।हैंतिहारोय
हधर्म॥ टेक॥ तुमबिनिश्रीरूपकुं
वारिसिरोमनिकोसमुझैनिजुम
र्म॥ श्रीहरिप्रियास्वांमिनीसुख
निधि।हैंजुतुमहिंसबसमर्म॥१॥१८
॥ दोहा॥ बिनलफलदैंनीप्रियाचिं
तामनिचिदरूप॥ औरनगतितु
मबिनतुमहि।श्रीकुंस्वांमिनिसुख
रूप॥१॥ पद॥ इकताला॥ श्रीतेमे
रीस्वांमिनीसुखरूप॥ तोहिंमनि

सुर० मोहिं औ नवुमनिनि। सकल सिधि
२३२ सरूप ॥ टेक ॥ ज्यौं ज्यौं चाहत मौं स्यौं
पुरवत। परम श्रवर अनूप ॥ श्रीह
रिप्रिया चिंतत फल दैनी ॥ चिंता
मनि चिद रूप ॥३॥ ५४॥ दोहा ॥ ने
म प्रेम तें पर जो। अति उत्तम अधि
कार ॥ रीझि देत जिहि जुगल नृप सु
निरत सुरत विहार ॥१॥ पद ॥ इक
ताल ॥ जुगल वर कौ यह सुरत वि
हार ॥ जो कोउ गांवें सुनें सुनांवें पा
वें निज अधिकार ॥ टेक ॥ नेम प्रे
पुरै म तें परम पद। जा कौ अति विसता
र। श्रीहरिप्रिया रीझि अपनांवै।
देत नंनलांवे वार ॥१॥ ५५ ॥ दोहा ॥ श्री
स्यांमा स्यांम कौ। यह सुख सुर सुर

त विहार ॥ बसकूल सदा हिय सदन
मैं। सकल सार कौ सार ॥१॥ फूलि
या ॥ महा मधुर महा महा मधुर म
धुर। महा रहसि रस रासि ॥ महा सुख
द सर्वेस की। महा मनोरथ नासि ॥
महा मनोरथ [illegible] लिजि निदे
उसहहिं कौ ॥ परम प्रेम परकास
। आस पद वास चहै जो ॥३॥ परिम
ऊनयें ना जन वितां। सुरंग तारि दा
जियें कहा ॥ श्रीहरिप्रिया कौ सर्व
विन इत्तम तें उत्तम महा ॥२॥ दो
हा ॥ दै श्लोक दै इलसत पद आ
नीस सहेत ॥ उनि इक दोहा ऊं
डेल्या ॥ यह है सुरत सुख सेन ॥ [illegible] ॥
सत ऊपर षट है सबै। अबै कहौं

जोजोंनि॥प्रतिप्रतिअनुरागनि
नुपद।इहिंविधिसौं उनमांनि॥क
वित छप्पय॥रत्नकला उनईसदो
यललितानि मैं गुनि॥विष्वासा
मैं पांच विलासावलि मैं पांच गुनि
॥टहलतलसत्यारि.पांच आनंदा
मैं चहि॥दससुरंगअंगानुप्रनय
प्रचुरामैं समककहि॥गौरमुखीमैं
समपदकेलिकौमुदीघटलेहै॥
कर्नकांतिकामैं जुदस और सुन
रु जो वृधिरहे॥पांच केलि अलवे
लिविचित्रसोभामैं सातहि॥कं
दर्पामैं तीनिसुष्ठसुंदरिमैं पांच
हिं॥एसवपदसत एकपंचदस
अनुरागनि मैं॥सुनै सुनावैयाहि

जाहिगनि वड्भागनि मैं॥तजिवि
कारमनजनहिंजोसजिआश्रयनि
र्गनसदा॥सोनिश्चैपदपावहीयामैं
संसैनहिंकदा॥२॥दोहा॥जोपद
सबतैं श्रेष्ठहैं।सोपदसौपददेत॥
गोपदज्यौं लघु उदधिलैंघि।पावैप
रमनिकेत॥३॥ ॥इतिश्री
पदविलासनिकुंजरहस्यश्रीमहा
दिव्यमहाराजेश्वरप्रवरपरमहंस
वंसाचार्यश्रीमद्धरिव्यासदेवजू
कृतामहावाणीश्रीसुरतसुखसं
पूर्ण॥३॥श्रीहरिप्रियास्वामिन्यैन
मोनमः॥ ॥अथमहावाणीश्री
सहजसुखलिख्यते॥श्लोक॥वृं
दावनकलानाथौ।हृदयानंदव

सह० ईनौ॥सुखदौराधिकाकस्यौ॥ज
२३४ जेहंकूंजगामिनौ॥१॥दोहा॥जै
जैश्रीहितसहचरी॥भरीप्रेमरस
रंग॥प्यारीप्रीतमकैंसदारहतजु
अनुदिनसंग॥१॥तिनकीकृपा
प्रतापकैं॥वरनौंजुगलविहार॥
महावांणीश्रीसहजसुख॥दंपति
पददातार॥२॥अनुरागनिसुनर
वामध्यभास॥दोहा॥एकहितन
मनएकहा॥संचेटरीसुढंग॥जो
रीअदभुतदुकूंनिकी॥रंगीसह
जेसुखरंग॥१॥पद॥तालजोत्रा॥
सहजसुखरंगकीरुचिरजोरी॥
अतिहिअद्भुतदुकूंनांहिदेखी
सुनी॥सकलगुनकलाकौसल॥ ३४

किसोरी॥टेक॥एकहीहैजुहैएक
हीदिपहिंदिनु॥किहिंसंचेनिपुन
ईकरिसुढोरी॥श्रीहरिप्रियादर॥
सहितदोयतनदरसवत॥एकत
नएकमनएकदोरी॥१॥दोहा॥म
नेकूंदुमनतैंसुमनफरि॥परतहर
तमनमैंन॥देखकराइनिदुकूंनि
की॥बतरांवनिसुखदैंन॥१॥पद॥
तालजोत्रा॥देखिरीदुकूंनिकोस
हजबतरांवनी॥मनकूंदिदिनुमन
तैंसुमनफरिफरिपरतहरतमन
परमपरवरनेउचरांवनी॥टेक॥
लागतकैसीरुचिररदनछविवद
नमैं॥मदनमनमोहनीमोदउपजा
वनी॥श्रीहरिप्रियापरमरसप्रेम॥

सह॰ २३५

की परनि मैं। परि रहे करि रहे वि
नय विनयां वनी॥२॥२॥दोहा॥क
लन परै छिन विन लखें। तो मुख
चंद सुभाव॥ अहो प्रिया कछु परि
रखौ। मेरौ सहज सुभाव॥२॥पद॥
इकताला॥ सहज सुभाव रख्यौ परि
मेरौ॥ कलन परै छिन अवलोकैं
बिना। वदन चंद प्यारी जू तेरौ॥ टे
क॥ पलकन ओट होत सन नैं मो
हि। कोटन आय अटोट अंधेरौ॥
श्रीहरिप्रिया जोरि कर सौं कर। क
रत वीनती हौं कैं चेरौ॥३॥३॥दो
हा॥ तो पद पंकज कौ सदा। रहौं
जु मधुकर होइ॥ मन वच क्रम
मेरैं न कछु। और कांमना कोइ॥३॥ ३५

पद॥ इकताला॥ और कांमना मो
हि न कोई॥ मन वच क्रम करि रहौं
निरंतर। तुव पद पंकज मधुक
र होई॥ टेक॥ अरु बलि जाउं वि
हारनि मेरी। जीवनि निज जियजा
न उ जोई॥ श्रीहरिप्रिया सहज
सब ही कै। अंतरगति कौ समुझ
ति सोई॥४॥४॥ दोहा॥ दरकि सुधा
रस सौं चितु जु। जीं वि किये मन भा
य॥ पुलकि प्रिया निज पिय कौं।
लिये हिये सौं लाय॥५॥ पद॥ इक
ताला॥ पुलकि प्रिया लिये लाय हि
ये सौं॥ दरकि सुरांवनि वदन वद
न कौ। यह छवि निति रहु लागि
जिये सौं॥ टेक॥ सींचनि सुधा तुज
न कौ जींवनि। निरखि नगा चनिता

उजियेसौं॥श्रीहरिप्रियापोषप
रिपागे।अनुरागेरसदियेलिये
सौं॥२॥४॥दोहा॥अैसेरसबस
कैंबसेलहलनतउटपतोनि
॥सहजसदाइनिकुंजनिकील
लचौंईयहवोंनि॥१॥पद॥इक
ताल॥सहजसदाललचौंईवों
नि॥बिलसतरहैहीबिलसो
नि॥टेक॥अधरसुधाअचवं
निअचवोंनि॥टपतिनहीलचसे
चसकोंनि॥१॥छिनछिनप्रतिउम
गनिउमगोंनि॥ट्वैरहैनितिया
हीठोंनि॥२॥श्रीहरिप्रियाअप
रमितमोनि।संभ्रनसवगुनकी
खोंनि॥३॥६॥अनुरागनिरन्नेक
[illegible]

ऊनिउरऔंसदा।छिनएकनसुर
झेत॥एकरूपाचितवनिबिनां
॥औरकछूनचहंत॥४॥पद॥
तालरूपक॥औरकछूनचहत
बलिजांऊं॥एकरूपाचितवनि
हीपांऊं॥टेक॥इहिंउरऊनिउर
झौउरझांऊं॥छिनएकनसुरझौ
सुरझांऊं॥१॥निरखिनिरखिनि
जनैंनसिरांऊं॥पदोंनोजसौंलाल
सिरांऊं॥२॥जेलेअैतहकरनव
सांऊं॥निसवासरअैसैंबितवांऊं
॥३॥श्रीहरिप्रियानिरंतरध्यांऊं
॥सदासहजसुखमैंमनल्यांऊं॥
४॥७॥दोहा॥निसवासरबीतन
दऊं।मोगुनगातहिंगात॥कहा॥

सह०
२३१

कहौं इनकी अहो सखी सहज की
बात ॥२॥ पद ॥ ताल चंपक ॥ सखी
री कहा कहौं इनकी बात ॥ निस
बासर ऐसैं ई बितवत मो गुन गा
त हिं गात ॥ टेक ॥ नीरैं हिं रहत नि
पट उर लागे तऊ अधीर अकुला
त ॥ श्रीहरिप्रिया निहारैं ई देखत
॥ अंग बदलि से जात ॥२॥८॥ दोहा
॥ है ऐसैं ई जे सैं ई कहति ॥ अति स
नेह की फासि ॥ अकुवलि जो उं
स्वामिनी ॥ सकल सुखनि की रा
सि ॥१॥ पद ॥ ताल चंपक ॥ अहो
बलि स्वामिनी सुख रासि ॥ है ऐव
ऐसैं ई कहति हो जैसैं ई ॥ अति स
नेह की फासि ॥ टेक ॥ पलक एक ३१

पावत नहिं निवरन ॥ गसी गरन गुं
थ गासि ॥ अपनैं जिय ज्यौं जो निमा
निये ॥ श्रीहरिप्रिया निज दासि ॥२
॥९॥ दोहा ॥ दिन रजनी मेरैं उउर
॥ ऐसी तरह बितात ॥ एस जनी सु
निरी ऊ तैं ॥ सांच कहौ यह बात ॥१
॥ पद ॥ तिताल चलत ॥ सांच यह
बात कहौ सजनी ॥ बीतत है मेरे ऊ
उर मैं ॥ छिन छिन दिन रजनी ॥ टे
क ॥ पुहं चहौ बिन कल न परै म
नौं होत है नन तजनी ॥ श्रीहरिप्रि
या तो सौं न दुरी कछु ॥ जो जिय की
सजनी ॥३॥१०॥ अनुराग तिलति
तानना मभा भास ॥ दोहा ॥ बकुल
जतनन करि कै थहे ॥ तउ नहिं आव

सह०
२३८

नछेह॥ऐसौमोउरमैंवसौ।इ
निकौसहजसनेह॥१॥पद॥ति
ताल॥वसौउरमेरैंअरीएइऊंनि
कौ।अतिरतिसहजसनेह॥दो
रव्यौसुन्यौंनकऊंअवऐसौ।अन
पअलौकिकऔकौअछेह॥टे
क॥हैयहवातसवैकहनेहिकि
।एकहिरूपदिपैंदोइदेह॥श्रीह
रिप्रियायहेवेकुथावत।तउपैं
याहनआवतएह॥२॥१॥दोहा
॥सदाअनमिलेमिलेनउलागे
चहनिचहांनि॥हौंवलिजांऊंअ
ऊकहा।परीअटपटीवांनि॥१॥
पद॥तिताल॥अटपटीवांनिप
रीवलिजांऊं।इहैंनिकें नरमैंओ

३८

नि॥सदाअनमिलेमिलेरहैंनउला
गेचहनिचहांनि॥टेक॥मैंतोनि
रखिअचंभितकैरही।कहिनहि
परतवरवांनि।श्रीहरिप्रियाप्रेम
कीउरझीहैंगुरझांनि॥२॥२॥दो उरझनि
हा॥अतिहिअनूठेनेहकी।तामैं
उठततरंग॥रहतदिनहिंदिनछि
नहिंछिन।सहजरगमगेरंग॥१॥
पद॥तिताल॥रगमगेरंगरहतदि
नहीं दिनछिनहीछिनअंगअंग॥
अतिहिअनूठिउठतनितितामैं
।सहजसनेहतरंग॥टेक॥मन
ऊंमोहकीमूरतिकोऊ॥उलही
औनिअनंग॥श्रीहरिप्रियाप्रग
टयऊंमीपर।कहतहोतमतिपं
ग॥३॥३॥दोहा॥...

सह०
२३५

खौं नलैं। परनित्रे परस जाल॥
ऐसी किहिं ललेच निहिल गि
।लेलचेलाइ लिलोल॥१॥पद॥
तितालो॥ वोडिलीलालस हज सुघ
सों नैं॥ कहत नवेन नहिं एरी वखौं नैं
॥टेक॥ ऐसी किहिं ललेच निल
लचौं नैं। ललवेत ही छिन रहत न
छ्वौं नैं॥१॥ श्रीहरिप्रिया परे रस पौं
नैं। तन मन करि राखे इकंतौं नैं॥
१४॥ अनुरागनि विश्वानाम धाजा
सा॥ दोहा॥ विश्व विमोहन मोहनी
।सहज उजागरि रूप॥ महामोह
पाथोधिनी श्रीसुकैवारि अनूप॥
१॥पद॥ तिताल॥ रूप उजागरी सुकै
वारि। विश्वमोहन मोहनी महामोह

दसनेहिनी नवा। नेहिनी निरधारि॥
श्रीहरिप्रिया परिहरि कों मनि। कु
सोदरि दुखहारि॥१॥२५॥ दोहा॥ तू
मेरी हितु सहचरी। तोविन मोहिस
रैंन॥ तातैं सों कहति हों। सुनें कृष्ण नौ
वन दैवैंन॥१॥पद॥ तिताल॥ सखी
री सुनें कृष्ण वन दैवैंन॥ तू मेरी हि
तु सहचरि हिय की। तो विन मोहि
सरैं न॥ टेक॥ लागति हैं अतिप्या
री मोकौं जैसैं पलकनि नैंन॥ श्री
हरिप्रिया तोहीतैं विलसत या सुष
की विलसैं न॥१॥२६॥ दोहा॥ जो क
छू सो तुव चरन बल। नहिं मेरो उप
कार॥ मोहि वडाई देति हो। अकु

सह० अहोबलिस्वामिनीसुखसार॥जो
२४० कछुसोसबपदअतापकरि।मोहि
देतअधिकार॥टेक॥तुमकारन
केकारनतुमहो।करताकेकर
तार॥श्रीहरिप्रियाप्रांनजीवन
धन।तनमनकेआधार॥१॥१७॥
दोहा॥निरखिनिरखिसंपतिसु
खैं।सहजहिंनैंनसिराय॥जीजि
वुहैबलिजांउंया॥जगमांहीजे
सगाय॥१॥पद॥तिताल॥जुग
लजसगायगायजिजियें॥याज
गमैंबलिजांउंअहोअब।जीवनि
फललिजियें॥टेक॥निरखिनिर
खिनैंननिसुखसंपति।सहजसुके

रमांनी।बारिवारिपिजियें॥२॥१८
॥दोहा॥मंगलदामनमोदप्र
ददायकसुधासुमेह॥राजकरौ
बलिजांऊंयह।दंपतिसहजस
नेह॥१॥पद॥तालचपक॥सदा
यहराजकरौबलिजांऊंदंपति
कौसुखसहजसनेह॥सुमंगलदा
मनमोदप्रदारस।दायकलायसु
धाकौसोमेह॥टेक॥जिवांवन
जीउपजीविनिकेउर।आनंद
वेलिवढांवनएह॥जुश्रीहरि
प्रियामनोरथकेगन।कौसिधि
कारनसिंधुअछेह॥१॥१९॥दो
हा॥दिनहिंलडैवौऊंनिकौं।ध
रिउरऔरनओघ॥परिचरियाही

स.हे. करि अहो। हमैं बड़ौ हैं पोष ॥१॥
२४१ पद ॥ तिताल ॥ हमैं बलि बड़ौय
हौ हैं पोष ॥ दंपति की परिचरि
या हौ करि। पावैं परम संतोष ॥
टेक ॥ दिनहिं लाड़ली लाल ल
डैवौ। धरि उर औरन ओष। श्री
हरिप्रिया सुखी कति आगै। तु
खी कति सब मोष ॥१॥२॥ अ
नुराग निविलासावलि मध्या ना
स ॥ दोहा ॥ मैं आपा अनुवति हौं
। अहो निसा आधीन ॥ करत बिह
री लाल यौं बिनय बाल रस लीन
॥१॥ पद ॥ इक ताल ॥ बिनै यौं क
रत बिहारी लाल मैं निहरौ आपा
अनुवती। हेमन हरनी बाल ॥ टे ४१

क ॥ जिहिं जिहिं भांति चलावत हौ
मोहिं। चाल तसो सोई चाल ॥ श्री
हरिप्रिया स्वांमिनी तुम मम प्रां
नन की प्रतिपाल ॥१॥२३॥ दोहा
॥ मैं हौं जांनति हौं जियें। जो बीत
ति दिन रैन ॥ अहो प्रांन प्रीतम मई
हौ। सस्कि हे तुम बैन ॥१॥ पद ॥
अंकु अंकु प्रांन प्रीतम यह बात
॥ तुम जु कहत हौ हैं यह ऐसैं ई।
अति सनेह की घात ॥ टेक ॥ मैं हौं
जांनति हौं अपनें उर। जो बीतति
दिन रात ॥ कछू कहन मैं आवत
नांहीं। कुयें कहति हौं गात ॥१॥ ला
ख लाख अभिलाखन के गन। रौम
न मैं रमि जात ॥ श्री हरिप्रिया हू छि

+छिन

सहि० यैंइनिकौं।सौंहदिवायप्रनाल॥
२४२ २॥२२॥दोहा॥दिनदिनछिनैंप्र
तिइननहिं।योंहीकरतविहाल॥
यहसुखएइनिकुंजनिकौं।अव
लोकननअघात॥१॥पद॥ति
ताल॥यहसुखसहजसनेहकु
ञ्जनिकौं।अवलोकतअँखियाँ
नअघावत॥दिनहींदिनछिन
हींछिनप्रतिप्रति।विपुलपुलक
उरमैंनसमावत॥टेक॥रसिक
सिरोमनिरतिरसरंगी।वतरस
हींमैंरसउपजावत॥श्रीहरिप्रि
यानिरंतरइनिकौं।यहीकथाक
रतैंहीविहावत॥१॥२३॥दोहा॥
सकलसुलोकप्रसंसिनी।जोरीप्र ४२

तिहिअनूप॥हौंवलिजाउंनिरखि
कैं।आनंदसिंधुस्वरूप॥१॥पद॥
तालचंपक॥हौंवलिजायहौंआ
नंदउदधिउदारअपार॥हियफू
लसायहौं।करिमनमगनमहामधु
धार॥महामधुधारहिंमगनका
रि।मनहिंहिययोंफूलसायहौं॥अ
तिउदारअपारआनंद।उदधिहौं
वलिजायहौं॥सकललोकप्रसं
सजोरी।जुगलअवतंसनिमनी॥
अमितरूपअनूपअद्भुत।मृदु
लमृदुरससौंसनी॥२४॥मनमथमो
हनी।पटतरदीवेकौंकहौकौन॥
सवैअंगसोहनी।सोहैसुंदर
सुनगसुठौन॥सोहैसुंदरसुनसुठौ
नी।सासअंगअंगमोहनी॥कहौ

सह॰ पटतरदीजियेकहौ।महामनम
२४३ थमोहनी॥गौरस्याम किसोरमू
रति।मधुरमोदप्रकासिनी॥नि
त्यनउतननेहनिरवधिनवनि
कुंजनिवासिनी॥२॥नैनेसिरा
यहौ।निरखिनिरखिछबिरसकी
रेलि॥उरहिंबढायहौ।सदासहं
जसुखबिहरनिबेलि।सहजसु
खबिहरनिसुवेली।सदाउरहिं
बढायहौ।रैनदिनसुहरेलिरस
कौं।निरखिनैनसिरायहौ॥वि
विधिबाकविलासविनवनि।वि
विनकीबरदायनी॥विहसिरह
सिबिनोदबितरनि।बिसदपद
परदायनी॥३॥श्रीहरिप्रिया नि

ऊं॥याहीरसमनरसौ औरनअभि
लाखतेंकोऊ उरयाहीरस मेंमनर ४ येंहि
सौ॥नित्यमेरैंहिलिमिलि।दोऊ
श्रीहरिप्रियाबसौ॥यहअनुग्रह
महलकौ।निजटहलमैंततपर
रहौं॥अहोकरणासिंधुअतप
र।कछूमैंअवरनचहौं॥४॥२४
महोत॥अमितरूपधरिकोउ क
छू।करतनटहलअघोउं॥अ
तिउदारसुकुंवारअऊ।यहैमनो
रथपाउं॥१॥पद॥तिताला॥यहैम
नोरथनिजउरमेरैं।दंपतिकीनि
तिटहलमनोऊं॥अमितरूपध
रिकोऊकछूकोउ।कछूकरति

स हि० २४४ परम उदार अहो सुऊँवार सिरो
मनियहवेरमांऊं॥श्रीहरिप्रि
यालाडिलीलाल।लडायअहो
निसयोंचितवांऊं॥१॥२५॥दो
हा॥यहीचाहचितमोचहोसुनौ
सुधरवरवरवैंनमधुकरकैप
दकंजकौरहोंसदादिनरैन॥१
पद॥तिताल॥यहीचाहचाहो
चितमेरो।औरचाहतनतनके
नेहेरो॥टेक॥मधुकरकैपद
पंकजकैरो।रैनदिनांकरिरहौं
बसेरो॥श्रीहरिप्रियाप्रेमउरऊ
रो।उरज्यौरऊनहोउमुरझेरो॥
१॥२६॥दोहा॥अतिअरबीकर

महामोहलगिलाडिलौ॥मांगत
हैंरसदांन॥१॥पद॥इकताल॥त
आचपक॥मांगतलाडिलौरसदां
न॥टेक॥दयाकरिऊंवरिकिसो
री।हौतुमदयानिधांन॥टेक॥अ
तिअरबीकरबीनउचितअहो
।बीततवरसमांन॥श्रीहरिप्रि
यासकलसुखदायक।लायक
परमसुजांन॥१॥२७॥दोहा॥नं
नकबिछुरबीतुमहितें।दीनदु
खितज्योंमीन॥अबनकछुक
रबीअहोअरबीप्रियाप्रबीन॥
१॥पद॥इकताल॥अहोबलिउ
चितनकरबीअरबी॥जोकछुन
ईसुनअरबी॥निमखनएकऊँअ

सह० टेक॥दीनदुखितन्सौंतरफरम
२४५ रवी॥तुमनैंतननकविछुरवी॥श्री
हरिप्रियाक्यौंहौंननिवरवी॥दे
खैंकहाफरफरवी॥॥२५॥दोहा
॥करुणासिंधुसोदरी।श्रीन^
नकीप्रतिपाल॥सुनिसहचरि
केवचननिय।हियलगायलियौ
लाल॥१॥पद॥इकतालौ॥लाल
कौंलियेलगायहियेसौं।सुनिकैं
वचनरसाल॥करुणासिंधु
पालेंसोदरि।उमगिमिलीनत
काल॥टेक॥दरिअचवायोअ
धरसुधा।उरलायौलैरसजालै
॥श्रीहरिप्रियाप्रवरपरिहरन
श्रीननकीप्रतिपाल॥॥२६॥दो
हा॥बडेभागपाईजुहम।जीवनि ४४

श्रींनअधारि॥जोरीरसिकसिरोम
नी॥सहजसदासुखकारि॥१॥प
द॥चलनतितालौ॥रसिकसिरोम
निजोरीजू॥नवनित्यकिसोरकि
सोरीजू॥टेक॥सहजसदासुख^
कारीजू॥महजीवनिश्रींनहमा
रीजू॥१॥बडेभागहमपाईजू॥
बरनीनहिंजातबडाईजू॥२॥न
वलनिकुंजनिवासीजू॥उरआ
नंदप्रेमप्रकासीजू॥३॥गोरस्यां
मतनसोहैंजू॥घनदांमनिउप
माकोहैंजू॥४॥रूपअनूपपरा
जैंजू॥लखिकोटिकांमरतिला
जैंजू॥५॥सहजसनेहसनेहीजू
॥एककेश्रींनदेहीजू॥६॥सब
सोभाकेसागरजू॥नवनागरजू

सह०
२४६

पउजागरजू ॥७॥ आनँद अहला
द स्वरूपा जू ॥ सत असत परै प
रजूपा जू ॥८॥ पूरन सिव सुख रा
सी जू ॥ महामन मथ इष्ट उपासी
जू ॥९॥ रंग रंगीले सुंदर जू ॥ पर
धाम प्रकास पुरंदर जू ॥१०॥ उ
पजीविनि के जीवी जू ॥ दंपति
सुख संपति दीवी जू ॥११॥ मंग
लमोद प्रदायक जू ॥ गुँन आग
र सुते सुनायक जू ॥१२॥ निरबु
धि नित्य विहारा जू ॥ पावैं जिहि
वार न पारा जू ॥१३॥ श्रीहरिप्रि
या सलौनैं जू ॥ आगैं न ये न अव
कोई होनैं जू ॥१४॥२॥ अनुराग
नि आनंदा मध्या भासा ॥ दोहा ॥
सदा सनातन एक रस। सदा बसन ४६

सव काल ॥ श्रीराधा रांनी जहाँ राजा
मोहनलाल ॥१॥ पद ॥ इकताल ॥ जै
जै हंदावन रजधांनी ॥ जहाँ बिरा
जत मोहन राजा । श्रीराधा सी रांनी
॥ टेक ॥ सदा सनातन इक रस जो
री । महिमां निगमन जांनी ॥ श्रीह
रिप्रिया हित निज दासी । रहति
सदा अगिवांनी ॥१॥३॥ दोहा ॥
पूरन प्रेम प्रकास कैं । परी पयो
धि निपूरि ॥ जै श्री राधा रस नरी
स्याम सजीवनि मूरि ॥१॥ पद ॥ इ
कताला ॥ जै श्री राधि का रस नरी
रसिक सुंदर संवारे की । प्रांन जी
वनि जरी ॥ टेक ॥ गोर अंग अनं

सह० ग अतुल। सुरत रंग निररी॥ सह
२४१ ज संग अनंग जोरी। सुनग सांवें
डरी॥१॥ परम प्रेम प्रकास हरन
। परपयोधि निपरी॥ हित श्री ह
रि प्रिया निरखत। निकट नित
सहचरी॥२॥३२॥ दोहा॥ पलकों
तर अवलोकैं विनि। कल पांत
रहि विहात॥ सर्व सुधन विनि।
स्वांमिनी। और कछू न सुहात॥
१॥ पद॥ इकताला॥ मेरैं सर्व सुध
न स्वांमिनी। मोहि और कछू न सु
हात वै री। पलकों तर अवलोकैं
विन मोहि कल पांत रहि विहा।
वै री॥ टेक॥ एक टेक यहि चित ४१

चढी रहैं। विन देखैं अकुलांवैं री
॥ श्री हरि प्रिया प्रांन धन जीव
नि। जो इतु मोहि जिवांवैं री॥२॥
३३॥ दोहा॥ नित नवतन नेही म
हा। कहा जु गति जल मीन॥ मोह
न रस वस मोहनी। रहत सदा आ
धीन॥१॥ पद॥ इकताला॥ मोहन
मोहनी आधीन। रहैं अति आस
क्त अनुदिन। कहा गति जल मी
न॥ टेक॥ नित्य नवतन नेह नेही
। परस पर रस लीन॥ हित श्री हरि
प्रिया रसिकन। हेत विवितन की
न॥२॥३४॥ दोहा॥ अति पर अभि
लाख तन के छूरा रखत यहि उर
आस॥ मोहि मया करि देउ वा
लि रज पद पंकज आस॥१॥ पद॥ इ

सह०
२४८

कताल॥मोहिंप्रियाकरिदेंकृद
यानिधि।परिचरियापदपंकज
की॥अनपरऔरनकछुअलि
लाखत।राखतउरआसारजकी
॥टेक॥दिनहिलैडांऊंगांऊंय
हजस।दंपतिसंपतिसुखसज
की॥श्रीहरिप्रियाछकीरहौंइ
हिंछक।देखिदेखियाछविछ
जकी॥२॥३५॥दोहा॥अंमृतज
सजुगलालकौ।याविनिअचौन
औन॥मोरसनांकरिचौकरौ।
याहीरसकौपांन॥१॥पद॥इ
कताल॥करौमोरसनांयहिर
सपांन॥लाडिलिलालनकौम
धअमृत।याविनिअचौनऔ
[illegible]॥याहीछकमेंछकेर ४८

हौरंग।अहोनिसाउनमांन।उ
दितरहौंनितश्रीहरिप्रियाकौ
।गायगायगुनगांन॥१॥३६॥दो
हा॥नैननवैंनअरुश्रवनउर।क
रपदसिरसवअंग॥मोबितनि
तलगिरहौइहां।प्रियासंगरस
रंग॥१॥पद॥इकताल॥मोवि
तलगोनितइहिंठांम॥
प्रियाजूकैकांम॥टेक
॥नैंनराधेवसौमूरति।वैंनराधे
नांम॥श्रवनराधेसुजसकीरति
।कृदैमेंविश्रांम॥१॥करलगौप
रिचरियहमैं।पदलगौपरिक्रां
म॥मधुपकैमनरमौमोइहिं
विपिनमेंअभिरांम॥२॥टरकुंजि
निइनिठौरहतैं।अरुनिसासव

सह॰
२४९

जांम॥चरनरजश्रीहरिप्रिया
की।करौंसिरपरधांम॥३॥३७
॥दोहा॥गुनतिहारोंगांऊंसदा।
करतरहौंपरिचारि॥मोपरअ
नुग्रहयुहिकरौ।करुणानि।
धिसुकुंवारि॥१॥पद॥इकता
ल॥करुणासिंधुकेसोदरीप्या
री।कलवैंनीसुकुंवारि हो॥मेरौ
तनमनधनसरवसलै।वारिवा
रिदैंउंडारि हो॥टेक॥मोपरक
रौअनुग्रहयेहो।मैंआज्ञापाअनु
सारि हो।यहपांऊंगांऊंगुनतिह
रौ॥रसनासदाउचारि हो॥१॥श्री
नतिहोइअनुरागसहितनिति।
करतरहौंपरिचारि हो॥श्रीहरि
प्रियाराखिसिरऊपरि।दरौंहरि ४९

सदारि हो॥२॥दोहा॥जिनिकीदया
सुदृष्टिकी।दृष्टिहिकरैंनिहाल॥
सोप्यारीमोपरदरौ।प्रांननकीप्रति
पाल॥१॥पद॥इकताल॥नथाति
ताल॥प्यारीहृप्रांननकीप्रतिपाल
॥जिनकीदयासुदृष्टिदृष्टिकरि।प
लमैंहोतनिहाल॥टेक॥तनमन
परमपुष्टपनपांवैं।लांवैंरंगरसाल
॥श्रीहरिप्रियाप्रेमसरवांटैं।कांटैं
दुखततकाल॥१॥३८॥दोहा॥श्रीअंग
श्रीअंगसोभासहजसुख।चाटनरकु
निसजोर॥इहिंवांनिकैवनिठनि
सदा।मोमनजुगलकिसोर॥१॥प
द॥इकताल॥मोमनवसोजुगलकि
सोर।वनेंबोंनिसजोर॥टेक॥वदन

सह०
२५०

चंदनकासपूरन।नैननतुगलसरोज
॥नासिकाधरचिबुककछुविलखि।
होतहैहियचोज॥१॥ग्रीवउरजभुवा
ऊसुंदर।अंगुरीनखलोल॥उदर
त्रिवलीरोमराजी।नाभिगहरसुढा।
ल॥२॥जघनजंघापरलसैंअति।
छीनसीकटिदाम॥जानुजंघापिं
डुरीपद।अंगुरीअभिरांम॥३॥सी
टसिरकचलटैंछूटी।वंकभौंहम
रोर॥मुकतलरवेंदालसैंसुजन।अ
वनन्हेवननऔर॥४॥नासिकावेस
रिमुमुकता।विंवऔठनिआय॥म
नहुँअवतमुचंदअँमृत।वूंदछवि
छहराय॥५॥कंठन्हेघनकनकके
रवचि।हीरामांनिकलोल॥मुकत ५०

मनिमुनिकनककुसुमनि।गुहीमो
हतिमाल॥६॥भुजनवंधचूरीसुनग
कंकन।मुद्रिकानगजोति॥ललि
तकोमलमुकरसोना।जगरमग
रसिहोति॥७॥किंकनीकटिपा
यनूपुर।झीनसुरझुनकार॥मन
ऊहंसनिनिरखिछौंनां।वोलिएक
हिवार॥८॥झीनपटमैंदिपतिउ
तिकहा।दांमिनीघनजोति॥उर
जअँगियांलालकसवा।लहक
लहंगाहोति॥९॥वोलपिकगति
हंसराजैं।मत्तगजगतिगौंन॥नहिं
नसोभापटतरैंलखि।थकिततौ
नहुँजौन॥१०॥श्रीहरिप्रियाकील
लितछविकवि।कौंनवरनैंजाहि
॥नित्यनिकटनिहारियेंछिनटा।

सह० रियें न हिंताहि॥२२॥५७॥ अनुराग
२५। निधन्य आगा मध्या नास॥दोहा॥
तोसौं कहा दुराव तू।हिय हित स
मझनिहारि॥प्याय कहत तोसौं
सदै।श्री हरिप्रिय सहचारि॥१॥
पद॥इकताल॥कहा तोसौं कहौं
मो हिय हित की बात॥कहि न हिं
आवत ए सखी री कहत कंठ रु
कि जात॥टेक॥निसवासर लगि
यें रहै री।मो उर ए ही टेक॥हौं हि
लि प्रिया होइ जो उ कैं प्रिया।हौं
मिलि होइ रहौं एक॥१॥जब देखौं
जब ही रवहौं री।सदा हदि अनु
x स कूल॥बरसत रसत हार है ज्यौं स
रजरस को मूल॥२॥निमिख न
छबि नैं नौं निनैंरी।प्यारी हेय स ५२

काय॥ज्यौं औरि वन मैं सुंदरी स्यौं।
रहत सदा सुख दाय॥३॥तोसौं क
हा दुराइये तू।हिय हित समझनि
हारि॥प्याय कहत तोसौं सदै।श्री
हरिप्रिया निज सहचारि॥४॥५१
॥दोहा॥अंग अंग सोभा सिंधु कौ
।किहिं विधि पार लहौं ब॥जाति
समानौ रूप मैं।यह छबि क्यौं रल
खौं ब॥१॥पद॥इकताल॥सखी री
यह छबि क्यों रलखइयें॥अंग अं
ग सोभा को सागर।उलैंघि पार
क्यों जइयें॥टेक॥जिहिं सुठौर म
न एक लगत है।तिहिं उठौर सुस
मइयें॥संगी होय नैंन तहां लागत
।गलित रूप मय ह्वै ईयें।दृग न वि
लोकि नैं हदिस चाहैं।धीर न ए छह

म०ह०
२५२

रईये॥श्रीहरिप्रियास्वरूपसमां
नैं। कहौकाहिकहदईयें॥१॥
४२॥दोहा॥कलनपरैंपलविन
लखें। अद्भुतरूपअनूप॥जो॥
अंगदेखतनैंनभरि।होतनैंन
बहिरूप॥१॥पद॥इकताला॥
विनलखेंकलनपरैंइहरूप॥
निरखिनिरखिजीजेरसपीजे॥
अद्भुतअतिहिअनूप॥टेक॥
नैंननयेअंगअंगकीमूरति।सू
रतिसरसस्वरूप।श्रीहरिप्रि
याप्रांनधनजीवन।प्रेमपराप
रूप॥१॥४३॥दोहा॥मोंहतिहा
रीमोहिअकृ।जोमैंकहौंजुराखि
॥कृपाद्रिष्टिहीचहतनिति।औ
रनउरअभिलाखि॥१॥पद॥इक

ताल॥एकमैंकृपासुदृष्टिचहौं॥मों
हतिहारीमोहिअहोजिय।जोमैंराखि
कहौं॥टेक॥जबतुमचितवतमो
तनकैंतबु।तबसबसुखलहिलहौं॥
श्रीहरिप्रियानांउतेरैंबिनु।और
कछूनचहौं॥१॥४४॥दोहा॥रहौं
टहलनिमहलमें।होइअहोनिस
जांम॥मैंमांगतहौंयहसदा।जोतु
मपुरवहुकांम॥पद॥इकताल
॥जोतुमपुरवहौमनकांम॥तोमैं
मांगतयेहीनिसदिन।छिनबिस
रौंनांम॥टेक॥रहौंटहलनि
महलमैंकों।निरखिछबिअभिरां
म॥श्रीहरिप्रियाहितबातसुनि।
सुनि।धरौंनिजहियधांम॥१॥४५॥

दोहा॥ चितवनतुव मुखचंद छ^
वि। परत पलैं विवि आंनि॥ अहो
कुंवरि करुणा मई। चितवैं वर
सस मांनि॥१॥ पद॥ इकताल॥^
प्रांननके आधार मेरे॥ अहो कुं
वरि करुणा मय स्वांमनि रहौ स
दा मो नेरे॥ टेक॥ अंतर आंनि प
रत पल चितवत चितवत वरस
घनेरे॥ श्री हरिप्रिया यह टेव प
री को उ। स्रुजन सांऊ सवेरे॥१॥
४८॥ दोहा॥ जो करुणा मय कुंव
रि अऊ। करुणा मो पर है जु॥ तौ
तुव पदनख चंद छवि। टरिनर
हैं उर तें जु॥१॥ पद॥ ताल चंपक
॥ सहज हिं रहौ एह सुभाव॥ प्रि

या पदनख चंद्र की छवि। टरि न उ
र तें जाव॥ टेक॥ जो पै करुना कर
न हौ तौ। और चित न चाव॥ श्री ह
रिप्रिया की उर जनी सौं रहौ उरं जा ऽउर
व॥२॥४९॥ अथ राग निठुर गांगा^
मध्या नास॥ दोहा॥ रसन रिहसि
चितवनि जु मैं। कस्यौ कहा नहिं जा
ऊ। मेरौ प्रान अरी अहे। पस्यौ प्रिया
कै पांउ॥ पद॥ इकताल॥ मेरौ प्रा
न प्रिया कैं वस पस्यौ॥ सहज स^
लौंनी हसि चितवनि मैं। नां जांनौं
कहा धौं कस्यौ॥ टेक॥ निस वास
र व छिक लन परैं पल। छिन देखैं
मुख रस न स्यौ॥ श्री हरिप्रिया स्वा
मिनी सन मुख। सरवस अरपन लै^
धस्यौ॥१॥५०॥ दोहा॥ परेर है निति

स० हि० प्रेम निधि। लई विधि और हिं देह
२५४ ॥ सुधि नहिं सांझ सबेर कछु। अ
कथ कथा है नेह ॥२॥ पद ॥ इक
ताल ॥ कछु अकथ कथा है नेह
की। भोर सांझ अरु सांझ भोर क
छु सुधि नहिं आवत गेह की ॥ टे
क ॥ परे रहै निति प्रेम सिंधु मैं भ
ई और रंग तिदेह की ॥ श्री हरि प्रि
या निरखि नैंन नि मैं लगि यरहै
ऊरि मेह की ॥२॥४४॥ दोहा ॥ छौ
यर हौ छिन कुन टरौ। यह छवि मो
हन मैंन ॥ लगऊ बलइया वेदन
की। निरखि सिरावत नैंन ॥१॥ प
द ॥ इकताल ॥ मोहि लगौ बलइया
बदन की ॥ अंखियां सिरावति रहौ
मेरी निस दिन। लखि सोभा सुख स ५४

दन की ॥ टेक ॥ छौ यर हौ छिन हन
टरौ छवि। रदन छदन दुख कद
न की ॥ श्री हरि प्रिया प्रेम रस भीनी
हँसनि मनोहर मदन की ॥२॥४५॥
दोहा ॥ हिलगनि हिय हित की
अरी। जांनति महर मिजोय ॥ कहि
ये जौ कहि आन मुख। बात कहन
की होय ॥१॥ पद ॥ इकताल ॥ कहि
ये जु कहन की होय री। या अंतर
गति की सुनि सजनी। पावत नांहि
न कोयरी ॥ टेक ॥ निसतैं वासर तैं
निस। लगी रहति उर ओयरी ॥ श्री
हरि प्रिया हिलग हित की। जांनति
महर मिजोयरी ॥२॥४६॥ दोहा ॥ चौ
जम नोज बंदा बही। प्रेम सनी अति
यां जु ॥ नागतनी की ललन की। र

सह० सनैंनी वतियां जु ॥४॥ पद ॥ इक
२५५ ताला ॥ रसनैंनी वतियां ललन की
॥ लागति मो हि सुहाई सजनी ॥ प्रे
म सनी पल पलन की ॥ टेक ॥ चो
ज मनोज बढावत छिन छिन ॥ चि
तव नि लोचन चलन की ॥ श्री ह
रिप्रिया हरन हियु लायक ॥ दाय
क वंछित फलन की ॥ १ ॥ ५२ ॥
दोहा ॥ कवहु काहु पर कवे कु
कुंर रहत अप टि दटि औंर ॥
तो तन वन मैं श्री कुप्रिये ॥ अमत
जु मो मन औंर ॥ पद ॥ तिताल ॥ त
ःन था गौरी श्री ॥ तो तन वें मो मन मध्य
क रमत ॥ अति सुंदर वरंग महवर
जा मैं ॥ रहत सदा मडरांनौं महा
ई ॥ कवहु कदंब अंव जंव निप ५५

र ॥ कवहू कदलि केत की मध्य क
नि ॥ कवहू कमल पर रहत लुभा
ई ॥ टेक ॥ चंपक पर कैसौं न जु ॥
हौं ॥ केसरि मैं रिक वहू क रहत
हैं ॥ कुन्द कुंद के वर उर आई ॥ श्री
हरिप्रिया सौ रंग समूह को ॥ अप
ट दपट मैं फूलि नि पट हौं ॥ रह
त सकल सुखि न्हलि सदाई ॥ २ ॥
५३ ॥ दोहा ॥ रंचक इनि हिं न लच
हिं कछु ॥ वंचक विन ववडे जु ॥ ल
लचौं है लोचन महा ॥ श्री हे लाल
के ए जु ॥ १ ॥ पद ॥ इकताल ॥ लल
चौंहे लोचन लाल के ॥ लगे रहत ला ःहैं
लचे मैं निसदिन ॥ पगे प्रेम रस जा
ल के ॥ टेक ॥ रंचक औरें रूचत न
हिं इनि कौं ॥ वंचक विन वे विसाल

सह॰ के॥श्रीहरिप्रियासहजसुख
२५८ साचे।राचेरंगरसालके॥१॥५४
॥अनुरागनिगोरमुखीमध्या॥
नास॥दोहा॥रसिकनकैंहित
कारनैं।विसदविहारनिहारि
॥जोरीगोरीसांवरीअनहोंनी
यउदारि॥१॥पद॥इकताल॥
जोरीगोरीसांवरीअनहोंनीप
रमउदारिहो॥छैलछबीलीला
डिलीप्यारीप्रांननकीप्रतिपा
रिहो॥टेक॥सहजरंगरसरगम
गीजग मगीदंपतिदिनरैंनिहो॥मह
मूरतिआनंदकीअतिअद्भुत
मनहरिलैंनिहो॥१॥नित्यविला
सविलासिनीसुखरासिसदास
मरूपहो॥नवनागरिगुनआग ५८

रीअलवेलीअमलअनूपहो॥२॥
एकैंतनमनएकहीअरुएकप्रा
नद्वैदेहहो॥कहिवेकौंएदंपति
हैवस्तुएकहीएहहो॥३॥और
कैंछूनेरुचैइहअैंइनिकैंनिति॥
यहीअहारहो।रसिकनकैंहितका
रनैंश्रीहरिप्रियाविहारहो॥४॥५५ :विसद
॥दोहा॥अंगअंगसोभानुपर।वा
रौंकांमकरोरि॥सुनीनहूंदेखीक
हूं॥ऐसीअद्भुतजोरि॥१॥पद॥
तालचंपक॥सुनीकुनदेखीऐसी
जोरि।जुगलकिसोरकिसोरि॥अं
गअंगसोभापरसजनीवारौंकांम
करोरि॥टेक॥नहिंउपमापटत
रदीवेकौंदेखिथकीमतिमोरि॥
श्रीहरिप्रियाअद्भुतकलावलि

सह० मांनऊंकाढीकोरि॥४॥पद॥दोहा॥
२५१ चिदानंदघनकुंजमैंइकरसबिव
सुकुंवार॥सहजसदासुखमैंसनैंवि
लसतरासविहार॥१॥पद॥तिताल
राम ॥सहजरसैंविलासविहार।विलस
तविवसुकुंवार॥श्रीवृंदावनचिदा
नंदघन।मंजुकुंजसुखसार॥टेक॥
ललितरंगआभूषनअंगअंग॥स
जेसुधंगसिंगार॥जगमगजगमग
करतहरतमन।मोहैंकोटिरतिमा
र॥१॥केलिकलाकुलमौरजुगल
वर॥रहेछबिछाजिअपार॥नईन
ईगतिउपजावतिनागरि॥नागर
संगसुढार॥२॥सीसमुकटमुक
टीकोदलकनि।फलकनिकुंडल
हार॥अलकनिरलकिरहीउरऊ ५१

पर॥नूपुरसुरझुनकार॥३॥अंक
नरैंसटरैंपरसपर।दोऊपरमउ
दार॥श्रीहरिप्रियारसिकजनजिय
कोजीवनिप्रांनअधार॥४॥५३॥दो
ला॥रसियारसिकसुलालची।चट
कनेस्योचटकील॥गोरीकेगुनला
डिलौरहतसदागरबील॥१॥पद॥
तिताल॥लाडिलौगोरीकैंगुनगर
बीलौ॥निसदिनरहतअैंडइतरातौ
॥अलबेलौअरबीलौ॥टेक॥रसि
यारसिकलालचीलंपट।चटकन
स्योचटकीलौ॥श्रीहरिप्रियाप्रांन
कौप्रीतम।मनमोहनपटकीलौ॥१॥
५४॥अनुरागनिकेलिकौमुदीमध्या
भास॥दोहा॥प्रांनप्रीतमकौप्रीतमा
॥स्योंमनिसुखनिसनीजु॥जेश्रीविहा

सहे०
२५८

रनिलाडिली।रवनीरसिकवनीठु
॥१॥पद॥इकताल॥जैश्रीराधिका
रवनी॥प्रांनप्रीतमकीप्रियाजै।क
लस्वनीकवनी॥टेक॥जैश्रीविहार
निलाडिलीजै।रसिकजोरीवनी॥
स्वांमिनीसुखसनी।श्रीहरिप्रियाउ
रवदवनी॥१॥५१॥दोहा॥लागति
मोहिअतिहीप्रिया।प्रांननकीप्रति
पाल॥करिराखौंएरीसखी।सहज
सदाउरमाल॥१॥पद॥तालचंपक॥
वालकरिराखौंएसखीरी मेरेउरकी
माल॥लागतिहैंमुहिअतिहिंअलौ
किक।प्रांननकीप्रतिपाल॥टेक॥
आवतिहैंकवहूकयहैजियें।धा
रिहौंहियेंआल॥श्रीहरिप्रियास
लौंनासूरति।अतिरसालरसजाल

५८

॥२॥५२॥दोहा॥अनिलाखनउरमैं
यही।अहोदयारसदीठि॥ऐसेंप्यारे
लगतहौ।जैसेंकोउनईठि॥१॥पद॥
तालचंपक॥लागतहौप्यारेप्रांनन
तैं।ऐसेंजैसेंकोउनईठि॥कहक
हाततैंबातजातहोइ।नयेंबातपरि
जातश्रवनमैं।श्रवनपरैंपरिजात
हैंपीठि॥टेक॥मोमनतोमनकैय
हिजांनति।जोइनिवातनिवीविव
सीठि॥श्रीहरिप्रियापरसिपदस्ना
खत।राखतउरअनिलाखयहीव
लि।देखतिरहौदयारसदीठि॥५३॥द
१॥दोहा॥गोरअंगमैंझलमलैं।स्यां
मवरनसुनसाज॥देखिदेखिनि
हारिहै।प्यारीप्रीतमआज॥१॥प
द॥इकताल॥आजप्यारीप्रीतमकी
उनिहारि॥देखिरीदेखिनिहारि॥गो

सह०
२५९

रअंग मैं फूल मला लछवि। स्यांमव
रन सुकुवारि॥टेक॥ औ प्रति बिंब
औ दरस दरसत। अमल उद्योति
उदारि॥श्रीहरिप्रिया निरखि यह
सोभा। डारौं तन मन वारि॥१॥द्रु॥
दोहा॥स्यांमबरन तैं गौरतन। के
सो हत रस जाल॥देखि री देखि नि
हारि सखि। लाल लई छवि वाल॥
॥पद॥इकताल॥देखि री लाल ल
ई छवि वाल॥विराजत गौर वरन
रस जाल॥नख सिख सुंदर रूप त
दाकृति। अैंन मैंन इहिं हाल॥टेक
॥यह अचिरज उर एक सखी री।
हार होइ गई माल॥श्रीहरिप्रिया
तेज नन हिलि मिलि। बाढ्यौ रंग वि
साल॥१॥द्रु॥दोहा॥प्रति निधि श्री
हरिप्रिया की। निरखत नैंन सिरांति ५९

॥लव सुख धांम स्वरूप श्री। कुस्म म
नोहर कांति॥१॥पद॥बेलतिलि
लाल॥जय श्री कुस्म कमनीय कां
ति॥प्रिया आनंद रूप अद्भुत। अं
ग अंग उपमा न भांति॥टेक॥स्यांम सुंद
र धांम सब सुख। आंन को उपरांति
॥प्रिया हरि श्री प्रिया प्रति निधि
। निरखि नैंन सिरांति॥१॥द्रु॥दो
हा॥अलक लडैं अंग अंग अलवे
ले मोहन मार॥गौर सांवरे सहज
सुख। रंग रंगे सुकुंवार॥१॥पद॥इ
कताल॥सहज सुरंग रंगे सुकुं
वार॥गौर स्याम अनहोने सलो
नै। दी। रूप रम उदार॥टेक॥अ
लक लडैं अलबेले अंग अंग।मो
हन मोहन मार॥श्रीहरिप्रिया पर

सह०
२६०

सपरसीनमाप्रांननके अलिप्या
रथ॥ ६५॥ अथरागनिकनेकी
तामध्याभास॥ दोहा॥ अहोविह
रनिकहतवलि। सौंहतिहारी मा
हि॥ जोजोईतुमकरतिहौ। नाच
नमोसोसोहि॥१॥ पद॥ तिताल॥
जोईजोईकरततुमप्यारी। सोई
सोईमोमनमांनै॥ अहोविहार
निसौंहतिहारी। उरअंतीतिअति
आंनैं॥ टेक॥ जबतुमनैंकरुषौं
ईचितवतिअनयकोपरससो
नैं॥ श्रीहरिप्रियास्वांमिनीजिहि
छिनमेरीईजीजांनैं॥१॥६६॥ दो
हा॥ वोहैनायनिसौंअरीनिति।
सोनासहजसुटोल॥ मोहिसुहाई
लगतिअति। यहतिहारी गुनमा

ल॥१॥ पद॥ तिताल॥ मोहिसुहाई
लागतलाल॥ यहतिहारी गुनमा
ल॥ चाहचौंपचतुरायनिबौहौ
विधि। चितवनिनैंनविसाल॥ ना
यनिअरीरसाल॥ टेक॥ अंगअंग
आभाअनहौंनी॥ सहजसलौंनी
सुटोल॥ श्रीहरिप्रियाप्रानपरिमो
षन। परमप्रेमरसजाल॥ छिनछि
नप्रतिप्रतिपाल॥१॥६७॥ दोहा
॥ सकलकलापूरनसदा। सहज
हिरहतसुछंद॥ प्रियातिहारेबद
नपरवारौंकोटिकचंद॥१॥ पद॥
तालचंपक॥ प्रियाजूतिहारेव
दनचंदपर। कोटिचंद्रदुतिवारौं
॥ सकलकलासंपूरनलखिल
खिवारिवारिफेरिडारौं॥ टेक॥

सह० २६१ करन प्रकास परम प्रतिछिन छि
न। निसदिन उर अवधारौं॥ श्रीह
रिप्रिया सहज सुख सोना। निमि
ष एक नहिं टारौं॥२॥ पद॥ दोहा॥
टरऊ न टारी अऊ निसा। अऊ प्या
री सुनि बैन॥ मूदुमूरति यह राव
री। रऊ मो उर करि अैन॥१॥ पद
॥ ताल चंपक॥ रहो मेरे उर मैं
अैन करि प्यारी। यह मूदु मूरति
तिहारी॥ टरऊ न टारी अहो नि
सारी वारी वारी वारी वारी॥१॥
टेक॥ जीय जियारी अति सुऊं
वारी। निमिष न होउ नियारी॥ श्री
हरिप्रिया सहज सुखकारी॥ स
कल लोक उजियारी॥२॥१३॥
दोहा॥ गुन निउजागरि नागरी स

हज सदा सुखकारि॥ श्रीनन्द्र
तिपालक प्रिया। मो संपति सु
ऊंवारि॥२॥ पद॥ ईकताल॥ मे
री संपति सहज किसोरी॥ सदा
श्रीनन्द्रतिपालक औरी॥ टेक॥
गुन निउजागरि नागरि गोरी॥ सु
ख सागरि अगरि रस बोरी॥१॥
जीऊं निरखत निसा अहोरी॥
पलक ओट चित बैं न हिं थोरी॥
॥ ज्यौं जल मीन रू चंद चकोरी॥
अैसैं लागि रही लगि मोरी॥२॥
श्रीहरिप्रिया उपायन कोरी॥ तु
ही मो जिय जीव निजोरी॥३॥१४॥
॥ अनुराग नि अैलवेलि केलि म
धानास॥ दोहा॥ करिकैं अैसज

औरकौ।।तकत नइत उनहोइ
।।उघेपदपरछांहीं विनां।नहिं
भावत मन कोइ।।१।।पद।।ताल
चंपक।।श्रीराधेनांपदपंकज
कीपरछांहीं।।रहत सदा मनमे
रौ।।करिकैं आस औरइत उत
कौ।तकैं तन दांहि नडेरौ।।टेक
।।सकल लोक सुखसंपतिकौ
सुख।नांहिंसुहावति नैरौ।।श्री
हरिप्रिया निरंतर रसना।रटत
नांमनितितेरौ।।१।।७१।।दोहा।।
रोमरोमरसना होइ।तउ नहिंपा
ऊंपार।।मोमति अउ महिमांतु
मो।अति अगाध कूपार।।१।।प
द।।ताल चंपक।।तो अगाध

महिमा मो अउ मति।एक जीहकै
सैं गुन गांऊं प्यारी जू।।अहो कैसो
दरि ऊं वरि कि मोरी कौंन विरद
देकैं विरदां ऊं।।टेक।।रौंमरौंम
मौं रसना होई।तऊ तेरे गुन कौ पा
र नहिं पाऊं।।श्रीहरिप्रिया स्वांमि
नि सवै स्वरि।सदा सीस पर तो हि
वसां ऊं।।१।।७२।।दोहा।।प्यारीक
हौ कि प्रांन तुहिं।प्यारी कहौं कि
जीय।।हौं हीं कहौं कि हौं तु हौ प्रि
या कहौं अकि पीय।।१।।पद।।ति
ताले।।पीय कहौं अकि प्रिया क
हौं मैं।प्रांन कहौं अकि प्यारी तो
कौं।।हौं हि कहौं अकि हौं तु ही क
हौं।जीय कहौं अकि प्यारी तो कौं

स.हि. ॥टेक॥ जो जो कहौं सो सो सब तु
२६३ हीं। कहौं किन कहैं अहारी नो
कौं॥ श्रीहरिप्रिया बरनन कौं बा
नी॥ विथकित होत सहारी नो
कौं॥२॥७३॥ दोहा॥ करुणानि
धि नागरि अहो। करुणा कर कु
जु सोइ॥ यह कैं ऊ वह कैं तु बा
र हौं चरणन तर होइ॥१॥ प. द॥
चौताल॥ तथा तिताल॥ ऐसी क
रौ करुणा निधि नागरि। होइ र
हौं कछु तिहारे चरनन तर॥ यह कैं
ऊ वह कैं वा ओहीं। इतनै मैं कौ
ही पांऊं वर॥ टेक॥ मन वेच कम
निहचै उर मेरैं। और कछू अभि
लाषन अैन पर॥ श्रीहरिप्रियाध ६३

स्वपन जांनैं। मन मांनैं मम भाग
सु फर फर॥१॥७४॥ अैतरा गनि
विचित्र सोभा मधि जोरू॥ दोहा॥
नीरज नैंनी नागरी कलवैंनी सुकुँ
वारि॥ श्रीहरिप्यारी निति हियैं
वस कुसदा सुखकारि॥१॥ पद॥
इकताल॥ जै जै प्रिया प्रांन पिय
प्यारी॥ जै जै रूप उज्यारी राधे अ
लि सुंदर सु कुंवारी॥ टेक॥ जै जै
नीरज नैंनी नागरि। कलवैंनी क
मलारी॥ जै जै श्रीहरिप्रिया हियै
निति। वसो सदा सुखकारी॥१॥
७५॥ दोहा॥ नव निति मंदिर रसि
क जहाँ। रसिक रहसि निति रंग॥
रमत रसिक दोउ परसपर। रसि
क सहि...

सह० २६४ रसिकिनीश्रीराधारसिकरँगभींं॥
नौंबिहारी॥रसिकनित्यनवमंदि
रमांहीं।रसिकरहसिसुखकारी॥
टेक॥रसिकरसीलीवातकरत
मन।हरतपरसपरनारी॥रसिक
हितश्रीहरिप्रियानिहारति।रसि
कसंगसहचारी॥१॥७६॥दोहा॥
अतिजकस्यौहटफंदमैं।तोस्यौ
नहिंत्रूटैंजु॥तोसनेहगुनमैंवँध्यौ।
मनमोनहिंछूटैंजु॥१॥पद॥इक
ताल॥तोसनेहगुनमैवँध्यौ॥मन
मोनहिंछूटैं॥अतिजकस्यौहट
फंदमैं।तोस्यौनहिंत्रूटैं॥टेक॥
हितकीहिलगहित्तबिनां।जोनैं
कोहियकी॥तुमहीनैंवनिआय
हैं।प्रतिपालनकियकी॥१॥अनो ६४

कसोदरिकांमनी॥कोकिलकल
बैनी॥सदासदयदेखतिरहो।सव
बिधिसुखदैंनी॥२॥श्रीहरिप्रिया
रसकैंझकोर।जियजातिझकोस्यौ
।कछुसामर्थ्यनकैसकैं।समका
यमरोस्यौ॥३॥७७॥दोहा॥स्यामा
रामास्वांमिनी।सुखदानैंनविसा
ल॥राधीप्यारीलाडिली।प्रियावि
हारनिवाल॥१॥पद॥तालचंपक
॥राधाप्यारीलाडिली।किसोरीस्या
मास्यामाप्रिया।अलवेली।अलक
लडैतीलाडगहेली॥नागरीनवी
नारस्यारसिकाविहारनित्य।वल्ल
भाविसालनैंनीसुखदैंनीसहेली
॥टेक॥स्वांमिनीसरोजमुखीसुंद
रीसजोंनसनी। [illegible]

रंगकनककवेलीं॥प्रानमप्रवीनां
प्रेमाप्रेयसीपरातपरा॥श्रीयाह
रिप्रियाप्रानजीवनिरसरेली॥२॥
अथदोहा॥राखौंहियवासरनिसा।
।याकोंनिकहिंवसाय॥अहोक
मलवदनीप्रिया।सहजसदासुख
दाय॥१॥पद॥इकताल॥कँमल
वदनप्यारीएहोसुकँवारी।तेरीया
विचित्रछविपरवलिहारी॥टेक
॥लागतहैंसोभामोहिअतिरुचि
कारी॥नैननकीदैनचैनमैंनम
दहारी॥१॥राखौंहियमैंवसायवा
सरनिसारी॥कुँवरिकिसोरीप्रान
जीवनिअधारी॥२॥अतिहीक
पालचितवनियातिहारी।सरव
सधनमेरैंमनकौमहारी॥३॥वि

नलोहिछिनमोहिवीतैंवकुमारी॥
श्रीहरिप्रियास्वामिनीसहजसदा
री॥४॥७७॥दोहा॥उपजीवाहि
जिवायकैं।वाढौसुजसविसाल॥
जोपैंकरुणाकरतहौ।अहोला
डिलीकृपाल॥१॥पद॥इकताल
॥लाडिलीकृपालजोपैंकरुणा
जोकरियें॥नितिहीरमालहछि
हछिरसढरियें॥टेक॥उपजीवा
जीजिवायजेसविसतरियें।चरन
सरोजमेरेउरपरधरियें॥१॥अहो
अहलादिनिउदारिदुखहरियें।
अनुदिनांछिनुछिनांहियतैंनट
रियें॥२॥अपनौंसुभावअैसैंजे
सैंअनुसरियें।विरदविहारनिकौ

सह० यासहजसुखसरसरियैं॥ ऊंव
२६६ रिकिसोरीस्यामागोरीनागरियैं॥
४॥८०॥ दोहा॥ गटकसुधाकीसीच
टक। मटकनरीरसनेह॥ मोहि
सुहाईलगति अति। लटकलालकी
देह॥१॥ पद॥ तालचंपक॥ मोहितौ
सुहाईलागै लालकौं लटकेरी॥ अ
तिइसलौंनी अनहौंनी रतिरसभ
री॥ देखतहीठरैं चखिचटकम
टकरी॥ टेक॥ अंग अंग अनंग उमं
ग उपजैं हो। ऐसी मीठी हूतैं मीठी जै
सी। सुधाकीगटकेरी॥ श्रीहरि
प्रियासुजऊ अवनसखीरीमेरी॥
कहति हौं तोहियहउरकौं अटक
री॥१॥८१॥ अनुरागनिकंदर्पका
[illegible]

चूडामनी। स्यांमनिहियहरनीजु॥
जयजयसुखसंपतिसनी। वरचंप
कवरनीजु॥१॥ पद॥ तालचंपक
॥ जयजयचतुरिचूडामनी॥ चा
रुचंचललोचनी चितहरनिचंद्रा
ननी॥ टेक॥ जयतिसुखसौंदर्यसं
पति। सुढचंपकतनी॥ स्यांमिनी
श्रीहरिप्रियानिति। सहजरंगहिं
सनी॥१॥८२॥ दोहा॥ मूंदैंतुरतहिं
जातिखुलि। पावतअतिअकुला
नि॥ मेरे नैननिकौं अरी। परीकहा
यहवानि॥१॥ पद॥ तालचंपक॥
कहायहवांनिपरीनैननिकौंबि
नदेखैंनरहात॥ तनकमूंदिरा
खौं हियहितकैं। तौवतुरतखुलि
[illegible]

सैंहीं।नौहू अति अकुलात॥श्री
हरिप्रिया अंग संग हिहि लिमि
लि।चहन एकनयो गात॥१॥८
३॥दोहा॥निमिष कुन्यारी नहिं
प्रिया।प्यारी लगत अरूप॥मेरे
उरमैं बसा ज्यौं।होइ उर बसी रू
प॥१॥पद॥ताल रूपक॥मो उ
र बसी ज्यौं उर बसी।निमिष हून
हिहो निन्यारी।प्यारी प्यारी लसी
॥टेक॥होइ अनरन हरन दुष।
सबै।सहज सुख मैं रसी॥श्री ह
रिप्रिया सुनि श्रीनहू नैं।लगत
अति अधिक सी॥१॥८४॥दो
हा॥पूरनचंद प्रकास मन।हरन
सहज सुख सैंन॥प्रिया तिहारी

वदन छवि लखि चखि पावत चैं
न॥१॥पद॥ताल रूपक॥देखत
नैंन पावत चैंन प्रिया जू तुव व
दन की छवि।मोहनी मन मैंन॥
टेक॥वढत है वलि जांउं उर मैं।
सहज सुख की सैंन॥श्री हरिप्रिया
प्रकास पूरन।चंद्र चित हरि लैंन
॥१॥८५॥दोहा॥गहि इक टेक
अनन्य व्रत।होइ रसौ लवलीन॥
कुंवरि तुतो रस निधि महा।रस
तनु मो मन मीन॥१॥पद॥ताल
रूपक॥रस निधि कुंवरि मो म
न मीन॥रहत निसि दिन रमत
जा मैं।होइ अति आधीन॥टेक
॥एक टेक अनन्य व्रत गहि।कै

सहज रस्यौ लवलीन ॥ श्रीहरिप्रिया
२६८ निज नेम उर धरि । परिस दा पन
पीन ॥२॥ छंद ॥ अनुराग निसुख
सुंदरी मध्या भाव ॥ दोहा ॥ सह
ज स्वयं सिद्धि रूपिनी । आंनंदेस्वरी
उदारि ॥ रसिक रवन रांनी प्रिया
। जय राधा सुकुँवारि ॥१॥ पद ॥ इ
कताल ॥ जय राधे रसिक रवन
रांनी ॥ आंनंदेस्वरी आंनंद प्रीतम की
। प्रांन वल्लभा मन मांनी ॥ टेक ॥
परम उदारि प्रिया सुकुँवारी । स
हज स्वयं सिद्धि सुखदांनी ॥ श्री
हरिप्रिया स्वांमिनी स्यामा । सेज
पुंज सब गुन खांनी ॥१॥ छंद ॥ दो
हा ॥ औरन कछू अभिलाख न ...

अहो कुँवरि सुनि एह ॥ सदा चरन
वन जात मैं । रहो सहज मो नेह ॥
॥ पद ॥ इकताल ॥ रहो मेरौ नेह
चरन वन जात ॥ कुँवरि किसोरी
स्यामा गोरी ॥ सहज सदा रँगरात ॥
टेक ॥ और कछू अभिलाख न व
लिजांऊं । इहि लालच ललचा
त ॥ श्रीहरिप्रिया निरंतर ध्यांऊं ।
पर हरि हूजी बात ॥१॥ छंद ॥ दोहा
॥ रौम रौम रस रागहीं । जब उर ला
गहिं आंनि ॥ अनुदिन छिन छि
न स्वामिनी । सकल सुखनि की
खांनि ॥१॥ पद ॥ इकताल ॥ स्वा
मिनी सकल सुखनि की खांनि ॥
रोम रोम रति रस मैं गानि । जब उ

सह॰ चअंगअंगअंतु दिन। छिनछि
२६९ नअंतिअधिकौ नि॥ श्रीहरिप्रि
या सहजस्वामिनिका। परमप्रेम
कौ दांनि॥१॥६९॥दोहा॥ उप
दरनी वरदायनी। सदा सहज
सुखकारि॥ श्री कुंवलिप्रांने
स्वरिप्रिया। मैं छेविपरिवलि
हारि॥१॥पद॥ताल चंपक॥श्री
कुंप्रांने स्वरि प्यारी॥ मैं तोरी छे
विपरिवलिहारी॥ सहज सदा सु
१दाउख खहारी॥ करुणाउदधिउदारि
महारी॥ महाउदधिउदारि क
रुणा। दुखहरा सुखदा सदा॥
सहज छे विपर जो उंवारी। श्रीले
[illegible]

मलरूपा। नवन रूपा भांमिनी॥
नागरी गुन आगरीय। उजागरी ग
जगांमिनी॥२॥ नित्यसिद्धि अह
लादनि देवी॥ आगम निगम अगो
चर सेवी॥ अतिअगाध महिमा अ
परेवी॥ अखिल लोक सुरसंपा
ति सेवी॥ सेवी संपति सुर अखि
ल। महिमा अपार अगाधिनी॥
निगम आगम अति अगोचर नि
त्य सिधि अहलादिनी॥ कैसोद
रि सुऊंवारि किसोरी। जितु समा
जन पालिनी॥ सदय हष्टि सुघ २हि
टा। विसद जस रसहीलिनी॥३॥
मैं मन वेचे कमय ही मनां ऊं॥ जो
म निसदिन तुदंगनगां ऊं॥ गाय पनि

सह०
२७०

कृतिकृतिकृत्यकहौंऊं॥कृ
हौंऊंकृतिकृत्यकरियहैकृति
।हियसिरांऊंगैजसैं॥जांपिनी
निसदिनवचनमन।कृमम
नौंऊंमैंश्रमसैं।कररूअनुग्रह
कमलवदनी।सुधासदनसिरो
मनी॥वल्लभावरदायनीसुवि
।सौरभाचंपकलनी॥३॥मेरौम
नअलिह्वैअनुरागौ॥पदपंक
जरसलोलैचलागौ॥अंतपरऔ
रवासनात्यागौ॥याहीप्रेमप्रीति
पनपागौ॥पागौपनयाहिप्रेमप
प्रीतिहिं।त्यागौअंतपरवासनां
॥लागौलोलैचसदापद।पंकज
[illegible]

औरहौं॥निकटअनुवर्तीसुरु
खकै।सदासनमुखसुखलहौं॥
४॥४०॥दोहा॥परमाधारनिश्चै
यसी।स्यामासहजस्वरूप॥अ
होविहारनिवलिसदा।जीवनि
प्रांनअनूप॥१॥पद॥चलतति
ताले॥विहारनिजीवनिमेराहो
॥सदाप्रांनप्रतिपालनहौं।वलि
जांऊंतेरीहो॥टेक॥परमाधा
रनिश्चयसीस्यामा।सहजस्वरूपा
एरीहो॥श्रीहरिप्रियाश्रीसअव
लंबन।तोपदकेरीहो॥१॥४१॥
अनुरागनिमारमोहनीमध्याभा
स॥दोहा॥सुखनिधिसुंदरिसरस

सहज २७१

तिहारीजयप्रियाश्रीराधागोरीजु॥
१॥पद॥इकताल॥जैजैश्रीराधिका
गोरी।मदनमनमोहनीजोरी॥रंगरं
गीलीछैलिछबीली।रसनरीनोरी॥
टेक॥सरसनीसुखसिंधुसुंदरि।
स्वांमिनीमोरी॥राखियेंनितिपासि
हरिप्रिया।दासिहौंतोरी॥१॥४४॥
दोहा॥अमतरहतनिसदिनछिनां
।छकेअधिकरसनेह॥प्यारीजुव
पदकंजपर।मोदृगमधुकरएह॥१
॥पद॥इकताल॥प्यारीलाडिलीप
दारविंद।नैंनमधुकरमेरे॥अमत
रहतनिसदिनांछकि।छिनछिनां
अधिकेरे॥टेक॥कोरिजतनकर
ऊकोऊ।फिरतनांहिफेरे॥श्रीह ७१

रिप्रियासहजसुभाव॥गहिरहेअ
नेरे॥१॥४५॥दोहा॥नीनैंसहजसु
भावसुख।अरिनेअरेजुअरैल॥
रँगरातेमातेसदा।छकेरहौदोउछै
ल॥१॥पद॥इकताल॥एरीरहौअ
होरँगरातेमाते।छबिछकेदोउछै
ल॥सहजसुखसुभावनीनैं।अरि
नेअरिअरैल॥टेक॥जोरजुबनज
गुरिकिसोर।मूरतिमोहनमैंन॥
अलिअनूपरूपसजिनि।दैंनचि
नकौंचैंन॥१॥परसपरसनीतिप्री
ति।परमप्रेमपगे॥श्रीहरिप्रियाप्र
सन्नवदन।मदनजोतिजगे॥१॥४
६॥दोहा॥जलमीनहिंचकोरस
सि।घनमोरहिंसुखसार॥जोरीजु
गलकिसोरकी।योंमोप्रांनअधार

सह॰ तिहारी जय प्रिया श्री राधा गोरी जु॥
२७१ १॥पद॥इकताल॥जै जै श्री राधिका
गोरी। मदन मन मोहनी जोरी॥रंगरं
गीली छैलि छबीली॥रसभरी भोरी॥
टेक॥सरसनी सुख सिंधु सुंदरि।
स्वांमिनी मोरी॥राखियें निति पासि
हरिप्रिया। दासि हौं तोरी॥१॥६२॥
दोहा॥ भ्रमत रहत निसदिन छिनं
। छके अधिक रस नेह॥प्यारी जु व
पद कंजपर। मो दृग मधुकर एह॥१
॥पद॥इकताल॥प्यारी लाडिली प
दारविंद। नैंन मधुकर मेरे॥ भ्रमत
रहत निसदिनां छके। छिन छिनां
अधिके रे॥टेक॥कोटि जतन कर
ऊ कोऊ। फिरत नांहि फेरे॥श्री ह ७१

रिप्रिया सहज सुभाव। गहिर है मे
रे॥१॥६३॥दोहा॥नैंनैं सहज सु
भाव सुख। अति नेअरे सु अरैल॥
रँग राते माते सदा। छके रहो दोउ छै
ला॥१॥पद॥इकताल॥एरी रहो अ
हो रँग राते माते। छवि छके दोउ छै
ला॥सहज सुरब सुभावनीनें। अरि
नेअरि अरैल॥टेक॥जोर सुबन
सुरि किसोर। मूरति मोहन मैंन॥
अति अनूप रूप सजिनि। दैंन चि
न कौं चैंन॥१॥परस परस नीति प्री
ति। परम प्रेम पगे॥श्री हरिप्रिया प्र
सन्न वदन। मदन जोति जगे॥१॥६
४॥दोहा॥जल मीन हिं रुच कोर स
सि। घन मोरहिं सुख सार॥ जोरी जु
गल किसोर की। यौं मो प्रांन अधार

सह०
२५२

॥१॥ पद॥ इकताला॥ मेरी प्रांनन
को आधार एरी। जोरी जुगलकिसो
र॥ रहौं चितवत अैसैं सजनी। जैसैं
चंदचकोर॥ टेक॥ मीनै जलरस
लीन निसदिन। मुदित ज्यौं घन मो
र॥ श्रीहरिप्रिया मो हित गत प्या
री। निपट नां हिं उथोर॥१॥५५॥ श्र
नुराग निदरम अवेरा मध्यानास॥
दोहा॥ श्रीहरिप्रिया हिय मैं बसौ।
नवनागर गुन अैंन॥ सदा सुखद
मूरति सुमृदु। सहज सनेही सैंन॥
१॥ पद॥ तिताला॥ सदा सुख सहज स
नेही सैंन॥ निरखि निरखि सो ना
अैंग अैंग की। अति सचपावत नैं
न॥ टेक॥ मृदु मूरति अहलादउ
जागर। नवनागर गुन अैंन॥ श्रीह ५२

रिप्रिया निति बसो हियेमैं। दंपति
आनंद दैंन॥१॥५६॥ दोहा॥ अद्भुत
रूप अनूप अति। गोर स्याम गुनजा
ल॥ सहज सदा बसिर हो मो नैंननि
मैं दोउ लाल॥१॥ पद॥ तिताला॥ ब
सौ मो नैंननि मैं दोउ लाल॥ सहज
सदा सुख साचे सजनी। राचे रंगर
साल॥ टेक॥ अद्भुत रूप अनूप अ
लौकिक। गोर स्याम गुनजाल॥ श्री
हरिप्रिया प्रहरि उरराखौं। ज्यौं म
निमंजुल माल॥१॥५७॥ दोहा॥ म
धुर महा मन रंजनी। रवनी रसकी रे
लि॥ अलक लडे उर मंडनी। ला
डलडी अलबेलि॥१॥ पद॥ तिताल
॥ लडी लीला डिली अलबेलि॥ अ
लक लडे के उर की मंडनी। खंडने

सह०
२७३

सुखदेन बेलि॥टेक॥मधुकर म
हा मनरंजन रवनी। कवनी का
रन केलि॥श्रीहरिप्रिया सलौंनी
सुंदरि। सर्व सरस की रेलि॥४॥९
६॥दोहा॥अंसन पर भुज दियें
दोउ। मनहर सांवर गोर॥आज
सखी अति छबि भरे। राजत जुग
ल किसोर॥१॥पद॥तिताला॥आ
ज अति राजत जुगल किसोर॥
देखि री देखि रहे फबि अद्भुत।
छबि कौ ओर न छोर॥टेक॥अं
सन पर भुज दियें परसपर। मन
हर सांवर गोर॥श्रीहरिप्रिया ब
दन ससि सुंदर। चितवत नैंन च
कोर॥१॥९७॥दोहा॥सोहत पर
म सुहांवनैं। अंग निअंग रसाल ४२

॥अति अनहोंनैं सलौंनैं। रस लं
पट दोउ लाल॥१॥पद॥तिताल
॥रसिक रँलंपट लाल सलौंनैं॥ *स
सोहत परम सुहाये सजनी। अंग
अंग अनहोंनैं॥टेक॥नैंन बिसा
ल रसाल रंगरारि। ढरि रहे कांन
न कौं नैं॥अद्भुत रूप रास ब अ
चवत। करि करि तिरछि चितौंनैं
॥१॥मदन मनोहर बदन चंद छ
बि। मदन सहज सुख दौंनैं॥श्रीह
रिप्रिया परसपर दोऊ॥लगे ला
लेचे ललचौंनैं॥२॥९८॥दोहा॥
बिलसनि कुंज लसनि हिये की। नि
रखत रहौं निति नैंन॥यह सुख
स्यामा स्याम कौ। रहौ सदा उर अैं
न॥१॥पद॥तिताला॥यह है सुख स

सह० दारहौ उरमेरैं।स्यामस्यामसह
२७४ जरंगभीनैं।कौयहसांझसवेरैं
।।टेक।।विलसनिकुंजसनिहि
यकेहितकी।निरखतरहूंनि
तिनेरैं।।श्रीहरिप्रियाओरअ
ञ्लारवन निलाखनैंकहूंबकुंतेरैं।।१।।
१०१।।दोहा।।सबरसकौघरहै
सदा।श्रीवृंदावनधाम।।जामधि
वैनबवसतनिति।अधिपति^
स्यामास्याम।।१।।पद।।तिताला।।
श्रीवृंदावनसबरसकौघर।।ता
मधिवैनबनित्यवसतवर।।टे
क।।नागरिनागररूपउजागर।
गुनआगरसोभाकेसागर।।१।।
रंगरंगीलेअतिहीसुंदर।परम
कृपालप्रवीनपुरंदर।।२।।श्रीह ७४

रिप्रियास्वांमिनीसुखकर।।अ
वरनहींऔसेइनितैंपर।।२।।
१०२।।कुंडलीया।।श्रीहरिप्रिया
कौसहजसुख।सुनैंसहजसु
खताहि।।कर्मविद्धिनहिय^
निके।रुचैनरंचकजाहि।।रु
चैनरंचकजाहि।विकलमन
बुद्धिविपजेय।।तन्वअनिभि
तचित।तिमरआछादितअति
सय।।गुरुमारगतैंविमुषकलु
षहनसंततगतका।।आपुनिके
किहिंनांति।विनाअनुकंपाय
हश्री।।१।।दोहा।।इहिविधियह
श्रीसहजसुख।सदासहजसुष
रूप।।सुनौंगुनौंवकुंजननकरि

सह० ज्यौं सुखलहै अनूप ॥ २ ॥ इक
२७५ श्लोक द्वै दोहरा । एक हि आदि
वखानि ॥ इक कुंडलिया इक
कहा । ए दोउ अंतहिं मानि ॥ मधि
मत ऊपर दोय पद । आसन
जुत जोइ । सप्तोतर सत सवैय्ये
। सहज सुखहिं गनि सोइ ॥ ३ ॥ अ
वरनि की अनुराग नीवति प्रति
पदहिं विचारि ॥ वरनि सुनाऊं
कहि कवित । छप्पय सो उरधा
रि ॥ कवित्त छप्पय ॥ षट् पद सु
नख मांहिं चारि पद रत्न कलीमैं
॥ चारि हिललिता नैना षट जुप
द विश्वा नामैं ॥ दस विलास आ
वलिजु दसकु । ७५

आनंदा मैं चहि ॥ सप्त धन्य नागा
जुस नकु सुरंग अंग महिं ॥ गौर
सुखी मैं चारि पद केलि कौ मुदा
स सगुनि ॥ कनैकां तिका पांच प
द और कहौं जो सुन कुपुनि ॥ ४ ॥
चारि केलि अलवेलि बिचित्र सो
नामैं सप्त कहि ॥ कैंदरप का मा पांच
पांच पुनि सुष्ट सुंदरि महि ॥ मार
मोहनी चारि परम प्रवरा मैं स
सपद ॥ इक सत ऊपर दोय स
सद सअनुराग निहद ॥ इहि
विधि यह श्री सहज सुख आ म
हा बांणी सुजस रस ॥ गांवैं मन व
चन क्रम जु कोउ पिय प्यारी जिहि
होइ बस ॥ ॥ इति श्री पद वि

द्धां० लासनि कुंजरहस्यश्री महादि।
५६ व्यमहाराजेश्वरश्वरपरमहं
सवंसाचार्यश्रीमद्धरिव्यासदे
वजूकृता महावाणी श्री सहज
सुखसंपूर्णं ॥४॥ ॥श्रीह
रिप्रियास्वामिन्यै नमो नमः ॥ श्री
महावाणी श्री सिद्धांतसुख
लिख्यते ॥ श्लोक ॥ राधाकेलौ
महारम्यो। रंगदेव्यादिसेवितौ
। परमौ नियमश्रेष्ठौ किसोरौ
रसिकेश्वरौ ॥१॥ निकुंजस्योप
रागम्यो। परात्परतमावुभौ ॥
सर्वेषां परकौ दिव्यौ। सदावृं
देकरात्मकौ ॥२॥ दोहा ॥ जैजै
श्रीहितुसहचरी। भरी प्रेमरस ५६

रंग ॥ प्यारी प्रीतमकैं सदा रहत जु
अनुदिन संग ॥१॥ तिनकी कृपा
मनायकैं। वरनौं परम सुधाम ॥ म
हावांणी सिद्धांतसुख। निजघर।
स्यामास्याम ॥२॥ अनुराग निसु
नरवामध्यालास ॥ दोहा ॥ जैवृंदा
वन नित्य जै। नित्य कुंज सुखसार
॥ जैश्रीराधा पिय जेहां। विहरत
नित्य विहार ॥१॥ पद ॥ इकताल
॥ जैवृंदावन नित्य विहार ॥ श्रीरा
धा पिय परम उदार ॥ टेक ॥ जैस
हचरी आदि रंगदेव्य। स्यामा स्या
म हित जिनकैं सेव्य ॥१॥ जैनव नित्य
कुंज सुखसार ॥ जैजमुनाकैं कैन
आकार ॥२॥ श्रीहरिप्रिया सक
ल सुखसार ॥ सर्व वेद कौ सारो।

सिकं.
२७७

धार॥३॥१॥४॥दोहा॥सुछमक
लरवजन्यपरवेदतंत्रकौमंत्र
॥श्रीवृंदावनहरिप्रिया।नित्य
विहारस्वतंत्र॥१॥पद॥इकता
ला॥वेदतंत्रकौमंत्रमनोहर।श्री
वृंदावननित्यविहार॥सुछमक
लरवजन्यअलपर।परमधामकौ
परमाधार॥टेक॥निरवधिनि
त्यअरवंडलजोरी।गोरीस्याम
लसहजउदार॥आदिअना
दिएकरसअद्भुत।मुक्तिपरैंप
रसुखदातार॥१॥अनंतअनो
हअनोहतअथ।अखिल
अखंडआधीसअपार॥अंघ्रि
अब्जऔनखनरवकेरि।केत
नकेतलेतअवतार॥२॥अच

लअचिंतअगमगुनआलय।अ
वरतैंअवरअधिकार॥श्रीह
रिप्रियाविराजतहैंजहां।कृपा
साध्यआपतिसुरवसार॥३॥१॥
६॥दोहा॥दिव्यकनकअवनीव
नी।जटितमनीबहुभांति॥अ
तिविचित्रतासौंठनी।रवनीक
वनीकांति॥१॥पद॥लालजा
नौ॥दिव्यकंचनमईअवनिरव
नी।जटितमनिविविधिवरचि
त्रकबनी॥टेक॥विमलवृंदाबन
कीसोभावनी।सार॥पदमनिनी
लतौहरितमनिडार॥१॥पत्रम
निपीतफलअरुनअनुकूल॥
मधुरसौरसनसुनगसुरंगरंगफू
ल॥२॥वकुलद्रुमअैसेरहिजिन

⁵ वापिदलन्मामतपरअ्रजाविहारा॥बालकाभारपागडभारा॥
॥अहाअधिकारसखकुजहिंसुषदेत॥काल्पभीतरहिंइकरूप
रसहित॥१७॥ ३० १७

सिद्धां॰ किछुविछाय॥फूलफलमूलसाषा
२७८ दिवकुनाय॥३॥सवहिआनासिर
हेरंगनाना॥म्रहरनरम्यकोकोटि
भाना॥ अतिहिरसीलीरहीरंगरे
ली॥ ललितदेछ्नसोंलपटायवे
ली॥५॥ वकुलकेलतिकाउद्दिग
वनी। वकुलकैंनमिपरिसरितर
वनी॥६॥ कंकनाकारसौदारसरि
ता॥ वहतिअतिसुरससिंगारनरि
ता॥७॥ रंगनानानरंगेसुपुंजैं। क
मलकुललुब्धअलिकरतगुंजैं॥
८॥ हंससारससचक्रवाकमोरा॥
कोकिलाकीरचातकचकोरा॥
९॥ आदिकारंडकलसुररसाला
॥रटतवरजुगलकीनाममाला॥
१०॥ उभयतटरत्नबंधितविराजैं॥ ७८

तिनउपरितरुनिकोसुछविछाजै
॥११॥ जुकिरहीडारफलफूलभारैं
॥परसिवारिहिंविहारैंअपारैं॥१२॥
परतिनहींकहीवनवनिकजोहैं॥
अतिहिसोभाकिसोभाविमोहैं॥१
३॥ आसुहीलुमिरहेदोउप्यारे॥ छि
नकुम्हेतैंनकैसकहिंन्यारे॥१४॥
असोनिजधामजोमध्यनितिभूमि
॥अमितदलकमलआकाररहिभू
मि॥१५॥ मध्यमंजुलवनीअष्टदल
पांति॥ उपरिप्रियसखिनिकीकुं
जेसरसांति॥१८॥ तेजमयकर्निका
अतिसुदेसा॥ ताकैंचहुंओरसर
वरसुवेसा॥१९॥ मांनअसमधरस
रवरस्वरूपा॥ रूपसरवरसहित
अतिअनूपा॥२०॥ तिनकीचहुंओ

सिद्धां रस्चना अपारा ॥ नगनि करि घाट
२७९ त्रिर्पित सुढारा ॥ २१ ॥ सुनग सुढि सि
ढिनि कौ अति प्रकासा ॥ जगमग हि
जोति उदित रवि उजासा ॥ २२ ॥ चहुँ स
रवरन कैं मध्य सोहैं ॥ महल अट्टा
प छवि कौं विमोहैं ॥ २३ ॥ द्वार द्वारन
ध्वजा अति सुढाला ॥ वडडे मुक्तानि
वंदन सुमाला ॥ २४ ॥ कनक सुकं
पाट सुन घाट सोहैं ॥ निकरनि कुं
धानि कैं जरित जो हैं ॥ २५ ॥ जगरज
गमगति अति जोति जिनि की ॥ अ
मित द्युति धरन सम प्रहोति तिनि की
॥ २६ ॥ फटिक मनि जोति अति स्व
छता मैं ॥ तासै प्रतिबिंब सब चोर
ता मैं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ ता जु महल कैं
चौक विचि ॥ मनि मंडल रस पुंज ॥ ७९

ता चहुँघां सोहत निवनी । अष्ट मोहनी
कुंज ॥ २६ ॥ मंगल सैन प्रजंत लगि ।
सेवा सुख इनि मांहि ॥ सिरमनि मोह
न महल महा । कलपद्रुम की छांहिं
॥ २७ ॥ ताल जात्रा ॥ सरस मनिमय कुल
मनि कनक खचिता ॥ सूरस सिहम
मनि को तिर चिता ॥ २८ ॥ पद्म अरु पु
ष्प रागादि राजैं ॥ विविध वर चित्रता
सौं विराजैं ॥ २९ ॥ ता जु मधि मद्र कुलस
ज्या सहेली । स्याम स्यामा किजु हां सु
रत केली ॥ ३० ॥ और काहू कौ जहां
नहिं प्रवेसा ॥ विनां श्री हरिप्रिया
लहन लेसा ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ आंगन मो
हन महल कैं । मोहन मंडल मंजु ॥ ता
ऊपर आठ कौन कौ । सुख सिंहासन
रंजु ॥ ३२ ॥ कौन कौन प्रत्येक इक ।

प्रिय प्रमुदा गन संग।। रुचि अनुसा
रैं सेवहीं। उर अनुराग अनंग।।३२।।
उत्तर श्री रंगदेवि स्यां दिसइ सौंन सु
देवि।।३३।। वाम ललिता सखी। अगि
विसाखा सेवि।।३४।। दछिन चंपक
लतिका। चित्रा नैरितु पेखि।। पच्छि
म तुंग विद्या सखी। वायकौं इंदुलेखि
।।३५।। रंगसु देवी कुंज निकौ। कमल
केसरी रंग।। जया सुहीके रंग की। सा
रीसो है अंग।।३६।। सेवा न्हवन मज
नतन। सरस सुगंध सँवारि।। नरीस
परस रंगमैं लइ वै जुगल निहारि।।
३७।। ललित विसाखा कुंज निकौ। रो
चन दाम नि वनें।। मोरपछि उडनों
तिके। पहरैं पट मन हनें।।३८।। वी
रीवागैं सेव मैं। सावधांन एदोय।। जु
गल रूपमैं पगि रही। तन मन प्रांन स
मोय।।३९।। चंपलता चंपक बरन।।
चित्रा कुंकम कांति।। नील रू पीत नि
चोलनि जु। पहरैं वसन सुहांति।।४०
।। सेवा है इनि कुंजनिकैं। भोजन अरु
जलपांन।। अति हित सौं अरु गांव
हीं। पावहिं रस बकुवांन।।४१।। तुंग
विद्या इंदुलेखिका। गौर बरन हरता
र।। पहरैं सारीफ विरहीं। पंडर सुहप
अनार।।४२।। निस्पादिक अरु कोक
की। कला भेद वकु भाय।। रिझवना
लिखवन कुंजनकौं। अदभुत दाय
उपाय।।४३।। विविधि कुंजके भेद हैं
। विविधि कुंजे मन रंजु।। नित्य नित्य
नई नई जेहां। अवतसु बसई संजु।।
४४।। इनि मैं श्री हरि प्रियाकौ। नित्य

सिद्धां०
२८१

बिहार अखंड॥ ऐसा ऐसी रूप मैं
रचि रह्यौ हेहमंड॥४५॥२॥७॥दो
हा॥ विविधि सुरत संपति सहित॥ अ
ति अद्भुत अभिराम॥ चिदानंदघन
जयति जय श्री वृंदावन धाम॥१॥प
द॥ इकताल॥ जै जै श्री वृंदावन धाम
॥ चिदानंदघन पूरन काम॥ टेक॥ व
हति विमल कलकेलि रूपिनी॥ श्री
जमुनां कमनां चकुकोद॥ अति र
सरंग तरंग उमंगनि॥ अंग अंग निव
ति वढवनि मोद॥१॥ दिमकनक
मय अवनि अखंडित॥ मृदु मनि मं
डित मयी मनोज॥ विविधि भांति त
रु वेलिनि झेली॥ रति रेली अलबे
ली ओज॥२॥ महि महि चारु चंबे
ली चंदन॥ चंपक वकुल वरन व ८१

र वेस॥ पियवा सैं अनुकूल वसंती॥
सदा सेवती सुमन सुदेस॥३॥ अंवक
दंव जंवनि वृक्षा फल चल दल कद
ली कमनीय॥ ऊर्व कं कंज्च केतकी
कै उरपारिजात रोचिकर मनीय॥४
॥ ठौर ठौर निर्मल जल आसय॥ मध्य
कमल फूले वहुरंग॥ वसमकरंद
हंद मधुकर मिलि॥ मैं डरावत
मनेनावत संगा॥५॥ नव पहने व
रस सरस ससी की॥ लसी वसी जो वन
वन जाचि॥ पाडर पर निनिवारि न वे
ली॥ जुही जुही सौं अति रति राचि॥६
॥ त्रिविधि पवन गवनै मन रवनै॥ सी
तल मंद सुगंध सुहाय॥ सव रितु सव
सुखदायक लायक॥ सुरत सहायक
सहज सुभाय॥७॥ सिलि सिलातिस

सिद्धा. लिता छबि छलिता। रसर लिता औ ह
२८८ त अनुकूल॥ अरुनपीत सित अलि
त अमित रंग। जो मधि फूले वकु वि
धि फूल॥ ८॥ फूल फूल में फूल फूल
में। फूल फूल फल फल हिलि हेज॥
प्रति प्रति परम प्रेम पय पोषत॥ तो
षत तरनि किरनि तन तेज॥ ९॥ थल
जल थल जल फल मलिन परसपर॥ प्र
तिबिंबित अति ओप अपार॥ खग न
ग मृग खग बिहंगन नये अंग। पुगन
रिकरि निस कत संचार॥ १०॥ कुंज नि
कुंज निपुंज निपुंज नि। नित्य नित्य न
व नित नित बरंग॥ मंडल महल मनो
हर मोहन। जहां बिलसत बिबि के
लि अनंग॥ ११॥ सुजन गसे जपर सुध
र सुंदर वर। रसिक पुरंदर कुंवर कि ८८

सोर॥ क्रीडहिं तजि क्रीडहिं मन मोन
ता नहिं जो नत कितर जनी चोर॥ १२
करत पान रस मत्त मिथुन मन। मुदि
त उदित आनंद अधीर॥ सेवत मह
ज सदा सुख सागर॥ नागनि नागर ग
हर गंभीर॥ १३॥ सखी सहेली सहच
रि सुंदरि। मंजरि महल टहल टग
लागि॥ केउ आवनि केउ जाति जग
तन जगि॥ अतन अंग संग नि अनु
रागि॥ १४॥ मोन बिरह भ्रम कौन लेस
जहां। रसिक राय को रस मय भौन॥ जे
ह पि अति उत क छिन छित उ। क्रूपा
दृष्टि बिनि पावत कौन॥ १५॥ आदि
अनादि अक्रीय मान नहिं। एक समान
स्वतंत्र बिलास॥ पार ब्रह्म कहियत उ
हैं रनि की। पद नख नै सुक जोति प्र
काश॥ १६॥ सदा सनातन इक रस

सि॰कां॰ जोरी।सच्चिद आनंद मयी स्वरूप॥
२८३ अनंत सक्ति पूरन पुरुषोत्तम।जुग
ल किसोर विपिन पति नृप॥१७॥सी
स सुहाग छत्र के विराजै।रसराजेर
जधानी रीति॥अग्रवर्ति आगै धरि
दंपति लै ईस वनि की संपति जाति
॥१८॥वोलैं वोल अवोल अबोलैं।डो
लैं संग लगी सब तीय॥मन अनु
सारनि आज्ञाकारनि।विवि तनके
नैन मैं मन दीय॥१९॥सेस महेस सुरे
स गनेस सुर।वंदन हित वंछित पद रैन
॥अज अजहूं खोजत नहिं पावत।ध्या
न मात्र आवत सुहियेन॥२०॥यह
रस दुर्लभ न हूतैं दुर्लभ।सुर्लभ निस्त
रहत हैं ताहि॥श्रीहरिप्रिया जो निज
न जिय मैं।हिय मैं अपनावत जब
जाहि॥२१॥४१॥दोहा॥मोहनै म ८२

हल मैं।स्यामा स्याम स्वरूप॥दुलहनि
दूलह मिलि दोऊ।करत विहार अ
नूप॥पद॥ति ताल॥करत विहार
विपन सुखधाम॥दुलहनि दूलह
स्यामा स्याम॥टेक॥रंग दे रस दे रह
सि वे सुदा पुनि।अरु पुनि विसद वि
चित्र अनूप॥अमित कला अमृता
आदि कुंज मधि।विलसत भेवन अ
धिपति नृप॥१॥ऐश्वर्य अखिल अ ४रि
वगंजन।रंजन रूप अमित रति मैं
न॥नख सिख सुख मारतना गरव
र।कलकमनीय कमल दल नैंन॥
२॥अद्वय एक रस अद्भुत अभय।
आनंदमयी अचिंत अनंग॥परम
धाम अभिराम पुरंदर।सुंदर स्याम
सहचरिन संग॥३॥नित्य नवीनान

सिद्धां. वललाडिली।नित्यनवीनौंनवल
२८४ सुलाल॥नित्यनवीनौंनवलसहचरी गुनी
।नित्यनवीनौंनवलेसुख्याल॥४॥
नित्यनवीनीनवलकुंजमें।नित्यन
वीनौंनवलसुनेह॥नित्यनवीनैंउ
मगिउमगिदो ३।वरसतनवलन
वीनौमेह॥५॥विविधिविनोदवि
हारनिजोरीगोरीस्यामसकेलसुष
रासि॥हितुसहचरिश्रीहरिप्रिया
हरषतनिरषतचरनकेंवलकेपा
सि॥६॥७॥अनुरागनिविश्वाभाम
भ्याभास॥दोहा॥जयश्रीराधारसि
करस।मंजरिपियसिरमौर॥रहसि
रसिकिनीसखीसवंवृंदावनरसठौ
र॥१॥पद॥तालजोत्रा॥जैतिजयरा
धिकारसिकरसमंजरी।रसिकसि ८४

रमौरमोहनविराजै॥रसिकिनीरह
सिरसधामवृंदाविपिन।रसिकरस
रसीसहचरिसमाजै॥टेक॥रसिक
रसप्रेमसिंगाररँगरँगिरहे।रूपश्री
गारसुखसारसाजै॥मधुरमाधुर्य
सुंदर्यतावर्यपर।कोटिऐश्वर्यकी
कलालाजै॥१॥नित्यनवनायका
नित्यसुखदायका।नित्यनवकुंज
मैंनित्यराजै॥नित्यनवकेलिनव
नित्यनायकनवल।नित्यनवनि
पुनतानेमनाजै॥२॥कसिवकौ
सेपकौमलकमलकानकदुति।
चिकुरमेचकसुरिततछुरतिछाजै
॥दिव्यआभूषनाभूषिताभामिनी
अद्भुतानंददाजैसदाजै॥३॥चंच

सिद्धा· लालोचनी चातुरा चित्त हरा। चारु
२०५ भा चंद्रिका चंद्र की जै॥ सच्चिदानं
द की सिद्धि दा सक्ति। स्यामा सुधा
मा सुधा दा सुना जै॥४॥ चातक की क
स की स्वाति की वारिदा। वारिधा रू
प गुन गर्विता जै॥ मान मद मोच
नी रोचिनी रति कला। रत्न मनि कुं
डला जगमगा जै॥५॥ प्रान प्रीतम
प्रिया प्रीतमा प्रेयसी। पद पद्म पां
शु पावन करा जै॥ पर्म रस वर्षनी
कर्षनी चित्त पिय। नित्य हिय हर्ष
नी श्री हरिप्रिया जै॥ दू॥१॥ दोहा
॥ दर्प करै दल मल सबै। को कंद
र्प करोरि॥ घनस्याम लगोरी सह
जा। बनी मोहनी जोरि॥१॥ पद॥ ना ८५

ल जोरा॥ बनी मोहनी जोरि घनस्या
म गोरी महा। सोहनी रूप गुन की अ
गाधा॥ नित्य नव कुंज आनंद के
पुंज मैं। मंजु क्रीडा करैं रूप राधा
॥टेक॥ सर्व सुख सींव दोऊ ग्रीव
भुज मेलि कैं। करत हैं केलि नव रं
ग रंगे॥ पलक हु बिछुरैं परैं कल न
जिय ललन कैं। ऊ मैं ग अंग अंग स
दा एक संगे॥१॥ अष्ट सहचरिन
के बिना परिकर यहां। और सहच
रिन कौ नहिं प्रवेसा॥ कोल गुन र
हित निज धाम वृंदा विपिन। पर्म
अभिराम ता कौ सुदेसा॥२॥ दिव्य
अद्भुत नगनि जगमगाति जगति
अति। अमित अंसुमान के अंस ला
जै॥ कोटि कंदर्प के दर्प दल मल

सिद्धा. करैं। गर्वगोलोकके सर्वनाजै॥
२८६ ३॥ रसिकजनने उरसिअनुरागको
वर्छिनी॥ मुक्तिसारिष्टपरसुखको
दाता॥ सकलअंसादिअवतार
कोसेव्यश्री। स्यामस्यामाजुजोरी
विख्याता॥४॥ चतुरचूडामनीचा
रुचंद्राननी। चित्तहरचिमनका
रैंअपारैं॥ जिनिहिं दिव्यदृष्टिए
देनकरिकैं दया। जेईयथार्थइ
निकौं निहारैं॥५॥ अनजनहो
इ औसक्तसुखजनको। असक्त
ँक निजधामँल्पितबखानैं॥ सच्चि
दानंदरसअमृतकोत्यक्तकरि।
अन्यातैंकछूअधिकमानैं॥६
॥कर्मअरुज्ञानकरिकैंसदाउ
ँसुलभा स्वेणाँप्रायभक्तिहिंप्रकासी॥ हि ८६

नश्रीहरिप्रियाकीकृपादृष्टिसौं
। निकटिनिरखैंतहांनिसदासी
॥७॥७॥१॥ दोहा॥ हियहरनीसुष
कौमहा। बिस्तरनीकवनीय॥ विपि
नचंद्रकीचंद्रिका। जयराधारवनी
य॥१॥ पद॥ इकताल॥ जयजयरा
धिकारवनीकवनीचंद्रिकावन
चंद्रकी॥ टेक॥ रंगारंगीलीछैल।
छबीली। हियहरनीचंपकवरनी
मनवेलनागरीनीरजनैंनी। नवना
गरसुखविसतरनी॥२॥ अमित
अलौकिकसुखकीधामा॥ श्री
स्यामामाभामसदनी॥ महामोहनी
मनमोहनकी। मनमोहनवारिज
बदनी॥३॥ अंगअंगआभाअन
रनकी। निरखिनैंनचकचौंधीहो

सिद्धां.
२८७

ति ॥ वृंदावन की बगर बगर मैं ॥
नगर नगर जगमगि रहि जोति ॥३
॥ कोक कला कुल को विदु अम
ला । किसोर किसोरी जोरी अैन ॥ वि
हरत विविधि विहार उदार ॥ विहा
री विहार निस बसु खदैन ॥४॥
स्याम सुंदर बर रसिक पुरंदर ॥ गु
न मंदिर गोरी को कंत ॥ छिनं छि
न नव नव भावत रंग नि । अंग अ
नंग निकेसर संत ॥५॥ प्रिया प्रा
न प्रीतम की जीवनि । प्रीतम प्रि
या प्रान आधार ॥ सदा सनातन र
हत स्वतंतर । रमत निरंतर नित्य
विहार ॥६॥ सखी सबै नव रंग रं
गीली । जानति जुगल हिये को हेत
॥ सोई सोई प्रगट दिखावत अनु ८७

दिन । सब भांतिन सौं सब सुख देत
॥७॥ प्रेम पयोधि परे दोउ प्यारे ।
पल न्यारे होत न अंग अंग ॥ रंग म x न
हल की टहल करति जहां । हितु
सहचरि श्री हरि प्रिया संग ॥८॥
ख्याल ॥ दोहा ॥ अलैश्वर्य को । बर x माधुर्य्य
नैं को विसतार ॥ परम धाम राजै ।
जहां । आनंद मयी अपार ॥१॥ पद
॥ ताल जात्रा ॥ आनंद मय अंग
इंगत तें ईश्वर अधिप अनंत बी
र्यो श्वर्य रूप अविकार ॥ इंद्रि रे सा
दिई दित उपेंद्रादि उत्कट अन
न्यादिकारन अकर्त्तार ॥ टेक ॥
उत्तमोत्तम उपादान उत्पति रहि
त । एक ऐश्वर्य परिपूरण धार ॥
ओज औदार्य उदग उत्तम क

सिद्धा: ईतिन्हमैं मिन्त्रपति कृपाकृपा
२८८ रा॥१॥ अजित अच्युत अनामय
असत सत अ संग अप्रमेयादि
अव्यक्त सु विहार॥ कमन के सो
र कीर्त्तन्ह गुन कौ तुकी कोटिकं
दर्प लावन्यता गार॥२॥ परम अ
निराम परधाम राजेते सदा सर्व
परसे व्यपरसे व्य सुखसार॥ अ
*माधुर्य मित ऐश्वर्य श्री हरिप्रिया। क
हन विस्तार कवि पावें को पार॥
३॥४॥१३॥ दोहा॥ निगम नि
गम आगम अगम। लहि न सकै
*चल्योपरम गुनग्रंथ॥ नेम प्रेम तैं परमपरा
कौ पंथ॥१॥ पद॥ ताल जोत्रा॥
रहि गायो पारग उरै नेम अरूपे
म कौ॥ परचल्यो परा कौ परमप ८८

र पंथ॥ निगम कौ निगम अगम आग
म आगमन कौ। नांहिं समरस्य गुन
गनन मैं ग्रंथ॥ टेक॥ अखिल ब्रह्म
मांड वैराट के थाट सब। महा वैरा
ट के रोम कैं प॥ सो वकासैं उडत *कू
रहत नितिसै हजे ही। परम ऐश्वर्य आश्चर्य
मय रूप॥१॥ सो प्रथम एक ही सु
न्य मधि समिर ह्यौ जैसैं त्रिसरेन कौ
रे उसत अंस॥ यातें दस दस गुनी
सहस्र सत सुन्य पुनि। तिन तैं लघ
सहस्र महा सुन्य अवतंस॥२॥
तिन महासुन्य के सिखर पर तेज
कौ। कोटि गुन तैं गुनो अमित वि
स्तार॥ तहां निज धाम हं दा विपिन
जगमगै। दिव्य वैभव वन कौ दिव्य

सिद्धा आगार॥३॥ मन वचन हूं जहां प
२०५ हूं विसक तन कवहूं। बुद्धि वि
षकि त चितहू अति हि असमर्थ
॥ सकल साधन स्वकृति मुक्ति सा
रि थल गि। विन कृपा कोटि को।
टीन विधि व्यर्थ॥४॥ नित्य विह
रत जहां नित्य कैसोर दोउ। नित्य
सहचरिन संग नित्य नव रंग॥ नि
त्य रस रास उल्लास आनंद उर।
नित्य प्रतिकास परकास अंग अं
ग॥५॥ निर्विकारी निराकार चै
तन्य तन। विश्वव्यापक प्रकृति
पुरुष के ईस॥ अक्षरातीत पर
ब्रह्म परमातमा। सर्व कारन परे
जोति जगदीस॥६॥ नाद के औ। ५९

डतैं अखंड धारा द्रवत। स्रवत जा
मध्य सत श्रुष्टि कैं हेत॥ जिहीं जिहिं
भांति जे जे उपासत जिकैं। तिहीं।
तिहीं भांति जे जे उपासत जिकैं। ति
हीं तिहीं भांति ते ते तिकैं देत॥७॥
तत्व के तत्व सिद्धांत सिद्धांत को।
सार के सार सुस्वरूप के रूप॥ अमि
त ऐश्वर्य माधुर्य श्रीहरिप्रिया भा
वति उनैंन के भावते रूप॥८॥ए
॥२४॥ दोहा॥ भर्मत जौ हरिप्रिया न
जौ। सजौ अनन्य व्रत एक॥ यहीय
ही निश्चै करौ। सही गही उर टेक
॥१॥ पद॥ ताल जात्रा॥ यही है यही
है न्हैं लिन रमौंन कौ उन्हैं लिन रमैं
नैंन व भट कि मरि हौ॥ लाडिली
लाल के नित्य सुख सार विन। कौं

सिधा २९७

नविधिवारतैंपारपरिहौ॥टेक॥
एकुअनन्यकीटेकउरमैंधरौ।
परिहरौनर्मज्यौंफूलिफरिहौ॥
श्रियाहरिप्रियाकेपरमपदपां
सुहौ।आसुअनन्यासुहौवासुक
रिहौ॥१॥२॥२५॥अनुरागनिवि
लासावलिमध्याभास॥दोहा॥
अग्रवर्त्तिदूहिंअवसरहिं।आ
ईधरिवरवेस।औरनिवाहूसंग
मिलिचलकुचलैंनिजदेस॥१
॥पद॥तिताला॥चलेऊचलेऊ
चलियेंनिजदेस॥रंगरंगीलेनु
गनरेसजहां॥दिव्यकनकमय
अवनिअखंडित।मनिमंडितज
हांकरैंप्रवेस॥टेक॥करुणा
निधिश्रीनित्यकिसोरी।करिअ ९७

नुकंपकियोआदेस॥आईअग्र
वर्तिअलवेली।धरिवरईछावि
ग्रहयेस॥१॥औसौअवसरवेऊरि
नेऐहैं।औरनिवाहूसंगसुदेस॥
नैमप्रेमतैंपरैंपंथलहौं।नुरतप
ऊँविहैंअलिंअकलेस॥२॥मंज
नांदिनवसतअनरनतने।सजिये
मनरंजनसुनवेस॥विविधिसुगं
धनिअंगअंगनिमैं।करकूअलं
कृतकुसमसुकेस॥३॥सवजन
भयेअनकूलअयनके।भयनर
सौअवतनकऊसेस॥सऊनस
मागमअगमजनावत॥प्रतिकू
लिनकेगयेलवलेस॥४॥सुफल
फलीमनरलीसवनकी।जागेनि
जनिजभागविसेस॥हिलिमिलि

सिद्ध॰ कुलसिहियैं हरषकुं अकुं। निर
२५१ रखकुं श्रीहरिप्रियापरेस॥५॥१२॥
१६॥ दोहा॥ श्रीहरिप्रियापदपांवनौं
। अतिहीदुर्लभसोय॥ वकुंतविघ
नजगमगहिमैं। मिलिहिंचलैंसुष
होय॥१॥ पद॥ तालजोत्रा॥ मिलिच
लौमिलिचलौमिलिचलैंसुखमहा
॥ वकुंतहैविघनजगमगाहिंमांहीं॥
मिलिचलैंसकलमंगलमिलैंसह
जहीं॥ अनमिलिचलैंबसुखनहिं
कदांहीं॥ टेक॥ मिलिचलैंहोनसो
अनमिलचलैंकहां। फूटतैंहोतहै
फटफटांहीं॥ श्रीहरिप्रियाजूकौ
दृढपरमपदपांवनौं। अतिहिदुर्ल
भमहासुलभनांहीं॥१॥१६॥१७॥
दोहा॥ आदिमध्यअवसांनमैं। प ५१

रिकरसहजसहेत॥ परतैंपरश्रीह
रिप्रिया। राजतपरमनिकेत॥१॥ प
द॥ तितालो॥ राजतपरतैंपरसर्वे
स्वर। परमधामवृंदावननिजघर॥
आनंदअहलादनिअद्भुतवर॥
गौरस्यामसोभाअपरंपर॥ टेक॥
आदिमध्यअवसांनएकरस। सबकारन
कारनकरतार॥ आगमअगमअ
गोचरअधिपति। पदनखअनंतआ
नोअवतार॥१॥ विविधस्वरूपदृधा
विग्रहकरि। अमितकोटिवैकुंठ
विलास॥ जामधिउपजिसमावत
जामधि। कमोग्रादिकुलकोटिप्र
कास॥२॥ सुधसत्वअव्ययअविक
लंकृत। अगुणगुणालयईसअनू
प॥ हैहैनहींनहींजिहिनारवता। स

ध्रुवलसो सुद्धस्वरूप ॥३॥ अथ
यद्यपवक्रभेद विसेषण। आदिप्र
नास अचिंत अनंत ॥ श्रीहरिप्रिया
सहजपरिकर सह। करन विहार
कामिनी कंत ॥४॥२४॥१६॥ दोहा ॥
सेवैं सहज सदा सखी लगी सवै च
हुं ओरि ॥ गुननिधि गोरी सांवरी। नि
त्य किसोरी जोरि ॥१॥ पद ॥ चलनति
ताल ॥ तथा चपक ॥ नित्य किसोर
किसोरी जोरी ॥ परम उदारि सांव
री गोरी ॥ सेवैं सहज सदा रंग वोरी
॥ सहचरि सकल लगी चहुं ओरी
। समैं समैं सेवा जो जोई ॥ करन रह
ति निति प्रति सो सोई ॥ मिथुन कुंव
र मन जो रूचि होई ॥ सो पहलहि पु
रवति रति-मोई ॥ हित चित वात नि

मैं वकु वितपनि। विविधिभांति र
सदा उर अनुगनि ॥ उरत सुरत स
हजहिं सुख सरसनि। सन मुख स
दा सुरूख वन बरसनि ॥ प्रथम हिं
श्री रंगदेवि मनो कुं। तिन की कृ
पा यहैं जस गां ऊं ॥ कलकंठा दि
क आठ सहेली। आठ आठ इनि
कैं अलवेली ॥ कलकंठी जू की
॥ ताल चपक ॥ अलवेलिन वला
विश्व आभा। उत्तमा नु विलासिनी
॥ सरसि कामधुकरा सुनंदा। और
पद्म सुवासिनी ॥ ससिकला जू की
॥ रूपा मां श्री सारदा कृपाला। देव
देवी सुंदरी ॥ पद्म आरूपा तें दिरा
पुनि। सुनंदू रामा सहचरी ॥ क
मला जू की ॥ वामा अरूरूपा सुप

सिद्धां॰
२४३

ग्या। अतिस्वरूपा नगवती॥ माध
वी असिता गुना करि। सदा सेवति
रसरती॥ कंदर्पी जू की॥ वृन्दा गौ
रांगी केसी। पवित्रा अरु कुंकमा॥
हित सहचरि हित विचित्रा। अग्र
वर्त्तनि अनुपमा॥ हित सुंदरी जू
की॥ महामोहनि मानवति मलि।
मंजरी मधुकर व्रजा॥ विमलनी वा
रिज मुखी। कलवयनिका सुचिसौ
रभा॥ कामलता जू की॥ सुखद स
हचरि चारुमति। अलबेलि मोह
विनोदिनी॥ नांना सुनगा सहच
री पुनि। कमलवदनी कमलिनी॥
प्रेममंजरी जू की॥ हंदा अरु रसि
का अनंदा। परम सहचरि हित अ
ली॥ नितिनवी नांमनो मंजरि। ह ४२

जो सुंदरि अति नवली॥ प्रेमदा जू की
॥ चंद्रहासा चारु नासा। दिव्यवासा
मोददा॥ मृदुल अंगा एलिवेलि।
अनुपमा अनुरागदा॥ १॥ पद॥
लालचपक॥ सदा सुदंपतिकैं मन
मांनी। महल टहल मैं महा सयांनी
॥ डोलत बोलत कोकिल बांनी। र
मझमाति रतिरस मैं रांनी॥ परम च
तुरि जियकी सब जांनैं॥ समझि
समझि सोई विधि बांनैं॥ मुखतैं जो
ई जु वचन वखांनैं॥ ताकौं सुनि दो
ऊ रुचि मानैं। छिन छिन प्रतिनव।
नेह जनावैं॥ विविध विनोद मोद उ
पजावैं॥ नवल जुगल वरकैं मन भा
वैं॥ अंग अनंग तरंग बढावैं॥ कुति
यसु देवी सहचरि जांनौं॥ महामोह

धां·
२९४

नीमनकीमांनौं॥कावेस्यादिक।
आठवरवांनौं॥तिनकीआठआठ
परिवांनौं॥कावेरीजूकी॥तालचप
का॥परिवानौंहितप्रदपरमुदारा।
चटकाचारुचमेलिका॥सुखसनी
नीरजसुनयनी।नेहिनीअलवेलि
का॥मंजुकेसीजूकी॥रंगनीनाना
गरी।नवलासुनावत्रकासिका।न
वनसुंदरिसुखस्वरूपा।सहजेहि
सामंजुला॥सुकेसीजूकी॥केलि
कालिकारतिरसाला।रत्नआवलि
सुखदिनी॥मंजुमोदामुदमनोज्ञा
।मोनमंजुसरोजिनी॥कवेराजूकी
॥सुखदरूपासानुरक्तिनि:।वरस
वालासरसनी॥चिमतकारोनद्र
सुरजा।रंगमंजरिचौंपनी॥हारकं २९

ठीजूकी॥गर्विताग्जनेनरासहचरि
॥नेमकोतानूरि फंदा॥मदनमा
लासुरतसाला।रूपउजाला।रंगिदा॥
मनोहराजूकी॥रायवेलीफूलमाला
।कमलनीकमलेक्षिनी॥हंसगामा
प्रेमधामा।विंवओष्टाविधुमुखी॥
महाहीराजूकी॥रसपयोधाराजर
वनी।कामिनीकमनीयिनी॥कुं
जकेलीरंगरेली।रहसिरंगारस
दिनी॥हारहीराजूकी।चारुचरि
ताचंद्रभागा।गोपिकागुणमंजरी
॥गिरामिष्टामिष्टदाया।जयावलि
जगमंडनी॥श्रीदंपतिकीप्यारीप तालचपक
रिचारी॥परमानंदनरीअतिन्यारी
॥कवहूनहोयसंगतैंन्यारी॥रह
तिसदाजैसैंछायारी॥चितवतिचं

सिद्धां॰ स्ववदनचकुंओरी॥चारुचकोरी
२९५ ज्यौंरसबोरी॥ग॥अलिआनंदसमुद
रुकोरी॥फिरतटहलमैंयौंचक
डोरी॥चपपगीजगमगीमहाई॥
अतिरसरंगरंगीअधिकाई॥सो
भांसहजकहीनहिंताई॥देखि
श्री जिनिहिंदृगरहतलुभाई॥तील
लिताललितनविभेसा॥रहसिरंग
भीनीवरवेसा॥रत्नप्रभादिकआ
ठवयेसा॥आठआठइनिकैसुभ
देसा॥रत्नप्रभाजूकी॥तालचप
क॥सुदेसातानमतीरुतारा॥न
रत्नातानतरंगिनी॥नरुनिसहचरि
सुखसनीमहा॥सलौंनीअरुसो
हिनी॥रतिकलाजूकी॥रुचिरवे
सारसिकरूपा॥प्रीतमागारगम ९५

गा॥जगमगानवजोवनी॥जगजो
तिनांमनिजोज्हिका॥सुनखजूकी
॥मित्रबिंदावंदनीप्रियबादिनी
मुदावली॥मृगजनयनीमहामु
दिता॥सुसीलासौदांमिनी॥लेखरे
खाजूकी॥अनापुंजाश्रेयसी॥सन
मुखीखंजनविलोचनी॥रमनरंजा
रंजनी॥करभूरिकाअभिनंदनी॥
सुंदरमुखीजूकी॥सुखसायकाचं
द्रावली॥रतनावलीरसमंजरी॥
कनकवेलीहेमलतिका॥रंगमा
लारसिकिनी॥धनिष्टाजूकी॥वि
सालाज्ञाविसदवेसा॥विमलवेलि
बिना ३ की॥बरेयस्पामहामांन्सा॥
यसखनीपुरटांगदा॥कलहंसीजू
की॥महामधुराइंदुआभा॥विनासु

सिखा: नंदा तालिका। कलिंबा मणि मंड
२९६ ॥ला पुनि। अष्टमी श्रुति कुंडला॥
कलापनी जू की॥ सुनंदा सुनला
विसाला। अनंदा अति मोदिका
॥ किंकनी सुघरा सहेली। पुनि सु
जो निसु मोदिका॥ ३॥ तालवेपक
॥ लीड लिलाल लडावत छिनि
छिनि॥ चित मैं चोंप बढावत दि
नि दिनि। री झिर हसि निधि पाई
जि निजि नि। उर अभिलाख पुरा
ये तिनि तिनि॥ प्रीतम प्रान प्रिया
रसराची॥ मोहन मदन मोद मैं मा
ची॥ काहू विधि करि नांहि न का
ची॥ सकल कला मधूरन साची
॥ अहल महल चहलैं रस लागी॥
भाव निभरी खरी बडभागी॥ विपु ९६

ल विपुल प्रेमा बलि पागी॥ लाख
नि अभिलाख नि अनुरागी॥ चौथी
सखी विसाखा नां पुनि। जोन निह
रि जुगल हिय की गुनि॥ माधवि
आदि आठइ निकैं पुनि॥ आठ आ
ठइ निकैं सो कहुं पुनि॥ माधवी जू
की॥ तालवेपक॥ सुनि विटंका छवि
यं केरा मा। नवश्रेनि विलासिका॥
वीरवामा गुण गंभीरा। स्यामला सु
कुंवारिका॥ मालती जू की॥ श्रीम
ती विकुलंदि रामा। मणि प्रभा प्रि
यप्रस्थिका॥ कुसमसेना चंद्रनी।
सहचरी कुंदनरिंदिका॥ चंद्रले
खा जू की॥ कलनिभा कलभासि
नी। वैदर्भिनी बासोज्वला॥ रसता
रुचिदायका। सुखदायका संतोषि

सिद्धा· गलोचनी जू की॥ ताल चंपक॥ सु
२५८ निमाल मणि मध्य मालती मित्र अरु
मोदा मनरमा॥ महा विचित्रा मेधि
नी अरु मदन मंजरि अनुपमा॥ म
णि कुंडला जू की॥ गुणचूमाला
कली चंदने तडित्प्रभा सरदेंदुका
रंभाभरणी भृंगिका कुसुमाल
ओर अलौकिका॥ कुंजचरिना
जू की॥ लता आनंद अद्भुता अनु
रागिनी अनुपम अली॥ लाडि
ली आभा सहेली अति प्रभा आ
नंद रली॥ चंद्रा जू की॥ लाडपति
का चंद्रमुखिनी गर्बिली सुरसालि
नी॥ पुनीता बाला रूपमधुरा पारगा
मनि आलिनी॥ चंद्रलतिका जू
की॥ मकरंदिनी रूपदीनमत्ता सु ५८

रिंदा मधुकंदला॥ सुगुणखच्छ
वीली अरु कुमुद आदि कमोदि
का॥ मंडली जू की॥ सुगुणधारा
धी सुमान्या हँदावारि जलोचनी॥
कलावलि रूकुरंगिनी सुनि सो
नजी उद्दीपनी॥ कंदुकनयना
जू की॥ इंदुहासा सुधाना दासार
अंग सुधाकरा॥ कल सुकंठ सु
धाकंठ सुकंठ सुगुणाकरा॥ सुमं
रा जू की॥ सुधाभासा सभा चूडामे
री गर्वित अंगिनी॥ चारुकंठ को
म पाला जोति जाला जोत्स्निनी॥ ५॥
तालचंपक॥ बनी ठनी सुखसनी
सलौनी॥ जगमगा होति जो
ति अनहौनी॥ एक एक ते अधिक
नऔनी॥ सोहति सदा सहज सरसौं

सिद्धा०
२६७

ली॥ चपलाजू की॥ बसंती बसुवं
तिकारा। नवविनानरागरूपिता॥
मनोज्ञा मधुमंगला। पुष्पानुलाह
सांकिता॥ हिरनीजू की॥ केलि
लालासारदेहा। कंदलासुकंदा
वती। मधुकता मधुमाधुरी। म
धुसंपदा मधुमालती॥ कुंजरी
जू की॥ पुष्पहासा प्रेमकंदा। महा
गंधा माधुरी। कादंबिका कलसंप
दा। कोलाहला कुलमंडनी॥ सुर
नीजू की॥ मधुलिहा वेदर्सिनी॥
मधुरोचिनी मुदितांगिनी॥ गुण
प्रबोधा बोधिनी। बुधिवती वेदप्र
कासिनी॥ सुनाननाजू की॥ को
कनिपुना पुन्यगाथा॥ पावनी प
टमंजरी प्रबोधा राविद्यमाना॥ प ६७

रसिनी परसंसिनी॥ ७॥ नालचपक
॥ परिचरिआ मैं परम प्रवीना। नव
नव केलि कलारस भीना॥ निसदि
न लगीरहत लवलीना॥ अति र
तिरंगी अधिक अधीना॥ सहज सु
रंग सिंगार निसाजै॥ अतिहि अ
नूप मनोहर राजै॥ चटिवटि रहे
चौंप चितचाजैं॥ समवय सुघर स्व
रूप विराजैं॥ दो मनिसौ दमकैं न
नगोरैं। चंद्रवदन सहचरि चकुंओ
रैं॥ जोरी जोराय सुचित चितचोरैं॥
घोजतिछ विजिहि ओरनछोरैं॥
सहचरि पंचमि चंपलता पुनि॥ स
बगुनखांनि सुजांनि सिरोमनि॥ म
गलोचनी आदि अठ अलि गुनि॥
इनिकैं आठ आठ सो कछु पुनि॥ म

सिद्धां· नी॥ निकट जुगल वर नैंन निहारैं
२९९ ॥ पल कैं पल कभों न धन वारैं॥ ति
नि विचितन कौन अंतर पारैं॥ स
दा एक रस रंग विहारैं अति रस
चाव भरी उर मांहीं कुंज मालति अ
धिकाति उमांहीं॥ लैलै सौंज स
वै सव पांहीं चितै रही जुगचंद रु
घांहीं॥ छठी सहचरी चित्रा नारी॥
महा मोद उर भरी अपारी तिलक
नि श्री दिश्रा ठ अनुचारी आठ आ
ठ इनि कैं अधिकारी॥ तिलकनि
जूकी॥ नाल चंपक॥ अधिकारि
मृग नयनी विसाला नयंनी वि
नया नयां वीना विरजा अष्ट मी व
नवेलि केलि कला मया॥ रसालि
का जूकी॥ अलवेलि अंगा वाल ९९

मनि सुख सदनि स्यामा सहचरी॥
विधु बदनि अरु सौंदर्य कार स्या
सुरदनी रस भरी॥ वरवेनिका जू
की॥ सिंगार कुंद रिराय वेली द
र्पिका केदर्पिका॥ पुन्य पुंज आभा
गपुंजा प्रेम पुंजा पर मिता॥ सोर
सुगंधा जूकी॥ हृद्धिमान्यारि द्धि
रूपा स क्ति रूपा सक्तिनी॥ अव
नें खिर हस्या सहचरी पारंगमार
मल स्वनी॥ कामिला जूकी॥ अ
लिमा वेली महिमा वेला अरु उर
वसी वेस कारिनी॥ सुष वेसासा
र पुंजा सुकुं ते लाश्रृं गारिनी॥ का
म नागरी जूकी॥ प्रेम धामा मोहि
ताना मंजु लासा र जनी॥ अलक
नंदा रूकमकांगा सेवती सामंति

लिख्या॰ नी॥ नागवेली जू की॥ राजहंसीहं
३०॰ सनी गोरी मयोरी मैंनिका॥ कुसु
मकेलिका कलाकंदा अरविंदा
आनंदिका॥ सुसोभना जू की
॥ रागरंगा रंगरागा रोहिनी संमो
हिनी॥ अमरवेलि सु अनरनी
पुनि स्वरनवेलि सुलछिनी॥ ६॥
तालचंपक॥ मनको रुचि सचि
सेवा करहीं॥ छिन छिन प्रति अ
सैं अनुसरहीं॥ भावन जो सोई ढर
ढरहीं॥ निरखि नवल छवि आनैं
द न रहीं॥ को उसखि कछु को ऊ
कछु लीयें॥ सब ठाढी सनमुख रु
खदीयें॥ तनमन प्रांन समर्पन की
यें॥ अति अनुरागभरी सब हीयें
॥ रहसिरंग रुचि मैं सरसानियां॥ ३०

सहज सनेह नेह रस सनियां॥ रुचि
स्वरूप रंग पति मन मनियां॥ आनँद
कंद निचंद बंदनियां॥ सरससिरवी
तुंगविद्या गनि॥ विसद विलास क
ला मैं नित पुनि॥ मंजुमेधिका आदि
आछिनि॥ आछ आछ हु निकैं अलि
रहीं बनि॥ मंजुमेधिका जू की॥ ता
लचंपक॥ वनि रही रस आनंद मा
धुरी मोदनी मदनालसा॥ चारुचू
डा चित्रनी चतुरा सुचंद्रकांतिका
॥ सुमेधिका जू की॥ चकोरी कामा
किसोरी केतकी अरु कोमला॥ का
मरस कंदला सहचरि चंचला क
स्तूरिका॥ तनमेधा जू की॥ सुजरवा
अरु दिव्यगंधा रत्नकलिका विश्व
ना विलासावलि अरु आनंदासुरं

ब्रिखा गोंगा गौरिका॥ युगल रूढ़ा नृकी॥
३०१ केलिकौमुदि कर्निका अलबेलि
लोभ विचित्रिका॥ कामकंदपोउ
लं नामुष्टिका विजयंतिका॥ वरं
गदान्हकी॥ किसोरिधन्य सुभाग
सोभा जयति आनंदसिंधु, का॥ वि
नैमुख्या पुलकमाला लहरिमाला
के विंडका॥ मधुलिंदान्हकी॥
ललित आननि टहल तत्पर मा
रमोहनि संकरी॥ सोवारि चंद्रउ
सालि सैव्या सर्व लोपत्ति सहच
री॥ मधुरान्हकी॥ सातं कूलास
रद ससिका स्वस्तिदा सरदोत्सु
खा॥ रस पर सानवकिसोरी नि
त्य सिद्धा सेमुखा॥ मधुरे छन्हू
की॥ प्रनय प्रचुरा परम प्रवरा॥ ३०१

प्रिया प्रीति प्रदा मकरंद, रु वंदा चा
रु दस्ता चारु इत्ता अनंता॥७॥ ना
लेच पक॥ सेवैं चाव चटी चित न्या
री॥ सौं जे सुनायदस जै सहचारी॥ अ
ति उदार सुद चित महारा॥ रहसि
रिझांवहिं प्रीतम प्यारी॥ जुगलच
रन उर मैं धरि सोही॥ नहिं समान
उपमा कौं कोही॥ कोटिक चंद्र क
ला निछि मोही॥ अमित मा[illegible]री
अंग निजोही॥ निसबासर इकर
स रस पीवैं॥ परम ट्रेम तुरि सहा
जे सदी वैं॥ जोय जोय जुगचंद हिं
जीवैं॥ नैन कटाछि चरन रज छीवैं
॥ अष्ट मिइंड लेखो अति नीकी॥
प्यारी सदा प्रीतमा पीकी॥ जुगल ब्रा

सिद्धा
३-२

दि आह्लादनिहीं की॥ आह्लाआह्लादनि
कैं गुनिनी की॥ तुंगभद्रा जू की॥
तालचपका॥ गुनिनी की मोहनि सो
भना॥ सुंदरी मोहनी मैं निका॥ राग
रंगनि सहचरी गुनि रंगा लीरंगाइ
का॥ रसा तुंगा जू की॥ रसीली रस रं
जनी गुनि चारुमति की चंदना॥ र
सावलिका सुरति सजनि विलासनी उ

सिनी ॥ रंगवाटी जू की॥ नोवनी त्रयजुवन
सुंदरि विपुलनी पुलकावली॥ क
लासंपन्ना विमदनी मतंगनि मद॰
नावली॥ चित्रलेखा जू की॥ पीयूष
दा ललितांगिनी लचलंकनी लीला
वती॥ लोलचखा कुंजनी साजनी रा
जनि महामती॥ सुसंगना जू की॥॰
श्रवदातिनी अवरेखिनी आसंतर २

सदा अनुगती॥ अतिशवी बाजांनसुं
दरि मांनदिर मालनी॥ चित्रांगी जू॰
की॥ मधुमहमहा अनुवर्तिनी अ
नन्यका करुणाकरा दरसनीयाम्रा
सकामा अलंकारा जितुपमा॥ मो
दनी जू की॥ आसक्तिनी अनुरंजनी
अतित्राज मानामनमुदा॥ सुरसर
सिकारावती आभावनी सोनेंहदा
॥ मदनालसा जू की॥ महामदुला
महामधुरा महारहस्या रसर
ता॥ सुधाधाराधरा सुखदा सुफला
हरिप्रिया अनुगता॥ दो॰॥ तालचप
क॥ ऐसे वे कही कहन जो आई॥ प
रम नरम सहचरि समुदाई॥ औरउ
ऊ अपरंपार सुहाई॥ अनगिनती
गुनिनी नहिं जाई॥ को वरनैं महा॰

सिद्धा. सिंधुतरंगा॥नूर जकन उडुगना।
३०३ अभसंगा॥लखिलखिडनको अ
दुतअंगा॥चकितहोयचितरहत
अनंगा॥एइनिहींसीऔरनकोई॥
उपमाकहनकौनमतिहोई॥पिय
प्यारीइन्हावपुजोई॥अमितकला
सुखसेवेसोई॥परमचतुरिजहि
पगुनजोरी॥एकडारकीसीसवतो
री॥नत्पुरटहलेमहलेरसबोरी॥
जीवनिजियश्रीहरिप्रियाजोरी॥
तोलचेपक॥जोरीजीवनिजीयकी
॥श्रीहरिप्रियाजिनकेसदा॥नित्य
धामनिवासनिश्चलासकलफल
मनवेछदा॥आनंदकंदकिसोरमू
रति।गोरस्यांमस्वयंप्रजा॥कोटि
रविससिलाजहींलखि।चरननख ३

मनिमंजुना॥कहतहैजिहिंविइष
व्यापकब्रह्महैजगमैंजोई॥चरनन
खआनासकरिकविसाचकल्पत
हैसोई॥निर्विकारविसेषणादिस
रूपसुंदरसोहनै॥अखिलओक
अधीसअधिपतिवपुषविश्वविमो
हनै॥धामनामरूकामकतिहत्ति॥
अमलअंगअनामयं॥दिव्यचिदघ
नचारूचरित।उदाररुद्रसुधामयं।
हैनहींसोनहींहैसो।वदनहैविधिबे
दमैं॥कहीहैकरिसहीअपरान्त
मतहैनवनेदमैं॥हितरसहचरिनि
जेकृपाकरि।नासननन्दितवैजवै
॥निसदिनवविलासकोसुखसह।
जेपावैसोतवै॥जैजैश्रीहरिप्रियाजोरी ४प्रि
।गोरीस्यांमलगुननरी।स्वयंसिद्धप

सिद्धां. सिद्धलीला।ललितमिश्रीकोडरी॥
३·४ श्लोक॥१४॥ अनुरागनिआनंदाम
धामा॥ला॥दोहा॥निगमनिगमअ
गमनिअगमलहिनसकैगुनअं
त॥जेकारनसबजेक्के।तिनके
कारनकंत॥१॥पद॥तिताला॥स
कलकारनकेकारनकंतलीला
अमलअनंत॥टेक॥निगमनि
गमआगमअगमगमग्रंथनिमें
गोप्य॥सबतेंसबसिद्धांततेंसब।
सिद्धांतअलोप्य॥१॥जाकौअंसप
रमातमाप्रकृतिपुरषकोईस॥प
रइछाआधीनकैजगमगातजग
दीस॥२॥एकैआपअनेककैकै
अनेकनेंएक॥आदिमध्यअव।
सांनमैंरमिरहेएकानेक॥३॥जो ४

हैसोसबइनिहितेंइनिहींतैंसबनां
हिं॥सबकैबाहरिआपहीहैआपु
हिसबमांहिं॥४॥ऐसेविश्वअनंत
मैंएकहिपैंबरूअंस॥परमातमअ
वतारकैनिर्विकारनिरसंस॥५॥
तिनकीलीलानितनहिकेअधिका
रीअलखंत॥त्यांतोएकहिअंसकौ
आवतनांहींअंत॥६॥श्रीराधाप
दकमलतैंनूपुरकलरवहोइनि
र्विकारव्यापकजेयोशब्दब्रह्मक
हिसोइ॥७॥जैजैनित्यविहारजेजै
वृंदावनधाम॥जैजैइछासक्तिजै
जिनिकीयेयेकाम॥८॥क्रियास।
क्तिअहलादिनीप्रियआनंदस्वरू
प॥तनवृंदावनजगमगैंइछासपी
अनूप॥९॥कोटिनकोटिसमूहसु

सिद्धा॰ खलखलियेंरह्यासक्ति॥३॥प्रेम
३०५ हिप्रमुदावहींप्रमुदावलिअनुर
क्ति॥४॥जेवर्तेंएएतनहितेंएएए
कअनंत॥श्रीवृंदावनमेंसदानि
तिविलासविलसंत॥५॥सहितार
ससिंगारकीवहतिसदाचऊंओर
॥६॥इकछित्रराजकरैंजुश्रीहरिया:प्रि
जुगलकिसोर॥७॥८॥२॥दोहा
॥परमातमपरब्रह्मकरिविमला
रनजगजाल॥जनपालनजयजय
महारासविहारीलाल॥१॥पद॥
तिताला॥महारसरासविहारीला
ल॥वारीनांऊंजयजयजयजयजनपा
ल॥टेक॥निराकारअविकारप
रब्रह्मसुद्धचैतन्य॥निर्विशेषव्या
पकजमौजिहिंविदंरातेंजन्य॥१॥ ५

जाकेएकहिअंसकरिपरमातमअ
वतार॥परइच्छाआधीनकेकीनों
सवविस्तार॥२॥अखिलअंडव्या
पीकअरुअखिलअंडआधार॥
अखिलअंडकेईसकेहरनकरन
प्रतिपार॥३॥एकदोयअरुतीनि
पुनिचारिपांचदरूप॥धरिधरि
लीलाधारहींआपअपारअनूप॥
४॥जाकरिएसवहोतहैंसोएनिस
किसोर॥श्रीहरिप्रियासिरोमनीस
दावसैंनिसकोर॥५॥१७॥२॥दो
हा॥रजधांनीमांनीमनहिंवृंदावन
निजरूप॥सुखदायकनायकसखी
:सचिदानंदस्वरूप॥१॥पद॥तिता
ला॥सखीरीसचिदानंदस्वरूप॥स
कलसुखदायकनायकरूप॥श्री

सिद्धा
३.६

हेंदावनरजधांनीमनमांनी
परमअनूप॥टेक॥आदिअ
नादिएकरसअद्भुत।सदासना
तनरूप॥श्रीहरिप्रियासुधाक
रदिनहिंविहारनहारनधूप॥१
॥ष्यालस्व॥दोहा॥उदधिमहामा
धुर्यके।रसिकदोऊरसभौंन॥
सदासर्वदाएकरस।राजतराधा
रौंन॥१॥पद॥तालजोत्री॥सदास
रवदाराधिकारवनराजैं॥रसि
करसनवनमेंनम्प्राजैं॥टेक
॥मधुरमाधुर्यऔदधिउदारा॥
श्रवतनितिरहतसुखसुधाधारा
॥१॥सहजेस्वकियांनित्रनिपोष
कलौ॥अमितगुणचंडअखंडन
लौ॥२॥श्रीहरिप्रियाजुगलवपु

धरिविहारैं॥धन्यहैंएजुइनिहैं।
निहारैं॥३॥ष्याल॥२२॥अनुराग।
निसुरंमां॥मध्याभ्यास॥दोहा॥सु
द्धसत्वपरईससो।दिखवतनाना
भेद॥निर्गुनसगुनवषांनिकैं।व
नंतनाकौवेदा॥पद॥तिताल
॥निर्गुनसगुनकहतजिहिंवेद॥
निजइछाविसतारिविविधवि
धि।वौहैअनवौहैदिखावतने
द॥टेक॥आपअलिप्तलिप्तली
लारचिाकरतकोटिअखंडवि
लास॥सुद्धसत्वपरकेपरमेस्वर
।जुगलकिसोररसकलसुखदरा।
सा॥१॥अनंतसक्तिआधीसअ
चिंतक।ऐस्वर्यादिअखिलगुण

सिद्धा. धा प॥सबकारनकेकारनकर
३० ना।नितिनैमिस्रनियंनाख्याम
॥२॥सकललोककचूडामनिजो
री।गोरीरसमाधुर्यअसेसा॥को
टिकोटिकंदर्पदर्पदलमलन
मनोहरविसदसुवेसा॥३॥परा
वरादिअसतसतस्वामी।निर
वधिनामीनामनिकाय॥नित्य
सिद्धसवौपरिहरिप्रिया॥सब
सुखदायकसहजसुभाय॥४॥
२०॥२४॥दोहा॥तिहिंसमांनिव
ड्भागको।सोसबकैसिरमोर॥
मनवचक्रमसबसौसदा॥जि
निकैजुगलकिसोर॥१॥पद॥
तिताला॥जिनिकैसबैसजुगल ७

किसोर॥१॥पद॥तिताला॥जिनिकैस १ सो
बैसजुगलकिसोर॥तिहिंसमांनि
असकोबडभागनि।गनिसबकैं
सिरमोर॥टेक॥नित्यविहारनिरं
तरजाको।करतपाननिसभोर॥
श्रीहरिप्रियनिहारतछिनछिन
।चितयचखनिकीकोर॥१॥२॥
२५॥दोहा॥तिनहिंप्रियाहरिहि
तहिंकरि।नितिराखैनिजपास
॥नवकिसोरसुखरासकौ।जिनि
कैअननिउपास॥१॥पद॥तिता
ला॥जिनिकैयहैअनन्यउपास
॥तिनकौंप्रियालालनितिहित
करि।राखैंअपनैंपास॥टेक॥
मायात्रिगुनप्रपंचपवनकौ।अ

सिद्धां. ३०८

चैन आवै तास ॥ श्रीहरिप्रिया नि
पट अनुवर्त्तनि । कैनि रखैं सुख
रास ॥१॥२२॥२६॥ दोहा ॥ नित्यधा
म विलसत सदा । अतिरति राधा
कंत ॥ अमित गुननि अनैव अ
घट । अद्भुत रूप अनंत ॥१॥ प
द ॥ तिताल ॥ अमित गुन अनैव
अघट अनंत ॥ विलसत नित्य
धाम नव नायक । अतिरति रा
धा कंत ॥ टेक ॥ अद्भुत रूप अ
नूप नवल छवि । औरन और क
हंत । श्रीहरिप्रिया एकरस दिन
दिन । छिन छिन सुख सरसंत ॥१
॥२३॥२७॥ अनुरागनि गौर सुखी
मध्या नाम ॥ दोहा ॥ वृंदावन घन

कुंजमें । विलसत सांवर गोर ॥ मनह
रनी जोरी महा सुखसर मनी किसो
र ॥१॥ पद ॥ तिताल ॥ सुखसरस
नी मनोहर जोरी ॥ जुववर जुगल कि
सोर किसोरी ॥ वृंदावन घन कुंज
सदन में । विलसत बौहौ विधि सांव
र गोरी ॥ टेक ॥ अति अभिराम अ
मल म्रदु मूरति । अद्भुत मंजुल रस
मैं बोरी ॥ महामोद मंगल मर्यादा ।
छवि अकोर माधुर्य अकोरी ॥१
॥ दैन चैन चितनैंन सबनि कै
औन मैंन मनु सोंचै ढोरी ॥ श्रीह
रिप्रिया साच्छात स्वयं वपु । सदा
बसौ उर निसा अहोरी ॥२॥२४॥
२८॥ दोहा ॥ सहस वदन हूं सकति

सिं॰ ३०९ नहिं जाकी महिमा लाध॥ इक मु
ख अलप कहा कहै। अति गुन रू
प अगाध॥१॥ पद॥ तिताल॥ अ
ति हि अगोचर महा अगाध॥ ली
ला उदधि पार नहिं पावन। सह
स बदन से समरथ साध॥ टेक॥
इक मुख अलप कहां लगि बर
नैं। अमित कलप लौं नस्यौ उपा
ध॥ कृपा कटाछि चितै श्री हरि
प्रिया। लव हीस के चरन रज ला
ध॥२॥ साखा॥ ९२॥ दोहा॥ सदा सर
बदा जुगल इक। एक जुगल तन
धाम॥ आनंद अरु अहलाद मिलि
बिलसत है द्वै नाम॥१॥ पद॥ तिता
ल॥ एक स्वरूप सदा द्वै नाम॥ श्री ९

नँद की अहलादनि स्यामा॥ अह
लादनि के आनँद स्याम॥ टेक॥
सदा सरबदा जुगल एक तन।
।एक जुगल तन
बिलसत धांम॥ श्री हरिप्रिया नि
रंतर निति प्रति। कांम रूप अगु
न अभिरांम॥२॥ रह्या॥ ३॥ दोहा
॥ नवरँगनी नी सखी सँग। महल ट
हल अनुकूल॥ निति विहरैं श्री
हरिप्रिया। सकल सुखनि के मूल
॥१॥ पद॥ तिताल॥ स्यामा स्याम स
कल सुख मूल॥ नित्य विहार कर
त वृंदावन। कल कलिंदजा कैं
कूल॥ टेक॥ सखी संग नव रंग रँ
गीली। महल टहल फूली उर फू

सिद्धा० लौ॥श्रीहरिप्रियाप्रतिछिनप्रमुदा
३१० वैन।गावतगुनमिलिदूलनिदू
लौ॥२॥२४॥३१॥अनुरागनिकौ
लिकौमुदीमध्यानाम॥दोहा॥वि
पुलपुलकअंगअंगनरेनवल
चारुचैतन्य॥अरसपरसदरस
नसदा।कोटिकामलावन्य॥
२॥पद॥तालजात्रा॥कोटिकंद
र्पदुतिललितलावन्य॥दंपति
दंपतिदरससरसदिनदिनहिंप्र
ति।अमितअभिरामताउजप
रजन्य॥टेक॥परसपरविपुलपु
लकावलिननिकरनव।नित्यना
गरनवेलचारुचैतन्य॥श्रीहरि
प्रियानिरखिनिजनैनछविऔ १०

न।अलिसैंनसवमांनहींनागवड
धन्य॥२॥२५॥३२॥दोहा॥दौरतव
ऊंविसालवन॥जहँलगिकहि
यतुदौर॥श्रीहरिप्रियानिजधाम
छवि।वरनतकैबुधिवौर॥१॥
पद॥तालचंपक॥वरनतहींबु
धिहोतहैवौर॥दौरतवकूंविसा
लविपिनमैंजहांलगिकहियतु
मनकीदौर॥टेक॥सूरकैंनीचैंन
सेसकैंऊपर।गोपुरहूतैंआगैंचै
रदौर॥श्रीहरिप्रियाविराजतहैंत
हाँ।जुगलकिसोरसकलसिरमौ
र॥१॥२६॥३३॥दोहा॥साधनकरि
नाकादिफल।नस्वरपावतजोय
॥एकरूपाहीकरिकछू।मिलहिहा
यसोहोय॥१॥पद॥तिताले॥एक

सिद्धि· ३॥

कृपा करि होय सो होई॥ साधन
सि द्ध रह्यो न हिं कोई॥ टेक॥ ना
का हिं कन खर फल पावैं॥ जाय
आय मं आ श्रुवि ता वैं॥१॥ जिन
नैं साधन नर में धरहीं॥ तिन नैं या
विचि अंतर करहीं॥२॥ सब तजि
सदा मना वैं या हीं॥ औरन तैं मन
धरि अवग्या हीं॥३॥ श्री हरि प्रिया
परम पद चा हैं॥ लौ या विनां न आन
उमा हैं॥४॥३१॥३४॥ अनुराग नि
कने कां ना मध्या भास॥ दोहा॥ वि
धि निषेध आदिक जिते। कर्म धर्म
तजि तास॥ प्रभु कैं आश्रय आव
हीं। सो कहियें निज दास॥१॥ पद॥
इकताला॥ जो को उ प्रभु कैं आश्रय

वैं॥ टेक॥ विधि निषेध के जे जे धर्म
। तिनि कौं त्यागि रहै निष्कर्म॥१॥ क्रू
र क्रोध निंदा न जि है हीं॥ विन प्रसा
द गुरु व औरन लैं हीं॥२॥ सब जीव
न पर करुणा राखैं॥ कबहूं कठो
र वचन नहिं भाखैं॥३॥ मन माधुर्य रस
मांहि समोवैं॥ घरी पहर पल हेथा
न खोवैं॥४॥ मन गुरु कैं मारग पग
धारैं॥ हरि सन गुरु विचि भेद न पा
रैं॥५॥ एकादस लछिन अवगाहैं॥
जे जन ऐसा परमपद चाहैं॥६॥ जा
कैं दस पैडी अति हढि हैं॥ विन अ
धिकार कौं न तहां चढि हैं॥७॥ पहि
लैं रसिक जनन कौं सेवैं॥ जी दया
हियें धरि लेवैं॥८॥ नीजी धर्म सुनि
[illegible]

सिद्धां· ३१२

सुनि हैं ॥४॥ पंचमि पद पंकज अनु
रागैं ॥ षष्ठी रूप अधिक नीका पागैं ॥६
॥ सप्तमी प्रेम हिये विरधावैं ॥ अ
ष्टमि रूप ध्यान गुन गावै ॥८॥ न
वमी हढ नाति श्रम हिवै ॥ दसमी
रस की सरिता वहिवै ॥१०॥ या अ
नुक्रम करिजे अनुसरहीं ॥ सनैं स
नैं जगतें निरवरहीं ॥११॥ परम
धाम परिकर मधि वसहीं ॥ श्री ह
रि प्रिया हित लैंगल सहीं ॥१२॥ ३
॥३५॥ दोहा ॥ अति अनूप सांचै
ढरी ॥ निरखि होति मति जोरि ॥ अ
द्भुत स्यामा स्याम की ॥ सहज सांव
ती जोरि ॥१॥ इकताल ॥ पद ॥ स्या
मा स्याम सांवती जोरी ॥ अविचल
नित्य किसोर किसोरी ॥ टेक ॥ सां १२

वर पिय प्यारी तन गोरी ॥ सोभा व
रनि सकैं कवि कोरी ॥१॥ अद्भुत रू
प रंग रस वोरी ॥ अति अनूप सांचै
सी ढोरी ॥२॥ श्री हरिप्रिया करत
चित चोरी ॥ निरखत नैंन होत मति
भोरी ॥३॥३२॥३६॥ अनुराग निवि
चित्र सोभा मध्यभास ॥ दोहा ॥ जा
के पद नख जोति की ॥ आभा को अ
नुलेस ॥ जगमगात है जगत मैं ॥ पर
ब्रह्म परमेस ॥१॥ पद ॥ इकताल ॥
जो अं बलिहारी नित्य वैभव बिहा
री ॥ जुगल किसोर स्वयं ॥ सत्य श्रुति
सारी ॥ टेक ॥ अखिल ब्रह्मंड ब्रह्म
व्यापिक है जोई ॥ तिन्हैं चरनन
ख आभा है सोई ॥१॥ परमातम
विश्वकाय ॥ नारायन विस्नु ॥ धर्म

सिद्धां॰ ३१२

हैतिहारेतुमधर्मीजिगजिस्तु॥२॥
वालककऊमारपौगंडवपुधरिकैं
करतविहारजेन।हेतअनुसरि
कैं॥३॥ब्रजपति गृह लीला।व
रनीनहिंजाई॥श्रीहरिप्रिया।ना
वेत।कहेअनुताई॥४॥३३॥३४॥
दोहा॥कारनीककारनहिके।मंग
ल मंगलकेनु॥अवतारीअवता
रके।ऐसा।ऐसनकेनु॥१॥पद॥
इकताल॥ऐसनकेऐसीअवता
र अवतारी॥कारनेकेकारनीक।
मंगलमहारी॥टेक॥स्वयंरूपसु
द्धसत्व।इच्छाविसतारी॥जाकरि
कैंनयोनाद।अलनिर्विकारी॥१
॥नाकौसवघाटपाट।घाटअघ
टारी॥असतसतादिपर।वरके १३

अचारी॥२॥विविधिविसेषलवि
चारिवकतारी॥वरनतहैवांनी
जाहि।मति अनुसारी॥३॥श्रीह
रिप्रियानित्यधामाविलसतविहा
री॥कोटिकामअभिराम॥विचि
त्रसोनारी॥४॥६४॥३५॥अनुरा
गनिकंदर्पकामामधामा।सरो
हा॥दरसनीयकैसोरमूडु।मूरति
अतिकमनीय॥आनंदमयअ
ह्लादजेय।नित्यसुधामधुनीय॥
१॥पद॥तालरूपक॥जैजैनित्यधा
मधुनीय॥स्यामस्यामासहजसुंद
र।कां।मूरतिकमनीय॥टेक॥द
रसनीयकिसोरमूरति।महामोद
सनीय॥श्रीहरिप्रियाआनंदमय
अह्लादजोरिवनीय॥१॥३५॥३६

सिद्धां· दोहा॥ अंगसंगनितलपरसदा
३१४ ।टहलकरेंसवजाम॥सवसुष
अवधिजहांवसें।अद्भुतस्यामा
स्याम॥१॥पद॥तालरूपक॥स
वसुखअवधिस्यामास्याम॥नि
त्यधामनिवासअद्भुत।अद्भुनि
साअभिराम॥टेक॥महलनी
।समा निजटहलमें।तत्परसेंवजाम॥
श्रीहरिप्रियाअंगसंगसेवा।पुज
वेंहीमनकांम॥१॥३६॥४८॥अ
नुरागनिसुसुंदरीमधानाम॥
दोहा॥सुनतगुनतसुखहोतअ
ति।मनपावतउपराम॥सहचरि
जुगलकिसोरकी।अंगसंगनिके
नाम॥१॥पद॥तालरूपक॥प्रथम
हिंजुगलचरनचितलाऊं॥जिहिं १४

बलसकलमनोरथपाऊं॥निज
उरकेअभिलाखपुरांऊं॥अंगसं
गनिजसवरनिसुनांऊं॥सुनांऊं
जेसअंगसंगसहचरि।चतुर्वि
धिसंकर्त्तिनी॥प्रियाप्रीतमकी
सदा।अंतरंगिनीसमवर्त्तिनी॥दं
पतिरिझांवेंसहजसेवा।सुरतउ
त्सवसजिसदी॥परमप्यारीका
रूविधिकरि।प्यारीहोतिनहींक
दा॥१॥समरथंत्रिनीतिनकरू
पधरि॥वोलनोलपरिरहीरंग
नरि॥हरिमनहरनीहारहियेप
रि॥सदाविराजतऊंचनवीचिरी
॥१रिऊंचनविचिरूचिररोचनि।
श्रवनताटंकावनी॥सिंगारछत्र

सिद्धां ३१५

त्रिसी सफूलन। स्वरूप कै सिर पर
ननी॥ गंजना उर मुक्त मंगा। पंच
सार निपच सिरी॥ मंडलामनि कै
हमेल सुरेलि रस हिय पर ढरी॥
२॥ चंद्रकीर्ति का सहचरि सरसी
॥ कै उरवसी सदा उर परसी॥ रुचि
र सुमणि का पोति सुहाई॥ प्रभा
करा वेसरि छवि छाई॥ छाई छ
वि महा मदन मंजरि। पदिक रूप
रसालिनी॥ संखचूडा सहचरी सी।
मंत मणि गुण जालिनी। चटकरा
वा कै सु कंकन। केयूरा मनि कर्बु
रा॥ हेदवलया वलि सु चूरी। लस
तिवा कुनिचि तचुरा॥३॥ कै कर
पत्र रत्न वैधानो॥ सेवति प्रिया सु

१५

कर सुखसांनां॥ विपरछ मदनी म
द सहचारी॥ होइ सुद्धि कासो निन
चारी॥ भारी सो निनकिं कनी कै।
कनक चित्रांगनि अली॥ गोपुरा
नांम नि सहेली॥ कै सुनूपुर पदर
ली॥ जेहरी कै रही हरि। अनिला
खिनी अनुसारिनी। श्री सुमदना
वति सखी। विद्विया स्वरूप सुधारि
नी॥४॥ जो तिय का सनि अनवट
औ पति॥ नई पद पत्र अमित आ
नावति॥ वसन रूप वेला वलि कै
ली। इहिं प्रकारि सेवति अलवे
ली॥ वेलि अलि सेवति सदा। अं
गसंग सहचरि अमता॥ सुनकु
भ्रीत मकी तु अवे। अंग संग नी जो
रस रती॥ नवन मोहनि वंसिका कै

सिद्धां ३१८

चतुरवंकनकंकना॥रत्नपुष्पा
मुद्रिकाकलाऊंकरा।किंकनि
ऊना॥५॥हंसमदहिंगंजनि
मनरंजनि॥कैमंजीर
रहतिपदकंजनि॥लहितश्रना
वतिकैमणिमाला॥निगमसु
नावलिवसनरसाला॥रसालव
सनसुनिगमसोना।रूदयमोदा
सहचरी॥चौकीकैसेवतिसदा
पिय।हियहिंश्रतिआनंदनरी
॥रतिसुरंगावलिसहेली।कर
नेऊंडलवनिरही॥रत्नपत्राव
लिकिरीटसु।रागवेस्त्रिरिगुंज
हीं॥६॥रूपमोहनीअतिहीसों
हनि।कैछविविलेकरहीफवि
बौहनि॥अवजुअनंतरंगाअंगसं

गनि॥समकिहियेंधरिनरिऊउ
मंगनि॥उमंगनिजरिधरिऊहि
यमैं।प्रेमअणयपुरावली॥सर
सरागासहचरीकैं।प्रीतिसेवति
रसरली॥अमितउरउलहनीरू
चिकै।चाहचारुअनंतिनी॥चि
मतकारावलिसखीकैं।चौंपहि
यकूलसंतिनी॥७॥सदामोहनी
मनछविसोहैं।गुणरसमंजरि
गिराजुजोहैं॥सखीसुधासंचार
निहाला॥सहजेसनिग्धनिनेह
निवासा॥निवासानेहसनिग्ध
नीसुनि।विनयनववासावली॥
ललितगुनसुंदरीलाडउमंगआ
नंदावली।सारसारावलीसुलसु

नि॥ मोद महा मानंगनी॥ सदय
सुंदरि दृष्टि विमद। विन्यासनी
गति वर वनी॥ ७॥ अंनंग उदी
पनि सहचरि जोई॥ अतन रू
प विवसे वै सोई॥ रहसि रंग आ
वलि रति रूपा॥ आगद आनोज्व
लि सुरस अनूपा॥ अनूपा रस
चित्र रागा॥ वलि जु सेवति रंग
कै। सतसंकल्पा सखी जु स्वभा
व विहरति संग कै॥ सदा प्रिय
कह्नैनी सहचरि॥ श्री सुनयन
न कर्षिनी॥ सुत्र सो नावली स
हचरि। यस सदा रसवर्षिनी॥
८॥ अब सुनि सब वर्त्त निस खि
जोई॥ इहि विकारि विविसे वै
सोई॥ सरदेंदु का मुकर मन मो

है॥ अनंतर रंग सिंघासन सो है॥
सोहै अनंतरंग सिंघासन। चँव
र मफ मारुत अली॥ छत्र कै ऐश्व
ये पूर्ण। सुगंध गंध मादावली॥
सर्वतोनंदनी सभा सुमन वछ्र
रि फूल कै॥ स्वत: संतोष लिस्थय
कै। सेव हीं अनुकूल कै॥ ९॥
निज सहचरि इच्छा अनुसारैं॥
विविधि रूप धरि संग विहारैं॥
कहियें जो कछु पार हिं पावै॥
यथा सक्ति कहि नलौ मनावै॥ म
नावै नलौ कहि यथा सक्ति हिं।
हारि मां निनरहजियैं॥ कहत
सुन नहीं होत हैं। उपगारयातैं
कहजियैं॥ जै जै श्री हरिप्रिया

सिद्धां
३१९

लसोई॥११॥पुनि अनार की उप
मा पावै॥ अब आगैं पुनि और
बनावै॥१२॥ मधुकसुमनसं
गो कपोल की॥ कोकिल कल
रव कहि बोल की॥१३॥ चिबुक
रसाल कूं ज्यछ छवि पावै॥ गहव
र कूं जसु हियो कहावै॥१४॥ कं
बुकपोत कंठगुन डोरी॥ कदली
पत्र पीठ रस बोरी॥१५॥ मौल
सिरी सोभा लहि जांनौं॥ रायबे
लि सोई रुचि मांनौं॥१६॥ चारुप
दाय च मेली कही॥ जो हनि तुही
मो निये सही॥१७॥ सदा सुहागसे
वती स्यामा॥ याहीं तैं पिय वासौ
नामा॥१८॥ आलिंगन चुंबन जोव १९

ही॥ मल्लिमालती संज्ञा लही॥१९
॥ करना नरना अंक कहावै॥ उर
ज अग्र जं वू मन ना वै॥२०॥ पाडर
पर नि विनय जो चेंगो॥ परिगोल प
रिंग न न संगो॥२१॥ नाना वरन उ
चारन जोई॥ कहीं वारि न बेला सो नि
ई॥२२॥ कोमल चित्त जुगल कौ जो
है॥ महा मृदुल रस महल सु सोहै
॥२३॥ जा चित मैं जो अति अभिला
स॥ सोई कहिये सरद निवास॥२
४॥ त्रिविधि पवन मन रवन महाई
॥ सो सम जो स्वासा सुखदाई॥२५॥
अंग अंग उद्दै होय जो काम॥ रतन
जोति जो ही कौ नाम॥२६॥ निजत
न सुगन्ध रतनमनि कहियें॥ कम

सिद्धां लनिकुंजकमलहुलहियें ॥२७
३२० ॥रतिपतिनवनऊकेहियेजाही
॥औरनेरवेऊभांतिसुनाही ॥२
८॥ महलीजनमुखनैसुनिपईये
॥सोमोसवहियरैंधरिलईये ॥२
९॥ मनकेवरकेसरिरतिरंग ॥सु
वरनहूनोजहांप्रसंग ॥३०॥ विवि
धिटेछेअंगअंगकहावैं ॥ छवि
कौलेनालपटिछविपावें ॥३१॥
औरतरुलताअमितअपार ॥
अंगसंगमेंसबकौअधिकार ॥३
२॥ केतमनिकेंचनघनदामनि ॥
सोपियप्यारीतनसंज्ञागनि ॥३३॥
तथानमालकनककीवेली ॥रति
अनंगरसरंगसहेली ॥३४॥ आनं

दअहलादनिपियप्यारी ॥सुरति
सोईसुंदरिसहचारी ॥३५॥ सुनग
भूमिमगमैंअनुसरहीं ॥ तिहिं अं
गकीपगसंज्ञाधरहीं ॥३६॥ निकु
टनितंवनकैनिजडौरि ॥ कहिये
ताहिसंकरीखौरि ॥३७॥ ठौरठौर
निर्मलजलआसै ॥ सोअंगअंगप्र
तिपांनिपनासै ॥३८॥ सुखहीकरि
पावतरसरेली ॥ ताहिसोहि लौक
हतसहेली ॥३९॥ जोमधिसोरनस
केललसंत ॥ ताकीसंज्ञाकहीवसं
त ॥४०॥ जोवनमोरवेगजवनाम ॥
रितुवसंतविलसैवरवाम ॥४१॥
साखिजवादिकुमकुमाजोई ॥ त
सुखसुखसुरंगसुनिसोई ॥४२॥ घ
नविहारसोईघनसार ॥ जिहिंसुख

माचैमारअपारा॥४३॥मदनरंगम
दमृगमदजोहै॥जखिकर्दमसो
अगरसमोहै॥४४॥ अतरअर
गजाऔरअगरसत॥ उमगअ
लासअनैंगरंगवरसत॥४५॥ऊ
टिलकटाछिछुटतपिचकारी
॥नेरीरहसिरंगनसौंनारी॥४६॥
विविधिभांतिकेबाजेबाजैं॥सोई
अंगअंगनेहघनसुरसाजैं॥४७॥
लसनिहसनिमेंछिजनुतिजोई
॥अवीरगुलालकहीहैसोई॥
४८॥अतिचितचावसोईचोवा
सुनि॥सुखसंगमसोंधौगुनियेगु
नि॥४९॥करपटवरअसनिप
रदोल॥सोईकहीकमलकीमा
ल॥५०॥वीरीकलकपोलरसपा

वै॥ताहीकोयहसंजानोवै॥५१॥
अधररागवंदनछविपावै॥सुमन
सनेहफुलेलकहावै॥५२॥रोरी
तिलकअछितसुकतनके॥जो
निसुलगनिमनोरथमनके॥५३॥
॥मोलकेलोतनलीलबालको॥
सबसुखदायकसखिनजालको
॥५४॥सुखदासनसोकहियेनो
री॥जानतहैजियमैंजोनेदा॥
५५॥खेलतमैंचंचलताजोई॥
चावरिनामकहावैसोई॥५६॥ऊं
मिऊंमिअलिऊंमिकरावैं॥सोई
ऊंमकनामकहावैं॥५७॥रहमि
गरतिरसमैंसानैं॥सोईकहीअंब
ननसहानैं॥५८॥अंगअंगघानि
सीवांसोई॥५९॥थलअरुविथलना॥जि

ये जोई ॥५९॥ पगरोपन सोई वंस
वसन पन ॥ जीत निसांन बजै वौ
जयरन ॥६०॥ रंगन रे मुख मैं अं
गहू मैं ॥ कूकौ वरन कह्यौ है जु मैं
॥६१॥ संवो ध्रुन दे वरनन जोरी ॥ जा
की संज्ञा कहियन होरी ॥६२॥ फू
लफूलनि मिल विहरै जोर ॥ जाहि
कहत है फूलहिंडोर ॥६३॥ जि
हिं सुखतैं सातल तालहैं ॥ चंदन
सिंगार हिं तिहिं कहैं ॥६४॥ सुरत
समुद्र कृ वावन जोई ॥ जल विहा
र कहवावत सोई ॥६५॥ मंजु मनो
रथ मैं पधरावै ॥ सोरथ आरोहन
जु कहावै ॥६६॥ वकू रसवर सैं
लहरि लडावै ॥ सो वरखा रितु ना
म कहावै ॥६७॥ फूल गुलावी जो

यह कह्यौ ॥ सो समुझौ प्रीत मंडही
डह्यौ ॥६८॥ मिलि सबनी जनु गल
सनमानैं ॥ सोई पहली तीजव षां
नैं ॥६९॥ चेरन रवेन डांडी कर चार
॥ सुरत रंग हिंडोर विहार ॥७०॥ सा
वन श्रावन सु केल सुहावन ॥ ए
कादसी कहीं सो पावन ॥७१॥ जि
हिं सुख मैं वौ है गुन विस्तार ॥ पि
य प्यारी करि राखै हार ॥७२॥ रंग्यौ
महारस मैं है जोई ॥ कह्यौ पवित्रा
पवरंग सोई ॥७३॥ कौंदा जरी क
ह्यौ है चोज ॥ जाकरि औपै उरजौं
जोज ॥७४॥ रति विहार राखै विर
माय ॥ सोई राखी नाम कहाय ॥
७५॥ तिहि सुख करि पुरवै मन
काम ॥ सोइ सरूनू पूनूं नाम ॥७६

सिद्धां
३३३

विनक्रीडा क्रीडां वैं नीजैं ॥ नीजपा
छिली सो सुनिली जैं ॥७७॥ मिलि
सव सखी जन सुगुन गावैं ॥ रिऊरि
ऊरी ऊपर सपर पावैं ॥७८॥ विपु
ल पुलक अंग अंगन माई ॥ ति
हिं कहियतु है रहसि वधाई ॥७
९॥ घुरि घुरि अनंग रंग वरसावैं
॥ वर सगोठि सोई दरसावैं ॥८०
॥ नरवर सैं सर सैं सव महीं ॥८१॥
दौ हैं स्मरोहनी कहीं ॥८२॥ विदि
हि बीच विवस तापावैं ॥ सोई अर्धनि
सा तु कहावैं ॥८३॥ ताहू मैं जो अ
तिर तिनासै ॥ सो सुकेली अरुनो
दय आसै ॥८४॥ सव रस दै राघु
न प्रियमान ॥ तासौं कहियतु है
रसदान ॥८५॥ ऊसमनिकरक

रिक्रीडत सांऊ ॥ सो सांऊ सम जौम
न मांऊ ॥८६॥ कैं द्रपकोटि विजै
विवि करहीं ॥ दसमा विजै ताहि उ
चरहीं ॥८७॥ सुनगन्हेमि मंडल पर
वास ॥ ताहि तु कहियें रति रसरा
स ॥८८॥ त्रयम समागम रंग रमा
वै ॥ सो विहार विधि ब्याह कहावै
॥८९॥ अमित कला विहरैं प्रिय
प्यारी ॥ तासौं कहियै निसा दिवारी
॥९०॥ क्रीडी करत सऊच जो हो
ई ॥ कही केलि कौतूदी सोई ॥९
॥ सुनर वनैरव राग अचार ॥ दिव्य
गंधा है दैव गंधार ॥९२॥ रत्रकेला
सो रामकेली पुनि ॥ ललितान ना
ललित राग निपुनि ॥९३॥ विप्या

भाविनासकहियेकल॥अरु
विलासआवलिजुविलावल॥४
३॥आनंदीआसावरिजानकै॥
सुरंगअंगसारंगहिमानकै॥४
४॥गौरमुखीगोरीकौजान॥के
लिकौमुदीकहिकल्यान॥४५
॥कर्नकांतिकासोकानरो॥
औरकहौजोउरमैंधरौ॥४६॥
अलवेलिकेलिअडानोकहि
ये॥विचित्रसोनाविहागरौल
हियो॥४७॥केंद्रपकामाकहि
केदारौ॥खंजनाहिंखेनायचि
धारौ॥४८॥सुहिसुंदरीसोरहि
सोई॥वैजयंतिवसंतहैजोई॥
४९॥किसोरसुंदरीकाफीसो

हौ॥धनिनागाजुधनासरिजोहै
॥५०॥जयतिसोजनाजयतिसि
रीपुनि॥आनंदसिंधनिआसा
सिंधनि॥५१॥चित्रमुखीसोगौ
रीचैती॥सुकमालामलारसम
झैती॥५२॥सुरंगमालसारंग
मलार॥लहरिमालहुयहउ
रधार॥५३॥मालालहरिसल
हरिनाक॥अकेविंदुकहियेअै
राको॥५४॥टहलतस्राटोडी
जानौ॥मारमोहनीमारूमानौ
॥५५॥त्रनयत्रतुरसुरविपहि
चांनि॥परमप्रवेरपरजहिंपुनि
मांनि॥५६॥तुंगविद्याकेजथमें
जारी॥एलवअतुरीगनीअचारी

सिद्धां
३२५

॥१०७॥ अरुन रंग अनुराग हि
ओं नैं ॥ स्याम रंग सिंगार हि मों नैं
॥१०८॥ कह्यौ प्रेम कौ पीत जु रंग
॥ सम जौ जैसौ जहां प्रसंग ॥१०९
॥ और अनंत भेद बहु भाव ॥ जि
न कौं जानौं कृपा उपाव ॥११०॥
श्री हरिप्रिया रहसि रस गाथ ॥
जे बपावैं तनु आवैं हाथ ॥१११
॥ उपाधर ॥ कुंडलिया ॥ अवता
री अवतार मनि । स्यामा स्याम स्व
रूप ॥ जिन्हि कौ यह सिद्धांत सु
ख ॥ वरन्यौ वरन अनूप ॥ वर
न्यौ वरन अनूप रसिक जन हो
इ सु चित्त हिं ॥ सुनौं गुनौं अवि
रुद्ध बुद्धि संमत या वित्त हिं ॥ नि २

गमागम कौ सार तंत्र कौ मंत्र जु भा
री ॥ श्री हरिप्रिया अनंत सक्ति
लीला अवतारी ॥११२॥ दोहा
॥ इहि विधि यह सिद्धांत सुख ।
महा अर्थ गंभीर ॥ कृपा करैं त
व ही लहैं । सुधा सरोवर सीर ॥ ११
३॥ द्वै श्लोक द्वै दोहरा ॥ पद अ
ठतीस अनूप ॥ आभास न जु न
समझियो । इक कुंडलिया रूप
॥११४॥ तापीछै इक दोहरा ॥ स
व चौंतीस रु चारि ॥ अवइनि कौ
अनुरागिनी । प्रतिप्रति पद हिं
निहारि ॥११५॥ कवित्त छप्पय ।
॥ जिन जु रेखा मैं पांच बहुरि पद बिस्ता
रमैं ॥ ग्यार विलासावली ग्यार

सिद्धां ३२६

हू आनंदा मैं ॥ सुरँग अंग मैं आ
रि आरहू गोर सुखी वहि ॥ के
लि कौ मुदा तानि कर्न कांता छ्वै
विचित्र सोभा हि मैं कंद्रप को
मादो ५ पद ॥ सुघ सुंदरी दोय
पद इहिं विधि यों अठतीस ह
द ॥ ३ ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ एकादस अ
उरागनी । मैं पद ए अठतीस ॥
गावैं जो ऊपरि करै । कृपा जुग
ल जगदीस ॥ ५० ॥ सेवा अरु उ
त्साह सुख । सुरत सहज सिद्धां
त ॥ हंदा विपन विलास मय ॥
लीला राधा कांत ॥ ५१ ॥ महा
वांनी जो नी जु यह । खरी खरग
की धार ॥ जे नन जे तन सौं रा खि :

यौ ज्यौं पावै सुख सार ॥ ५२ ॥ उत्त
म हू तैं उत्तम जु । सो सुद्ध नेनई
तो हि ॥ हित चित हियन हिं धर
हितौ ॥ अहित इष्ट तैं होहि ॥ ५
३ ॥ पंचरत्न ए दिव्य महा । को
दे सोधि पयोध ॥ जाकरि श्री ह
रिप्रिया कौ । पावै पद अविरोध
॥ ५४ ॥ ॥ इति श्री पदवि
लास निकुंज रहस्य श्री महादि
व्य महाराजेश्वर त्र्वर परम हं
स वंसाचार्य श्री मद्धरिव्यास दे
व जू कृत महावाणी श्री सिद्धां
त सुख संपूर्ण ॥ पंचरत्न परम नं
त्र रूपं ॥ श्री हरिप्रिया स्वामिन्यै
नमो नमः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

सिद्धां
३२७

॥संवत १८ ३५ मिती चैत्र कृ
ष्णपक्ष ३ बुधवासरे
श्रीमतनीत्यादीत्याय नम
श्रीराम
पुस्तक पुजारी हरिदास जोसी है
की हनहे

पद

श्रीमते निम्बादीत्याय नम अथ आदिवा
णी जुगलनत तत्र प्रथम सिद्धांत सुखअ
नामजुत सुचिपत्र लिखते ॥ राध्याकृष्ण

	पत्रा	पंक्ति
कृष्ण० श्रीज०	१	३
रागकेदा० आढाहा चर०	१	१७
पद दु क० मद०	१	२१
आ० राग केदा० स्यामा	२	२
पद दु क० जा को०	२	६
रागकेदा० आ० दो० जा को०	२	१२

मु० १